

हंडिया विधानसभा क्षेत्र
में
राजनीतिक दल एवं राजनीतिक जागरण
: एक अध्ययन

(Political Parties & Political Socialization
in
Handia Assembly Constituency
: A Case Study.

:
:
:

कमलाक्षर त्रिपाठी
द्वारा
राजनीतिशास्त्र में डी० फिल० डिग्री हेतु
प्रयाग विश्वविद्यालय
की प्रस्तुत
शीघ्र प्रबन्ध

प्रास्ताविक

प्रस्तुत विषय (छँडिया विधान सभा क्षेत्र में राजनीतिक दलों एवं राजनीतिक समाजीकरण : एक अध्ययन (POLITICAL PARTIES AND POLITICAL SOCIALIZATION IN HANDIA ASSEMBLY CONSTITUENCY : A CASE STUDY) पर शोध कार्य राजनीतिशास्त्र की कमान नवीन प्रणालियों एवं व्यवस्थाओं के अन्तर्गत एक प्रयास है । परंपरावादी व्यवस्था की पद्धति एवं तत्सम विधियों की परिधि से निकलकर व्यवस्थावादी क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयत्न किया है । औद्योगिक राज्यों में राजनीतिक दलों का उद्भव, विकास, संगठन, नेतृत्व एवं कार्य किस प्रकार तथा स्तर पर औद्योगिक मूल्यों के अनुकूल होता है तथा राजनीतिक समाजीकरण में उनका क्या योगदान है इसका एक विधान सभा क्षेत्र की दृष्टि के रूप में स्वीकार कर अध्ययन किया गया है । छँडिया विधान सभा क्षेत्र स्थानीय प्रधान मंत्री पं० कृष्णर ताल मेहरा के झुलपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का पंचांग है और इस क्षेत्र का स्वाधीनता संग्राम में प्रौद्योगिक, चिरस्थायी एवं अनुकरणीय योगदान का पालिदान रहा है और वर्तमान समय में भी राजनीतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थल है । छँडिया विधान सभा क्षेत्र राजावादा जिला का पूर्वी भाग है जिससे बाराणसी जिले की सीमा मिलती है । (छँडिया विधान सभा क्षेत्र का मानचित्र संलग्न है जिसमें मतदान स्थलों की संख्या एवं नाम दीक्षित है)

शोध प्रबन्ध की संरचना को सात अध्यायों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है । प्रथम अध्याय में विषय परिचय है जिसमें राजनीतिक दलों के वाक्यांश, परिभाषा, उनके मूलभूत तत्त्वों और उनके राजनीतिक समाजीकरण के स्तरों को स्पष्ट किया गया है । इसके अतिरिक्त इस अध्याय में उन परिकल्पनाओं (Hypotheses) का भी उल्लेख है जिनके परीक्षण का इस शोध प्रबन्ध के कुछ अध्यायों में प्रयत्न है । शोध कार्य में प्रयुक्त पद्धति का भी विवरण दिया गया है जो कि अन्त में छँडिया विधान सभा क्षेत्र के चयन के कारणों पर प्रकाश डाला गया है ।

द्वितीय अध्याय में छँडिया विधान सभा क्षेत्र में राजनीतिक

यहाँ के उद्भव एवं विकास की प्रकाशित करने का यत्न है जिनमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, किसान मजदूर प्रजा पार्टी, प्रजा समाजवादी दल, समाजवादी दल, हिन्दू समाजवादी दल, भारतीय क्रान्ति दल, भारतीय लोकदल, साम्यवादी दल, राम राज्य परिषद्, रिपब्लिकन पार्टी, भारतीय जनदल, कौटिल्य कांग्रेस, मुस्लिम महासम्मेलन तथा नवोदित जनता पार्टी का संक्षिप्त विवरण है किन्तु निम्नलिखितानुसार राजनीतिक रंगधर पर अपनी अपनी भूमिकाओं का अत्यन्त हीन तथा दीर्घकालीन प्रदर्शन किया है ।

द्वितीय अध्याय में बौद्धिक विधान का क्षेत्र में तीन राजनीतिक वर्गों - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (सत्ता) भारतीय जनदल एवं भारतीय लोकदल की स्थापना गठित रही हैं । उनके ऐतहासिक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है । नागरिक समर्थक, सदस्य, पदाधिकारी, कार्यकर्ता, नेता एवं साधक के रूप में भी भूमिकाएँ राजनीतिक दल में और उनके बाहर निमाता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है उनके उत्थानकारी इन चीजों का, कौटिल्य की स्थापना का, अनुशासनिक कौटिल्यों का तथा कौटिल्य की विशेषताओं की प्रकट किया गया है । विषय वस्तु की अपेक्षा एवं विशिष्ट महत्त्व के कारण नेता के लिए उच्च अध्याय प्रदान किया गया है और जहाँ पर अध्ययन विषय के लिए होड़ दिया ।

तृतीय अध्याय में नेता पद प्राप्त करने के निमित्त भी नेतृत्व किया जाता है उक्त विवरण है । अभी तक अध्ययन क्यों नहीं किया है कि नेता का प्रभुत्व विकास कैसे होता है । इस अध्याय में राजनीतिक नेता के उद्गार, नेतृत्व के चार चरण - अनुस्यूतिता, अनुस्यूतिता, आदर्शिकरण एवं प्रवर्धन का विवेक है (जो कि नेता भौतिक चिन्तन है) , नेतृत्व की दो प्रवृत्तियाँ- औपचारिक एवं प्राधिकारवादी ; धर्मनिष्ठा, सत्ता, उद्भव, लोकप्रियता एवं पदारुहता के आधारों पर नेताओं का कैप्टी विभाजन एवं राजनीतिक नेताओं के कार्यों की विवेक भी है जो कि अभी आप में नया अध्ययन ही प्रतीय होता है । राजनीतिक नेता के अन्य कार्यों के साथ राजनीतिक रैली का विकास का भी गैर भौतिक अध्ययन है जिसका अनुभव वातावरण, कौटिल्य, कौटिल्य, अपिमुत्थन, दण्ड, नौतिक अध्ययन है जिसका अनुभव वातावरण, कौटिल्य, कौटिल्य, अपिमुत्थन, दण्ड,

पुरस्कार, एता हस्तांतरण एवं समस्या-समाधान आदि के अवसरों पर होता है।

पंचम अध्याय में राजनीतिक दलों की भूमिकाओं एवं कार्यों का ब्रुण है जिसमें प्रमुख रूप से निर्वाचन लड़ना है जिसके तत्वीन प्रत्याशियों का चयन, राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव अभियान का संवाहन, मतदाताओं का वडा प्रयोग, राजनीतिक दलों द्वारा मतदान प्रक्रिया में सक्रीय एवं मतगणना कीर उन एवं पर होनेवाले व्ययों का चिकण है। राजनीतिक दलों के डा १ राजनीतिक-निणय-प्रभावन, राजनीति का वायुनिकीकरण, हित संधियोजन एवं अमूलन (Interest Articulation and Aggregation) तथा राजनीतिक समाजीकरण आदि होनेवाले कार्यों का भी विवरण दिया गया है। राजनीतिक दल के सभी कार्य कलमर्धन के परस्पर जन्मदाता एवं जन्य है जो कि एता प्राप्ति का साधन है।

अष्टम अध्याय में राजनीतिक समाजीकरण जिसके विषय में सेना विस्तृत अध्ययन इसके पूर्व किसी भी भारतीय की रूति में उपलब्ध नहीं हुआ है, की विवेचना करते हुए उसके एक वडा राजनीतिक भाग ग्रहण (Participation) का दिवरण दिया गया है जिसमें नागरिक का राजनीतिक दलों से संर्क एवं संघ तथा दलों एवं नेताओं के प्रति पारणा ; नागरिकों की प्रवृत्तियों पर राजनीतिक दलों के संर्क का प्रभाव ; मतदान की प्रभाविक करनेवाले कार्यों ; मत निणय के बाधकारों, मतदाता द्वारा उसके मत के विषय में उनके द्वारा निणय ले के कार्यों ; मतदान में वात्किता भाग ग्रहण तथा मतदान के प्रति उदासीनता के कारणों ; राजनीति में की लीग बहुत सक्रिय हैं इसके विषय में नागरिकों तथा रही जानेवाली पारणाओं तथा कलमान समय में दैहिक एवं समानकारी की मूल्यों का नागरिक जीवन में महत्त्वों की लीब करने का प्रयत्न किया गया है।

अष्टम अध्याय में राजनीतिक समाजीकरण के अन्तिम पडा राजनीतिक अज्ञान (Cognition) की विवेचना की गई है जिसमें नागरिकों की राजनीतिक गुणा प्राप्ति के माध्यमों, राजनीतिक दलों के नामों, नेताओं एवं निवाधियों से संबंधित जानकारी ; दौरीय समस्याओं का ज्ञान तथा विकास लण्ड में माता एवं तक की राजनीतिक संस्थानों, जपिकाहियों और उनकी रूक्तियों

के ज्ञान स्तरों का अन्वेषण किया गया है । ज्ञातव्य है कि राजनीतिक मान ग्रहण एवं राजनीतिक ज्ञान पर जाति, शिक्षा, जाति, व्यवसाय तथा राजनीतिक वर्गों की स्वस्थता एवं अन्य चीजों से सम्बन्ध के प्रभावों का परीक्षण किया गया है । इसी राजनीतिक दल की स्वस्थता का वैशिष्ट्य स्पष्ट हुआ है ।

ग्रंथपुष्पी एवं लेख पुष्पी में छिपित सामग्रियों का विशेष उपयोग अध्ययन के लिये हुआ है जहाँ से आवश्यक ज्ञान वहाँ से लेना दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रारंभ किए पन्द्रह मास की पूर्ण नहीं हुए थे कि जापातकाठीन घोषणा २६ जून, १९७५ की गई जिसके कारण शोध कार्य (Field Work) में जिनके व्ययमान बड़े नागरिकों, फटाफटकारियों एवं नेताओं द्वारा साक्षात्कार देने में विघ्नितवाहट जादि जाये जी कि शोध प्रबन्ध की प्रस्तुत करने में विघ्न के कारण बने ।

प्रधान विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग के अधीन व्यावहारिक शोध में यह प्रथम शोध कार्य है । इसके विषय भवन तथा अन्वय परामर्श के लिए मैं परम सम्माननीय डाक्टर अम्बादत्त पन्त का वाजीवन कृणी रहूँगा । विषय पर पिता निर्देश का गुरुत्वा, कठिन तथा समय एवं आ साम्य साहित्य-निर्वाह डाक्टर सुरेन्द्र नाथ मिश्र ने किया जिसके परिणाम स्वयं यह कार्य जगह ही जगह में उनका वाजीवन जामारी रहूँगा । जापातकाठीन घोषणा के फलस्वरूप का डा० मिश्र " नीला " (NISA) के अधीन बन्धी बनाये गये तब उस बात लम्बे में डा० अम्बादत्त पन्त ने गहन संस्कारपूर्ण एवं निराशागर्भित वेला में अपना दिक्षा-निर्देश देकर जाशा का संभार किया । श्री मोहन ठाठ, राजनीति विभाग का डा० विद्यासागर मिश्र, शिक्षा विभाग ने शोध की प्रवृत्ति पर मार्ग-दर्शन किया उसका मैं कृतज्ञ हूँ । राजनीति विभाग के कार्यालय प्रधान श्री आशीष मिश्र एवं पुस्तकालयाध्यक्ष के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनके उपयोग से समय-समय पर जानकारी जाधारी दूर होती रही है । मानना सम्बन्धी अवलोकन है कि डा० रामाश्व त्रिपाठी की तथा टंकन के लिए श्री ईश्वर ठाठ विचारस्व की बन्धवाद देता हूँ जिससे शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरण हो सका । सभी उन साक्ष

(3)

सहयोगी बन्धुओं को शारीरिक बर्बाद देता हूँ जिसके दाया दाया एवं कया कया के सहयोगी बन्धुओं से शीघ्र प्रत्येक का शरीर पर छा । राजनीतिक बलों की शीघ्र विधान का शीघ्र में गठित बलाओं के पदाधिकारियों का मैं जापानी हूँ बिन्दुनि पास्तविकताओं को शीघ्र कर्त के छादा स्पष्ट किया । मैं उन नागरिकों एवं नेताओं का भी जापानी हूँ जो अपने अपने व्यस्त दाया में समय निकालकर तथा छादात्कार देकर जन्मजात की एकता को छाव्य किया । जन्म मैं मैं अपने छादा भूमिधुओं के प्रति जापानी प्रदर्शित करता हूँ जिसके प्रोत्साहनों एवं छादाओं ने इस कठिन कार्य को करने की शक्ति प्रदान की ।

(कलाल रंजित त्रिपाठी)

श्रीपत्रार्थ

२६ जून १९७८ ई० ।

(जापान-भारत बंधुता पत्रिका पृष्ठ २०३५)

(क)

विषय - सूची

पृष्ठ संख्या

प्राक्कल्प

- ४ - ४

मानचित्र

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश

- १ - २३ ग

राजनीतिक दल की परिभाषा ; राजनीतिक
दल के सत्व ; राजनीतिक स्थायीकरण ;
छोड़िया विधान स्थायी दल के कम के कारण ;
प्रवृत्ति ; संघर्ष क्षेत्र ।

द्वितीय अध्याय : छोड़िया विधान स्थायी दल में राजनीतिक २४ - ६६
दलों का उद्भव तथा विकास

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ; किसान मजदूर प्रजा पार्टी ;
प्रजा समाजवादी दल ; समाजवादी दल ; युवा
समाजवादी दल ; भारतीय श्रान्तिदल ; भारतीय छात्रदल ;
साम्यवादी दल ; रामराज्य परिषद् ; रिपब्लिकन पार्टी ;
भारतीय जनघोष ; हिन्दू महासभा ; कैबल कांग्रेस ; मुण्डल
मजदूर ; जनता पार्टी ; निर्वाचन में मत ; रैला विम ;
संघर्ष क्षेत्र ।

तृतीय अध्याय : राजनीतिक दल का संगठन

६७ - १४८

संगठन ; सदस्य ; संगठनात्मक शक्तियाँ ;
छोड़िया विधान स्थायी दल का विकास ;

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : अटक कांग्रेस कौटो ;
 भारतीय जनसंघ : स्थानीय समिति ; मण्डल समिति ;
 भारतीय लोकसभा ; प्रारम्भिक कॉलेज ; स्त्रीय कॉलेज ;
 कार्यकर्ता ; सामुदायिक जीवन एवं समितियाँ ; जीवन की
 विशेषताएँ ; नियंत्रणशीलता ; गतिशीलता ; बलीय
 निष्ठा ; पुन्यप्रेता ; विद्वत्शीलता ; जीवनशास्त्रशास्त्र ;
 शासनात्मक राज्यों द्वारा प्रशासिकाचार्यों का कीर्तित विवरण ;
 जीवन की शक्ति ।

कुर्य वध्याय : नेतृत्व

१४६-२०६

राजनीतिक नेता के लक्षण ; नेता में विशेषताएँ ;
 राजनीति में जानेवाली परिस्थितियाँ ; नेतृत्व की
 भूमिका के बार बरण १- राजनीतिक अनुस्थितिकान ;
 २- राजनीतिक अन्तर्लक्षता ; ३- राजनीतिक वादशीकरण ;
 ४- राजनीतिक प्रवर्धना ; नेतृत्व की प्रवृत्ति ; लौकशास्त्रिक ;
 प्राप्तिवादी ; नेता की भूमिका ; वादशीवादी, उपलब्धवादी,
 वास्तविक, नाममात्र, वंशानुगत, परिस्थितिवन्ध, गुटप्रिय,
 का प्रिय, जाति प्रिय, सर्व प्रिय, पदाब्ध, उपपदाब्ध,
 राजनीतिक नेता के कार्य ; लकी बर को शक्तिशाली एवं
 प्रमुत्त्व संपन्न बनाना ; नागरिकों को राजनीतिक जिज्ञा
 देना ; तनाव शिथिलन ; बलों में समन्वय स्थापन ;
 जनता एवं सरकार के मध्य संतुलन ; जनशरीरवाहण, वापन
 एवं निवेदन ; प्रशासन का ऐवाभुलीकरण ; राजनीतिक
 मूर्त्यों का विचार एवं प्रचार ; राजनीतिक नेतृत्वता का
 निर्माण, प्रतिपालन एवं अभिरक्षा ; बर का प्रतीकीकरण ;
 नीति-निर्माण एवं प्रियान्वयन ; राजनीतिक शैली का विकास ;

जोड़ित मात्सीय राष्ट्रीय कग्रीष : अाक कग्रीष कीटी ;
 भारतीय जनसंघ : स्थानीय समिति ; मण्डल समिति ;
 मात्सीय लीक्चर ; प्रारंभिक कीटिड ; सीरीय कीटिड ;
 कार्यकर्ता ; वातुनागिक लैठन एवं समितियां ; लैठन की
 विशेषताएं ; नियंत्रणशीलता ; गतिशीलता ; वडीय
 निष्ठा ; पुस्तकता ; विवेकशीलता ; लीक्रीप्रतापता ;
 तात्कात्काराक्षीय दुर फाधिकारियों का कीकृत विवरण ;
 लैठन लैठन ।

कुर्य वध्याय : नेतृत्व

६५६-२०६

राजनीतिक नेता के लक्षण ; नेता में विशेषतायें ;
 राजनीति में जानेवाली परिस्थितियां ; नेतृत्व की
 भूमिका के चार वर्ण १- राजनीतिक अनुस्थितिकान ;
 २- राजनीतिक अनुस्थितिकता ; ३- राजनीतिक लापरीकरण ;
 ४- राजनीतिक प्रवृत्तिका ; नेतृत्व की प्रवृत्ति ; लीक्रीप्रताप ;
 प्राधिकारवादी ; नेता की भूमिका ; लापरीवादी, व्यवस्थावादी,
 वास्तविक, नाममात्र, क्रीडानुगत, परिस्थितिवन्ध, गुटप्रिय,
 की प्रिय, जाति प्रिय, लैठन प्रिय, फाटलू, लपवालू,
 राजनीतिक नेता के कार्य ; लपरी वर की लीक्रीप्रताप एवं
 प्रवृत्ति लैठन काना ; नागरिकों को राजनीतिक लीक्रीप्रताप
 काना ; लनाय लीक्रीप्रताप ; वरों में लैठन लैठन ;
 लैठन एवं लैठन के मध्य लैठन ; लैठन लैठन, लैठन
 एवं लैठन ; प्रवृत्ति का लैठन लैठन ; राजनीतिक
 भूमिका का लैठन एवं लैठन ; राजनीतिक लैठन का
 लैठन, लैठन एवं लैठन ; वर का लैठन लैठन ;
 लैठन लैठन एवं लैठन लैठन ; राजनीतिक लैठन का लैठन ;

पादात्कार किये हुए नेताओं का विवरण ;
 संक्षेप में ।

पंचम अध्याय : राजनीतिक दल की सुविधायी एवं कार्य - २१०-२५४

निर्वाचन लड़ना ; राजनीतिक विचार-प्रवाह ;
 राजनीति का वास्तविकीकरण ; दल की कार्य-विधि
 एवं संरचना ; राजनीतिक समाजीकरण ; संक्षेप में ।

षष्ठम अध्याय : राजनीतिक समाजीकरण

२५५-३१०

समाजीकरण ; राजनीतिक समाजीकरण की
 परिभाषा ; पादात्कार नागरिकों का विवरण ;
 राजनीतिक भाग ग्रहण : (क) राजनीतिक दल
 से संबंध (ख) राजनीतिक दलों के प्रति धारणा
 (ग) राजनीतिक दलों के संबंध से नागरिकों की
 प्रवृत्तियों पर प्रभाव (घ) मतदान ; संक्षेप में ।

सप्तम अध्याय : राजनीतिक क्षेत्र

३११-३६२

राजनीतिक क्षेत्र प्राप्ति के माध्यम ;
 राजनीतिक दलों के प्रति जानकारी ; चुनावों
 में कांग्रेस की विजय के कारण ; चुनाव का प्रभाव ;
 बान्दीज की जानकारी ; समस्याओं का ज्ञान ;
 विकास लक्ष्य स्तर से भारत एवं के प्राधिकारियों ,
 उनकी शक्तियाँ एवं कार्यों का ज्ञान ; संक्षेप में ।

अनुसूची

— ३६३-३७४

(बी)

पृष्ठ संख्या

परिशिष्ट

१७५-१८६

- क- संसदन की स्थायीयों के महाधिकातरियों हे
सादात्कार में प्रयुक्त प्रस्तावनी ।
- ख- राजनीतिक दलों के नेताओं हे सादात्कार
में प्रयुक्त प्रस्तावनी ।
- ग- नागरिकों हे सादात्कार में प्रयुक्त प्रस्तावनी ।

श्री एवं श्री प्री

१६०-१६६

००००००

विचार-प्रवेश

आज संसार के अधिकांश राज्यों ने अपने वर्तमान विकास के निमित्त तथा अपने नागरिकों की स्वतंत्रता, कला तथा संस्कृति का रक्षास्वात्म करने हेतु लोकतंत्र का पक्ष स्वीकार किया है। लोकतंत्र का विकेंद्रीकरण, तथा पक्ष भाग-गुण, विभाजन के प्रकार में परिवर्तन, जनमत का सम्मान, शासन में सेवा-भाव का संसार, परस्पर बाधा है समस्याओं का समाधान, लोक शिकायती प्रणालियों की प्रोत्साहन, राष्ट्रीयता का वागरण तथा नृसैन्य युद्धमन्त्र का पक्ष प्रकट आदि लोकतंत्र के महत्वपूर्ण, दीदीक्षान एवं लोकतंत्र मूल्य हैं परन्तु इन मूल्यों को धारण करने का वर्तमान क्षमता कौन है ? क्या इसका विचार किया जाता है कि राजनीतिक दलों का किन दलों के धारण का बाधा है। राजनीतिक दल विचार, अधिष्ठाता एवं विश्वास की स्वतंत्रता के परिचायक, सुदृढ़ता तथा समन्वय है और संसद की व्यापक करने एवं व्यवस्था की क्षमता में अधिकाधिक राजनीतिक लाभ प्राप्त करने का साधन, एकल एवं नवीन साधन है। राजनीतिक दलों ने लोकतंत्र के मूल्यों को धारण करने में विश्व समन्वयता का प्रदर्शन किया है उससे यह स्पष्ट हो स्वीकार किया जा सकता है कि लोकतंत्र का प्राण धर्म ही है क्योंकि राजनीतिक दलों के अभाव में लोकतंत्र एक सुखद कल्पना मात्र है।

विश्व के राजनीतिक रंगमंच पर राजनीतिक दलों का पदार्पण क्या, कहाँ और कैसे हुआ ? यह राजनीतिक इतिहास इनके विकास की प्रणालियों से जागृत है। अन्तरगत राजनीतिक विकासोन्मुख राजपद्धति (Statistologist)¹ का दाण पर के लिए अतीत की ओर अपने ध्यान की है जाता है कि वर्ष 1901 ई० के प्रान्त के वरीय (Versailles) स्थित स्टैन क्लब पर पड़ोसकार उल्ला ध्यान स्थिर हो जाता है कहाँ पर प्रतिनिधियों (Deputies) ने अपने स्थानीय हितों के संरक्षण के लिए मिलकर विचार करना प्रारम्भ किया था। प्रतिनिधियों की वैचारिक क्षमताओं ने निरंतर मिलकर परस्पर विचार विनिमय की प्रोत्साहित किया किन्तु संसारमय राजनीतिक समूह का जन्म हुआ। इस

राजनीतिक कटु ने देश के बाहर निवासियों की समितियाँ बोलि किया और देश में देश की निवासियों के राज्य स्थायी देशों की स्थापना की गई जिसका किस्सा रूप राजनीतिक पत्र है । देश के बाहर की राजनीतिक पत्र का वास्तविक भारतीय समितियाँ और अधिक पत्रों बाधि है हुआ जिसका प्रमाण प्रिंटिंग का अधिक पत्र (प्रिंटिंग डेयर पार्टी) है जो कि प्रिंटिंग प्रिंटिंग प्रिंटिंग के १९६६ ई० में फिर भी इस निवास का परिणाम है कि एक संवत्सरिक तथा निवासियों देश का राज्य देना है । इसी स्पष्ट है कि जीवित ने उत्तीर्ण नामांकों में पारस्परिक प्रति-विनिमय उत्पन्न किया जिससे देशों की उनकी पूर्ण करने की पद्धतियों में राज्य का अनुभव करनेवाले व्यक्तियों की एक संवत्सरिक कटु बनाने की प्रेरणा मिली और हाल में जीवित का न्यूनाधिक प्रभाव होने ला । जीवित की राज्य विनिमय-शीलता की राज्य के नाम पत्र पर होने के लिए भी थापन उत्पन्न हुआ का राजनीतिक पत्र है ।

देश, कठ, परिस्थिति, संस्कृति तथा राष्ट्रपति के अन्तर्गत है राजनीतिक पत्रों के उदय तथा विकास का जो क्षेत्र प्रभावित किया है और अधिक में भी करता रहता जिसके कारण किसी राज्य में देश, संवत्सरिक उत्पन्न उत्पन्न देश पराधीनता है मुक्ति, स्वतंत्रता की रक्षा, अधिकों का जीवन, कर्म का संवत्सरिक बाधि विविध संस्कृति की रक्षा तथा राष्ट्र नेताओं में मतों के आधारों पर जीवन राजनीतिक पत्रों का उदय की जाता है । पारस्परिक में, पराधीनता है मुक्ति प्राप्त करने हेतु ३० दिसम्बर, १९४६ ई० की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सम्मुख हुआ ; नाति एवं कर्म के आधार पर मुक्ति की का १९०६ ई० तथा हिन्दू महासभा का १९०० ई० में सम्मुख हुआ ; राष्ट्र नेताओं के पारस्परिक मतों के आधार पर विनिमय मकर प्रता पार्टी की १९५० ई० में बाधार्थ केवी अनुमानी द्वारा आकाशी पत्र की १९५१ ई० में बाधार्थ नरेश्वर एवं की का प्रभाव नारायण द्वारा और कान्हा पत्र की १९५६ ई० में की कुमान पत्र बाधि द्वारा बाधार्थ विनिमय रक्ती गई । भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता के आधार पर भारतीय कान्हा की बाधि २१ अक्टूबर १९५६ ई० की का स्थापना प्रभाव मुक्ति के द्वारा रक्ती

बालिक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मार्च १९३३ ई० के छठी जमा

पुनर्वाचन में भीतर पराक्रम मिठी और उल्लास केन्द्र में 20 वर्षों का शासन लाया ही गया। केन्द्र में तत्कालिक कानून पाटी का शासन स्थापित हुआ जिसने राज्यों में विधान सभाओं के पुनर्वाचन 1950 ई० में करा दिया और बाह्य राज्यों का शासन केंद्र के हाथ में निरुद्ध गया जिससे केंद्र की सत्ता कायम हुई। पराक्रम के चौदरे वादावाची ने पूर्वपूर्व प्रधान मंत्री भीमजी साहेबरा गांधी एवं भारतीय राष्ट्रीय केंद्र के अध्यक्ष श्री के० प्रतापस्य रेड्डी के बीच मतभेदों का विस्फोट किया और 1 जनवरी, 1952 ई० को केंद्र का संवैधानिक विधान ही गया। निरुद्ध हुए ने भीमजी साहेबरा गांधी को अपना अध्यक्ष बनाया गया वहीं की वास्तविक केंद्र घोषित किया किन्तु निर्वाचन वादी ने इसे केंद्र (साहेबरा) की मान्यता प्रदान किया है।

इस ही कार्य की प्रारम्भ करते समय वास्तविक में भारतीय राष्ट्रीय केंद्र (राज) तथा (काँग्रेस), भारतीय जनसंघ, भारतीय समाजवादी पक्ष, भारतीय लोकसत्ता तथा समाजवादी पक्ष मान्यता प्राप्त कर्तों में है प्रसृत रहे। विश्व के अब है नई औद्योगिक पैठ भारतवर्ष के राजनीतिक पक्षों पर श्री ए० वाल्मर¹², श्री ए० डी० पामर¹³, श्रीमती रेन्डला क्लैरिडज बरबर¹⁴, श्री वेल्डर¹⁵, श्री डाइट¹⁶, डाटमैन¹⁷, श्री रूनी कौठारी¹⁸, श्री मार्केट फ्रेजर¹⁹, श्री लेंडर वीज²⁰ तथा श्री ए० ए० कैदी²¹ आदि विद्वानों की कृतियाँ विविध उपयोगी हैं किन्तु हमें वैज्ञानिक पक्षों की प्रकाशित किया गया है। वास्तव में राजनीतिक पक्षों के व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन करना ही अभीष्ट समझा।

भारत के राजनीतिक पक्षों के व्यावहारिक पक्षों के सम्बन्ध में श्री ए० वी० कर्मा तथा श्री इन्साउ नारायण और कल्याणी एवं श्री एस०बी०मुक्ती²² ने प्रकाश डाला है किन्तु वे निर्णय सदाय एवं पुनर्वाचन पर ही नहीं हैं।

औद्योगिक में राजनीतिक पक्षों के महत्त्वपूर्ण योगदानों को दृष्टिगत करके हम पर विश्व के अनेक विद्वानों ने प्रकाश डाला है जिनमें श्री राबर्ट-मार्केट²³, श्री ए० हुवर²⁴, श्री के० बन²⁵, श्री ए०के० रुबीन²⁶, श्री एस०बी० डाइटमैन²⁷ तथा श्री ए० वी० इन्साउ²⁸ की कृतियाँ अधिक उपयोगी हैं।

“राजनीतिक जातीयकरण” पर भी एक एक शास्त्र^{१६}; की सख्त
हकूमत^{१७} बाई^{१८}; एक ही एक के हस्तनिष्ठ तथा एक कोशिक^{१९}; की तीन
बार^{२०} पिछकाय, भी केवल हस्तन के केवल^{२१}; की एक बाजनी^{२२} तथा
की निरिराव^{२३} बाई^{२४} की नुपिया^{२५} फिज^{२६} हकमी^{२७} है ।

राजनीतिक कठ की परिभाषा

कैक विद्वानों ने राजनीतिक कठ की परिभाषा के, कठ तथा
परिस्थिति के अनुसार प्रियाकृत्यों एवं नुमिकारों का कर्तव्य करते की है किन्तु
कारण परिभाषा में कनेका का पत्तन होता है । परिभाषा फिजी की वस्तु, विषय,
गुण, प्रिया या वस्तु का वीणाचलन, बीबीय तथा वाजनायक स्वयं प्रस्तुत करती है ।
यहाँ पर राजनीतिक कठ की कुछ परिभाषाओं की या रही हैं :-

- (१) “कठ” एक पूर्ण कल्पना करता है कि कठ के प्रत्येक केंद्रों में परस्पर एक
जान प्राप्य ज्ञेय तथा प्रायोगिक वस्तुताओं के प्रति उच्छासों की एक जान
दिखा जाती बाहिर ।

The term 'Party' presupposes that among the individual
components of the party there should exist a harmonious
direction of wills towards identical objective and prac-
tical aims, (Quoted by Robert Michels, Political Parties
1958 page 392)

- (२) “राजनीतिक” एक निम्न पदों में सुझा दिया जा सकता है “यह केंद्रन है जो
कि निर्वाचकों की निर्वाचकों के ऊपर, जयिदरों की वशिष्टियों के ऊपर,
प्रत्यायुक्तों की प्रत्यागियों के ऊपर प्रभुता की वस्तु होता है ।”

The term 'Political' may be formulated in the following
terms. It is organization which gives birth to dominion
of the elected over electors of the mandataries over
mandators of the delegates over the delegators”.

(Robert Michels, Political Parties 1958 page 418).

- (3) आधुनिक राजनीतिक एक सामाजिक समूहों तथा वर्गों के व्यापकान्तरिक व्यक्तित्व प्रतिनिधित्व के अभिव्यक्ति हैं ।

The modern political party is therefore an agency of informal indirect representation of social groups and classes. (Avery Leiserson - Parties of Politics 1958 page 73 Quoted by S.J. Kiderow - Political Parties. A Behavioral Analysis 1971 page 74).

- (4) राजनीतिक एक कुछ लोगों का एक ऐसा संगठन है जो किसी विद्वान्त के आधार पर एक एकता है पर एकता छोड़ कर अपने सामूहिक प्रवृत्तियों द्वारा राष्ट्रीय जिज्ञासा करने करना चाहती हैं ।

A Party is a body of men united for promoting by their joint endeavours, the national interest upon some principle in which they are all agreed. (Edmund Burke - Sabine - A History of Political theory 3rd Indian reprint 1973 page 561).

- (5) राजनीतिक एक उन नागरिकों का संगठित समूह है जिसके राजनीतिक विचार एक समान होती हैं और राजनीतिक हज़ारों की पार्ष्व कार्य करते सरकार पर नियंत्रण की पैदा करती हैं ।

A political party thus may be defined as an organized group of citizens who profess to share the same political views and who by acting as political unit control the Government. (R.N. Gilchrist - Political Science page 349-50).

- (6) व्यक्तियों के किसी समूह को जो कि समान उद्देश्य की प्राप्ति के वास्ते काम कर रहा है एक एकता कहा जाता है --- इस दृष्टि से राजनीतिक एक उन व्यक्तियों समूहों को कहेंगे जिसके समान राजनीतिक उद्देश्य हो, उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वे देश में अपने विचारों का प्रचार करते हैं तथा जनता को अपने विचारों का अनुमोदी बनाकर देश की सरकार को अपने विचारों के अनुसार बनाना चाहती हैं (डा० अम्बालाल पन्ना, नागरिक शास्त्र के आधार, पृष्ठ 300-301) ।

- (9) प्रत्येक राजनीतिक दल विवादी उद्देश्यों के निमित्त कार्य करने के प्रति अभिलषित है जो कि दल के संरक्षण के लिये एवं कल्याण की दृष्टि से होता है और जो कि राज्य की राजनीति में इसकी दल की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए ऐसा करता है और सभी दलों की विपरीत प्रवृत्तियों और जो कि उसकी स्थिति को कठोर बनाए रखने का विरोध करता है।

Each party is inclined to work for legislative goals which advance the interests and welfare of the party ORGANIZATION and which serve to strengthen its power position in state politics and oppose actions adverse to its interests and which would weaken its position. (William F. Keefe-Comparative study of Role of political parties in State Legislature- Quoted in Ed. Political Behavior - 1972 page 313).

- (10) एक राजनीतिक दल एक समुदाय नहीं है बल्कि समुदायों का संग्रह है, देश भर में फैले हुए और सम्बन्धकारी संस्थाओं द्वारा संगठित दल समूहों का संग्रह है।

A party is not a community but a collection of communities, a union of small groups dispersed throughout the country and linked by co-ordinating institutions. (Maurice Duverger. Political Parties 1965 page 17).

- (11) राजनीतिक दल एक मुक्त, प्राक्कान्मुख संरचना है (जो) अपनी वापार तथा अपनी शक्ति पर की प्रवृत्ति " स्थानीय वापारिक " सामाजिक भेदों की परी के साथ वास्तविक संरचना और इन भेदों की संरचना की प्रमुख संस्थाएं एवं नियंत्रिकाधी केन्द्रों के सम्बन्धित संरचना तथा पक्षों की प्रदान करने का प्रयत्न है।

The party is an open, clientele oriented structure, permeable at its base as well as its apex, highly pre-occupied with the recruitment of 'deviant' social categories and willing to provide mobility and access for these categories into the major operational and decisional centers of the structures. (S.J.Eldersweld- Political Parties - A Behavioral Analysis- 1971 page 526).

- (१०) सामाजिक शक्ति की राजनीतिक शक्ति में अनुवाद है कि वह शक्ति सामाजिक महत्वपूर्ण सामान राजनीतिक शक्ति है ।

The single most important instrument for the translation of social power into political power is the political party (Frans Neumann, The Democratic and the Authoritarian State (Glencoe Ill-Free Press, 1957 page 12 - Quoted by S.J.Eldersweld Political Parties. A Behavioral Analysis 1971 page 73).

राजनीतिक शक्ति की उत्पत्ति परिभाषाओं में बनेका होती है वह एक ऐसा सामाजिक परिवार है जो मुख्यतः शक्ति पूर्ण या सामाजिक रूप में सम्बन्धित है । ये शक्ति हैं शिक्षा, धन, शक्ति, सम्पत्ति तथा शक्ति

शिक्षा के माध्यम से शक्ति की नीतियों, विचारों एवं कार्यक्रमों का निर्माण, नियमन एवं प्रवर्धन करते हैं । शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति एवं व्यक्ति के लिए अनिवार्य है क्योंकि पारस्परिक व्यवहारों का निर्माण व्यक्ति तथा सामाजिक की भाषा, भाषा की व्याख्या करने की भाषा और राजनीतिक संस्था की चारा व्यवस्था की भाषा । राजनीतिक संस्था की मान्यता है कि व्यक्ति, सामाजिक और व्यक्ति की भाषा में राजनीतिक व्यवहार की शक्ति तथा निर्माण करते हैं वे सामाजिक व्यवस्था (Congeries) एकत्रित भाषा नहीं

अपित्त धनुषा दुर वायव्यो का प्रतिनिधित्व करते हैं जो एक दूसरे के साथ धनुष्यका और पारस्परिक संकलनकारी (Reinforcing) होते हैं।^{११} एक राज्य की राजनीतिक संस्कृति, धर्म, विस्थापन, वैचारिक प्रवृत्तियों और मूल्यों से निर्भर होती है जो कि उन परिस्थितियों को परिभाषित करती है किसे राजनीतिक प्रभाव पड़ता है।^{१२} राजनीतिक संस्कृति मनोवृत्तियों, विस्थापन, मूल्यों और कौशल (Skills) से बनती है जो सम्पूर्ण का संस्था में वर्तमान है साथ ही साथ उन उत्तम प्रवृत्तियों और वायव्यो है जो का संस्था के किसी किनारे भागों में उत्पन्न है।^{१३}

यद्यपि राजनीतिक कुछ अपने विचारों की राजनीतिक संस्कृति के विकास के लिए जांचा करके किसी न किसी 'वाद' को बन्य है।^{१४} यह व्यक्तिवाद, समाजवाद, धर्मवाद, स्वतन्त्र मानववाद आदि वादों का बन्य हुआ है। नागरिक राजनीतिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय और राजनीतिक तथा सामाजिक - कुछ नों प्रकार की स्वातंत्र्य व्यक्तिवाद का वाद है।^{१५} व्यक्तिवाद का उत्पन्न धर्मवाद के धर्म के कठोरत्व हुआ। इसी प्रसंग विचार है कि राज्य एक किनारे है किन्तु जीका तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यक भी है, व्यक्तिगत स्वातंत्र्य अनिवार्य वस्तु है, राज्य की यन्त्रावली (मुक्त व्यापार) नीति का पालन करना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में जीव है राज्य इसी धर्म का वाद है।^{१६} राजनीतिक कुछ व्यक्तिवाद की न्यूनाधिक मात्रा में अवश्य कीकार करके योग्य करते हैं।

समाजवाद की अनेक परिभाषायें एवं सारांश हैं किसे किताबवादी समाजवाद, केपी समाजवाद, वराकस्तावादी समाजवाद, स्वतन्त्राधीन समाजवाद, वैज्ञानिक समाजवाद एवं कर्ताधिक समाजवाद प्रसृत हैं।^{१७} इसी सारांश व्यक्तिगत धर्म पर निर्भर, उत्पन्न तथा कीर्तनकर आर्थिक विनियोग तथा आर्थिक उत्तर वादती है।^{१८} भारतीय राष्ट्रीय अग्रिम है 'कर्ताधिक समाजवाद' का किनारे दिया है जो कि कुछ का पक्ष पक्ष है।^{१९} भारतीय राष्ट्रीय अग्रिम का उद्देश्य भारतीय लोगों की प्रगति एवं कल्याण है और शांतिपूर्ण तथा औद्योगिक उपायों से समाजवादी राज्य की स्थापना संसारिक कर्तव्य के आधार पर करना है।^{२०} भारतीय कर्तव्य है शांतिमानवाद की

कमनाया है ।^{४३} व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और वात्सा का समुच्चय है । व्यक्ति के समाजीकृत विकास में चारों का ध्यान रखा जाना । चारों की पूरक भिन्नताएँ बिना व्यक्ति न ही पूरक का समुच्चय और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है । समाजीकृत विकास की कामना की व्यक्ति को समाज स्तर में कार्य के प्रेरणा देती है।^{४४} यह स्मरण रखा जाय कि कहाँ पर व्यक्ति के व्यक्तित्व कृषी विभिन्न पक्षों संगठित नहीं हैं, कहाँ समाज संगठित कहे जा सकते हैं । यह संगठित वातावरण पर ही अपने यहाँ व्यक्ति के परिवार, समाज, राष्ट्र, मानवता और परास्पर दृष्टि का विचार किया गया । समात्म मानवताय ही का नाम है ।^{४५}

राजनीतिक यहाँ का निर्माण है व्यक्तियों के होना है किसी विद्वान्ध परस्पर अधिक सम्बन्ध या ज्ञान होते हैं और वे विद्वान्ध दूसरों के लिए भी सामाजिक हित होने ऐसा विश्वास एक समूह बनाने के लिए प्रेरित करता है । यह हीच में यह उद्घोषाएँ करने का प्रयास किया गया है कि राजनीतिक यहाँ के नेता, कार्यकर्ता, सहायिकारी एवं अन्य अपने अपने दल के विद्वान्धों को फिर से एक एक करके अपनाये हैं और नागरिकों तक पहुँचाये हैं ।

राजनीतिक दल का दूसरा सत्य संगठन है । राजनीतिक दल अपने विद्वान्धों का प्रचार एवं प्रसार करके अपने समूह व्यक्तियों का निर्माण कर रहे हैं जो कि राजनीतिक दल की लोक संगठनकारी प्रवृत्ति का परिचायक है । संगठन में जारी हुए का समूह में वे पूरे नागरिकों को व्यवस्था, सहायिकारी, कार्यकर्ता, नेता एवं क-प्रतिनिधि के रूप में जलक के दायित्वों का निर्वाह करने का प्रतिष्ठापन राजनीतिक दल अपने संगठन के माध्यम से करते हैं । राजनीतिक दल का संगठन उसी व्यक्ति की आधार रखा है । संगठन राजनीतिक दल की मानवताही बहुत है किन्तु यह राजनीतिक स्थिरता की आधार रखा भी है और उच्चतर राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है।^{४६} आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आधारों पर निर्मित समुदायों की परिधि है कुछ बाहर जारी हुए व्यक्तियों के प्रवृत्ति के लिए राजनीतिक दल समय समय पर अपने संगठन का स्तर बढ़ाते हैं । अपने संगठन की समष्टि, एकल, यशस्वी, विस्तृत और उच्च प्राप्ति के योग्य बनाने के लिए वेद, प्रवृत्ति, शिक्षा, विधान आदी, विकास समष्टि तथा ग्राम स्तर

हकाईयों की रक्षा, प्रियाकषाय, पदाधिकारियों की अपने पद के प्रति जागरूकी, प्रवेश के उद्देश्य तथा नेतृत्व विभाग की समता और प्रवृत्ति, पद के प्रति निष्ठाकावर्ण एवं उन्मत्त कार्य की पद की विचारधारा में वास्तव्य वादि के सीधों में सीनेवाली युगिजाओं का अव्यक्त किया गया है ।

राजनीतिक पद का उल्लेख देश में जातीय, जातीय, जातीय तथा सांस्कृतिक कार्य में किया गया जागरूकी की अपना अव्यक्त बनाकर राजनीतिक क्षेत्र में प्रदान करता है किसी जागरूक की सीधी-सीधी, सीध-सीध, उल्लेख-सीध जागत्य तथा जातीय जागरूक्य वादि की उल्लेख सीधों की सीध वादी है या दृष्ट वादी है और जागरूक सीध विचारों, राष्ट्रीय तथा जातीयवाद्य विचारधारा में प्रवाहित सीध है । राजनीतिक क्षेत्रता की दिशा में किसी जातीयवादी प्रवाहों का सीध उल्लेखवाद्य हकाईयों के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं नेताओं के सीधवादीपूर्ण अव्यक्तवाद्य तथा प्रत्यक्ष अव्यक्तों है सीध है किन्तु जातीय जातीयों की प्रवृत्त करने के लिए परस्पर वाद्य-विचार के वादिवाद्य अव्यक्त उपायों का भी उल्लेख है सीध कि जातीयवाद्य सीधों के विचार है । जातीय राजनीति में जाग उल्लेख जाग या कार्यकर्ता उपाधीनता का उल्लेख कार्य सीध जाता है ? कार्यकर्ता की उल्लेख में सीध रक्षे के लिए क्या क्या उपाय किया जाते हैं ? राजनीति में प्रवेश के सीध सीध है उल्लेख जागरूकी जाग अव्यक्त किया जाते हैं ? अपने पद की सीध सीध जागें विचारों पद नहीं हैं ? क्या उल्लेख के पद की सीध सीध है ? राष्ट्रीय उल्लेख सीध सीध सीध है ? पद सीधों के प्रति क्या जागरूक्य है ? वादि प्रवाहों पर हकाईयों के पदाधिकारियों के विचार प्रवाह में जागें हैं । उल्लेख की सीध सीध की विचारवाद्य किन्तु पद की उल्लेख में सीध किन्तु है ? उल्लेख की सीध करने का प्रवाह किया गया है ।

राजनीतिक पद का सीधवाद्य पदवाद्यपूर्ण तत्त्व नेतृत्व है ।

राजनीतिक पद जाग एवं राज्य की समस्याओं की उल्लेख करने के लिए उल्लेख नेतृत्व प्रदान करते हैं । नेतृत्व का प्रादुर्भाव समस्याओं है सीध है उल्लेख सीध विचारवाद्य है । नेतृत्व की युगिजा निश्चित स्थिति में सीध है । देश की पदवाद्यों में

किया कर दिया है कि किस राजनीतिक दल ने स्वतंत्रता के युद्ध में राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान किया वही अपनी छात्र के ३० वर्षों में ही कक्षा द्वारा अनुमानियों की पैनी में छात्र उठाकर दिया गया । राजनीतिक दलों के नेता राष्ट्रीय नेता के रूप में कक्षा के प्रतिनिधि होकर सरकार की पूर्णतः देकर प्रस्तावों के हुमाँ की पाठ्य धारण करते हैं । राजनीतिक दल नेतृत्व, विकास का मंच प्रस्तुत करते हैं किसी व्यक्ति का 'रूप' विस्तृत एवं विकसित होता है ।

पैरी यह परिकल्पना है कि नेतृत्व की भूमिका राजनीतिक अनुस्थितिज्ञान (Orientation) राजनीतिक सम्मिलनता (Involvement) राजनीतिक वापसीकरण (Idealisation) तथा राजनीतिक प्रकटीकरण (Manifestation) के प्रथम चरणों में पूर्ण होती है । प्रायः कम मानव नेतृत्व का अनुभव प्रकटीकरण के समय ही करता है । छात्राधिक प्रणाली में बहुत निम्न स्तर पर राजनीतिक दलों के अन्तर्गत छात्राधिक एवं प्राधिकारवादी दोनों प्रवृत्ति के नेता होते हैं । नेता का 'रूप' यह 'दल' में गुप्त बन्दी उत्पन्न करने का प्रमुख कारण होता है और इसी ही अनुशासन हीनता प्रमुख एवं चरित्व होती है । अतः राजनीतिक दलों की बाधित कि वे अपने में छात्राधिक नेतृत्व की विकसित करने की विशेष चेष्टा करें ।

राजनीतिक दल के अन्तर्गत वापसीवादी तथा अवसरवादी, वास्तविक तथा नाम मात्र ; केंद्रपुस्त तथा परिस्थिति बन्ध ; गुटप्रिय, सर्व प्रिय , जाति प्रिय तथा कर्तृप्रिय, पक्षरुद्ध तथा अपक्षरुद्ध बाध प्रकार के नेता न्यूनाधिक मात्रा में अवश्य होते हैं किसी स्पष्ट होता है कि राजनीतिक दल नेताओं की निर्माणशाला एवं प्रयोगशाला है । राजनीतिक दल अपने ही छविछादी एवं प्रयुक्त संयम करने के लिए अपने अनुमानियों का 'छिद्रान्त पोषण' (Indoctrination) करते हैं ; नागरिकों को राजनीतिक शिक्षा देकर उनका शिक्षण, दलों में अन्तर्गत कक्षा एवं सरकार में छुलन कार्यवाह्यकरण एवं निवेदन तथा प्रशासन का सेवा-मुक्तिकरण करते हैं ; राजनीतिक मूल्यों का विकास एवं प्रसार, राजनीतिक नीतिकला का निर्धारण, प्रतिपादन एवं अभिव्यक्ति, दल का प्रवर्धनकरण , नीति-निर्माण एवं प्रियान्वयन तथा राजनीतिक शैली का विकास करते हैं । पैरी यह परिकल्पना है कि राजनीतिक नेताओं के व्यक्तित्व के अन्तर्गत छात्रों पर कक्षा द्वारा का विश्वास कर रही है जो कि राजनीतिक दलों के

एक ज्ञान विद्यार्थी के आधार पर एकल वैयक्तिक प्रदान करनेवाला गतिशील सुपाय है जो जनसमूह के माध्यम से शाहीनशा की पूर्ति पाता है ।

राजनीतिक जागीकरण

ज्ञान से व्यक्ति के जागीकरण विकास के लिए लोक सुधारों एवं संस्थाओं की अपनी प्रगति के साथ सम्बन्धित किया है और उन्हें आवश्यक एवं ज्ञान के अनुसार परिवर्तित करते उनके स्वरूपों का निर्धारण किया है । राज्य की ज्ञान की एक रूप है । व्यक्ति अपने सम्बन्धी ऐसे पूर्ण एवं विस्वासी का पूर्ण कर जिससे राज्य शाहीनशा एवं केवल केवल पर ही तथा अपने स्वरूपों की पूर्ति कर उसे अपने निमित्त व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहार की निमित्त निमित्त, प्रतिपादित, ऐतिहासिक तथा एक ज्ञान ज्ञानात्मक विचार्य है । व्यक्ति का राजनीतिक व्यवहार राज्य की आवश्यकताओं परंपराओं, प्रथाओं, कानूनों तथा शासन प्रणाली के अनुसार ही रहते हैं और प्रथाएं राजनीतिक सुपाय करते हैं यद्यपि राजनीतिक सुपाय एवं परिस्थितियों की राजनीतिक व्यवहार की प्रभावित करने का प्रभाव करती भिती है । राज्य के मुख्य पर विचार्य हुए नागरिकों के राजनीतिक व्यवहार की राज्य एवं ज्ञान के लिए उपयोगी ज्ञान का कार्य परिवार, विद्यालय, राजनीतिक संस्थाएँ, प्रशासन एवं राजनीतिक पक्ष करते हैं । नागरिक का राजनीतिक व्यवहार उसी नागरिक संस्था में उपस्थित राजनीतिक विचार्य, पूर्ण एवं विस्वासी का परिणाम है क्योंकि उसी राजनीतिक संस्था की रूप है । राजनीतिक जागीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें नागरिकों द्वारा राजनीतिक संस्था का पारण एवं परिवर्तित किया जाता है ।^{४८} राजनीतिक जागीकरण राजनीतिक व्यवहार की बीजों की प्रक्रिया है ।^{४९} राजनीतिक जागीकरण राजनीतिक संस्था के द्वारा व्यक्ति, कर्म एवं राष्ट्र में राजनीतिक पैदा की विकसित करने की प्रक्रिया है जिससे ज्ञान या भावी राजनीतिक ज्ञान में उनकी सुविधायी सुनिश्चित एवं कारण का परिवर्तित की जाती है ।

वैरी परिवर्तना है कि राजनीतिक पक्ष राजनीतिक जागीकरण के एक शाहीनशा विकसित है । राजनीतिक जागीकरण पर एक है पहले खर्च

एच० वाश्मन ने जू १९५६ ई० में प्रकाश डाला किन्हीं राजनीतिक व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया और निष्कर्ष किया गया कि राजनीतिक व्यक्तियों का राजनीतिक जातीयकरण का कठ है । राजनीतिक यह नागरिकों का राजनीतिक जातीयकरण तीन चरणों से होता है प्रथम-राजनीतिक अनुसंधान, द्वितीय - राजनीतिक मान प्रणाली एवं द्वितीय राजनीतिक संज्ञान (Cognition) । इस क्षेत्र में राजनीतिक मान प्रणाली एवं संज्ञान पर ही प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

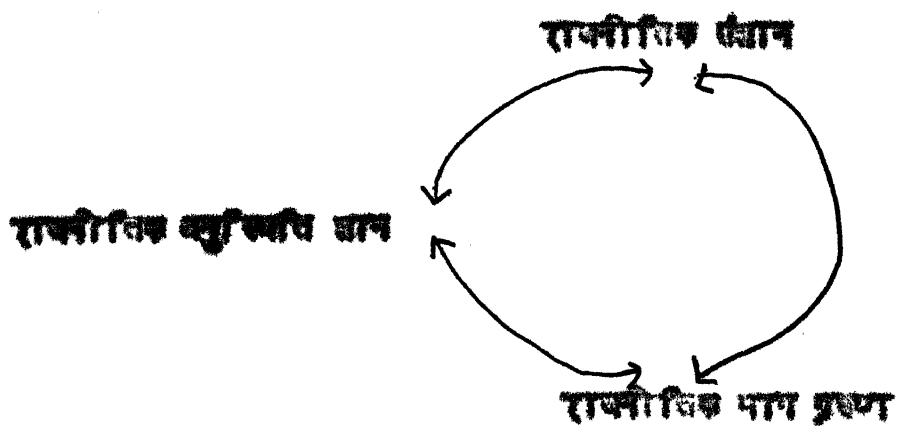
नागरिक राजनीतिक यह के संदर्भ में एवं प्रथम अन्तर्गत जातीय बनकर जाता है फिर प्रकाश, व्यवसाय, समाजिक, कार्यकर्ता, नेता तथा जन प्रतिनिधि की भूमिकाओं को होता है । अतः, वास्तविक तथा वार्षिक अध्ययन में मान प्रणाली करके नागरिक यह के और निकट जाता है जिससे उसकी मुख्य राजनीतिक चेतना बाह्य होती है । राजनीतिक वर्गों के कार्यकर्ता, नागरिक, संयन्त्रात्मक स्वतन्त्र तथा व्यवसायों के प्रति जागरणों का अध्ययन करके नागरिक प्रत्येक यह के विषय में अपनी धारणाएँ बनाता है, स्वयं की किसी के मत या विपदा में होने का बाजार होता है तथा अपने अनुसंधान वाले राजनीतिक यह की उत्पत्ति का उत्पन्न हो जाता है । राजनीतिक वर्गों के संदर्भ में जाने है नागरिकों की प्रवृत्तियों में परिवर्तन होता है । व्यक्तिगत संघर्ष विवाद में वर-कथा की स्वतन्त्रता, एवं है द्वितीय कोन ? एवं है द्वितीय नेता की बात, वस्तुओं के मुख्य, जातीय पैदावार, वार्षिक प्रियाओं, एवं एवं राजनीति, वर्ग व्यवस्था तथा राजनीतिक नेताओं के प्रति, नागरिकों की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया है । यही यह परिवर्तन है कि राजनीति में अधिक सक्रियता का उद्देश्य स्वार्थ सिद्धि, जातीय एवं प्रतिष्ठा प्राप्ति है ।

अन्तिम अन्त में यह परिवर्तन वैसी राजनीतिक व्याक्तियों पर नागरिकों की निरवधारण धारणा है कि चुनाव जीत जाने के बाद किसी भी जन प्रतिनिधि की अपना यह नहीं बदला बाह्य और यदि यह यह परिवर्तन करे तो पुनः जातीय प्राप्त करना अनिवार्य है । सरकार की वार्षिक योजनाओं, समूह, गुरुत्व-व्यवस्था के प्रति नागरिक चेतना अविनशील है ? या है राजनीतिक मान प्रणाली चेतना प्रभावित करते हैं ? इस पर ही प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । संदर्भ है कि

के घटने पर नागरिकों की जात्या बान्ने का प्रत्यक्ष किया गया है ।

राजनीतिक मान प्रण का अंतिम मान मतदान है । नागरिक मतदान की किसी बरीयता होती है ? किसी वर्गों के मतदाताओं की कुछा बालकाज होती है । मतदान में किसी बराबरई करते हैं । राजनीतिक यह मतदान की बनी पता में कराने के लिए किया प्रयास करते हैं ? बराबरीयिक लेखन मतदान पर किया प्रयास छाती है ? बादि प्रक्रियाओं पर प्रकाश छाती का प्रयास किया गया है । राजनीतिक वर्गों के द्वारा मतदाता पर कुछ बराबर बनी पता में मतदान के लिए छाता बाता है किन्तु मतदाता बनी निष्ठा का बावार क्या बनाता है ? और बन्तिन निष्ठा का करता है ? की बौकी का प्रयास किया गया है । मतदाता एक पुनाच में किस् बर की मत देता है उसे पुनर पुनाच में की मत देना यह बालिक छात है । पैरी परिकल्पना है कि प्रकाश निष्ठा, अनुष्ठा एवं मुलमान बाति के मतदाता मतदान के प्रति बाधिक लेखन रखते हैं । मतदान के प्रति छातीयता के कारणों की बीच करने का प्रयास किया गया है । लोकादारी तथा पैर बाकि के मुल्यों का बलीमान छात के नागरिकों में किया बराबर प्राप्ता है ? उसे बाकी का प्रयास किया गया है । पैरी यह परिकल्पना है कि छा है का लोकादारी के परिकल्प प्रकाश मुल्य, बलीन एवं राजनीतिक नेताओं द्वारा पिथे जाती हैं ।

नागरिकों का राजनीतिक छात एक और राजनीतिक अनुष्ठा - छात तथा राजनीतिक मान प्रण का परिकल्प है की दूसरी और छा बनी की प्रकाश करनेबाता बातर की है ।



ऊपर के विषय से स्पष्ट है कि प्रत्येक पक्ष ऐसी ही पक्षांशों की प्रभावित करता है तथा उसी प्रभावित की जाती है क्योंकि इन तीन पक्षांशों में अंतर्भाव होती है । नागरिकों का राजनीतिक व्यवहार उनकी मानसिक संरचना (संज्ञान) तथा उपस्थित वातावरण (अनुस्थितिज्ञान) के अनुसार ही की जानेवाली प्रतिक्रिया (प्रतिक्रिया) है । राजनीतिक संज्ञान राजनीतिक पक्षांशों के अंतर्गत वास्तविकता, संसार वास्तविकता एवं घटनाओं के माध्यम से ही पहुँचा है । भारत के राजनीतिक पक्षांशों के नाम, उनकी विचार तथा नीति के विचारों में विभिन्न पक्षांशों की प्राप्त स्थान तथा नीति नीतियों के विषय में किसी जानकारी है ? इसकी सीधी का प्रमाण दिया गया है । राजनीतिक पक्षांशों के द्वारा निश्चित ही किसी वास्तविकता का व्यवहार किया गया है । राजनीतिक पक्षांशों के द्वारा प्रभावित करने का प्रयास किया गया है । यही वह परिदृश्य है कि कश्चित् को चुनावों में विजय प्रदान करने में पक्षों एवं मुठभाराओं का उपयोग, तथा, लोक विरोधी पक्ष, अधिकतम-अधिकतम तथा निरंकुश अंतर्गत व्यवहार है ।

क्या चुनावों के अन्त में संभव है ? क्या निश्चितों में पूर्ण समानता की जाती है ? के विषय में भी धारणाओं का व्यवहार हुआ है । विचार तथा नीति की नीति नीति प्रमुख अन्वयार्थ है ? का नागरिकों की शिक्षा ज्ञान है इसकी नीति करने का प्रयास किया गया है किसे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक अन्वयार्थ एवं राजनीतिक अन्वयार्थ की नीति प्रदान करती है ।

नागरिकों की राजनीतिक संस्थाओं, अधिकारियों एवं उनकी अधिकारों का ज्ञान शिक्षा है ? इसकी अन्वयार्थ के लिए विचार लम्बे है और राष्ट्रपति एक के नव्य की प्रमुख संस्थाओं तथा प्राधिकारियों है अंतर्गत ज्ञान स्तर की नीति की नीति है । यही परिदृश्य है कि उच्च वास्तविकता एवं मुठभारा नागरिकों का राजनीतिक अन्वयार्थ व्यवस्थाओं के नागरिकों की अन्वयार्थ अधिक हुआ है किन्तु राजनीतिक पक्षांशों के अन्वयार्थ का राजनीतिक ज्ञान स्तर एक है अधिक है । यही वह परिदृश्य है कि राजनीतिक पक्ष राजनीतिक अन्वयार्थ के अधिकतम अधिकरण है ।

राजनीतिक पक्ष तथा राजनीतिक अन्वयार्थ के अन्वयार्थ के लिए नीति विचार तथा नीति का ज्ञान निम्नलिखित कारणों है किया गया :-

- [illegible]

- (१०) चीन्हा किसान उमा दीव में एक लिखी जाते, एक वायुवीन विज्ञापिकालय, एक पाठ्यलिखित जाते, वः कम्पटर जाते, पाप हाई स्कूल , वय बुनियाद हाई स्कूल तथा प्राथमिक विद्यालय राजनीतिक वर्गों के बढावा राजनीतिक जापोकरण में योगदान कर रहे हैं ।
- (११) चीन्हा किसान उमा दीव में वस्तीय पुस्तकालय, धाना, विपुल उपेन्द्रा, विज्ञाप कम्प जायाजियाँ, नलून प्रकल्पों, पूरपाण केन्द्र, रेलवे स्टेशनों, फाजियाँ, वस्त्राजियाँ, बीजों, रोजीन स्टेशन जादि की उपस्थिति प्रगति का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं जिन्हें नागरिकों का कम्पल राजनीतिकरण (Politicisation) हो रहा है ।
- (१२) चीन्हा किसान उमा दीव में हुक जात्रि, भारतीय किसान संघ (परिषद्) विपुल रिन्द् परिषद्, कान्ही इस्लाम, बापव उमा, विन्द् उमा, कुजापा संघ, हरिक विपारी कल्याण संघ, मानस प्रचार समिति, लुवाई संघ, व्यापारी संघ, बीड़ी मजदूर संघ, लुकारी समितियाँ, लुकारी संघ, न्याय समितियाँ (Trust Committee) ग्रामीणीय संघ, विपालय प्राम्य समितियाँ जादि वराजनीतिक संलग्न एवं समितियाँ राजनीतिक जागहका का परिप्लव होती है ।
- (१३) चीन्हा किसान उमा दीव में ग्राम पंचायतों , न्याय पंचायतों, विज्ञाप कम्प समितियाँ, टाउन चीन्हा कमीटी जादि नागरिकों की सेवा में काम प्रकल्प करने का कम्पल एवं प्रतिक्रिया दे रही है ।
- (१४) चीन्हा किसान उमा दीव में है कम्पल केवल प्रालय एवं बापव जातियाँ के ही विपालय पुर हैं जो कि कम्पल वर्गों एवं पिछड़े वर्गों में राजनीतिक उमा प्रकल्प की जापताओं के विकास का परिप्लव प्रस्तुत करते हैं ।
- (१५) चीन्हा किसान उमा दीव में जापातकाठ के विरोध में विठे में प्रत्येक विपालय दीव में जापिक उत्पादकी कारणार में बन्दी जाये गी ।

पक्षीय

~~राज्यसभा के सदस्यों के लिए~~

बीछा विकास का दौर में राजनीतिक दलों का जन्म एवं विकास के सम्बन्ध में ठीक-ठीक ढंग के जानकारी, उनके परिवार के सदस्यों का उनके ज्ञान के सदस्यों के साक्षात्कार किये गये हैं विभिन्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विषय में तथ्य मिले हैं। भारतीय जनसंघ, किसान मजदूर प्रभा पार्टी, प्रभा समाजवादी पक्ष, समाजवादी पक्ष, लोक समाजवादी पक्ष, भारतीय ग्रामिण पक्ष, भारतीय लोक पक्ष, पिम्पू महात्मा, रामराज्य परिषद्, मुस्लिम पक्ष तथा रिपब्लिकन पार्टी बाबि के जन्म एवं विकास का इन इन दलों के लक्ष्य प्रमुख, पक्षीय एवं वस्तुस्थिति व्यक्तियों के साक्षात्कार करके तथ्य प्रकट करने का प्रयास किया गया है। राजनीतिक पक्ष विकास के लक्ष्य के लक्ष्य प्रमाणित हो गया उनके विषय में कहता है ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। बीछा विकास का दौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पञ्चक कांग्रेस कीटिया, भारतीय जनसंघ की मण्डल समितियाँ तथा भारतीय लोकपक्ष की राष्ट्रीय कीटिया - इनके गठित मिलीं जिनके पदाधिकारियों में से कुछ १४ पदाधिकारियों का एक संभावित प्रकरण (Random Selection) करके साक्षात्कार किये गये हैं। पदाधिकारियों के साक्षात्कार में प्रस्तावकी का प्रयोग किया गया विभिन्न दो प्रकार उत्तर पक्ष (structured) तथा मुक्त उत्तर (Open end) के प्रश्न रहे हैं। पदाधिकारियों के साक्षात्कार में प्रश्न प्रस्तावकी परिधि में से दी गई है। प्रत्येक पदाधिकारी के साक्षात्कार में दो से तीन घण्टे तक का समय लगा विभिन्न ठीक-ठीक किसी किसी पदाधिकारी के साथ दो बार बैठना पड़ा है।

कैद में है लक्ष्य के लक्ष्य के लक्ष्य राजनीतिक दलों के नेताओं का संभावित प्रकरण करके कुछ १६ नेताओं के मुक्त उत्तर प्रस्तावकी के माध्यम से साक्षात्कार किये गये। नेताओं के प्रत्येक साक्षात्कार में एक से दो घण्टे तक का समय लगा है जिसकी निष्कर्ष एवं प्राप्त करने में लक्ष्य बार की प्रयास करने पड़े हैं। नेताओं के साक्षात्कार में प्रश्न प्रस्तावकी परिधि में से दी गई है।

राजनीतिक समाधीकरण के अध्ययन के लिए जन्म विकास का दौर

है ७६ नागरिकों का वन्द्य (Quota) निर्धारित किया गया जिसमें है ३६ उच्च जाति, २० पिछड़ी जाति, १० अनुसूचित जाति तथा १० मुख्यतः नागरिकों का वन्द्य की निश्चित किया गया और उन है उन ६० मतदान केन्द्रों (Polling Booths) का प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का निश्चय हुआ । नागरिकों के नमूने (Sample) जाति, आयु, शिक्षा, व्यवसाय आदि अन्य बातों पर उन वार्षिक प्रवर्णन है प्राप्त किया गये हैं । अनुसूचित जाति पर प्रवर्णन किया हुआ नागरिक है सादाकार किया गया जिसमें प्रस्तावों का प्रयोग किया गया । प्रस्तावों में उच्च जाति तथा कुछ उच्च जाति के व्यक्तियों के प्रत्येक व्यक्ति किया गये हैं जिसे 'परिचित' व' में दिया गया है । प्रत्येक नागरिक के सादाकार में एक है जो कटे तक का समय होता है । सादाकारों में जाति २६ जून, १९७५ ई० को ही जाने है नागरिकों में जिस एवं क्या का सादाकार व्यापक हो गया किसी अन्य प्रवर्णन किया हुआ नागरिकों का सादाकार देने में अत्यन्त प्रसन्नता की या कुछ प्रस्तावों के उद्देश्य के परभाव 'क्यों नहीं बता सकते' ककार सादाकार की की कर दिया । सादाकारों में जाति के पूर्व १५ मध्य ४४ तथा परभाव में ६० नागरिकों है सादाकार किया गये हैं ।

उपरोक्त है वार्षिक की सादाकार उपकरणों के द्वारा ही सम्पन्न किया गये हैं । राज्य के पदाधिकारियों, राजनीतिक दलों के नेताओं और नागरिकों है सादाकार प्राप्त करने के लिए उनके परिचित व्यक्तियों के पास है पहुँच हो पायी है । सादाकार के निमित्त अनुसूचित तथा वार्षिक नागरिकों है बैठ कराने में व्यापक एवं विचारों के उत्थान प्राप्त हुए हैं । की सादाकार नियमित सादाकार (किया है किसी उपकरणों एवं सादाकार किया जानावाला व्यक्ति जो उपस्थित रहे हैं) में किया गये हैं और इसी वार्षिक की सादाकारों अपनायी गई है । प्रस्तावों के निमित्त में १९७० के इन्डियन की पोलिटिकल पार्टी- ए विस्मयित जाति के परिचित है कुछ पिछड़ा प्राप्त की गई है । प्रस्तावों में एक व्यक्ति की सादाकार एवं है वार्षिक के लिए इसी वार्षिक प्रस्तावों की विवर दिया गया है । प्रस्तावों का प्रमाण (Standardisation) करके प्रयोग किया गया है ।

सन्दर्भ-संकेत:- २१-४ क

- १- राधोबिक्रम शर्मा के विचार-विधान का शब्दा ; प्रौद्योगिकी कल्प के विभिन्न विभाग प्रभाव एवं हस्ताक्षर के पोलिटिकल पार्टी, १९६६, पुस्तक ४२२ पर विचार है ।
- २- ए० हस्ताक्षर, पोलिटिकल पार्टी, १९६६, परिचय के पुस्तक २४-२५ ।
- ३- शर्मा, पुस्तक २५ ।
- ४- ए० शर्मा, पोलिटिकल पार्टी एवं शीला, १९७१, पुस्तक ३७ ।
- ५- डा० राधेन्द्र प्रसाद, अन्तिम मारा, १९५७, पुस्तक २१ ।
- ६- ए० शर्मा, पार्टी पोलिटिकल एवं शीला, १९६७ ।
- ७- ए० ए० शर्मा, दी शुरुआत रविश्वर वाङ्ग शीला पोलिटिकल पार्टी, १९७५, पुस्तक ४५७ ।
- ८- ४ पुस्तक ४०-४१ ।
- ९- ७ पुस्तक १६६ व १६७ ।
- १०- शर्मा शीला, अन्तिम कल्प कल्पिका एवं शीला १९७१ पुस्तक २६ ।
- ११- ए० शर्मा, पार्टी शीला एवं न्यू शीला, १९६७ पुस्तक २ ।
- १२- ए० शर्मा, पार्टी पोलिटिकल एवं शीला १९६७ ; पार्टी शीला एवं न्यू शीला, १९६७ ।
- १३- ए० शी० शर्मा, दी शीला पोलिटिकल शीला, १९६१ ।
- १४- ए० शर्मा, अन्तिम कल्प, अन्तिम एवं ए शीला पार्टी शीला ।
- १५- शीला, दी शीला ।
- १६- ए० शर्मा, पोलिटिकल पार्टी एवं शीला, १९७१ ।
- १७- शर्मा शीला, पोलिटिकल एवं शीला, १९७७ ।
- १८- शर्मा शीला, पोलिटिकल शीला शीला एवं शीला, ए शीला शीला शीला शीला शीला, १९६६ ।

- २०- ए० ए० कृषी, श्री सुभाष रावकर बापू शिवाजी पोलिटिकल पार्टी, प्रीमिअरिअल एंड फायनान्सियल सेक्टर, १९७१-७४ ।
- २१- ए० पी० कां, सुभाष बारायण एंड एसीसिअल, पोलिटिक्ल विसेक्वर एन ए वीके शिवायटी (ए वीके एटी बापू श्री फीथ बापू शिवाजी एन रावराय) १९७४ ।
- २२- ए० के० सुभाष, एसीसिअल एंड श्री बापू शिवाजी पोलिटिकल पार्टी, १९७१ ।
- २३- ए० ए० सुभाष, एसीसिअल एंड श्री बापू शिवाजी पोलिटिकल पार्टी, १९७१ ।
- २४- ए० सुभाष, पोलिटिकल पार्टी, १९७१ ।
- २५- ए० ए० पोलिटिकल पार्टी, १९७१ ।
- २६- ए० ए० एसीसिअल, एसीसिअल पोलिटिकल विसेक्वर, १९७१ ।
- २७- ए० ए० एसीसिअल, पोलिटिकल पार्टी एन ए वीके शिवायटी, १९७१ ।
- २८- ए० ए० एसीसिअल, पोलिटिकल पार्टी : ए वीके शिवायटी एन ए वीके, १९७१ ।
- २९- ए० ए० एसीसिअल, पोलिटिकल पार्टी, १९७१ ।
- ३०- ए० ए० एसीसिअल पार्टी ; पोलिटिकल पार्टी एंड पोलिटिकल विसेक्वर, १९७१ ; एसीसिअल बापू पोलिटिकल विसेक्वर १९७१ ; एसीसिअल एंड पोलिटिकल विसेक्वर, १९७१ ।
- ३१- ए० ए० ए० एसीसिअल एन ए० एसीसिअल - पोलिटिकल विसेक्वर ए वीके एन सुभाष एंड रिसे, १९७१ ।
- ३२- ए० ए० एसीसिअल, एसीसिअल एसीसिअल एंड पोलिटिकल पार्टी, १९७१ ।
- ३३- ए० ए० एसीसिअल एसीसिअल, एसीसिअल एन पोलिटिकल विसेक्वर, १९७१ ।
- ३४- ए० ए० एसीसिअल, एसीसिअल पोलिटिकल - ए वीके शिवायटी, १९७१ ।
- ३५- ए० ए० एसीसिअल, एसीसिअल पोलिटिकल, १९७१ ।

- ३६- ए० डब्ल्यू० चार्स ए०ड सिडनी व सी, कंगलिस पॉलिटिकल क्लब ए०ड पॉलिटिकल डिस्कसि०, १९६५, पु० ७ (पु० ७)
- ३७- सिडनी चर्च, पु० ७, पु० १७ ।
- ३८- सी० ए० वात्सनाथ, कंगलिस पॉलिटिकल, १९७१ पु० २३ ।
- ३९- डा० कल्याण चन्दा : मल्ल वी० चण्ड पु०, वरिमाचन के, राजकीय शास्त्र के आधार, वि० वी० चण्ड, पु० १३३ ।
- ४०- डा० चिन्मय, वास्तुनिक राजकीय विचारधाराएँ १९६१, पु० २, १६-३०।
- ४१- ए० डब्ल्यू० जी०, रि० पॉलिटिकल पा०, १९३४, पु० ३० ।
- ४२- मी० चारिमा, रि० वी० चण्ड पॉलिटिकल क्लब ए० चण्ड सी० सी०, मल्ल २२-२३, १९६६, सी० चण्ड, पु० ३१ ।
- ४३- कंगलिस चण्ड वी० वी० चण्ड वी० चण्ड (२१ पु०, १९७४ जी० वी० चण्ड)
चण्ड १ पु० १ ।
- ४४- भारतीय चण्ड वि० चण्ड वी० चण्ड, पु० २-३ ।
- ४५- वी० चण्ड, वी० चण्ड, वी० चण्ड, वी० चण्ड, वी० चण्ड, पु० ३४ ।
- ४६- ए० वी० चण्ड, पॉलिटिकल क्लब वी० चण्ड वी० चण्ड, १९७५, पु० २५२ ।
- ४७- ए० वी० चण्ड, पॉलिटिकल क्लब, १९६५, पु० १३४ ।
- ४८- वी० ए० वात्सनाथ, कंगलिस पॉलिटिकल, १९७५ पु० १७२ ।
- ४९- वी०, पु० ६४ ।
- ५०- ए० ए० चण्ड, पॉलिटिकल क्लब, १९७२, वी० चण्ड
- ५१- वी०, पु० १३३ ।

हॉलिया विधान का बीच में राजनीतिक वर्गों का उद्भव तथा विकास

हॉलिया विधान का बीच की रेणुमि पर ऊपर के हाथ द्वारा की गया तात्कालिक अनुपातों के आधान के लिए राजनीतिक वर्गों का अभिन्न सीमा रहा है। स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रथम कार्य के प्राचीन बीच में सर्वोच्च हॉलिया की ही स्थापना की। स्वतंत्रता के पश्चात् कांग्रेस की कार्यमि की हॉलिया की। विधान मजदूर प्रजा पार्टी, प्रजा समाजवादी पक्ष, समाजवादी पक्ष, श्रम समाजवादी पक्ष, भारतीय प्रान्तीय, भारतीय लोकतन्त्र, युवा समाज, रिपब्लिकन पक्ष, समाजवादी पक्ष, रामराज्य परिषद्, भारतीय जनता, हिन्दू महा समा तथा नवीनता प्रजा पार्टी बाकि राजनीतिक वर्गों के प्रयासों निम्नलिखित - धर्मोपनिष में अपने पक्षों का परिचय करी रहे हैं किन्तु कारण प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

भारत की व्यापार संस्था, प्राकृतिक गुणवत्ता और अवलोकित संस्कृति की कीर्ति-श्रीमती विश्व पर में विस्तीर्ण हुई किन्तु प्रत्यक्ष उपलब्ध, पक्ष एवं समाज के निमित्त एक, पूरा, यत्न बाकि के वाक्य एवं वाक्यनुरूप। पराधीन परीक्षा में अपने अपने देशों में छोटकर भारत के कार्य का प्रचार किया। भारतीय राज्यों के पारस्परिक संबंध के कठिनता तथा यत्नों के बीच प्रयासों के पराधीनता का पुन प्रारंभ हुआ। यत्नों के माध्यम, युद्ध, अन्य एवं भारतीयता तथा भारतीयों के भारतीयता और यथासंभव प्रतीकार विभिन्न रूपों में किया। व्यापार की बाड़ में अंग्रेजों ने आसनों की छलकर अपना हाथ स्थापित किया और भारत अधःपराधीनता में पड़ने लगा। अंग्रेजी हाथ के युक्ति के लिए भारतीयों ने अनेक प्रयास किये जो भारतीय स्वतंत्रता के प्रतिपाद का स्वर है। भारतीय परिषद् १८५० ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के स्वतंत्र में प्रकट हुआ किन्तु एकछा ही नहीं पड़ी परन्तु अंग्रेजी हाथता की प्रकट व्यापार पक्ष। भारतीय समाज की स्थापना की उत्पत्ति, पिछा निर्माण करने तथा पक्षित युद्ध-भूमि

काने के लिए ३१ दिसम्बर १८८५ ई० की मिस्टर ए० जी० ब्रुस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वन्दना किया । १८८८ ई० में वार्ड मूठ ; १८९२ ई० में श्री जीव पन्ड वन्दनी और १९१० ई० में विजय केशव की वन्दना^१ में प्रयाग के बाबा भू नाम पर चीनी सम्मेलन हुए । १९०५ ई० के बंग-का ने भारतीय मानव की किरुण कर किया और भाव का प्रकट की राष्ट्रीयता की धारा में बह गया । महाभारत काट में श्री शंकरा नन्दचरण^२ रही वह स्वाधीनता के धर्म में पीढ़े की एक लकी थी । शंकरा तत्परीत के कैलापुर प्राथमिक पाठशाला के सम्माननीय अध्यापक की पं० टीकाराम भिवाडी निवासी कुशीपुर (रामनाथ पुर रेली स्टेशन के परिण) रही कालक्रम में प्रयागि हुए और उन्होंने शक्ति कार्य प्रारंभ किया और परिणामस्वरूप किया है, श्री कि शिष्टाद्वैत पीठ का था, निष्ठादि कर मिले गये । राष्ट्रीयता के प्रकट पुनारी पीठ टीकाराम भिवाडी का का की पुनः वात्सा की वापस करने में भिवाडीर लय गये । शंकरा विमान का रीत के कर्तार प्रान है । उनका रक्त धर्म है तथा बीकान के लिए श्री वल नौल माछीय द्वारा संस्थापित माछी भवन में कार्यरत हुए ।

शंकरा विमान का रीत के कुशीपुर प्रान है कर्तारों के उत्पीड़न के कारण श्री मुंवर की के वन्द के पश्चात उनके पिता ने प्रयाग में वाकर लरण ही । श्री मुंवर की का परिणम पं० टीकाराम की भिवाडी है जू १९०६ में भारतीय वल पुस्तकालय में हुआ । श्री मुंवर की में वार्ड भाव संस्था, 'बेबापी' तथा 'कैटेस्वर' काचार का है तथा पीठ टीकाराम की भिवाडी की लीति है राष्ट्रीय कैला वापस हुई । यह राष्ट्रीय कैला की किरुण होने का अवसर महात्मा गांधी के शानिष्ठा में जू १९१६ है १९२२ तक वावसती वाचन में भिवा । वावसती वाचन में श्री पीठ काचार काट नेकह है श्री मुंवर की का परिणम हुआ ।

हील्ट एक्ट के अनुसार बंसाय के प्रसिद्ध कैलाकन शक्ति^३ द्वारा वन्दी काये गये मिले विरीय में किताब का का १३ अप्रैल, १९१६ की शंकरावाज वाच में हुई और काट कीकावर ने वीक्षण नरनेव किया । यह मुंवर उत्पाकाण्ड का काचार का का का वन्द, वाचन के प्रति किरीर की प्वाछा मङ्गे और वावसती की वाका का है - श्री वन्दःकरण में वाका कैर पीठ टीकाराम की शंकरा

देवाबाद ; श्री बालिकावासी - पीछे का पूरा ; श्री गिरवानन्द- देवाबाद ;
 श्री रामगुप्तर मिश्र - बल्लभपुरी ; श्री राम गुप्तर मिश्र- जवाहरपुर ; श्री जाली बरण
 मिश्रा- पुष्पपुर तथा अन्य कार्यकर्ता का भी । इन कार्यकर्ताओं की सक्रिय रहने
 के लिए पीछे का स्थान जहाँ पीछे में लोक सेवाओं का वागमल होता रहा बिना मुख्य
 रूप से उल्लेखनीय उत्साह बल्लभ नारायण पटेल व कि मुन्नाकाठ बहाल जू १९२४ ई०,
 श्री पुनःप्रमाण धाम्याल जू १९२५ ई० ; महात्मागांधी , १९ नवम्बर, १९२७ ई० +
 (जब श्री मुन्ना का ने उन्हें होने की कसौटी का पान किया) ; श्री मनीषीकाठ नेचल
 परिवार ; पीछे का मनीष मनीष मनीषीय परिवार ; श्री मुन्नाकाठ टण्डन ;
 श्री जाल बहाल जाली एवं उत्साह मनीष प्रमाण हैं ।^१

१२ मार्च १९२० ई० की महात्मागांधी ने मनीष काग्रेस के विरोध
 में प्रसिद्ध जाली यात्रा की , उस समय श्री मुन्ना का उनके बाहर मनीष में मिले और
 मनीष बालिकावासी करने की मुन्नाकाठ प्रमाण की । वहाँ से छोटकर पीछे जवाहर काठ
 नेचल तथा श्री मुन्नाकाठ बाग टण्डन से मिलकर कसौटी मिश्र की । पीछे का
 बल्लभ देवाबाद पूर्व और कार्यकर्ताओं में जल बागी । १४ अप्रैल जू १९२० की
 प्रमाण:काठ बल्लभवासी के साथ मुख्य मिश्र का बल्लभ नेचल श्री मनीष काग्रेस, श्री मुन्ना का
 एवं श्री मुन्नाकाठ की कर रहे थे । उसे बल्लभ के लिए प्रमाण मनीष एवं अन्य बल्लभ के श्री
 मनीषी कार्यकर्ता एवं सेवा बागी थे । जब मुख्य पीछे का बाजार के परिष्करी और
 मनीष काग्रेस पर बल्लभ का कीमती जल नेचल ने मनीष पर टीका जवाहर काठ
 काग्रेस की करने का मिश्र का बल्लभ और थे जल कलापी कलाकर मनीष जल में बल्लभ
 हुए । यह मनीष पीछे का मनीष के बल्लभ में श्री नहीं बल्लभ मनीष के बल्लभ में
 मनीषकाग्रेस जल रहती है । पीछे का सेवा मिश्रकाठ की गयी । उत्साह का जल
 काग्रेस और १६ अप्रैल जू १९२० की पीछे का रामबाग श्री दूरी ; श्री बीमाका बाग्यी व
 श्री कसौटी बल्लभ मिश्र (बल्लभ व० टीकाकाग्रेस की) के नेचल में कार्यकर्ता बली
 बल्लभ की बल्लभ जल जल कि नयी जल जल श्री मनीष कि पानीदार हैं ।

श्री कार्यकर्ता केत नहीं का ली है के बल्लभी जलिकाओं के बल्लभकाठ,
 जब बल्लभकाठ , बल्लभकाठ और बल्लभी बल्लभ बल्लभकाठ का बल्लभकाठ जल में जल

की सरकारीय सरकारीयार ने किया की कि कश्चित्त का नीतिक की नहीं बाधित कार्यो की था । कश्चित्त कार्यो पर कार्योकार्थी की केन्द्र हुई और कश्चित्त हुआ कि पिछापीठ की काठा कच्छा पिछाया व थाय । परन्तु काठ के मुख में कार्यो की ? की परन्तु थाय- बुधियपुर , की मुख की के पार्श्व इस पुनित का में बाधित के लिए बाधित हुए । के के प्रसारण बुधित के कश्चित्त कश्चित्त में की का मध्य के कश्चित्त बुधित की और पिछापीठ के जाने पर काठा कच्छा पिछाया एवं ' नी के ' का पारा लाया । पिछापीठ कश्चित्त परती के साथ सरकारीय कश्चित्त हुआ और नीटार में केन्द्र का का का का की हुई । कीपारी की बाधित केन्द्र हुई और प्रतीकार के रूप में कश्चित्त कश्चित्त में कश्चित्त पर कश्चित्त परकाये, कश्चित्त बुधित की का और कश्चित्त कश्चित्त में कश्चित्त काया । काय कश्चित्त बाधित में कश्चित्त का बाधित केन्द्र की कश्चित्त विषय में कश्चित्त है कश्चित्त बाधित की नीय कश्चित्त बाधित में कश्चित्त के कश्चित्त में की कश्चित्त की । काय में १९३१ के काय कश्चित्त बाधित में कश्चित्त का कश्चित्त हुआ । इस बाधित में कश्चित्त बाधित की कश्चित्त कश्चित्त ने कश्चित्त काया ।^१ कायी सरकारीय कश्चित्त का १९३१ में की जाने है कश्चित्त कश्चित्त बाधित सार्थ की का और की राजनीतिक कश्चित्त की कश्चित्त किया का ।

काय सरकारीय कश्चित्त का १९३५ ई० में का कश्चित्त अनुसार का १९३७ में कश्चित्त हुआ । नीय पार नीय कश्चित्त कश्चित्त, कश्चित्त एवं नीय कश्चित्त है प्रतीय का के लिए कश्चित्त की और है की काय कश्चित्त की कश्चित्त प्रतीय नीय हुए । कश्चित्त विरीय में कश्चित्त कश्चित्त काय कश्चित्त कश्चित्त नीय काय नीय में काय । प्रतीय कश्चित्त के अनुसार काय ने कश्चित्त कश्चित्त काय की और कश्चित्त नीय ने काय की काय किन्तु राधिका का कश्चित्त नीय नीय कश्चित्त कश्चित्त काय काय काय काय हुए । काय है कि २०१- २० कश्चित्त नीय नीय की काय काय है । नीय का के लिए कश्चित्त की और है की काय नीय काय नीय प्रतीय नीय नीय है किन्तु सरकारीय का कश्चित्त कश्चित्त के कारण नीय की कश्चित्त काय पर की कश्चित्त नीय प्रतीय हुए कश्चित्त विरीय में सरकारीय कश्चित्त काय नीय काय काय नीय नीय काय हुए । इस कश्चित्त में की कश्चित्त काय

सायलवाड, श्री विश्वम्भर नाथ पाण्डेय, श्री राधेश्याम पांडव, श्री देवकीय नाउवीय
एवं श्री श्रीदेवीय नाउवीय - एही प्रमाण नगर के हल हल निवासीयाँ के उनीय शक्ति
विमान एना चीज से दूर ।

उपर प्रश्न में उल्लिखित की सरकार की विधि की बात बजापुर की आखी ने "बीच दिया" जमान की जमान पर प्रश्न है उल्लिखित विधानों की जमान पर करने में प्रश्न का हल है । द्वितीय विचार मुद्र में बिना भारतीय राष्ट्रीय उल्लिखित है परामर्श जिन भारत की मुद्र में मनीष के विचार में की उल्लिखित है तथा पर है बिना । भारतीय जमान के मनीषों की देखी जमान जमान है जिन बजापुर १९३६ में उर उल्लिखित द्वितीय उल्लिखित जमान पर जाये जाय में पं० बजापुर उल्लिखित जमान जमान जमान उल्लिखित जमान जमान है । "

हिन्दु धर्म की अवस्था है काठिन्य की पुनः अधिक
वापसीपूर्ण वापसीज करने के लिए बाध्य होना पड़ा । अस्त १८५२ ई० में ब्रिटिश
भारत होशों वापसीज पूर्ण के में प्रारंभ हुआ । होशिया विमान का बीच की
पल्ले है ही अविनाश सत्याग्रह के माध्यमों है वापसीज के प्रचार की बढ़ावा रहा
विश्व की केसाव पाण्डेय- उदात्त के कारावास काल में उनके उच्छाते पुन की पूर्व
प्रभाव पाण्डेय बाहु १५ वर्ष ५ मास की वापसीज पुन पुन काटने कृष्ण फल
कापशी मंगलवार जैत १८६० की ही की । वह पुन विचार फल स्वर्ग में एक
हविष्य है । होशिया बाजार है उदात्त तक विविध कृष्ण का नामकरण स्वीये
पूर्व प्रभाव पाण्डेय ^{रोड} हुआ है ।

१९ वनस्पत १९४२ को सेवाबाद बाजार के एक मुख्य किताब
घन ऊंच के साथ श्री काली की त्रि - पीठरी के चित्रों में "वन्द्यमान विन्दाबाद" के
कनकेशी नारों के साथ कहा की ७टी० रोड की बाँर । की० टी० रोड पर पहुँचकर
परवारी हाथ कीले पर वाज्रमण किया, पागवानी परवावे, जिह्मिया प्रपा हीटे
कनी पाछा के मुख की नी । सेवाबाद लेवे स्टेशन पर पहुँचि कहा पर भी नारा-
वाहिया जियाये की विजय सूटा गया टिकटों का डेर श्री सेवाबाद देहरादानी-सेवाबाद
के कुर में हाउ किया गया।^६ ऊम्हा का ऊंच बाजार बापत जाया तब दाणिक

शास्त्र परामर्श की व्यवस्था पूर्ण ने हीनता विनाश के ही उत्पन्न हुई थी वही
 बातें हैं विनाश प्रणिज में ही मारा ।^६ १७ अगस्त, १९४२ की ही महाबन्ध पाठक
 के बड़े भाई की ही मृत्यु (धानाध्यक्ष) मरकर बरतित बाजार लाये । तीन दिन है परिवार उस
 मृत्यु की महाबन्ध पाठक का पर पृथ्वी का आचार मान्य हुआ । ही पाठक की बीका
 करके । वही अपराधन बरतित पृथ्वी की बाँर पानेदार की बाँह निभ गया । पानेदार
 ने हीनता बर्ता करके के बाप की पाठक की के बरतित की बर्ताकर पीछ की जात
 है उल्टा उल्टा किया, बार बार ऊपर नीचे करवाया, जाँहों है प्रहार कराया
 जिसके फलस्वरूप हीनता बर्तित ने मुँह है निभकर बाँर पर छिट कर मुँह की
 बाँह पैदा कर दिया । बाँहों की बाँहों में बाँह की बारा फूट पड़ी बाँर का हीनता
 की विचारने का कि वह प्रियों की यह बर्ताकर बर्ता करके ? हवी याता पर
 ही का ही पाठक ने बर्ता बर्तित बाँगी का पानेदार ने पीछी है मारने का बाँह दिया
 कि पर ही पाठक की बर्तित । पानेदार की ही पाठक की की बर्तित पर विचार
 की गया का उन्हें बर्ता मुँह करके वही विचारों के बाप हीनता पाने पर बर्तित
 दिया । बाप की यह पीछ का हुआ ही महाबन्ध पाठक की याता-सुवि में
 लड़ा है ।^{१०}

पुलि बर्ताचार की बाँधी बर्तित ली । कुच के लिए
 पाने मारने का कार्य पुलि ने प्रारम्भ किया, व्यापारियों के परिवारों पर जाये
 जाकर उनकी पत्नी-बेटियों की प्रतिष्ठा की बाँह पृथ्वी बाँर ली पुलि बर्तित
 पर ग्राम हीनता मारने ली । २४ अगस्त, १९४२ की अन्त ग्राम में पुलि ली ग्राम
 बाँहों में अन्त हीनता हुआ । पानेदार की ही अन्त प्रहार पाण्डेय ने ही
 जाँह मारा का ली पिता की पीछी है ही पाण्डेय के प्रारम्भ है लिया ; का
 बर्ता व्यापारियों की ही पीछी ली बाँर तत्काल की बाँध नारायण पाण्डेय,
 की विनोद प्रहार मुँह, की ही नारायण पाण्डेय, की आनन्द पाण्डेय बाँर
 की अन्त नारायण पाण्डेय बाँधी व्यापारियों की जिन्हीं बाँह ली ही फल
 दिया । बाँधी व्यापारियों की बर्तित अन्त पाने पर है बाँध गया बाँर उन्हें
 बाँर पीछ कर १६ व्यापारियों की अपराधी पीछित कराया । अन्त ही अन्त

यस पीछा कमाहर ऊछ नैरुठ जगन्म नक बाये उस की पाण्डेय के अग्रिम कार्य
हस्तापारों की बाछिज पं० नैरुठ के करों में लापित किया किसी कुछ नाया है ।
की कुछ की कहां पर पति प्रस्था रहे ।

पीछा किया उस पीछ है अग्रिमी प्रस्था की
निरम्य करने के लिए कर्मकाय बाये और प्रमु कर्मकायों है परानर्त किया, कर्म
स्यानों पर लापों के बायीज किने गी । परति कीम कमाहर पर की एक ला पुई
उछों की केलाप पाण्डेय के लापों ने जेपी बायाय किया किसी की कुछ की की
अपिस्त में उछों जीव की बाया और कष्ट की पुवा । अन्तरीमस्था की केलाप पाण्डेय
के लाप स्याम, काराबाय ऊछ में कर्म पुम की मुत्तु, पं० कमाहर ऊछ नैरुठ परिवार
है कर्म, उछ प्रिस्ता और विरोधी कहां के कर्म प्रभाव के कारण की अग्रिम प्रस्था की
पीछित की छे । की केलाप पाण्डेय बाहुक, पाछी, कमाहर कुछ, कमानार
उपा पं० नैरुठ के जगन्म नक है । स्यापीय प्रभापी, स्यापी छै एक बार ककर की
बाया कर्मकाय की पाण्डेय की कर्मकाय नहीं है किसी हुए । यह पीछा-अग्रिम का
स्थापित ऊछ पा ।

की पुर्नकाय विवारी - मुम्बिपुर- की अग्रिम
है ऊ १९३० है ऊछ में रक्तात्मक कार्य की और की पुवर की की प्रेरणा है छै ।
की पुवर की ऊ १९५२-५३ तक में ही पीछ है विवायक रहे । बाय के निमित्त प्रान्त
बाहुक की मुम्बि की बाया रायकाय है पीछा जीवीनिक विवाय के लिए प्रमुक्त पुई ।
१३ जुलाई १९५४ ई० की पं० कमाहर ऊछ नैरुठ ने बायुमान है बाहर जीवीनिक विवाय
का विजान्याय किया । की विवारी की इस विवाय के विकास के लिए कमी सम्मका
के बाय छै कि छै उछ ' पीछा के बाछीय ' के ल में सम्मिका करने छै ।
पुव ऊछ में कर्मकाय का रति का कर्मकाय नाम स्यापीय कष्टर कठिब के विकास में
कर्मकायों के प्रत्य है ला । पं० नैरुठ की मुत्तु के पश्चात प्रभाव पड़ी की ऊछ कमापुर
कास्की के क कर्मकाय बाया की बायी बाहुक विवारीकाय का विजान्याय
१३ दिसम्बर, १९५४ ई० की पुवा । की कास्की की की बायनिक मुत्तु है इस पीछा
का विकास कर्मकाय की कमा है कर्मकाय प्रभाव प्रारंभ है ।

पीछा कमाहर ऊछ नैरुठ के निमित्त है रिक्त लापना

उत्पन्न करने में असमर्थ सिद्ध हो गई है । श्री रावेन्द्र प्रसाद मिश्र जी १९३३ के किसान तथा निवासि में लिखी नहीं हो उसे कृषि कलकत्ता एवं हरिन कलकत्ताओं को विशेष वाक्यान्वित करने का प्रयास किया । श्री यमुना प्रसाद पाण्डेय की एक विज्ञापित है श्री कृष्णाईलाल मिश्र-कलकत्ता के एक स्थानीय श्री राविकान्त पाण्डेय के कार्यों के साथ यह रही है । श्री कलकत्ता प्रसाद केव की कलकत्ता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । कलकत्ता के स्थानीय कलकत्ता में श्री कलकत्ता, कलकत्ताओं एवं कलकत्ताओं की कलकत्ता रही है । कलकत्ता किसान तथा के निवासि में प्रयासों करने की चेष्टा में कलकत्ता कलकत्ताओं प्रारंभ हो गयी है । कलकत्ता की प्रतिष्ठा की पुनः स्थापना करना देवी होर है ।

=

१९३३, १९३३ ई० के पूर्व कलकत्ता किसान तथा सीध में कलकत्ता भारतीय राष्ट्रीय कलकत्ता के कलकत्ता कलकत्ता श्री श्री राविकान्त कलकत्ता का वाक्यान्वित नहीं हुआ । भारत स्वतन्त्र हो जाने के परभाव कलकत्ता कलकत्ताओं की कलकत्ताओं तथा कलकत्ता में कलकत्ता उत्पन्न हुआ । कलकत्ता भारतीय राविकान्तों में कलकत्ता, कलकत्ता तथा एक कलकत्ता के साथ कलकत्ता कलकत्ता कलकत्ता राविकान्त कलकत्ता का उत्पन्न हुआ । देश, प्रदेश, राष्ट्रीय एवं कलकत्ता कलकत्ता पर राविकान्त, पाण्डेय, कलकत्ता एवं कलकत्ता कलकत्ता पर कलकत्ता एवं कलकत्ता कलकत्ता तथा कलकत्ताओं में कलकत्ता के लिए कलकत्ताओं के कलकत्ता में राविकान्त कलकत्ता किया । श्री राविकान्त कलकत्ता कलकत्ता, नीतियों एवं कलकत्ताओं में कलकत्ता, राष्ट्रीय एवं कलकत्ताओं पर कलकत्ता के प्रभाव के परिवर्तन करते रहे और कलकत्ता कलकत्ता की कलकत्ता ।

कलकत्ता मजदूर प्रजा पार्टी

भारतीय राष्ट्रीय कलकत्ता के पूर्व में कलकत्ता कलकत्ता पार्टी का भी कलकत्ता था जो ने कलकत्ता कलकत्ता के परभाव कलकत्ताओं के नाम के कलकत्ता । १९३३-३४ में भारतीय राष्ट्रीय कलकत्ता के कलकत्ता कलकत्ता १० पी० कलकत्ता तथा कलकत्ता कलकत्ता के प्रभाव में कलकत्ता कलकत्ता प्रभाव नहीं है । कलकत्ता एवं कलकत्ता में कलकत्ता के लिए कलकत्ता प्रारंभ हुआ कलकत्ता में कलकत्ता की कलकत्ता हुई । कलकत्ता कलकत्ता की कलकत्ता का कलकत्ता कलकत्ता मजदूर प्रजा पार्टी कलकत्ता कलकत्ता

वर्धुष्ट गांधीवादी कार्यकर्ता ने वहाँ प्रवेश किया। चौक्या किसान उमा चौध ने श्री देवी प्रसाद सिंह (श्री बोटू सिंह) - पीपसा जू १९५२ के सामान्य निर्वाचन में प्रत्यादी हुए। श्री सिंह जेल के प्रमुख कर्मचारी के तत्वा जू १९५२ के पिछले परिणाम निर्वाचन में बरीच चौध के उत्तम निर्वाचन हुए थे। किसान नकुर प्रता पार्टी की कार्यकर्ता वहाँ के बाजार पर श्री कल मिठे की प्रत्यादी पराजित हो गया। प्रत्यादी की पराजय के साथ वह का वन्द हो गया।

प्रता समाजवादी क

जू १९५२ के भारतवर्ष के सामान्य निर्वाचन समाजवादी क तथा किसान नकुर प्रता पार्टी के लिए एक बाधित एकछाये गल-तारा कि पूर्व क चौकी वहाँ ने पिछले २५-२७ डिसेम्बर, १९५२ ई० की बन्द में जूका क का प्रता समाजवादी क नाम रखा। भारत प्रथिद नेताकण - श्री बाबाय नरेन्द्रन, श्री बाबाय कै० बी० पूजानी, श्री कल्याण नारायण, श्री कलक नीला एवं डा० राम कौशर लीला, श्री कल्याण कलक बादि कलामिक समाजवादी की उत्तम कलक एक मंच पर ललक हो की। प्रता समाजवादी क का प्रताग में उम्मील हुआ किर्ल किसान नकुर प्रता पार्टी के प्रमुख कल श्री बाकिराम बायकवाठ के साथ चौक्या किसान उमा चौध के श्री राकिराम बाण्डेय- ऐला, श्री कलर बाण्डेय, बरीपुलीबा, श्री रायकल बाण्डेय- बुनिपुर, श्री कल्याण बाकि बन्दारी- रलीपुर; श्री रामकल बायकवाठ- पूठापुर; श्री कलराम बायक- कलीखुर, श्री कलाम सिंह बायक कलीक- कलीखुर; श्री कलका कलाम मीर - बरीच एवं श्री कलीकल विन्द- पूर्व बादि ने क में प्रवेश किया। कलाम व कि कलाम कल नामक सामाजिक उत्तम के उत्तम एवं कार्यकर्ता की वहाँ कलामिक हुए की जू १९५२ के सामान्य निर्वाचन में कलाम कलाम कलाम रही थे। चौक्या किसान उमा चौध में जलिक के कलाम के क में कल कल कलाम।

जू १९५० के सामान्य निर्वाचन में चौक्या किसान उमा चौध के श्री रायकल पूरे - बाबायारा प्रता समाजवादी क के प्रत्यादी पीनित हुए की कि श्री नुर की के कलीकी की रहे। क के कार्यकर्ता एवं श्री बाकिराम बायकवाठ

ने कमर परिभा किया किन्तु प्रतीय स्थान ही रह गया । कठ में जंग, रूडि एवं प्रियादीक्षा की बनाई रहने के लिए पुनर्गठन, एक में साथ वास्तविक प्रारंभ किया गया । प्रिय की राखिराम पाण्डेय ; श्री कर्कराम पाण्डेय ; श्री रामलाल बायलवाड ; श्री कर्कराम कर्कराम सिंह पाण्डेय एवं श्री कर्कराम बाबिर बंशीर के नेतृत्व में कई कभी कार्यकर्ता कारागारों की वीर २० दिन के बाद वही बूझ कर । कारागार है मुक्त होने पर श्री कर्करामपाण्डेयों ने प्रिय कार्य प्रारंभ किया^{१४} वीर ६ कर्कराम कर्कराम बनाये । बाद के वर्षों में श्री कर्कराम कर्कराम नहीं की ।^{१५} कठ के नती प्रभाव है श्री स्वाकंदर दिवारी - बरवा, श्री कर्कराम दिवारी - बरवापुर, श्री कर्करामपाण्डेय बिरांथ ; श्री कर्कराम बारायण दिव्य - बीटी ; श्री मुन्नालाल बायलवाड - कर्कराम ; श्री बाबिरपाण्डेय दिवारी - बरवा ; श्री कर्कराम प्रवाड दिव्य - बरवा ; श्री कर्कराम दिव्य बरवा ; श्री कर्कराम दिव्य - बिरांथ बाबिर कर्कराम पाण्डेयों ने कठ में प्रिय किया । श्री कर्कराम पाण्डेय - बरवा वीर - कठ के बंशी रहे ।

एक पुनर्गठन में कम की प्रियादीक्षा सिंह ने उधर प्रिय कर्कराम के उधर पुनर्गठन की कर्कराम मुक्त की बरवा किया एक प्रिय पर में श्री सिंह का स्वागत प्रारंभ हो गया । रीखा में १२ काटक बनाये गये वीर पर कर्कराम कर्कराम के बीच कर्कराम स्वागत हुआ । कठ का श्री कर्कराम श्री मुन्नालाल कर्कराम कर्कराम - कर्कराम ने की । कठ १९५० के ग्राम बंशीरों के पुनर्गठन में कठ में कर्कराम प्रियादीक्षा^{१६} की कठ किया वीर कर्कराम कर्करामों की निजी । कर्कराम विगत कठ है श्री मुन्नालाल बायलवाड कठ प्रिय पुने की वीर रीखा विगत कठ है श्री कर्कराम बायलवाड विगत कर्कराम के कर्कराम विगत हुए । एक वर्षों की प्राप्त करके कठ की कठ करने के लिए कर्कराम कार्य फिर की ।

कठ १९५२ के सामान्य विगत के लिए कठ में श्री राखिराम पाण्डेय की प्रियादीक्षा बनाया बाबिर किन्तु कर्कराम की वीर है श्री कर्कराम पाण्डेय की बंशीरों की कर्कराम कर्कराम की राखिराम पाण्डेय ने प्रियादीक्षा बनाया कर्कराम कर किया । कठ ० राखिराम कर्करामों ने कर्कराम कर्करामों की पार्टी की कठ कर किया था कठ; कठ कठ कर्करामों प्रिया कर्करामों कठ के कर्कराम नहीं रहे । श्री राखिराम पाण्डेय का प्रियादीक्षा बनाया कर्करामों की कठ न कठ ।^{१७}

प्रत्याशी न करने के प्रमुख कारण की शाहिराम बायलवाह की श्री रत्नाथ पाण्डेय
 है स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रीय भिन्नता तथा बाह्य जुनाथ में करने देने का वक्त उस
 की बायलवाह का श्री शाहिराम पाण्डेय पर उत्कार हुआ रहा ।^{१६} बाह्य दाणा
 में स्वीकृत करीब की प्रत्यक्ष पाण्डेय-सीध्या की वक्त में वक्ता प्रत्याशी स्वीकृत किया
 किया तब ही एतद् पूर्व वक्त है नहीं था । श्री प्रत्यक्ष पाण्डेय की कठिण की प्रत्याशिता
 में वक्तव्य एतद्भित्ति व्यक्तियों का परीक्षा करने की भिन्न किन्तु जुनाथ परिणाम में
 वक्त का स्थान सुतीय ही क्या काकि ' ५० में प्रतीय था । वक्त की पर्याप्त बाबाद
 पड़ना बाह्य' सीध्या तब के करने कार्यकर्ता की कठोरता बायल के साथ आत्मवादी
 वक्त के कलामी ही नहीं है । प्रका आत्मवादी वक्त पराकाई है व्याकुल होकर आत्मवादी
 वक्त है विषय की पुनार करने का ।

आत्मवादी वक्त

बाचार्य श्रीराम केन की मृत्यु, श्री कव प्रमोद नारायण का
 राजनीतिक सम्युत्तर और बाचार्य के० बी० दुपजानी की राष्ट्रीय विचारिक तथा श्री कलाम
 मेरुता के धीमा आजीव का आत्मवादी का जाने है आत्मवादिता में निराशा व्याप्त
 हो गयी।^{१७} डा० राम मोहर सीध्या ने प्रका आत्मवादी वक्त है वक्तव्य होने के कारण
 पुनः आत्मवादी वक्त की वीरिका किया । एतद् १९६२ के सामान्य निवापन में सीध्या के
 लिए डा० सीध्या वं० नेहरू के कदा कृष्णुर एकीय दीव है किन्तु एक वीर सीध्या
 निवापन विमान का दीव है के प्रत्याशी हुए और विमान का के लिए श्री रत्नाथ
 सिंह बायल- वीर ही कि एतद् १९६२ में विज परिषद् का जुनाथ वीर है, प्रत्याशी
 हुए । श्री रत्नाथ सिंह बायल ५२ और ५३ में ही सीध्या विमान का दीव है प्रत्याशी
 होना बासी है । श्री रत्नाथ सिंह बायल परिषद्, राष्ट्रीय एवं पिछड़ी बाति के
 लिए संघर्षरत नेता रहे । श्री पुनर की विमान परिषद्-कदम्बता है प्रतीय हो चुके
 है वक्त कारण ऊनी कठिण है वक्तव्यता स्वाभाविक की और उक्त प्रत्यक्ष आत्मवादी
 एवं आजीव प्रत्याशी के करने है हुआ । एतद् अनुकूलता होने पर भी आत्मवादी
 प्रत्याशी की पराकाई की होना पड़ा किन्तु प्रतीय स्थान, वक्तव्य प्राप्ता हो गया ।

छुआ समाजवादी क

सन् १९६२ के सामान्य निर्वाचन के परिणामों से प्रभा समाजवादी क तथा डा० जील्ला द्वारा संघात समाजवादी क दोनों की पारस्परिक कृपा से नकार पाति हुई और पुनः उन्हा की प्रतीती हुई । सन् १९६३ में के सन् १९६३ की के प्रभाव से दोनों क भिन्न छुआ समाजवादी क नामकरण किया । छुआ समाजवादी क का जाने पर बाग्लाट पर के राखि राम बाण्डेय के नेतृत्व में छुआ के पांच कार्यकर्ता कुछ वान्दीज में ब्रह्मर पुर और के नये पुनः कुछ दिनों के परभाव हटकर वाये ।^{१६} पुनः छुआ में काय वान्दीज का विमुक्त का और के राय नारायण सिंह ने तल्लीन कम प्राविण में बाकर बाणज दिया और ६४ व्यक्ति के नये । ये छुआ वान्दीजगरी २०-२१ दिन के परभाव हटकर वाये ।^{२०} दोनों कों के कार्यकर्ता की परस्पर दूरी मिटने ली । के जानेवालों में के के राखिराम बाण्डेय, के ब्रह्मराम बाण्डेय, के ब्रह्मर बाण्डेय, के रामजल बायल्लाठ, के फरीद बहादुर बाण्डेय, के सुराज्जिठ - भिनीट, के कहराम सिंह किराधि, के पुनार सिंह - सुज्जा एवं के बापति मिनाठी बहियापुर प्रसुत रहे ।

कुछपुर छुआ निर्वाचन दोष का उप ज्ञात नवम्बर ६४ में हुआ किसे छुआ समाजवादी क की ओर के के बाखिराम बायल्लाठ प्रत्याशी हुए । क ने कम प्रभाव त्यागी, कई एवं संघर्षीत नेता की किसी कमाने के लिए किया किन्तु यं केरु परिवार की प्रतिष्ठा के कारण पराजित होना पड़ा । नवम्बर, ६६ में का प्रभाव नहीं छुआ नहीं का छुआ बाखिराम में जाने का कार्यकर्ता का एवं कार्यकर्ता एवं नेता विराम प्रसुत के लिए उद्दिष्ट हुए । बाका कण्डा नहीं पिता पाये क्योंकि पुछ ने के राखिराम बाण्डेय, के रामजल बायल्लाठ एवं के ज्ञान नारायण बाण्डेय की पकड़ का रक्त । के २० मीठ दूर भरौंथ वाराणजी के बाकर जीतु दिया

सन् १९६७ के सामान्य निर्वाचन में छुआ समाजवादी क के वन्धित विमान का के लिए प्रत्याशी बनने की स्वर्ण केतु हुई क्योंकि अधिक एकछा का छुआ है रहा था । छुआ समाजवादी क बनाने के शिष्टात और बाखिराम, उन्हा की एवं पिछा की, ज्ञानप्रिय एवं संघर्षीय ली का छुआ ली गया । के समाज सिंह बाण्डेय की प्रत्याशी बनना बाकी के किन्तु के बाखिराम बायल्लाठ के कारण

एकदम नहीं थी उसे जब की कठोरताम यादव अपने पार्श्व की श्रुति कायवादी यह है
 त्याग का विचारकर निरर्थक प्रत्याही के लक्ष में जुगम मुद्र में स्वार किया । स्थानीय
 कार्यवाही में ही की गई थी क्या । की राक्षसराज पाण्डेय श्रुति कायवादी यह के
 प्रत्याही कीर्तिगत हुए । यह ने प्रचार से प्रकट किया और कार्य में की स्थापन सिंह
 यादव की यह में वही के कारण की राक्षसराज पाण्डेय के पक्ष में नायक की कार्य में
 की केनाथ पाण्डेय ने की बरीदा करने किया । किसी की के लक्ष में पटाव,
 पडीय मुद्रमयी एवं भारतीय कार्य की लक्ष मुद्र की प्रमुख कारणों है की राक्षसराज
 पाण्डेय बल्य नहीं है विमान का की कसकता है कीर्ति रह की ।

उपर प्रवेश में श्रुति विचारक यह की रक्षाओं के मध्य
 वैधानिक एवं नीति विचारक यह केनाथ उत्पन्न हुआ । श्रुति कायवादी यह की
 त्याग कीर्ति मुद्र नीति है विमान का नीति हुआ । एव १८६६ में श्रुति विचारक
 यह की सरकार की कसकता है सामान्य निर्वाचन हुआ जिसमें पुनः श्रुति कायवादी
 यह ने की राक्षसराज पाण्डेय की कसकता प्रत्याही बनाया । लक्ष का के लिए
 लक्ष जुगम की साथ साथ हुआ जिसकी कसकता के लिए की कीर्ति विचारक यह के प्रत्याही
 हुए । सामान्य उत्पन्न हुआ और की कीर्ति विचारक एवं की राक्षसराज पाण्डेय कसकता
 कसकता उत्पन्न में एकदम हुए । की पाण्डेय की कसकता कसकता, कसकता की कसकता,
 बार बार कसकता, निर्वाचन, कसकता का कसकता, कसकता निर्वाचन में कसकता है कसकता
 का कीर्ति लिए कसकता कसकता कसकता उरीर, कसकता के प्रमुख कारण की ।
 की पाण्डेय की निर्वाचन का लक्ष है कसकता कसकता एव १८६२ के सामान्य निर्वाचन में
 पं० केनाथ की कसकता का में कीर्ति के लिए कसकता की कसकता कसकता में पं० केनाथ
 कसकता प्रतिक्रिया में पं० केनाथ ने कसकता निर्वाचन कीर्ति के सामान्य मार्गों में कसकता
 किया और कसकता की कसकता कसकता कसकता कसकता कसकता के कसकता की कसकता ।

कीर्ति कसकता निर्वाचन की मुख्यमंत्री कसकता के लिए कसकता
 कसकता कसकता ने प्रचार किया कीर्ति का में की राक्षसराज यादवकाठ के केनाथ में श्रुति
 कायवादी यह के राक्षसों की कसकता में विचारक की राक्षसराज पाण्डेय कसकता
 कसकता कसकता की कसकता में कीर्ति । स्थानीय कार्यवाही एवं कसकता कसकता की
 कसकता कसकता हुआ और है कीर्ति निर्वाचन कीर्ति कीर्ति कसकता कसकता कसकता कसकता

स्वीकार नहीं की। इस पक्ष परिकल्पने ने श्रुत समाजवादी पक्ष की वैतु-विहीन कर दिया। कम चौधरी चरण सिंह ने विपक्षीय मोर्चा - (भारतीय क्रान्ति पक्ष, श्रुत समाजवादी पक्ष तथा मुसलिम लीग का) बनाया और चौधरा विमान का चीफ है कि कच्छीराम यादव पुराने श्रुत समाजवादी पक्ष के व्यक्ति की कक्षा प्रत्याक्षी बनाया कम कील कार्यकर्ता भारतीय क्रान्ति पक्ष में शामिल हो गये। परन्तु में भारतीय लीगल कम जाने है श्रुत समाजवादी पक्ष का वस्तुस्थिति जान्य हो गया। कमिशन समय में चौधरा, विच्छाचान एवं प्रत्याक्षी कार्यकर्ता कक्षन होकर राजनीतिक गतिविधियाँ है विरक्त बैठे हैं।

भारतीय क्रान्ति पक्ष

भारतीय क्रान्तिपक्ष का प्रादुर्भाव की चौधरी चरण सिंह के पक्ष परिकल्पने है हुआ। चौधरा विमान का चीफ है जू १९६० में विपक्षीय प्रत्याक्षी की कच्छीराम यादव किसी दूर और की चौधरी के अनुगामी कम गये। जू १९६६ के निर्वाचन में भारतीय क्रान्ति पक्ष ने स्थित विधायक की कच्छीराम यादव की विमान का के छिर प्रत्याक्षी घोषित किया। की यादव अपने पुराने कार्यकर्ताओं, कार्य, कम कच्छीराम चौधरी चरण सिंह की कीर्ति पताका के साथ निर्वाचन-रण में लड़े। विधायक काठ की केवारे, श्रुत समाजवादी बीकन का बान्दीनात्मक उत्थार, मुमुक्षु स्वभाव तथा प्रतिष्ठा जाति की दावे पर बनाया किन्तु पराक्रम मिठी विच्छा प्रमुख कारण ज्वातीय, शिक्षित, कक्षक तथा रिपब्लिकन पक्ष के प्रत्याक्षी की रामाराम यादव कच्छीराम द्वारा चुनाव में उनका प्रकट विरोध रण।

पराक्रम के पश्चात की कच्छीराम यादव ने पुनः नये छिरे है कार्य प्रारंभ किया और यहाँ तक कि ग्राम प्रधान का भी चुनाव लड़े। की कक्षाप सिंह यादव ने अपने जय मंत्री एवं मंत्री काठ में चौधरा विमान का चीफ में जाकर किताब लण्ड चौधरा के विच्छा लण्ड बिक्रारी की निर्भीकता किया और फेस पक्ष योजना की श्रुत समाजवादी चीफ के छिर कार्यनिष्ठ करने की रामारा कच्छ दिछार है कच्छी की व कच्छीराम यादव का प्रभाव चीफ विच्छा एवं छेन हुआ।^{२४} कच्छुर विच्छा लण्ड में ज्वातीय की रामारा यादव - दक्षीर की कक्षा प्रमुख कम प्राप्ता करने में सक्रिय उपयोग

किया । चौधरी चरण सिंह, बिपाकी स्मारक चार्ज स्मृत होठिया (क्व इण्टर काउंस) में जू १९७१ में जाये और राजनीतिक काम की । जू १९७४ के निर्वाचन में श्री यादव होठिया किसान काम दौत्र है पुनः प्रत्यासी हुए तथा बिब्वी हुए । क्व जस राजनीतिक कहीं भारतीय ज्ञानिय कठ, जस कठिण, जस कामवादी कठ, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल, स्वतंत्रवादी, किसान मजदूर पार्टी तथा पंचायत समितिवादी कीपार काम है क्वी स्वतंत्र की बिधीन करके भारतीय लोक कठ नाम हठ किया जस क्वी कार्यकर्ता भारतीय लोक कठ के पदावर हो गये ।

भारतीय लोक कठ

२६ जून, १९७४ को जसिण के किकल्प की जाता है प्रथम जसमतीय जसजिक बिधीनीकरण की जसुचीनणा हुई और भारत के राजनीतिक रीतिपर भारतीय लोककठ का जसिण प्रारंभ हुआ । चौधरी चरण सिंह जस्यदा हुए और जसमें २७ जसतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की चीनणा किया किमें उड़ीसा के जसद जस्य श्री रविराम की कठ का नवी कामया गया । ^{२५} होठिया किसान काम दौत्र में जससील स्तर पर जस समय तक जसिण नवी है किन्तु जसर्ष है कि जसके कुछ पदाधिकारी कठ के जस्य नही गये हैं । श्री जसदराम यादव- बिपाक जसर्ष है किन्तु जसिणका का जसकल नविण्य जसना । जस्यान्तर जसजिक की जसामना है २६ जून, १९७५ जसजिकजिक चीनणा हुई । श्री क्व प्रजाल मारायण के किकल्प में लोक जसर्ष जसिण नविण्य हुई, किमें जसकल कठिण, भारतीय लोककठ, भारतीय कसर्ष जस कामवादी कठ कठक रहे । २२ नवम्बर, १९७५ है लोक जसर्ष जसिण है जस्यजिक का जसजिक किया किन्तु होठिया किसान काम दौत्र है भारतीय लोककठ की और जस की कार्यकर्ता जसिण नही हुआ । जस जसर्ष जसिण है कि जसों का बिपाक भारतीय लोककठ का जस्य है । भारतीय लोककठ के बिपाक श्री जसि प्रजाल सिंह यादव प्रजामपुर दौत्र है जसकी स्वतंत्र कसिणी वी कि श्री मुबर वी की जसुची रही है नाम है बिपाकी स्मारक मसर्ष इण्टर काउंस होठिया जसजिक कसो जसजिक है किकल जसया । जस बिपाक की प्रस्यामना है बिब्वी जसिणों में स्वजिकाम जसुहा हुआ है । भारतीय लोककठ का नविण्य बिब्वी जसिणों के जसकल पर जसुहा है ।

साम्यवादी कठ

चौड्या किमान छः दौध में साम्यवादी कठ ने अपनी कुत्ताव का मत किया । श्री मर्तु यादव- दुष्मिपुर (श्री पुनर की के मार्ग) कटिब है बल्लुष्ट पुर और स्थानीय राष्ट्रीय कार्य है परिधान के लिए श्री मर्तु यादव - बैलापुर की कठवाँ साम्यवादी का के लिए बनाया ।^{२०} श्री मर्तु यादव ने श्री प्रदीप पाण्डेय कटिब चौड्या और डा० बल्लुष्ट साहित्य चौड्या है कार्य किया । श्री कुसाईकर पित्र - मंत्री साम्यवादी कठ प्रयाग ने श्री मर्तु यादव की प्रभावित करने का प्रयास किया था तथा अपनी का कार्यकर्ता है श्री कार्य किया था । २० जनवरी, १९६१ ई० को चौड्या है १ बीच उत्तर मठवाँ पर एक का कार्यकर्ता दुर्ग किर्मी श्री मर्तु यादव व श्री कठवाँ चौड्या साहित्य स्थानीय नेता प्यारे और माधवण पिर । इस का श्री साम्यवादी श्री मर्तु की यादव ने किया । सन् १९६२ के सामान्य निर्वाचन में का श्री प्रदीप पाण्डेय प्रयाग साम्यवादी कठ है किन्नायक प्रत्यासी श्री मर्, डा० बल्लुष्ट साहित्य कटिब के कार्यकर्ता श्री मर् और श्री मर्तु की श्री मर्तु यादव साम्यवादी प्रत्यासी के कार्यकर्ता श्री मर् तथा साम्यवादी कठ की मातृका पुःस पुन । इस समय इस कठ का प्रयास श्री नहीं दुष्मिणीपर है ।

रामराज्य परिषद्

रामराज्य परिषद् का परिषद् चौड्या किमान छः दौध के निर्वाचन में सन् १९५२ के सामान्य निर्वाचन में मिला । श्री राम नारायण दुष्मि- वराही कटिब कटिब कटिब, प्रयाग में किन्नायक है स्वामी कटिब श्री है परिषद् होने के कारण उन्हें रामराज्य परिषद् का प्रत्यासी बनाया गया । पुनः विधान में एक बार स्वामी कटिब श्री श्री कि इस कठ है किन्नायक है, निर्वाचन दौध में काये किन्नायक साहित्य कटिब श्री पुन श्री^{२०} प्रिया कटिब का पुन या मात्र प्रत्यासी मर्तुय प्रिया में उपस्थित रहे किन्नायक साहित्य के ११ श्री है किन्नायक की पराजित पुर और उन्नी श्री मर्तु यादव दुष्मि-विधान की नीति रही तथा उन्हें विधान में उन श्री । सन् १९५७-६२-६३ एवं ६६ में इस कठ का कार्य श्री प्रत्यासी पुनः नहीं सहा । सन् १९७७ एवं १९७७ में श्री किन्नायक पाण्डेय - बैलापुर सामान्य निर्वाचन में प्रत्यासी

हुए किन्तु नाम मात्र का प्रचार हुआ परिणामस्वरूप प्रतिपक्ष के दुरासाध नहीं रह गयी । इस समय रामराम्य परिवार का कोई फैसला नहीं है ।

रिपब्लिकन क्लब

हॉड्या विधान सभा सीट में रिपब्लिकन क्लब ने सन् १९६२ के सामान्य निर्वाचन में श्री बीकरीराम हरिजन - चम्पापुर की प्रत्यासी बनाया किन्तु हरिजन का ही वार्षिक समर्थन मिला । श्री बीकरीराम के पराजित हो जाने के पश्चात् सन् १९६६ के सामान्य निर्वाचन में श्री रामराम सिंह यादव - छोरपुर सीट की प्रत्यासी घोषित किया किन्तु मुसलिम कमेटीज का भी समर्थन मिला और सीट में हरिजन मुसलिम पार्श्व पार्श्व का बारा लगाया गया । श्री यादव की पिटुड़ी कायि, हरिजन एवं मुसलमानों के का वार्षिक ही मिले किन्तु प्रतिकूलित दुरासाध रही । यद्यपि पराजित हो गये । श्री रामराम सिंह यादव , श्री बीकरीराम यादव से मिलकर सीट पर लुका जायदादी क्लब से किन्तु हुए थे । सन् १९७४ एवं ७७ के सामान्य निर्वाचन में यह क्लब ने श्री हरिश्चन्द्र हरिजन की समर्थन किया किन्तु पराजय हो गयी । इस क्लब के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामराम यादव - हॉड्या एवं श्री हरिश्चन्द्र हरिजन हॉड्या कार्यकर्ता हैं किन्तु फैसलात्मक फैसल का बारा है ।^{१०}

भारतीय जनता

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् भारत के नवीनिर्माण हेतु जनता नीतियाँ भारतीय राजनीतिज्ञों के मानस में झुका हुई । परिणामस्वरूप वल्लभ भाटनगर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की त्यागकर प्रभावी व्यक्तित्व एवं वल्लभपूर्ण नेताओं ने नवीन राजनीतिक दलों की कल्पना किया । किन्तु भारतीय संस्कृति, मर्यादा एवं धर्म के अनुसार वह परिवर्तन काफी लम्बा एवं परिवर्तनशील होता है प्रसिद्ध राष्ट्रवाद का वापार केर २१ अक्टूबर सन् १९५१ ई० की डॉक्टर आभा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनता की स्थापना की । डॉक्टर कैलाश चन्द्रिका द्वारा संस्थापित एवं श्री माधवराव आशिष राव मोडककर द्वारा ध्यातित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक धार्मिक संगठन के कुछ सदस्य, तैयारी, संगठन कर्मकाण्ड एवं राष्ट्राभिधी वीरकवाले कार्यकर्ता गये

श्री जेम्साथ डीबरा- बम्बू, श्री यल्लरु जी - पंचाय, श्री कल्लराय बोक- दिहली,
 श्री कल्लराय बोक- दिहली, श्री नाना श्री वैद्युत - मल्लाराय, श्री दीनक्याउ उपाध्याय
 एवं श्री बल्ल विहारी ^{दाज} बालकृष्ण- उधर प्रभू, श्री काम्पाय राय बौली - जाटिक,
 श्री पुम्बर सिंह मंडारी - रायस्याय बादि नै भारतीय जनक के कार्यभार की कर्तव्य उल्ल
 कर्त पर लिया, उनके द्वारा किन्तु प्रसाध की पाति भारतीय जनक भारत में विस्तीर्ण
 हुआ। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की वैचारिक आधार भूमि पर राजनीतिक भूमिका का
 वर्णन भारतीय जनक का प्रमुख कार्य हुआ।

श्रीका विमान का दीव के श्री रायाराय विपाठी -वीररा
 नै राजनीतिक विमान का १९४४ ई० में वायुयुक्त की गयी थी। का श्री विपाठी प्रमाण में
 बम्बय के लिये श्री का १९४५ ई० के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संसद में जा श्री का
 नियमित स्वयं सेवक की गयी। = कुठार्ड का १९४८ ई० में नैल्लरु बायर कैम्पेरी स्कूल
 श्रीका (कर्मान केदरामरिजबाय परवराय पुत्तिरा नैल्लरु बम्बर काठेय, श्रीका) में
 वल्लरु बम्बय के रूप में श्री विपाठी वैचारिक हुए। बल्लरु बम्बे का १९४० ई०
 में श्री काय प्रसाध विपाठी - विमान के प्रचारक में वीररा की काय प्रारंभ हुई।
 का भारतीय राजनीतिक गण में भारतीय जनक का बम्बय हुआ तब श्री रायाराय
 विपाठी ने उधर का श्री का दीव में स्थापना का नवंबर का १९४९ ई० में श्री काम्पाय
 पाण्डेय बौली-श्रीका (पूरपूर्व कर्तिषी) की बम्बयकाय में वल्लरु विपाठ्य पर
 की।^{११} उधर का श्री काय नैल्लरु बौलीकाय - बम्बयकाय श्री प्रविशण विपाठ्य
 नै वल्लरु विपाठ्य किन्तु उन्हीं भारतीय जनक के उद्देश्यों, कार्यक्रमाँ एवं नीतियों पर
 प्रकाश डालते हुए वास्तविक स्वयंसेवा के लिए वल्लरु भारत की वनिपायका की सिद्ध किया।
 श्री रायाराय विपाठी नै राजनीति की भारतीय मूल्यों के अनुसार होने पर कह किया।
 वल्लरु विपाठी की का के परवाय वल्लरु पट्टी, बल्लरु, काशीपुर, नरौ एवं वीररा
 बादि स्वामी पर काय वैचारिक हुई। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का विस्तार किन्तु
 ग्रामीण का हुआ या उनके बाय बाय के ग्रामीण में श्री भारतीय जनक का प्रचार हुआ
 वीर वल्लरु कार्यक्रमाँ काय की होती के नैल्लरु विपाठी का रंग वल्लरु निष्ठा की
 विपाठी नै वल्लरु विपाठी।

न्यायालय है दीवपुत्र दुर । श्री विपाठी के विद्यालय है विष्णुदास होने है जना परिवार ऐस्य ही क्या क्या सीखा निवास दीव है श्री कर्ण के बीच विष्ठा का एक प्रमाण प्राप्त किया ।

सन् १८५२ ई० का प्रभाव जमीन होने पर एवं पराधिपत्य में श्री राजा प्रणव विपाठी का स्वामित्व ही क्या । श्री राजाराम विपाठी ने पूर्ण दायित्व लिया । कर्ण, गुरादाबाद जन्म में प्राचीन बन्नीज हुआ किन्तु श्री राजाराम विपाठी एवं श्री दीर्घराज ज्योतिषी माग होने नही । उही बन्नीज में श्री दीनबहाल जगन्नाथ उतर प्रवेश के मर्यादों की । गी हस्त के विरोध में श्री उल्लेख व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराकर भारत के राष्ट्रपति की प्रेषित किया । कुजर्त सन् १८५४ ई० में श्री विपाठी ने श्रीनारायण नाथनिक विद्यालय (कनिष्ठ एण्टर कालेज) बनारस, कोनियां बाराणसी का प्रवासाचार्य बन स्वीकार किया । इस विद्यालय में श्री विपाठी ने अपनी विचारधारा के तत्वा सीखा विद्यालय का दीव के विपाठी श्री उल्लेखों की नियुक्तियों की । श्री विपाठी सीखा विद्यालय का दीव में भारतीय कर्ण के संस्थापक, उत्तर एवं मार्ग प्रेषा होने के कारण का कारण का एक एवं का समस्याओं के प्रति अवैष्ट रहे । श्री विपाठी ने श्री परिवर्तन, वास्तव युक्त एवं कार्यनिष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण तथा उत्तराण किया किन्तु प्रसुत श्री कर्णेश्वर दुर्ग- बर्तनी ; श्री राजपति पाण्डेय, बन्नाय ; श्री राजपति मिश्र-कुल्लु श्री परमानन्द तिवारी - मिथिला ; श्री प्रदीप प्रदीप - ठेठा ; श्री चिन्माणि पाण्डेय - बाबुर ; श्री केदारनाथ केदारानी सीखा ; श्री कुंजर रातेन्द्र प्रणव सिंह-ठासीपुर ; श्री उन्मुक्त सिंह- ठेठा ; श्री पुरुषोत्तम सिंह - रामनगर ; श्री श्री प्रणव सिंह- उपरपरा ; श्री उल्लेख प्रणव पाण्डेय - बाबुर ; श्री चन्द्र मिश्र पाण्डेय एवं श्री दीर्घराज पाण्डेय- बर्तनी बादि मनुकृत प्राप्त रहे ।

सन् १८५७ ई० के सामान्य विचारों में श्री गुराव सिंह बर्तनी बर्तनी, विद्यालय का है उल्लेख प्रणव श्री प्रेषित दुर श्री श्री राजाराम विपाठी दुर (उनी) प्रणव श्री रहे । श्री सिंह का राजनीतिक जीवन महत्वपूर्ण नहीं था किन्तु दीव के प्रतिष्ठित परिवार के उल्लेख तथा सामान्य विचारों में एक रहे ।

कार्यक्रम एवं नीति का प्रचार करते हुए अवलम बनाना प्रारंभ किया। साथ में समाचार के कार्यक्रमों की रचनी ली।

१६ फरवरी को १९६१ ई० में ही बाबाजी निवास में कमलेश के निमित्त लखनऊ के ज्योतिष पुरोहितराधाचरण झा से अवार्थ प्रारंभ हुई जिसमें प्रचार विस्तारविभाग के प्रख्यात नीतिज्ञ डा० मुरली मनोहर जोशी, बाराणसी जंक्शन के वन्द्योत धामपुर के पूर्वपूर्व माननीय सप्ताहिकारी (बाबरी पब्लिशर) श्री मुरलीधर पाण्डेय एवं श्री राधाराम त्रिपाठी प्राचार्य के सार्वभौम, बाबाजीकात्मक तथा सन्तुष्टि-निर्माण मान्यता हुए किसी उपस्थित का ऊँह चलने की विचारधारा से प्रभावित हुआ। विमानकालीन सौत्र के अनेक स्थानों पर अवार्थ हुई और उन्हीं सौत्र में अवर्णन की वहाँ प्रारंभ ही कभी विष बाबावरण का जन्म उद्धार के लिए अवस्था अविवरण तीव्रगति से चलता गया और श्री पारम्पराय की पाण्डेय - मनोहरपुर, प्राचार्य राधास्वामी राम कण्ठर काठेय, बाराणसी की उन्हीं में बाबे तथा अवार्थ की अवर्णित करने लगे।

को १९६१ ई० के शीन्मासकाष्ठ में उन्हीं विमान का सौत्र में बार पाँच ग्रामों के मध्य विन्दु पर एक का बनाई की याचना की राधाराम त्रिपाठी के निर्देशन में निश्चित हुई। अवर्णन सौत्र 'सौत्र' एक बना, ताहू परत वपाका बना के मार्मिक काम एवं एक समाचार विरोधी विष के साथ हुआ वह मुद्रित हुए और कार्यकर्तियों का एक बल निश्चित पड़ा जिसमें श्री राधाराम त्रिपाठी, श्री पारम्पराय पाण्डेय, श्री ^{राज}प्रकाश पाण्डेय, श्री रामधुस्त पाण्डेय, श्री राजपति मिश्र, श्री विमला-नानि यादव एवं श्री वन्द्योत नारायण डास्ती, श्री चन्द्र शिखीर पाण्डेय, श्री सुब्बा प्रसाद पाण्डेय बादि प्रमुख रहे, इनके अलावा अनेक स्थानीय कार्यकर्ता भी संलग्न रहे। एक एक दिन में ही या तीन अवार्थ जायोजिका की कभी जिसमें मुख्यतः, प्रकाश, उत्तरीय, सरकारी सेवा, बीबी बाब्रण एवं पंचशील, श्री वन्द्योत, अग्रणी मान्यता के प्रति आनीक तथा समाजवादी नीतियों बादि के विरोध में मान्यता, अवर्णन एवं नीति होती तथा भारतीय अवर्णन के सिद्धान्तों, नीतियों एवं कार्यक्रमों पर प्रकाश डाले जाते और वन्द्योत में सुकलादी नारे उठाकर का विचारकी होती। प्रचण्ड वन्द्योत उन्हीं के ऊँह वास्तव वायु के फीका में ही अवार्थ होती रही जिसका उद्गमन पर नीति प्रभाव पड़ा कि अवर्णन के नेता एवं कार्यकर्ता वहाँ के वनी होते हैं। उन्हीं विमान का

दीव में लकड़ों कायों हुई फिरो कायों का प्रचार एवं प्रचार बाउ, हुका, हुड, हुकाउ
 मकूर एवं व्यापारी ली कायों में हुआ । दीव में कायों की खुशिया लया बन्ध पछों
 फिरोय रूप है जगिब की बिम्बा के खर फूट पछे । उन कायों है कायों कायों की
 लम्बी लया कायोंकायों एवं नीलाकायों है परिचित हुई एवं कायों के कायोंकायों एवं नीला
 कायोंकायों, प्रायों, पायों, कायोंकायों एवं पुनाकायोंकायों है कायोंकायों । बिम्बा लया
 दीव में लपने पछ के कायोंकायों एवं कायोंकायों की लयी निमित्त हुई । उन कायों है
 की राकायों बिम्बाठी, की राकायों बाण्डेय, की राकायों बाण्डेय एवं बन्ध
 कायोंकायों के नीलाय में बिम्बा हुआ लया कायोंकायों का परिवारों में लम्बा लीने
 लया कायोंकायों हुई एवं नांगकर पायी लीना पछता था ।

पावन परमात्मा विष्णु यन्त्री के लक्षणों में पुनः ज्ञातों का
जातीय पुनः विष्णु यन्त्री में पुनः प्रकटा जायी । विष्णु यन्त्री पर स्थानीय कार्यकर्ता
कच्छा, टीवी एवं विष्णु जाकर छोटे छोटे कुर्छों में मेला कैन्ड्री पर पहुँचे । जयरी
सन् १९६२ ई० में तत्कालीन सम्मेलन कैटरानरिणदास परचराम पुस्तिका मैजलर इण्टर जालि
होल्या के महाकाव्य में श्री पारल्लाप पाण्डेय प्राचार्य की लक्ष्यदाता में हुआ । उष
सम्मेलन में स्थानीय ल्यापदाता की उपस्थित रहे । सम्मेलन में डा० पुरी फादर बीजी
एवं श्री रावाराज विवाही के लक्ष्यमाण पुनः बीर १० पुनी प्रस्ताव पारित हुए ।
प्रस्ताव संख्या ४ में जयविष्णु, यन्त्र एवं बामेपुर में रावकीय शिक्षणालय होली
की मांग ; प्रस्ताव संख्या ७ में गौड़री, ^(कुमदना) पुष्पुष्पा एवं ज्ञानानुस के मातों की बाँकुर
मुल्लज रीली की मांग , प्रस्ताव संख्या ८ में होल्या टैमिनल जालि की मांग बीबी
कली की मांग तथा प्रस्ताव संख्या १० में ललाहाबाद में होल्या लक्ष नगरपालिका प्रारंभ
कली की मांग बाँकुर बाँकुर यन्त्री के बाँकुर की परल्लार की पुष्टि है परी ही
प्रतीत होती है ।

सन् १८६२ ई० के सामान्य विधान के तहत कार्य में श्री राजा राम प्रियाठी प्रचार्य जी अपना प्रस्तावी पेश किया । वे प्रियाठी-बुद्ध संस्थान, भूत विचार प्रस्ता, ज्योतिष, उच्चतर, बीजबी बजा, व्यवहार नियुक्त ; कार्यकर्ता निमाणा, बहुत शास्त्र एवं विज्ञान प्रविष्टा संस्थान व्यक्ति एवं विषयी प्रस्तावित होकर बाय करनेवाली के एक एक माह का केवल तथा यथासंभव समय विधान

में किया। उपर प्रवेश करने के बादपिकारी के नामक द्विज बरिज वारी तथा
 उत्तर कार्यकर्ताओं की संघीयता किया। डा० मुरली मोहर खोड़ी ने लोक जनों में
 माधव किया। इस निवासि ज्ञ में श्री राम बालाच पाण्डेय- कर्मकर, श्री दीपा
 नाथ पिकारी- डिप्टा, श्री राम बालाच पाण्डेय - बाबुर, श्री राम बालाच
 पट्टिया- कौल, श्री पीलाबाथ पिकारी- बरामपुर, श्री बन्धुबाल पाण्डेय-बुद्धि
 श्री सिद्धिनाथ पिकारी- जनापुर, श्री डिप्टाच द्विज - बुद्धिबाल, श्रीरामपुरि मि-
 केडी, श्री बन्धुबाल बुद्धि - केडी, श्री बुद्धिबाल पाण्डेय - बरामपुर, श्री बाबुराम
 मि- बाबुरपुर, श्री चिन्तामणि मि- बुद्धिबाल, श्री बाबुराम बराम-नीकीपुर,
 श्री राम बराम मि - बरामपुर बाधि श्रीम कार्यकर्ताओं का निवासि हुआ। इस
 ज्ञान में कार्यकर्ताओं के पद के ल में कला के ज्ञान उपर। दीपित ज्ञानों
 निष्ठावान, जेडि लं दीपित के कार्यकर्ताओं तथा बाधुबादी डिप्टाओं के पद पर
 ज्ञान ज्ञान ज्ञान ज्ञान बाधिबाधि, प्रतीक,पदान लं बाधि ज्ञान की बाधि
 बाधि में ज्ञान लं पद बुद्धि लं कला बरि श्री निपाटी पराधि लं गी।

सु १९६२ के सामान्य निवासि के पश्चात् श्री बालाच पाण्डेय-
 प्राचार्य तथा श्री राजेश पाण्डेय- बालाच दीनी कार्यकर्ताओं की बाधुबादी पान
 विपत्ति के निष्ठावान कर दिया गया। इसी संज्ञा कार्य की प्रतिष्ठा लं प्रजासी
 पुनः बाधुबादी ज्ञान ज्ञान की लं कला के लं पाने का ज्ञान लं कला लं गी।
 ज्ञानान्तर में श्री बाबुराम निपाटी की प्रजा, ज्ञान लं ज्ञानान्तर के कौल में
 माधव माधविक विपत्ति बाधुबादी बाधुबादी की स्थापना पुनः ज्ञान श्री राजेश
 पाण्डेय की ज्ञान प्रजाप्राचार्य निष्ठावान किया गया श्री ज्ञानान्तर में डिप्टा ज्ञान
 लं गया। श्री बालाच पाण्डेय-प्राचार्य की पुनः लं ज्ञानान्तर माधविक विपत्ति
 का प्राचार्य पद प्रदान किया गया।

सु १९६४ ई० में लोक ज्ञान के उपरान्त में श्री बाबुराम बाधु
 बाधु की पद का प्रजादी बाधिबाधि लं पद यहाँ के श्री कार्यकर्ता श्री बाबुराम
 निपाटी के निष्ठावान पर कार्य लं बरि बाधु बाधिबाधि में ज्ञान प्रजा विस्तार करने
 का प्रजा लं गी। १९ ज्ञान सु १९६५ ई० की श्री बाधु प्रजा निपाटी के निष्ठावान
 में कार्यकर्ताओं का लं लं 'लं ज्ञानान्तर' के विपत्ति में प्रजा करने दिखी गया।
 सु १९६६ ई० के ज्ञान में कार्यकर्ता ज्ञान पद पर बुद्धि का लं प्रजा श्री बाबुराम

मित्र के माधन्य पुर । कैलाश बाजार में बहुत भारतीय कार्य के मंत्री की पुनर
 सिंह पण्डारी का पुनरागामी, मंत्री एवं निरीक्षण माधन्य का का में हुआ ।
 अत्यन्त ही पूर्ण चीन का प्रमाण बार बार मिले तथा जहाँ की अतीति करी
 हुए प्रत्याही का हुआ । उन दिवसीय काल की प्रमुख प्रत्याही द्वारा भी बर्था
 के विरोध में होने के कारण एवं मुख्य कृति है उत्पन्न होती है पूर्ण भारत का
 राजनीतिक माधन्य काल- विरोधी भी था । इन माधन्य कारणों के अतिरिक्त
 प्रत्याही की उत्पन्न उत्पन्नता, कार्यकर्ताओं की निष्ठा तथा उत्पन्नता एवं स्थानीय
 पुराने कालों के उत्पन्न उत्पन्न है की मित्र की कठ के पिछे पुनः ही उत्पन्न
 पुनः का प्रान्त पुर किन्तु किन्तु पराप्त-पुन रही । पराप्त के लक्ष कारणों में अतीति
 महत्त्वपूर्ण, विरोध के अनुसार एक बाधा भी चीन का चीन किन्तु पिछे बाधा
 एवं उत्पन्नता की उत्पन्नता है कारण किन्तु हुआ ।

सन् १९६६ ई० में उत्पन्न विनायक का (लोका) उत्पन्न की
 विनायक के कारण प्रत्येक में पुनः विनायक का के विनायक की कठ पण्ड प्रारम्भ
 हुई । यह पण्ड भारतीय कार्य के पिछे की के की रानरिक्त सिंह निरन्तर - उत्पन्न
 कारणही, की कि कि रानरिक्त बाध पररामपुरिया नेकल उत्पन्न जाले, उत्पन्न
 में उत्पन्न उत्पन्न है, की प्रत्याही विनायक किन्तु । की निरन्तर उत्पन्न के उत्पन्न
 कार्यकर्ता एवं उत्पन्न बाधा के नेता रहे और का पुनः ही की कार्य पर पारोपी का
 रहे उत्पन्न उत्पन्न है उत्पन्न करी रहे । यह विनायक में की निरन्तर में निजी महत्त्व-
 उत्पन्न का चीन उत्पन्न हुआ किन्तु चीन उत्पन्न उत्पन्न में की पुनः पुनः उत्पन्न का
 की निरन्तर की उत्पन्न प्रविष्ट हुए । कार्य के कार्यकर्ताओं में उत्पन्न उत्पन्न हुआ किन्तु
 कि प्रत्याही का उत्पन्न उत्पन्न नहीं था किन्तु कठ के उत्पन्न नेताओं ने उत्पन्न
 निष्ठा के उत्पन्न में प्रत्याही की उत्पन्न की उत्पन्न करने का प्रमाण किन्तु । उत्पन्न
 उत्पन्न में की उत्पन्न माधन्य के अनुसार प्रत्याही नहीं है की उत्पन्न करने की उत्पन्न
 बाध पर उत्पन्न की उत्पन्न उत्पन्न हुई । की निरन्तर ने उत्पन्न है पुनः के उत्पन्न
 किन्तु में उत्पन्न कि उत्पन्न में उत्पन्न उत्पन्न और की उत्पन्न का उत्पन्न का पुनः, ३५
 किन्तु उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न के कारण उत्पन्न: यह उत्पन्न नहीं का उत्पन्न । कठ की
 पराप्त की नहीं और का विनायक में प्रान्त उत्पन्न के उत्पन्न है की का उत्पन्न मित्र ।

पराप्त ने की निरन्तर की उत्पन्न माधन्य के अनुसार उत्पन्न के

छिए किये छिया वीर के राष्ट्रीय स्वयं सेवा से स्वयं सेवा के वीर स्थायीय
 कोरन मेराजी के मार्ग पर है धर्मपूर्ण जीवन के बाजार छिए रही । की मिले
 के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं का एक एक दिली सम्मेलन में गया वीर पूरा समय परचाय कीज
 के की मान्यता मिलाने के छिए बायोकि विज्ञान का प्रयोग में की पुनः दिली गया
 मिले की कटारनर पान्थी- कृष्णदी, की कम्पनर मिथ-कीटी, की विमल नारायण पुन-
 कर्तार, की कर्मापर मिथ - कर्मा, की पुनिराम विमल - कर्मादी बाधि के नाम
 उल्लेखनीय है । की मिले की ने छीला विज्ञान कर्म पर एक कीज प्रयोग किया ।
 प्रयोगकर्ताओं के पाठ एवं, विमल एवं अन्य कीज विमल कीज के जे एमी ने की मिले
 के नेतृत्व में विज्ञान कर्म कार्यक्रम पर कर्मकर अपने अपने कीजकर्ताओं जे प्राणियों
 की होइ किया देखी देखी के एमी कर्मा में प्रवेश करने की वीर की कर्मादी कर्मा
 एवं मेरी के कर्मर के छीला प्राण कर्माओं का बर्णन करने की वीर उन्होंने बाधक
 किया कि प्रयोगकर्ताओं के छिए स्वीकृत पूरा बर्णन विमल की बाधा । पूर्ण वास्तव
 होने पर ही की मिले के बाधक पर कर्मा एवं विमल की फल किया गया ।

छीला किये एमी सीध में की राम प्रकाश पुन पूरा
 जे मुक्तमयी उतर प्रवेश, की हरिश्चन्द्र कीवास्तव संकलन नीचे उतर प्रवेश कर्मा एवं
 की रवीन्द्र किशोर बाधि- देविया बाधि मेराजी का वाक्यन पूरा विमल कर्मा कर्मा
 की कर्म एप्रिया की कर्म करने की । ए १९७४ ई० के सामान्य विधान में किये
 गया के छिए की मिले की कर्मा ने पुनः प्रथादी धर्मित किया । पुनः विधान
 का कर्मा १६ कर्मा, १९७४ ई० की बलि भारतीय कर्मा के मेरा कर्मा कीज
 कर्मा ,विचार एवं भारतीय कर्म के कर्म की कर्म विमल बाधकी ने छीला रूढ़ि
 संकलन मेरा की विज्ञान कर्म के कर्मा है किया । की बाधकी के कर्मा के
 फल के मेराजी ने मान्य किया था । की बाधकी ने छीला की कर्मा है बाधा
 किया कि' की कर्म के कर्म विमल की किये एमी में कर्म कर्म ।
 छीला किये एमी सीध की कर्मा के कर्मा में की कर्म विमल बाधकी कर्म का
 की वीर कार्यकर्ताओं के छिए नीच का की । की कार्यकर्ता विधान में जे की, कर्म
 कर्मा छीला कर्मा कर्मा में विमल की की एवं कर्मा के बाधक होने की ।
 कार्यकर्ताओं का एक एक की रामाराम विमल के संकलन में दूसरा एक एक कर्म
 के संकलन में तीसरा एक की कर्मा प्रकाश विमल एवं की पुनः कर्म के संकलन में

बीया दल की नरकवा प्रणय निम लई की राखिछोरी निम के संवाउन में तथा बीया दल की निमल की के संवाउन में दीन किनाक करके पुनाय बीली की बाता लई बिस्वाय छैर निछिवाय कर्यस हो गया । पुनाय बनिमान का ज्ञापन छः० मुसी कनीयर बीली के देवाबाय, बीली, बरीय लई बानेपुर की ज्ञापनी हे पुना । छः० बीली ने की कनराय निम बिमल - मुसी की भारतीय कर्तव्य का ज्ञापन कनाकर बिमान कना के पुनाय दीन में दल की निमलता की ज्ञापन में ज्ञापनारिह कर दिया । कनक प्रवर्तनी के बरबास की नाभ्य ने साथ नहीं किया और पराजय के कर्तव्य दल के कार्यकर्तियों की प्रवण करना पड़े ।

दल की बीर हे बीली किनाय दीन समिति की ज्ञापन के छैर की राखिछोरी निम लई की बिनामानि याकब की पुनाय ज्ञापन कना, कनुर किनाय दीन समिति की ज्ञापन के छैर की पुपिराम बिन्द लई की केजालाय विवारी- कन पुपली की पुनाय निदान में ज्ञापन कना तथा देवाबाय किनाय दीन समिति के छैर की कानून प्रणय बिवाली की नाता की निर्दिरीय पु हो गई । दीनी किनाय दीन समितियों की ज्ञापन संवर्न में की बिवाली, की रामरीहा रिंद ' निमल', की पुनर रावेन्द्र प्रताप रिंद, की कटारकर बाण्डेय लई की पुष्पाबन्ध निम बिमल के छैर निमल सत्रिय रहे किन्तु कनकता नहीं प्राप्त हुई । किनाय कनक प्रसुत का पुनाय कनुर किनाय कनक हे की पुनर रावेन्द्र प्रताप रिंद छैर किन्तु कनकत रहे । मूल्य बुद्धि, कनकदी में बनिबन्धिता लई बेकारी बादि के विरोध में प्रत्येक किनाय कनक पर प्रवर्तन तथा तस्वीर पर प्रतिक दल कनकत हुई ।

बीर दल १९७४ की ' बीनी बीटाका कण्ड' की बाप के छैर कनकत दल के की ज्ञापन विवारी बिवाली- देवाबाय लई की पुपिराम बिन्द- बन्दी बूटी बाभरणा कनकत पर तस्वीर कन के ज्ञापन बीटे । ' बीनी बीटाका कण्ड' में दल कटारकर बीली, देवाबाय लई कनुर दीनी किनाय कनक की संपूर्ण बीनी बाभरणा कनापिकाहियों के ज्ञापन ज्ञापनार कनाकर ज्ञापन छैर ज्ञापन ज्ञापन- मूल्य पर बिमल कर दिया था । कनक प्रवर्तन बीने के दूरी निम साथ पूर्ति निम के बिपकारी तस्वीर पर बापे, बीली निम बिनाबीय ने तस्वीरकार के नाभ्य हे कनक ज्ञापन ज्ञापन

की याचना किया और बाप का वास्ताव किया किन्तु कमजोरी वपराधियों की वकिलान्त पकड़ने तथा छेड़ने केनी कला की पिछाने का वास्ताव प्राप्त करने पर बाजि रहे । तबहीछकार ने बाकर कमजोरियों की का पूर्ण वास्ताव किया का कीरा के रस से वापराव कमजोर की हुआ । कैदु जलुवण (कैदी) के विरुद्ध न न मार्ग का १९७५ की विमान की का प्रवर्तन तबहीछ पर हुआ किन्ती की वापराव प्रजाप मिश्र, की पिपाटी, कीराम देवा मिश्र, एवं की राधाकान्त पाण्डेय- मुचिपुर के पापणों ने उठके कर्माधिक्य की विव कर दिया । बादे हुए कुमर्जी ने किया उचित मूल्य प्राप्त किन्ती कैदु न केनी की प्रविष्टा की ।

वर्ष १९७५ ई० में लोक सेवक समिति का मेल बाहू का प्रकाश नारायण के विचार वापराव के कमी कमी ने कीछा में की गतिव किया । २६ जून का १९७५ ई० की वापावकाठीन पीपणा के परवात् २२ जुलाई, ७५ की की राधीका विव मिश्र एवं २६ जुलाई ७५ की की मुधिराम मिश्र भारत रत्ना वधिमिस्र के वमुछार बन्दी कमाये की । प्रतिमुचि पर कीनी व्याक्ति छूटकर बादी । २२ नवंबर का १९७५ ई० के लोक सेवक समिति के वापराव पर उत्थाग्रह प्रारंभ हुआ किन्ती प्रम बादे के उत्थाग्रहियों के पकड़े जाने के हुए दावा परवाह की मिश्र की की पकड़ ठिर की और उनके निवास का की कुम वरिष्ठता मुचि ने किया बाप में उन पिछाकीछ कीछा की रहे । की मिश्र की वापावीय वापरी की वरिष्ठता करी ऊनी कला की काठिच पठ के कार्यकर्ता के नाम से कमजोर बादेठ उन पिछाकीछ ने कर किया । उपरीका मूल्य की पिछाठ का ऊरु एवं ऊनी पिछीन पठ के लोक कार्यकर्ता वापरीछ एवं वाद के वापु कीकर नाम केकी रहे ।

लोक सेवक समिति के वापराव पर कीछा किया का कीच है वापरीय कमी के की केला एवं कार्यकर्ता उत्थाग्रह में क्षमिछि हुए और कारानार में बन्दी कमाये की । ऊनी की राधाराम पिपाटी, की राधकान्त पाण्डेय, की राधपुरत पाण्डेय, की मुधिराम मिश्र, की कुमारायण मिश्र, की सुरेश चन्द्र मिश्र, की कमीछ कीरावनी , की राधेन्द्र प्रजाप मिश्र, की विठेवर प्रजाप मिश्र, की विमल नारायण कुं, की कनर वरापुर सिंह, की हिमल नारायण कुमठ, की स्वाम नारायण मिश्र एवं की- स्वाम चन्द्र विवेकी बादि मुचि द्वारा भारत रत्ना वधिमिस्र में पकड़कर केनी

कारागार में डूब दिए गये । उनका ही हीन भाव के परचाप प्रतिभूति (क्रांति) पर
उनी कारागार से बाहर आये किन्तु अधीन की स्थिति पर न्यायालय में उपस्थित
होते रहे हैं । अन्ततः कारणों से श्री विठ्ठल की वास्तविक भूतला जपूत का राजनीतिक
बन्दी बना दिया गया ।

चौथा बिनाम उना हीन में भारतीय जनता के बाह
उपस्थित, अधीनस्थ, अन्ततः भूतल, का कारागारों के छिद्र अन्तर्गत, उन्म
अन्तः अन्तर्गत बाह उना उना में प्रतिष्ठा प्राप्त कार्यकर्ताओं एवं नेताओं का क्लृप्त
है, ऐसी परिस्थिति में परिवर्तन अन्ततः प्रतीत होता है ।

चिन्मू नवाचना

चिन्मू नवाचना का उद्देश्य चिन्मू राज्य की उत्पत्ति
एवं परंपराओं के आधार पर वास्तविक औद्योगिक चिन्मू राज्य की स्थापना करना है
उना यह उनी के उनाओं द्वारा अन्ततः भारत की पुनः स्थापना के लक्ष्य है । चौथी
बिनाम उना हीन में चिन्मू नवाचना में प्रथम बार सन् १९७४ ई० के निर्वाचन में उना
प्रत्यादी उना दिया । श्री चौथी उना पाण्डेय - चौथी नवाची बिना उना उना पर नागर
प्रथम उना के बाह उना के प्रत्यादी की योजना हुए । उना में श्री पाण्डेय की
उपस्थित उना के बाह उना पर ही नवा प्राप्त हुए बाह स्वाभाविक पराजय की मिली ।
उना उना की चौथी बिनाम उना हीन में कोई अन्ततः उना नहीं है । चौथी बिना
उना हीन में चिन्मू नवाचना की चौथी उना पाण्डेय उना हीन है जो उना उना के छिद्र
निर्वाचन है । उना प्रतीत होता है कि यह उना उना उना राजनीति की एक कड़ी के
अन्ततः बाह उना नहीं है क्योंकि अन्तः प्रत्यादी की राजकारण पाण्डेय है पारस्परिक
विरोध रहा । श्री चौथी उना पाण्डेय का प्रत्यादी उना श्री राजकारण पाण्डेय की पराजय
में उना उना उना हुआ । चिन्मू नवाचना का परिवर्तन उना बिनाम उना हीन में पुनः-निर्वाचन
ही है ।

अन्ततः अन्तः

अन्ततः भारतीय राष्ट्रीय अन्तः है औद्योगिक नेताओं की
बाह उना उना का भारत के राष्ट्रपति का है प्रत्यादी- निर्वाचन में विस्फोट हुआ ।

कलासूत तथा औद्योगिक मैत्रियों में अपने अपने की छवि-छाती एवं वैयक्तिक चिह्न करने का स्वागति व्यवहार राष्ट्रपति के वक्तव्य एवं १९५६ के निर्वाचन में प्राप्त हुआ। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा अनुसूचित वन्दारत्ना की पुकार ने राष्ट्रीय अनुसूचित का प्रतिमान एवं राजनीतिक नीतिज्ञता की कथा करते भारतीय राजनीति में प्रान्शिकारी परिवर्तनों के लिए प्रेरित द्वारा जोड़ दिया। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा कर्षित प्रत्यासी के वास्तव व्यक्त निरि राष्ट्रपति हुए और कठिन पथ द्वारा कर्षित प्रत्यासी के नीचे उनीच झुकी पराजित हुए बिना एक ऐतिहासिक, दूरगामी एवं वैचारिक मुद्दे का पूरा पाव हुआ। प्रधानमंत्री की कठिन पथ है निष्कासित किया गया जो कि 'मर्दा राम तब वक्त निवास' चिह्न हुआ और कर्षित राष्ट्रीय ऊँटन के वक्तव्य प्रतिपत्त कर्षित स्थानी कीक कर्षित पथ की कथा के प्रती 'ऊँटन कर्षित' है वक्तव्य कर्षित कर्षित कर्षित। ऐसा प्रतीत होता है कि 'ऊँटन कर्षित' की पूर्ण विस्मय या कि भारतीय वक्तव्य ऊँटन वक्तव्य कर्षित तथा कर्षित कर्षित, पूरा की मर्दा चिह्न उनीच किन्तु परिणाम कर्षित की पुष्टिपर ही रहे हैं। ऊँटन वक्तव्य प्रान्शिक का उपाय है और वक्तव्य का वक्तव्य ऊँटन की पीठ पर कर्षित है किन्तु पीठों का उनीच विस्मय ही कथा।

ऊँटन की प्रकृति कर्षितानी तथा कर्षित की कर्षितानी होती है। केन्द्रीय प्रीति है प्रकृति कर्षित की 'ऊँटन कर्षित' कर्षित उनीच कर्षित कर्षित कर्षित कर्षित। ऊँटन कर्षित के प्रकृति कर्षित भारतीय वक्तव्य-मार्षितनर कर्षितवक्तव्य में कर्षित है के लिए की कर्षितवक्तव्य चिह्न कर्षित (कर्षित) - कर्षितवक्तव्य एवं की कर्षितवक्तव्य चिह्न (कर्षित, कर्षित) - कर्षित (कर्षितवक्तव्य कर्षितवक्तव्य कर्षितवक्तव्य) कर्षित। इन पीठों प्रकृतिवक्तव्य का उनीच प्रकृति कर्षित है कर्षित-कर्षित या।^{१६} ऊँटन कर्षित ने कर्षितवक्तव्य वक्तव्य कर्षित कर्षित २५०० कर्षित की और कर्षितवक्तव्य तथा कर्षितवक्तव्य की 'कर्षित कर्षित कर्षित' का कर्षित की हुआ।^{१७} एवं १९७९ ई० में उनीच कर्षित के कर्षित में कर्षितवक्तव्य (ऊँटन कर्षित, भारतीय कर्षित तथा कर्षितवक्तव्य) के कर्षित पर कि कर्षितवक्तव्य चिह्न ई० की० का० की कर्षित कर्षित किन्तु कर्षितवक्तव्य में उत्साह नहीं रहा। की कर्षित कर्षितवक्तव्य चिह्न कर्षितवक्तव्य कर्षित कर्षित की नीचे कर्षितवक्तव्य हुए कर्षित कर्षितवक्तव्य कर्षित कर्षितवक्तव्य की कर्षित कर्षितवक्तव्य।

महाविप्लव स्वयं पुत्राय दीतव्यं न वधव्यं हे किन्तु अपना कार्य कर चुकी सब की किसी काम में लगाना है ।

जनता पार्टी

२६ जून जू १९७५ ई० से २९ मार्च जू १९७७ ई० तक के आधा-काठ की सर्वोच्च जनतावादी लोक विरोधी पार्टी के पुनर्गठन के फलस्वरूप जनता पार्टी का सम्मुख है । मार्च जू १९७७ ई० के लोक जन विधान में एकलता प्राप्ति हेतु एवं केन्द्र में सत्ता केंद्रित का विफल प्रयत्न करने का उत्तर केन्द्र भारतीय कार्य, भारतीय लोकतांत्रिक संघ केंद्रित एवं जनतावादी पक्ष के हीनस्व नेताओं ने आकाशवाणी के समुद्र तटस्थता की एक प्रकाश भारतीय के संरक्षण में एक भिन्न होकर जनता पार्टी के नाम से वास्तविक हुए । लोक जन के विधान की घोषणा के पश्चात् सत्ता केंद्रित है किन्तु भी कालीन राम की व्यवस्था में उनके पक्ष के कुछ नेताओं ने औद्योगिक केंद्रित का भी गठन किया बिना भी जनता पार्टी के पुत्राय विप्लव पर ही विधान में नाम प्रत्यक्ष किया । केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार भी गौरव भी देशों के नेतृत्व में की । १ मई जू १९७७ ई० की जनता पार्टी के सभी पांच पक्षों ने अपने नाम एवं पुत्राय विप्लव की आकाश कर जनता पार्टी में विहीन होने की घोषणा दिल्ली में की ।

होठिया किसान का दौध में जनतावादी पक्ष के अतिरिक्त जनता पार्टी के अन्य पक्षों के कार्यकर्ता, पत्रकारिता एवं सत्ता न्यूनाधिक क्षेत्रों में है । लोकता एवं किसानसभा में सत्ता दौध है जनता पार्टी का प्रतिनिधि ही का प्रतिनिधित्व कर रहा है । किसान सत्ता दौध स्तर पर भी एक जनता पार्टी का संघन नहीं हुआ है क्योंकि प्रथम वर्ष गाठ पूरी हो गई है । जनता पार्टी की यह संजमण केज है क्योंकि उनके मौलिक पक्षों की उकाशियां एवं मुख्य सत्तावादी हो गयी हैं किन्तु उनके स्थान पर नई उकाशियों का गठन क्या नई मुठों का प्रभावी पुनर् नहीं हो सका है । जनता पार्टी के प्रत्येक पक्ष में परस्पर प्रतिस्पर्धा एवं हीनता के नाम क्या क्या प्रकट हो जाते हैं । लोकता किसान की कठोरता वास्तव भारतीय लोक पक्ष पक्ष है सम्बद्ध होने के कारण परिवर्तित परिवर्त में कार्यवाही स्थापित करने का यत्न कर रहे हैं । जनता पार्टी की प्रथम वर्ष गाठ

आपान्त्य निवापि १८५१ कैदाई निवापि कना हीम

SECRET - 40000

पान पत्र - ३००११

महावीर प्रसाद शुक्ल (कवि)	१५०००
विहगर सिंह यादव (कवि)	५५०५
पैवी प्रसाद (के० एम० पी० पी०)	२५०५
मुक्तिशर प्रसाद तिमारी (कवि)	१५०५
छास्ता प्रसाद तिमारी (कवि)	१५०५
राम नारायण शुक्ल (रामराज्य परिषद्)	७००
वसन्तीश्वर शुक्ल	१००

बालिका को घर आवासीय में बसने का अवसर ही दिया ।

ग्रीष्म : पाथकिलर ६ कुल्लरी पुष्पार १६५२ पुष्प ५ ।

सायान्त्र विद्यापिठ १९६७ केवार्ड विद्यापिठ कला संघ

नवरात्र - ७५६७

पञ्चमः - ३६२२४

महावीर प्रसाद शुक्ल (कवि)	२१२४०
रामनाथ शुक्ल (पी० एच० पी०)	७६५५
श्री नारायण (निजीय)	२०१०
गुनराव सिंह (कानून)	२२४४
वसुधैव कुटुम्बकम्	१०

कभी नारायण का पुनरावर्तन ने कभी बनायी ही दी ।

हीन : मायबिम्बर ६ मार्च बुधवार, १९७७ ।

निवापिन १२५६ सौंठवा निवापन कना पीप

क्यापल - एडमिरल

महामा - १०२५४

बलदेवराज बाबू (निरीक्षक)	१५५५
नवादीश सिंह	१२०६
राधादास बाबू	६५५५
राधिकादास बाबू (सीनियर)	५००५२
राधिकादास बाबू (जूनियर)	१०००२
राधिकादास सिंह (जूनियर)	२५५२
राधिकादास बाबू	५५५५
राधिकादास बाबू	१२

श्रीच : निम्नलिखित कथनसिद्ध प्रमाणवाचक के अर्थसिद्ध ।

●●●●

सामान्य विधान १९७१ सीटों का विधान क्या हो

महाराष्ट्र - १३४६६

प्राप्त करी - १०/११/१९८१

वडईराम बाबय (पा० प्र० प०)	१६०००
कमलाकान्ध बाबय (निर्देशीय)	१५००६
कैमारनाथ दिग्ग (११)	७३५६
कविराम बाबईय (रामराज्य परिषद्)	११५६
कौटिल्य बाबईय (दिग्ग महासभा)	११०३
क्रीष्ण नाथ शिव (निर्देशीय)	११६३
कुसुम शिव (११)	१२५५
कविराम बाबईय (कन्नड-सभा)	११५००
कान्हा शिव (भारतीय कान्हा)	१२११३
कान्हा शिव (कन्नड कन्नड)	१५००
कान्हाशिव बाबईय (निर्देशीय)	१११५
कविराम शिवराज (११)	१११६
कविराम (शिव०)	११२५
कविराम शिव	१५१६

निम्नलिखित १४७७ बीछिया किसान कमा चीज

मककास - १२२६०६
मस पट्टी - ६७७७५

महाराज बाबब (मकका पाटी)	२७६६३
महाराज बाबब (निरीडीय)	५७७५
महाराज बाबब (रामराज्य मरिचकु)	१७७१
राधेन्द्र प्रसाद मिनाडी (मरिच)	२२२७७
रुद्र मारायण बाबब (निरीडीय)	१७६१
मिन्माराज मरारायण बाबब (निरीडीय)	२५०
मरिच मीन मिनाडी	१७७७
मरिच (मिनायण मीनमरिच)	१७७७
मरिचकु मस	१२७७

मरिच : मरिच बीछिया मरिच १६ मरिच, १७७७ मरिच ।

७७७

मरिचकु मरिचकु मरिच मरिचकु मरिच मरिच
मरिच के मरिचकु मरिच ।

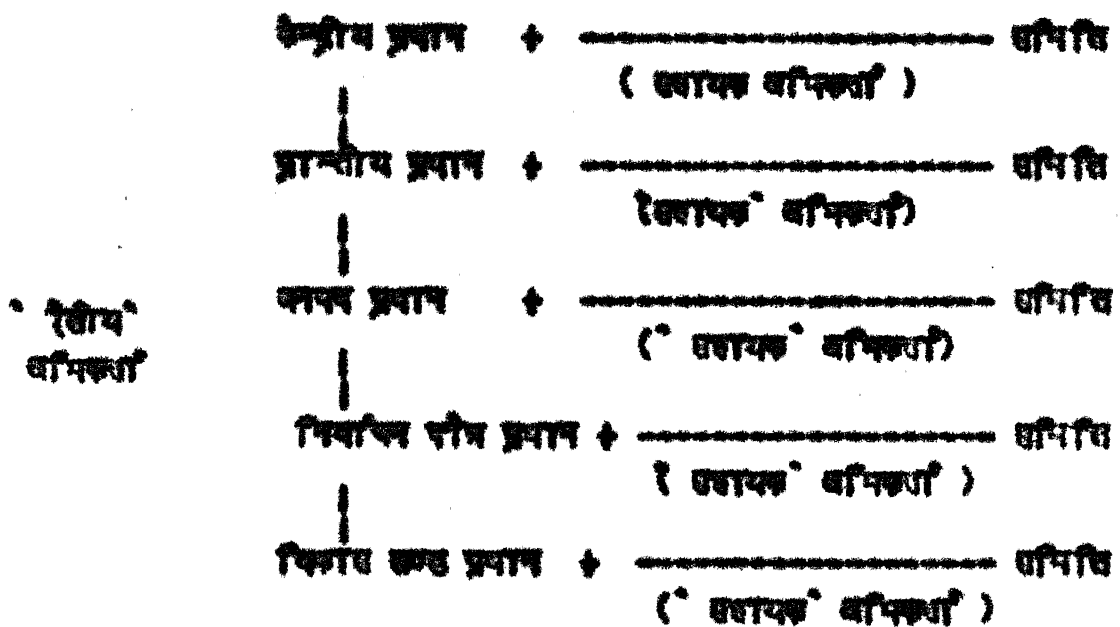
- [illegible]

- ४ - श्री सुरेश कुमार पाण्डेय शास्त्र की राधाराम पाण्डेय है साप्ताहिक दिनांक २-४-१९७४ ।
- ५ - ए० डी० पानर' व डॉक्टर पांडेय दिनांक १६४ पुष्प १२० ।
- ६ - श्री ललाय सिंह यादव - है साप्ताहिक दिनांक २-४-१९७४ ।
- ७ - श्री रामलाल यादव साप्ताहिक दिनांक २-४-७४ ।
- ८ - श्री कर्षण बहादुर सिंह है साप्ताहिक दिनांक २-४-१९७४ ।
- ९ - श्री रामलाल यादव साप्ताहिक, उत्तराखण्ड नदी धनुष जलवादी पत्र - साप्ताहिक दिनांक २-४-७४ ।
- १० - श्री ललाय सिंह यादव है साप्ताहिक दिनांक २-४-१९७४ ।
- ११ - श्री ।
- १२ - श्री रामलाल यादव साप्ताहिक दिनांक २-४-१९७४ ।
- १३ - डा० ए००००००००, भारतीय डॉक्टर और नागरिक बीमा की कमी, १९७४ पृ० ३३३-३४
- १४ - श्री ललाय सिंह यादव- ललाय साप्ताहिक, भारतीय डॉक्टर, डॉक्टर, साप्ताहिक दिनांक १२-३-१९७४ ।
- १५ - श्री मल्ल यादव - कृष्णपुर है साप्ताहिक दिनांक २४-४-१९७४ ।
- १६ - श्री डा० ललाय साप्ताहिक, डॉक्टर है साप्ताहिक दिनांक २४-४-१९७४ ।
- १७ - श्री राज बारायण पुष्प- बाराय है साप्ताहिक दिनांक ७-७-१९७४ ।
- १८ - श्री हरिश्चन्द्र हरिश्चन्द्र - डॉक्टर है साप्ताहिक दिनांक १६-७-१९७४ ।
- १९ - श्री राजाराम बिनाडी - बाराय है साप्ताहिक दिनांक ६-४-१९७४ ।
- २० - श्री राजाराम बिनाडी बाराय है साप्ताहिक दिनांक ६-४-१९७४ ।
- २१ - श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय, ललाय ललाय नदी है साप्ताहिक दिनांक १५-३-७४ ।
- २२ - कैलाश मल्ल ललाय बाराय पारित प्रस्ताव, १६४२ ।
- २३ - श्री ललाय प्रस्ताव बिनाडी- ललाय है साप्ताहिक दिनांक १४-७-१९७४ ।
- २४ - श्री रामलाल सिंह 'बिना' है ललाय ललाय व बाराय दिनांक ३०-१-१९६६ ।
- २५ - ललाय ललाय १५ वॉ बाणिक ललाय पुष्पलाल प्रस्ताव ए० १९७४ पृ० ३-४ ।
- २६ - श्री डॉक्टर पाण्डेय डॉक्टर बिनाडी बाराय है साप्ताहिक दिनांक १४-५-७४ ।
- २७ - श्री मल्ल कुमार ललाय - ललाय - प्रस्ताव नदी बाराय प्रस्ताव दिनांक १०-४-७४ ।

- ३६- श्री कवीश्या सिंह, प्रवक्ता, देहरादून-०६००००, चीक्या है शास्त्राचार दिनांक २८-७-७६ ।
- ३७- श्री डा० देवराय सिंह, चीक्या है शास्त्राचार, दिनांक २८-७-७६ ।
- ३८- श्री दाम बलपुर सिंह, चक्र प्रमुख चीक्या, रायपुर है शास्त्राचार दिनांक १६-६-७६
- ३९- श्री रामलाल कुंभ- देवाचार है शास्त्राचार दिनांक १-८-१९७६ ।
- ४०- श्री डा० देवराय सिंह चीक्या है शास्त्राचार दिनांक २८-७-७६ ।
- ४१- श्री देव पुष्पाय नगी, चीक्या है शास्त्राचार ।
- ४२- देवद बज्जुल नगीय ठके बज्जुलिया, चीक्या है शास्त्राचार दिनांक १३-७-७६ ।
- ४३- देवद मुत्ताय बज्जुल नगीय शास्त्राचार श्री शक्तिशार मुत्ताय ठके बज्जुल पिया -
चीक्या है शास्त्राचार दिनांक ६-८-७६ ।
- ४४- देव पुष्पाय नगी, चीक्या किता प्रतिनिधि है शास्त्राचार दिनांक ६-८-७६ ई० ।

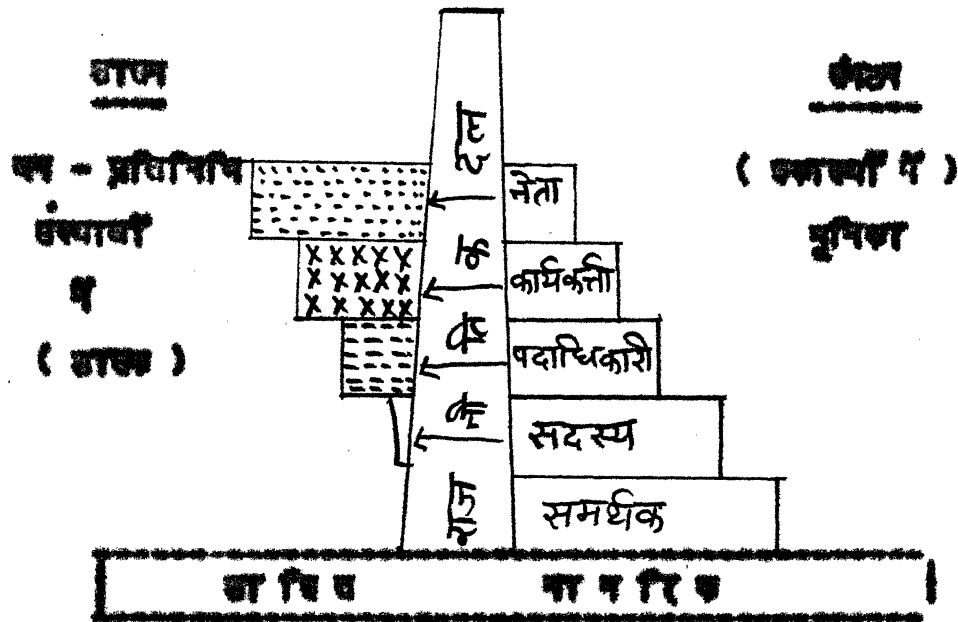
कार्यक, कर्मच, कर्मिकारी, कार्यकर्ता, छात्र एवं नेता के रूप में विकास राजनीतिक पक्ष हो करते हैं। संसदन में निम्नतम स्तर पर वे उपरीपर उच्चतम स्तर पर कर्मिकारी का केन्द्रियकरण होता है। संसदन की राजनीतिक पक्ष की प्रत्यक्ष संस्थाओं में 'रेडीय' एवं प्रत्यक्ष स्तर पर वस्तुकी कार्य करनेवाले उदात्त कर्मिकारियों की उपस्थिति है। इसके स्वकीकरण के लिए फिर व का वकीकरण करें।

राजनीतिक पक्ष का संसदन



चित्र १ : रेडीय एवं उदात्त कर्मिकारी

राजनीतिक पक्ष की चौकरी प्रमाणिक निम्नोक्त पद्धति है प्रमाण संसदन तथा द्वितीय स्तर। इन दोनों प्रमाणिकों की माता भिन्न भिन्न संसदन है। संसदन में उदात्त तथा छात्र में उदात्त की प्रमाणिक होती है। राजनीतिक पक्ष विकास मापदण्डों में वे प्रमाणिक, कार्यकर्ता में वे कर्मच, कर्मिकारी, कर्मिकारियों में वे कार्यकर्ता एवं कार्यकर्ताओं में नेता का निर्माण संसदन की संस्थाओं के द्वारा करते हैं जो कि इन प्रतिनिधि संस्थाओं में स्वयं प्रमाणिक करते छात्र पक्ष छात्र कार्य संस्थागत करते हैं। (चित्र २ का वकीकरण करें)



चित्र १ : राजनीतिक दल के संरचना में नागरिक के नेता का निर्माण और राज्य में उनके द्वारा स्थान प्रदान की योजनाओं को पेश करने के लिए वह है जो तथा नेता के लिए सर्वाधिक है ।

कार्य :

जनसभा या जनसभा नागरिक को तात्कालिक, प्रभावों के परिणामस्वरूप दल के लिए में उत्पन्न प्रदान करती हुए भाषण के लिए जनसभा होता है जो कार्य करता है । कार्य दल के लोगों के लिए अपने लोगों का स्थान न्यूनता में भी कर सकता है । कार्य वह लोगों की तरह है जो कि कार्यकर्ता सभी पुष्पक के भाषण को प्राप्त कर वास्तविक होता है और जनता में निष्क्रिय रहता है । कार्य मजबूत अनुशासन है और रहकर अपनी पूर्ण स्वाधीनता का परिणाम दल की जातीयता है होता है । राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन नागरिकों में है जो किसी में राजनीतिक नेता वास्तव होती है जो वह कार्य ही करता है । कार्य निष्क्रिय है जो अधिक तथा कार्य है जो वह है ।

प्रभाव बनियान में राजनीतिक विचारों (पक्षों) का स्वाधीन मतदाताओं की अवस्था कार्य पर अधिक प्रभाव पड़ता है । कार्य है कि वह मतदाता विचारों : " स्वाधीन मतदाता होती है । " क्योंकि उनका प्रभाव कि वह राजनीतिक दल की ओर होता वह विचारित या रहता है । कार्य विशेषकर व्यक्ति

या नाशना के प्रति ब्याप्त, लीची, मऊ या मिठ होता है जिसकी अनुपस्थिति में यह है उर्वर नहीं रहता । ऊपरके ऊपरी तात्कालिक राखीतिक दौम में व्याप्त वान्त है प्रित्त होता है इसीलिए वह कवरावादी होता है ।

ऊपरके हाथ और क्वात ही प्रकार के होते हैं । हाथ ऊपरके वह है जिसके यह है प्रति ऊपरी की कता तथा यह हीनी मान्यता प्रदान करते हैं और क्वात ऊपरके वह है जिसके ऊपरी की कता या यह हीनी में ऊ मान्यता नहीं प्रदान करता । हाथ ऊपरके हीन ही यह का ऊपर्य न्न वाता है और क्वात ऊपरके ऊपरी की वाताम्य न्न में विहीन रहकर ऊपरी मानविक ज्ञान्ति एवं क्वात हीनत्व के निमित्त कार्य करता तथा काजन्तर में हाथ की केनी में प्रविष्ट कर रहता है । राखीय कर्मकारी एवं व्यापारी प्रवृत्ति के व्यक्ति क्वात ऊपरके होते हैं क्योंकि कता उनके ऊपरी की नहीं ऊपर वाती किन्तु राखीतिक यह ऊपरी की मान्यता प्रदान करते हैं ।

ऊपरके का दौम और काठ सीमित होता है क्योंकि वह अपनी सामाजिक लीची एवं कौशलिक शक्तों की दृष्टिगत रहकर ही ऊपरी होता है । बहिष्कात ऊपरके की यह है विद्वान्ताँ, नीतियाँ एवं कार्यकर्ताँ का बलवान्न धाम होता है किन्तु सामाजिक, वार्थिक या वार्थिक प्रतिष्ठा कस्य प्राप्त रहती है । ऊपरके यह है प्रति अपनी ऊपरी की एक या कौन कर्ता में व्यक्त कर रहता है की शारीरिक न्न, वार्थिक उत्पन्न, वातांताप में पला, निवी लीची का धाम या यह शित में उपकीन, कैवाची में स्थान प्रदान, लीची के विचारण में कर्मान या एवाभुति, विरीफियाँ के रहस्याँ की वातकारी देना या ऊपरी किलान उत्पन्न करना तथा निवाजि में कुछ मर्ता की अपने पला में वधि प्रकण एवं यह के निर्दिष्टों का वात वाधि । मतावाता या कवरावा नागरिक यह के लिए विविधता की स्थानकर कर्मता का सुवारम्य विव दान करता है जो समय है ऊपरके की केनी में प्रविष्ट हो वाता है । यह है ऊपरके की राखीतिक कारणों है नहीं वाम्बु वान्न कारणों है ही उत्पन्न में न्न प्रतिनिधि लस्यावाँ के कर्मकी न्नून स्थान प्राप्त होती हैं ।

उपस्य :

यह कवरावा या कवरावा नागरिक ,की राखीतिक यह के विद्वान्ताँ, नीतियाँ एवं कार्यकर्ताँ में विवकात करके अपनी एवमति की एक एक के

राष्ट्रीयता वर्ग का नाम	उपस्थ प्रकार	न्यूनतम वर्षों का वापस	विमान का वर्ग व उपस्थ	पूरी विमान वर्ग	उपस्थ वर्ग	उपस्थ प्रकार वर्ग	निर्णय
१	२	३	४	५	६	७	८
राष्ट्रीय भारतीय राष्ट्रीय काप्रेस	प्रारंभिक २२ वर्ष उपस्थ २१ ००	२५०० ७५० (१)	विमान काप्रेस उपस्थ २५-०००० काप्रेस + २५ उपस्थ वर्ग वापसता है	१-००००० काप्रेस उपस्थ वर्ग वापसता है	पूरी वर्ग उपस्थ राष्ट्रीय विमान वर्ग	उपस्थ वर्ग वापसता है	वर्ग राक्षसीति पूरी वापसता है उपस्थ
भारतीय उपस्थ	उपस्थ २२ वर्ष	५०० (१)	विमान उपस्थ	५० वर्ष उपस्थ ५० वर्ष + १५ उपस्थ वापसता है	पूरी वर्ग उपस्थ राष्ट्रीय विमान वर्ग	उपस्थ वर्ग वापसता है	वर्ग राक्षसीति पूरी वापसता है उपस्थ
भारतीय उपस्थ	प्रारंभिक २२ वर्ष उपस्थ	५०० वापस १२०० (१)		१-००००० पूरी वर्ग			

परीक्ष : (१) बिनास कण्ड एवं निम्नलिखित दोनो स्तर के दत्तक पदाधिकारियों के कार्यालयों पर प्राप्त किसी भारतीय छात्रों के वार्षिक प्रगति के सम्बन्ध में १०० शब्दों में एक प्रश्न और एक उत्तर के बिनास में १२०० शब्दों में लिखना ।

संविधान भारतीय संविधान के संविधान अनुच्छेद ५(ब) के अन्तर्गत
राष्ट्रिय कार्य शक्ति की प्राप्ति का स्पष्टीकरण और भी किया गया है । वे प्राथमिक
कार्य राष्ट्रिय कार्य के साथ ही जो १-संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त क्षेत्रों में राष्ट्रिय
है या २-विशेष ३६५ दिन पूर्व प्राथमिक कार्यता प्रणाली की है । राष्ट्रिय कार्य है
मुख्य कार्य है (ब) प्राथमिक एवं राष्ट्रिय कार्यों का क्रम (ब) संविधान-निधि क्षेत्र
(ग) प्रतिवर्ष एक सप्ताह का शांतिपूर्ण का वेले मनाया जाये, एक जलाना, नगर जीवना,
कुशलारोपण, पत्नी बलिष्ठों की स्वच्छता, शांति की उन्नति आदि (घ) प्रतिवर्ष
का क्षेत्रों में भाग प्रणाली (ङ) यह है मुख्य कार्य का प्राप्ति जाना (च) सामाजिक सुधार
के क्षेत्र में काम वेले पैसा प्रवा का विरोध, बाढ़-विवाद का विरोध, तथा परिवार
नियोजन के लिए कार्य आदि (जी) राष्ट्रीय सामर्थ्य का प्रयोग और (झ) एक या
अधिक रचनात्मक कार्य - १ शिक्षा २- निवेश ३- शांति एवं सामाजिक ४- युद्ध एवं
विचारों का क्षेत्र ५- पक्षुओं का क्षेत्र, ६- किसानों का क्षेत्र ७- वस्त्र वस्त्र
योजना अभिज्ञान ८- प्राचीन उद्योग एवं स्वास्थ्य ९- राष्ट्रभाषा प्रचार

१०- वसुधाविज्ञान में सुविधि ११- निवासिनी राज में कार्य १२ - वैवाचक १३- कुम्भ वैवा
१४- वसुधाविज्ञान तथा वसुधाविज्ञान का कार्य १५- वसुधाविज्ञान निवासिनी
१६- राष्ट्रीय वसुधा के लिए कार्य विवेचनकर वसुधाविज्ञान में १७- प्राकृतिक-विज्ञान तथा
वाचनालय वाचनालय १८- पक्षीय वाचनालय की विधि तथा १९- वसुधा और कार्य की
कार्य विधि द्वारा काम काम पर निवासिनी किया जाय । वसुधा विचारित प्राकृतिक वाचनालय
वसुधा की प्राकृतिक वाचनालय की विधि के कार्यविज्ञान पर अपनी वसुधा वाचनालय की वाचनालय
प्राकृतिक करनी चाहिए ।^{१६} प्राकृतिक वसुधा की विवेचनाविचार दिया गया है कि वह
विधि भी वाचनालय की वाचनालय वसुधा की वाचनालय है ।^{१७}

भारतीय कानून में शक्ति का वह निष्पक्षता के अभाव में
 अधिकांश के अनुसार ७ के अन्तर्गत स्पष्ट नहीं है : (क) कोई भी व्यक्ति शक्ति का
 अधिकार यदि वह (ख) शक्ति या अन्तः, विचार का अन्तः ही, के अन्तर्गत ५० प्रतिशत
 अधिकारों में शामिल होना ही तथा (ग) प्रतिशत कानून का प्रत्यक्ष अन्तः कानून
 के अन्तर्गत के अन्तर्गत शक्ति ही, कानून मंडल या स्थानीय विचारों का
 अन्तः अन्तः ही का कोई ऐसा कार्य, किन्तु अनुच्छेद ७(२) के अन्तर्गत निम्नलिखित विचार
 में सम्मिलित ही हो, करता ही । (घ) कोई भी व्यक्ति निष्पक्षता का अधिकार यदि वह
 (ङ) प्रतिशत कानून के २२ अन्तर्गत न कानून (वा) संवैधानिक विचार के तीन अन्तः
 अन्तर्गत में किन्तु अनुच्छेद के अनुसार ही रहे अन्तः । और (६) अधिकांश द्वारा निष्पक्ष
 अन्तः, अन्तः कानून के तीन भाग तक न ही ।

भारतीय कार्य समिति बिस्म का अध्यापन करते किसी भी सदस्य की सक्रिय योगिता पर उत्ती है । प्राथमिक प्रदान की अधिकार है कि वह किसी भी सदस्य की निष्ठाता है उत्तम बनाता है मुक्त कर दे ।

भारतीय संसद के संघान में निर्णित अनुच्छेद ४ में प्रारंभिक सदस्यों का ही विवरण दिया गया है राष्ट्रिय सदस्यों की संपूर्ण संघान में नाम तक नहीं है ।

सुजात्यक व्यवस्था है शायद सोचा है कि काग्रेस का पण्डित व्यवस्था
होने के लिए २४-०० रुपये वार्षिक भुक्त एवं साधारण व्यवस्था में एवं पण्डित

भारतीय कांग्रेस के एक, भारतीय लोकसभा के एक तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कक्षा) के "सबसे कम" सदस्यों ने उपस्थिति के स्थान पर बिदे हैं । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कक्षा) के साथ ही केर पांच ही एक सदस्यों ने, भारतीय कांग्रेस के एक सदस्य ने तथा भारतीय लोकसभा के भारतीय सदस्यों ने सन् १९७४ ई० के विमान उड़ा विमानों में अपनी सभी एक के प्रयाशी के साथ ही प्रयास नहीं किये ।

श्रीलंका किसान क्वा सीब में ग्राहक केंद्रों । निवासी सीब केंद्रों कीटो : भारतीय कार्य के स्थायी समिति तथा नण्ड समिति एवं भारतीय सीब के प्रारंभिक केंद्रों तथा सीबीय केंद्रों, गतिव सीबी काटिए । किन्तु का एक ही दृष्टिकोणों की सीब की गई तब बाद हुआ कि प्रारंभिक केंद्रों का गति नहीं है । यहाँ पर में उन सीबी राजनीतिक वर्गों के कर्तव्य निर्माण के कारण हुए विधानों की वीर ध्यान देता है तो भारत एवं की प्रजासत्ताक राज्यों तथा का प्रतिनिधियों की निवासी करनेवाली राज्यों का निधि अनुकरण प्रतीत होता है । एवं, राज्य एवं विद्या की राज्यों में प्रजासत्ताक अनुक्रम परिवर्तित होता है । निवासी सीब, किसान केंद्र, न्याय संस्था एवं ग्राम स्तर की राज्यों में कृषिनिधि निवासी करनेवाली राज्यों का अनुकरण प्रतीत होता है ।

किसान क्वा निवासी सीब २०१ श्रीलंका एवं १९७४ तथा १९७७ का विवरण ^{२२}

क्र. सं.	नाम	कुल संख्या
१	किसान केंद्र	१ २१
२	न्याय संस्था	३२
३	किसान केंद्र (सीबीय केंद्र)	८९
४	किसान क्वा (सीबीय)	१४६
५	ग्राम	२५८
६	सीबीय केंद्र	१५४८१ तथा १७७८३ २४
७	कुल केंद्र	६७६२५ तथा ७७७४३ २५
८	कुल केंद्र	४२ २७०
९	कुल केंद्र	१६२८६६

कुल केंद्र - २०६७६

कुल केंद्र - १२४४६६ तथा १२८६२६ २६

श्रीलंका किसान क्वा सीब में केंद्रों के

परिचय में बतलाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कठिब, भारतीय कार्यक तथा भारतीय लोकसभा की स्थापना का अनुमान लगाते हुए कठिबों तथा अन्य विवरणों के विवरण दिया जा सकता है। उल्लेखित भारतीय राष्ट्रीय कठिब, फिर भारतीय कार्यक और अन्य में भारतीय लोकसभा का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

भारतीय राष्ट्रीय कठिब

भारतीय विधान का पक्ष में भारतीय राष्ट्रीय कठिब की तीन प्रकार की कठिबों की कठिबों हैं जिनके बीच में विवरण दिया जा सकता है।

क्रम संख्या	कठिब का नाम	कार्यकारी की संख्या	रिक्त स्थानों (एक) की संख्या	कार्यकारी की संख्या	कार्यकारी की संख्या	कार्यकारी की संख्या
१	भारतीय कठिब की संख्या, भारत	१	भारतीय	२, १०, १५	१	भारतीय
२	भारतीय कठिब की संख्या, भारत	२	भारतीय	१०, २५	१	भारतीय
३	भारतीय कठिब की संख्या, भारत	३	१		नहीं	भारतीय

संख्या : कार्यकारी की संख्या

क- नवम्बर, उ- संख्या संख्या न- संख्या द्वारा

क- नवम्बर, उ- संख्या द्वारा।

भारतीय कठिब की संख्या :

भारतीय कठिब की संख्या में संख्या, संख्या, नवम्बर, संख्या, संख्या संख्या के एक एक एक हैं : कार्यकारी की संख्या की

है तथा विन्म विन्म पदाधिकारियों ने परस्पर विरोधी कयाची काफ़ि एक पत्रक काट्टिस कीटी में यह निश्चित होनी । कार्य समिति के सदस्यों में से किता काट्टिस कीटी तथा प्रसिद्ध काट्टिस कीटी के लिए एक एक प्रतिनिधि के रूप में । महान कार्यकर्ता हैं कि एक ही पत्रक काट्टिस कीटी के बयान महामंत्री एवं कौशल नहीं ने साक्षात्कार में केवल हमें ही हीन क्यों है पदाधिकारियों का नाम जान बयाया है वह पदाधिकारियों के नाम एक पुराने से विन्म रहे । पत्रक काट्टिस कीटी कीटिया के महामंत्री ने की छाछाणि विम की बोधाव्यता कयाया कीर कौशल नहीं ने की नीलई कीटिया- वशिरी की बोधाव्यता कयाया ।^{१०} पत्रक काट्टिस कीटी केबाबाद के बयान की कर्तव्य छाछ छाछ-पुर्वाक ने अपने साक्षात्कार में केवल महामंत्री की बोधानाय पाण्डेय बन्धनता के वशिरीय बन्ध पदाधिकारियों के बारे में नहीं मालूम हैं" ऐसा उत्तर दिया ।^{११} काफ़ि की पाण्डेय ने अपने साक्षात्कार में बयान , जवाबदा एवं अपने की महामंत्री कयाया

पत्रक काट्टिस कीटी में पदाधिकारी कने के लिए छत्रिय छत्रिय की लक्ष्मीयों का चीना बावश्यक है । एक मात्र बयान एवं कार्य समिति के सदस्यों के लिए ही दहीय छीयान में निश्चित की व्यवस्था है और बयान की कार्य समिति के सदस्यों के मध्य से ही एक व्यक्ति (नहीं) की नियुक्ति करता है ।^{१२} बयान बन्ध पदाधिकारियों का कल करता है । कल में १६, ५ प्रतिशत बाति ; कौशल, विस्वाध, कर्मा और बाफ़ूरी प्रत्येक ११ प्रतिशत ; व्यवहार, नीतिव्य, व्यक्तित्व , अनुभव, पदाता एवं निष्ठा प्रत्येक ५, ५ प्रतिशत प्रभावकारी बतब है ।^{१३} दहीय छीयान पर दृष्टिपात करने से यह छत्रिय विस्वाध चीता है कि बयान की सारत पदाधिकारियों एवं कार्य समिति के सदस्यों का नाम ज्ञात चीना बाफ़िर किन्तु छत्रिय यह बाया कि बयानों की वृत्ता ज्ञान नहीं किता कारण यह प्रतीत चीता है कि उनकी लक्ष् का प्रतीय किती बन्ध द्वारा किया गया और पूर्ण विवरण उन्हें (बयान की) छत्रिय की नहीं हुआ । पदाधिकारियों के अधिकारों एवं कर्तव्यों का जीर्ण विवरण कल के छीयान में नहीं निष्ठा है । क्या यह सन्नत बाय कि प्रत्येक पदाधिकारी अपने अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान किती बन्ध प्रीत है करता है ?

साक्षात्कार में पुच्छ प्रश्न " क्या कल के कौशल में रक्कड़ अपने नियुक्त का विचार कर लगी हैं ? के उत्तर में की पदाधिकारियों ने" हाँ कहा

जब बिना कानून कीटी के बचपन पर पर बिनीवी गुट बीनवी कलम बल्लुणा के बाकीन बीने है उन्हें एकल्ला नहीं मिल ली ।

प्रत्येक फटाफटारी की फटाफट ही बर्न के लय की बीती है ।^{११} कार्यकाठ बढ़ाने की बीनपान में बीने बल्लुणा नहीं बी गई है । फटाक कानून कीटी बल्लुणा के बचपन की ठिब प्रभाव बिब बिनीवी बल्लुणी बिनीके ११ नवीर १९७५ की बी बनीन बी बीने^{१२} किन्तु बाब एक रिक्त पर पर बीने बी प्रभाव नहीं बिब नया, यवाप बीनय बीनपान के कानून २६(ब) के अनुसार ली बी बुरि की बल्लुणा बी गई है । फटाफट के बल्लुणी बिनी बी फटाफटारी की बल्लुण करी की बीन बल्लुणाबल्लुण बिनी के बीन बिना कानून कीटी ल बीन कपर की बीनबीन बी प्रभाव है ।^{१३} लीन लल्लु बीन है कि फटाक कानून कीटी बाब बिनी बी फटाफटारी की बल्लुण करना बाब बी बी बल्लुण नहीं है । बीनः प्रत्येक कानून कीटी की बल्लुण है बिना कानून कीटी बीन बीनल्लु फटाक कानून कीटी की बीन बाब के ठिब बिनीन करी पुनः बीन बीन बाब करी यह लल्लु एक बर्न एक बल्लुण बिनी बी बी लल्लु करी ल उपाय ल लली है ।^{१४} ल बीनबीन के लीन एक बल्लुण प्रभाव लुवा है कि लल्लु बिना कानून कीटी की बीनल्लु बी पुन है बिनी बीन प्रभाव फटाक कानून कीटी पर बीन । लल्लु बीन के उपाय के बीन बीन लल्लु बीन में बुरि लल्लु के बिना न बीनल्लु बीनल्लु लल्लु की लल्लु बीनल्लु बी बीन है^{१५} किन्तु लल्लु बीन नहीं बिब बाब प्रवीन बीन ।

ल के बीन में बिनीन लल्लु के ठिब बीन प्रवीन है उत्पन्न लल्लु की फटाफटारी ल लली है । फटाफटारी बीन फटाफट ल बीन बिनी का बीन लल्लु बाब है ।

फटाक कानून कीटी के बाब बी लल्लु प्रवीन कानून कीटी का लल्लु बिनीन बीन है बी बीन बाब के बल्लुण एक बी लल्लु बीन लल्लु प्रवीन कानून कीटी में बीन करना बीन है ।^{१६} प्राथमिक लल्लु है बीनल्लु लल्लु लल्लु की बल्लुण का बीनल्लु प्रवीन बाब फटाक कानून कीटी की बिनी बाब^{१७} किन्तु यह बल्लुण बिब फटाफटारी के बाब या बाब है बीन लली बीन लल्लु

कोई भी स्पष्टीकरण नहीं किया गया है। यद्यपि आरुह्य कठिण लैटी सीमा में कोणावस्था पर पर की छायाभिन्न भिन्न है किन्तु आरुह्य कठिण लैटी के नाम है जहाँ कोई भी छाया नहीं पर भी नहीं है।^{१२८}

तीन आरुह्य कठिण लैटियों के पदाधिकारियों के आराखार में कुछ प्रश्न 'यदि ऊँच के पदाधिकारियों का वह कैपिटल जो बाय हो केहा होना?' का उत्तर एक के बजाया सभी में बहुत बड़ा होना' किया। बाय ही बाय' वह का ऊँच बड़ा होना, पर के लिए बहुत ही बड़ा हो बायी, पदाधिकारी अधिकतर किताबों है मुक्त हो बायका गया ऊँच एवं बाय बराबर हो बायी - कर्मा है सभी बलाति प्रष्ट की।' केन केन के लिए वह कहा है बायी? का उत्तर' वह के लिए लैटीय क' का प्रीत बताया। एक पदाधिकारी में कर्मावस्था वह बायी' ऐसा उत्तर देकर कैपिटल अवस्था है बलाति प्रष्ट की। इन उत्तरों है स्पष्ट है कि कैपिटल कार्य प्रणादी है कार्यव्यय यह रही है। जहाँ वह अनुमान करने की क्षमता नहीं होती कि कैपिटल-प्रान्ति की बला बन्ध बायों है पूरी होती होती।

आरुह्य कठिण लैटियों के ६० प्रतिशत पदाधिकारी जहाँ कैपिटल मुत्यांश है बलाति प्रष्ट की; जो ३३ प्रतिशत पदाधिकारी लैटी है है कैपिटल है बायिक दायित्वपूर्ण पर प्राप्त करने की कामना रखी है बायिक लैटियों के बायी पाग में कोई गुरुतर दायित्व ही की बायिका बाय की। इसी स्पष्ट है कि वह ऊँच में प्रवेश करने पर पदाधिकारी की ऊँच के पदाधिकारी पर का बाय होती है सब पदाधिकारी में उस विशिष्ट पर की बायिका बाय बाय हो बायी है; यदि वह बायिकापूर्ण न हो ली तो वह वह बायिका बायिका में लैटी की एक बाय है किन्तु बायिका होने पर लैटी हो बाय है।

'एक ही पर पर एक बाय' का बहुत बड़ा एक पदाधिकारी रखा गया ऊँच के लिए है? के उत्तर में सभी पदाधिकारियों में नहीं कहा। इसी स्पष्ट है कि प्रत्येक पर में नवीन पदाधिकारियों का निवास ऊँच ही लैटी, बायिका, लैटीय, बायिका है एवं बाय की बायिका प्रदान करता है जो लैटी है

के पास रखी है इसकी निश्चित करना बहुत ही क्या किन्तु महामंत्री ने कायाचित में रखा जाना बताया । पिछले ही वर्षों में किसी बैठकें हुए ? के उत्तरों में बैठकों की संख्या में वृद्धिमान बताया गई किन्तु नियमित प्रक्रिया की बैठकों पर ध्यान है । इसी स्पष्ट है कि यह के महापिकाइयों की बैठकों बाधित नहीं होती है और बैठकों की पूर्णता महापिकाइयों की एक निश्चित माध्यम है नहीं ही जाती है । होशियारों की बैठकों के विवरण है उनकी योजना की पूर्ण करने में और कठिनाईयों का समाधान महापिकाइयों ने बताया । पिछले विधानसभा चुनाव में उपायक करीबानों की पूर्ण यह के महापिकाइयों के पास या कायाचित में नहीं मिली थी कि यह के लिए मैं हीकी बाधित थी ।

जब २४ फरवरी में बीजेपी के विधान सभा राखनीति में बैठे हैं , के उत्तर में ही आजकल जटिल कीटियों के सम्बन्धों में बार बार फटे, उनका मंत्री २ फरवरी एवं महामंत्री १६ फरवरी, समय राखनीति में पैदा बताया किन्तु किसी ने भी निश्चित काठ (किसी भी है किसी भी एक) स्पष्ट नहीं किया किछी अधिक समय देखाओं पर बाधित होती है । यदि यह प्रत्यक्ष समय ठीक ठीक बताया भी हो तो भी महापिकाइयों का पड़ीकरण का ही प्रतीत होता है । पड़ीकरण का प्रक्रिया है किछी यह के उत्तर में वहीय निश्चय, पैसा एवं ज्ञान का प्रतिक्रिया होता है । ईश्वरः प्रवेश में यह की उत्तर होती है कारण यह के उत्तर में अधिक समय जानने की आवश्यकता का अनुभव महापिकाइयों का ही नहीं है ।

एक आजकल जटिल कीटी का अपने किछी के सम्बन्धों की निश्चयन बाधित ही में किछी पूर्णता आजकल जटिल कीटियों है किसी प्रकार का समय नहीं है, परिणामस्वरूप एक पूर्ण कीटियों के महापिकाइयों की जानकारी बहुत का होती है । ऐसी हीयानिक व्यवस्था के सम्बन्ध में किया गया निश्चित हीयार पर महापिकाइयों एवं जमीनदारों की नेतृत्व के विकास का मार्ग व्यवस्था भिन्न है । मेरे विचार है एक विधान सभा निश्चित हीयार में बहुत हीयानिक हीयार आजकल जटिल कीटियों की कार्य विधि के उत्तरों द्वारा निश्चित हीयार जटिल कीटी व्यवस्था गति होती बाधित । इस प्रकार की एक और उत्तर होती है उत्तरों पर हीयार - हीयार प्रकार के हीयार-हीयार यह के सम्बन्धों निश्चित ही है ही ही ।

भारतीय कार्य

चौथ्या विधान का दौर में भारतीय कार्य की स्थानीय
समितियाँ एवं मण्डल समितियाँ का विवरण दिया जा रहा है ।

स्थानीय समिति :

यह स्थानीय कक्षा है निम्नलिखित संघों रखेवाली किन्तु यह है
जो महत्त्व की उकाई है । प्रत्येक स्थानीय समिति का दौर प्रायः पंचायत है और
स्थाय पंचायत दौर तक ही सीमित है । जो स्थानीय समिति नटित होने के लिए
उत्तरों की अनुमति संस्था निर्वाचित नहीं है किन्तु भारतीय कार्य के विकास के
अनुसार है । उक्तान्य है यह स्पष्ट हो जाता है कि कि स्थानीय समिति के उत्तरों
की संस्था २५ है जो सीमा उसी कार्य समिति के उत्तरों की उका (मण्डल समिति)
निर्वाचित में मतदान का अधिकार नहीं होगा ।^{१६} मण्डल समिति, चौथ्या के दौर में ११
पंचायत - ७ तथा कपुर - ७, स्थानीय समितियाँ नटित है । यह प्रकार चौथ्या
विधान का दौर में इन तीनों मण्डलों है सम्बन्ध कुल २७ स्थानीय समितियाँ नटित
है । विधान का दौर में कुल पदाधिकारियों की संस्था १५६ है जिनमें २७ अध्यक्ष,
२७ मंत्री, २७ सौजन्यका तथा १०० कार्य समिति के उत्तर हैं । स्थानीय समिति के
उत्तर प्रत्यक्ष ठेग है अपनी कार्य समिति का चुनाव करती है ।

द्वितीय विकास के अनुसार^{१७} उत्तर काने का कार्य स्थानीय
समितियों के द्वारा होगा । जो स्थानीय समिति न ही जो मण्डल समिति^{१८} यह
कार्य करेगी किन्तु यह विधान का दौर में मण्डल समिति की उत्तरता अधिकार में
अधिकारित होती है । स्थानीय समिति की बैठक द्वितीय विकास के अनुसार
प्रति पदा सीमा बाहिर^{१९} और कार्यकारियों का विवरण पुस्तिका में उल्लेख होगा
बाहिर किन्तु किसी भी स्थानीय समिति के पास कोई भी विवरण पुस्तिका होगा
नहीं और न ही बैठकें ही प्रतिपदा होती हैं । सामान्य कक्षा उन्हें नहीं जानती ।
द्वितीय विकास में स्थानीय समितियों के पदाधिकारियों के अधिकारों एवं कर्तव्यों का
भी कोई विवरण नहीं मिलता ।

स्थानीय समितियों में पदाधिकारियों द्वारा एक प्रवृत्त निर्धारित हुआ है। मण्डल समिति द्वारा नियुक्त निवाचित अधिकारी विशेषकर मण्डल मंत्री की उपस्थिति में उक्त वर्ष केन्द्र में पदाधिकारियों का चुनाव होता है। निवाचित कार्यवाही अधिकृत होती है किन्तु निर्वाचित पदाधिकारियों की पूरी मण्डल समिति के पास प्रीमियर की जाती है।^{४७} पदाधिकारी भी वर्ष में किसी क्षेत्रीय स्तर की प्रकार की अनुदानात्मक कार्यवाही मण्डल समिति प्रादेशिक कार्य समिति की स्वीकृति से ही कर सकती है ऐसा प्रावधान है।^{४८} इससे स्पष्ट है कि स्थानीय समिति स्वयं अपने किसी पदाधिकारी के विरुद्ध कोई अनुदानात्मक कार्यवाही नहीं कर सकती है। परन्तु स्थानीय समिति मण्डल समिति के द्वारा किसी की प्रशस्त कर सकती है।^{४९} स्थानीय समितियों में मंत्री एक ही पद की ओर है विशेष महत्व दिया जाता है क्योंकि उन्हें सक्रियता का बड़ा अधिक विस्तार भी पड़ता है। सम्पदा की पहला पैठरी या धार्मिक स्थलों पर विशेष सम्मान है प्रकट होती है किन्तु जीना-धन जीन विशेष की भिन्न। उदाहरण तुरन्त में स्थानीय समिति के बंध का कोई विवरण प्रवधान में नहीं पर की स्पष्ट नहीं किया गया है।

स्थानीय समिति में स्थानीय स्तर के सदस्यों में है प्रभावशाली अधिकृत एवं अधिकृत की दृष्टि से उनकी भावना की पर धी की परपुर जीवित की जाती है। दिए जाते कथना वर्ष के सदस्यों की संख्या अधिक होती है उनकी स्वाभाविक ही है पर भिन्न जाता है किन्तु बलपूर्वक की उद्देश्य नहीं की जाती। स्थानीय समिति के सदस्यों द्वारा निर्वाचित कार्य समिति के पदाधिकारियों की किसी प्रकार की कान या पदा नहीं मिलता है किन्तु यही नियम चढ़ती है। स्थानीय समिति सदस्यों के पदीकरण का प्रथम अधिकरण है। पूर्ण पदीकरण की जाने पर सदस्य का कोई पदीय प्रतीक ही जाता है।

स्थानीय समिति के सीमान्तगत उत्पन्न समस्याओं, कठिनायियों एवं विषयों या अन्य बातों की जानकारी मण्डल समिति के पदाधिकारियों की विशेषकर उनके द्वारा लेवई करने पर होती है। वास्तविक यहाँ में स्थानीय समितियों

के पदाधिकारी स्वयं मण्डल समिति से उन्हें स्थापित करके कार्य की समिति समझ-
 लेते हैं।^{४६} स्थानीय समितियों के पदाधिकारियों का बीच समित होने के कारण उही
 बीच की कसबा उनके फर्में से बकाया नहीं होती है। उन पदाधिकारियों के दो राय-
 नीतिक व्यवहार विशेषकर सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्यों से प्रभावित होती
 हैं। स्थानीय समितियों की सुझाव देने की शक्त के द्वारा प्रभाव बहुत कम मिले करते हैं
 जिसका प्रभाव उनके ऊपर बहुत कम कार्यों का बीच होता है। एक स्थानीय समिति
 का दूसरी स्थानीय समिति से कोई पारस्परिक संबंध नहीं है, जो उससे मण्डल समिति
 में सब प्रभाव करना चाहती हैं वे ही स्थानीय समितियों की कार्य समिति से ही संबंध
 करते हैं।

मण्डल समिति :

भारतीय जनसंघ के संरक्षण की आधार पुर स्थापित मण्डल
 होती। मण्डल के अन्तर्गत एक विकास समूह का बीच बाधना।^{४७} मण्डल समिति का
 मंडल उही सम्य ही करता है जब कम से कम ५ स्थानीय समितियाँ गठित हो चुकी हो।^{४८}
 संख्या विधान तथा बीच के अन्तर्गत तीन विकास समूह संख्या, पैदाबाद एवं खुशुर
 बीच जाता है वतः तीन मण्डल समितियाँ गठित हुई हैं। स्थानीय समितियों की
 कार्य समिति के एक निर्वाचित सदस्य ही मण्डल समिति के अध्यक्ष होते हैं। मण्डल
 समिति के अध्यक्ष एक प्रधान, दो उप प्रधान, एक सचिव, दो सहायक तथा एक कोषाध्यक्ष
 का चुनाव करते हैं वही मण्डल समिति के अध्यक्षों द्वारा कुछ सात पदाधिकारियों का
 ही चुनाव होता है। मण्डल की कार्य समिति में कुलसचिवसम सदस्य ही होती
 हैं किन्तु उपरोक्त निर्वाचित पदाधिकारियों के बलावा केवल नियुक्तियाँ प्रधान द्वारा
 होती हैं।^{४९} मण्डल समिति में दो, दो स्थान सदस्यों एवं अनुसूचित जातियों
 के लिए सुरक्षित है।

छोटा किसान का हाथ में भारतीय जनता की नई सरकारों की योजना

क्र. संख्या	विकास कार्य का नाम	प्रकारिकारियों की संख्या	जनसंख्या के अनुसार	रिक्त स्थानों की संख्या	अधीनस्थ स्थानीय समितियों की संख्या	स्थानीय कार्य समिति के सदस्यों की संख्या	स्थानीय कार्य-क्रम	समाप्त स्थिति
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	नई समिति छोटा	७	१४	-	७	६१	नहीं	नहीं
२	नई समिति देवाघाट	७ ७	१४	१	७	४६	नहीं	नहीं
३	नई समिति फरपुर	७	१४	६	७	४६	नहीं	नहीं
योग		२१	४२	१	२०	१५३		

सूची : १- श्री किशु नारायण पुने, कलौरा, जयपुर,
जनसंख्या समिति, छोटा ।

२- श्री सुरेश चन्द्र मिश्र, देवाघाट, मीरा, जनसंख्या समिति,
देवाघाट ।

३- श्री सुंदर राधेन्द्र प्रसाद सिंह, फरपुर जयपुर,
जनसंख्या समिति, फरपुर ।

प्रत्येक जनसंख्या समिति के प्रकारिकारियों का चुनाव विजय समिति
द्वारा नियुक्त निर्वाचित अधिकारी के द्वारा होता है ।^{५०} प्रस्तावी होने की वजह से

की शक्तियों का कोई इस्तेमाल नहीं किया गया है किन्तु पक्षीय चित्त शक्ति की शक्तियों का विशेष ध्यान रखा जाता है। कभी कभी नये उपकरणों की कठ के प्रति जागरूकता के उद्देश्य को स्थायी करने के निमित्त की परामर्शकारी विचारणा किया जाता है जिसका प्रमाण मण्डल समिति की विचारणा के अनुसार यह है कि राष्ट्रीय विचारणा के फलस्वरूप होता है।

पक्षीय शक्तिमान में पर्याप्तता कि कि बाधाओं पर ध्यान है कि कोई विचारणा नहीं किया गया है। परामर्शकारियों ने कभी जागरूकता के प्रति जागरूकता पर्याप्तता की जागरूकता, २० प्रतिशत कठ के प्रति निम्न : २१ प्रतिशत उच्च का मान : २२ प्रतिशत की प्रति प्रतिशत : २३ प्रतिशत उच्च उच्चता : २४ प्रतिशत कार्य का अनुभव : २५ प्रतिशत पक्षीय प्रतिनिधित्व की २६ प्रतिशत उच्च उच्चता : २७ प्रतिशत कार्य का अनुभव : २८ प्रतिशत पक्षीय प्रतिनिधित्व की २९ प्रतिशत उच्च उच्चता का मान। परामर्शकारियों ने कि शक्तियों के प्रति जागरूकता का मान किसी की परामर्शकारी ने नहीं किया कि कठ में मुद्रास्वी का फलस्वरूप होती है। पर-प्राप्ति में जहाँ अन्य कारण बताते हैं वहीं पर राष्ट्रीय स्तर के एक ही में जागरूकता, कठ प्रमाण उच्च एवं विस्तार में जागरूकता की विशेष जागरूकता है। तीनों मण्डल समितियों के एक फलस्वरूप परामर्शकारी राष्ट्रीय स्तर के एक ही में होता है।

मण्डल समिति का कार्यकाल २ वर्ष निर्धारित है जिसमें प्रत्येक परामर्शकारी कभी पर पर दो वर्ष तक रह सकता है। यदि किसी परामर्शकारी या उपस्थित के कार्य एवं जागरूकता में पक्षीय चित्त पर जागरूकता होता है कि वह भी की जा सकता है कि पर जागरूकता में है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह प्रकार की जागरूकता की जागरूकता की कि अनुभव की गई है। प्रादेशिक कार्य समिति की किसी की ऐसे कारण के लिए किसी कठ माने गया ऐसी जागरूकता के बाद कि कठ जागरूकता समिति प्रमाणिकता किसी की समिति कठ जागरूकता के विरुद्ध अनुमान की जागरूकता करने गया किसी की जागरूकता की जागरूकता प्रमाणिकता के परामर्शकारी की जागरूकता का जागरूकता होता है। वह जागरूकता के विरुद्ध जागरूकता कार्य समिति की जागरूकता की जागरूकता है कि जागरूकता निमित्त जागरूकता होता है।^{२५} जागरूकता जागरूकता के स्पष्ट हो जाते हैं कि जागरूकता का जागरूकता-केंद्र मण्डल या कि जागरूकता नहीं है और प्रादेशिक कार्य समिति की जागरूकता

नहीं है। अन्तिम विमर्श केन्द्र भारतीय कार्य समिति है जिससे क्या के केन्द्रीकरण का परिणम निकला है।

कच्छ समिति प्रादेशिक कार्य समिति की स्वीकृति है पुरानी समितियों का पुनर्गठन करती है।^{४१} प्रादेशिक कार्य समिति को बम्बयी समितियों को बना लगी है जिसका कार्यकाष्ठ अधिकतर यह पाठ हो जाता है।^{४२} इन बातों से स्पष्ट है कि कच्छ समिति अपने अवीरस्य एक बार पछि स्थानीय समितियों का पुनर्गठन प्रादेशिक कार्य समिति की अनुमति से ही कर सकती है, उसे बम्बयी समितियों के विमर्श का विस्तृत अधिकार नहीं दिया गया जो कि बाधित प्रतीय होता है। यदि किसी पदाधिकारी का स्थान रिक्त हो जाय तो संस्थानीय कार्य समिति को अधिकार होता कि वह उस स्थान की पूर्ति अवशिष्ट का के लिए करे।^{४३} नियुक्ति एवं प्रत्युत्तर करने की शक्तियों के विभाजन से वह में सुगमता एवं लक्ष्य स्मरण रखती है। समिति की तीन छात्राचार बैठकों में बिना अनुमति के अनुपस्थित होने पर निर्णय किसी भी अवस्था में निष्पन्न होना कि या करता है।^{४४} किन्तु अभी तक किसी के प्रति ऐसी कार्यवाही नहीं हुई है। अनुमति कोन होता ? यह स्पष्ट नहीं। यदि व्यवस्था की बैठक में अन्तिमि न होना चाहें तो अनुमति कोन होता ? यदि बिना है अनुमति के स्थान पर प्रस्ताव की कार्यवाही करनी पानी पारिह।

प्रत्येक समिति के कार्यवाह्यता का कार्यवाही कि वह ठीक प्रकार से होता रहे, प्रतिवर्ष उसका अन्तिम हो तथा समिति द्वारा स्वीकृति हो। समिति किसी भी क्षेत्र में अपना विचार को करता है।^{४५} किन्तु वह सभी व्यवहार के परास्त पर प्रविष्टपात करते हैं तो तीनों कच्छ समितियों के कार्यवाह्यता में है किसी ने भी वह का विचार न की बैठ में रहा है और न अभी पाठ कोई परराशि हो जाता है।^{४६} उत्तर प्रविष्ट की कार्य समिति ने व्यवस्था कोन का २० प्रतिशत कच्छ समिति के पाठ रहने का प्राक्कान किया है।

कार्यान्तार में पुष्ट प्रश्न यदि संछेन के पदाधिकारियों का वह वैतनिक हो जाय तो क्या होगा ? का उत्तर तीन पदाधिकारियों ने व्यवस्था कर दिया और एक पदाधिकारी ने अपनी अवस्था व्यक्त किया जाति इसी पद

जोड़करा यह वादी । वही इस बात का वादाय होता है कि पदाधिकारी कभी है जो सम्मान सम्मान में उसे प्राप्त होता है या उसकी व्यक्तिगत कार्यावाही पुष्पित एवं पल्लवित होती है वही सम्मान नहीं है और पदाधिकारी अपना वाक्यी नृत्यात्मक वादना है । वाक्यी यह है जो वाक्य नृत्यात्मक विद्या है उसी का वाप लेखक है ? के उतर में जी पदाधिकारियों ने 'हाँ' कहा । इन लक्ष्यों के स्पष्ट है कि वाक्यी नृत्यात्मक का व्यावहारिक विद्या की एक बूट लगा है ।

एक ही कदम पर एक व्यक्ति का बहुत बर्णों का पदाधीन रहना का लेखन के लिए में है ? का उतर पदाधिकारियों ने 'नहीं' कहा किया । वही स्पष्ट है कि लक्ष्यों के पदों में परिवर्तन करते रहने हैं 'पुस्तक' , 'प्रकाश' 'निर्देश' कभी वाक्य लेखन की व्याख्या नहीं कल्प है पायी है । एक ही कदम पर कभी रहने है पदाधिकारी में विकास का कल्पित प्रभाव अवलोक होता है जो व्याधीनता विलीन एवं पुनर्निर्माण का कारण बनता है ।

विज्ञान समिति के पदाधिकारियों का मण्डल समितियों में वाक्पत्र 'जी जी' होता है ऐसी जी पदाधिकारियों ने बताया कि वैज्ञानिक दृष्टि है मण्डल समिति की बैठक प्रति जी माघ में होती बाहिर⁴³ और जी विज्ञान समिति के पदाधिकारियों का वाक्पत्र विलीनित प्रतीत होता है । विज्ञान समिति के पदाधिकारियों का मण्डल समितियों की प्रोत्साहित , कार्य-क्षेत्र एवं लक्ष्य परिभाषित करने के लिए की निर्दिष्ट विधियाँ होती बाहिर । प्रोक्त एवं वैदिक के पदाधिकारियों का वाक्पत्र मण्डल समितियों में तीन बार बार पुनः है । 'जी' यह जी नीतियों की जानकारी कि माध्यम है करते हैं ? के उतर में पदाधिकारियों ने २० प्रतिशत नेता तथा २० प्रतिशत पक्षीय वाक्पत्र का माध्यम बताया । काचार पर एवं वाक्पत्रावली है यह जी नीतियों की जानकारी होने का माध्यम नहीं बताया । वही यह उक्त का उक्त है कि काचार पर एवं वाक्पत्रावली कायदा यह जी नीतियों का प्रचार एवं प्रचार करते हैं क्योंकि कायदा कायदा कमेटी के पदाधिकारियों ने इनकी माध्यम बताया है

मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने बैठकों में विलीनित प्रश्नों के उतरों में बताया कि बैठकों प्रोत्साहित और वाक्पत्रावली पर माध्यम में जी निर्दिष्ट

स्वाधीनता पर होती है जिसकी सुनारों का द्वारा ही जारी है और वेतनों का कारण एक योजना में लिया जाता है। यह दृष्टिकोण जगहों में अपना नहीं के साथ रहता है। चौथी मजदूर समिति के नहीं ने बताया कि आपातकाल में जगहों के सभी जगह सुनिश्चित होता है कि, देश की मजदूरों की योजना केवल ही योजना के साथ मिले। फ्रांसिसिस्म ने जनसामान्य केतनों का हीना भी बताया। इससे स्पष्ट है कि केतनों होती हैं। जिसके बिना हम सुनारों में सब की कार्यता करनेवाले व्यक्तियों की कार्यक्षमता सुनी जा समाप्त मिलेगी कि सब के केतन उस कार्य के लिए आवश्यक प्रतीत होती है।

आप २४ फरवरी में बोला है कि हमें समय राजनीति में भी है के जगह में मजदूर समिति फ्रांस के जगह में २ फरवरी; मजदूर समिति देशभार के नहीं ने २ फरवरी; मजदूर समिति चौथी के नहीं ने २ फरवरी तथा उपायों में 'हुल नहीं' कहा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सब जिस के लिए राजनीति में प्रमुख समय का है और यह वास्तविक है कि किसी ने नियंत्रित काउ नहीं बताया। मेरा ऐसा अनुमान है कि यदि यह, केवल ही साथ तथा कार्य निरीक्षण उस पुराने की जगह समिति का साथ ही केतन में फ्रांसिसिस्म केवल समय का होती है जिसके परिणाम स्वरूप सहीकरण उस राजनीतिक समाप्ति का प्रक्रिया तीव्र हो जायेगी।

भारतीय लोक कल

व्यापार की में स्पष्ट किया जा चुका है कि भारतीय लोक कल का जन्म किया गया फ्रांसिसिस्म १९७४ ई० में गठित एक फ्रांसिसिस्म बोर्ड- भारतीय फ्रांसिसिस्म, लोक समाप्ति की सब उस सुनिश्चित मजदूरों की एकताओं ने किया। चौथी बिना हम हीन में भारतीय फ्रांसिसिस्म की अधिक जन समीक्षा मिलने के कारण प्रायः आधारित बताया भारतीय लोक कल है मेर नहीं कर पाता। चौथी बिना हम हीन के जगह में भारतीय लोक कल के विकास के सुधार प्रारंभिक कीजिए उस भारतीय लोक कल का सब हीना चाहिए।

प्रारंभिक कौशल :

प्रारंभिक कौशल भारतीय लोक कल की एक ही छोटी कक्षा है जिसकी पहचान होने का सीधे प्रत्येक युवाव केन्द्र है जहाँ पर छात्रों की संख्या कम है जो एक बसस ही है।^{६३} हर प्रारंभिक कौशल कक्षी कक्षी छात्रों में है एक कार्य समिति का चुनाव होती जिसमें एक अध्यक्ष एक सचिव एक कोषाध्यक्ष और दो छात्र होते हैं। कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारी कौशल के भी पदाधिकारी होते हैं।^{६४} कार्यकारिणी के भी छात्र और पदाधिकारी राष्ट्रीय कौशल के प्रतिनिधि छात्र होते हैं।^{६५}

सर्व राष्ट्रीय कौशल के अध्यक्ष के काशीनाथ मौर्य, पिछारी प्रबोधाचार्य, कला चामर केन्द्री स्मृति केन्द्र (कलाकार) ने कुछ छात्रों की संख्या पर ही बताया^{६६} और उही विभाजन की प्रथम समिति के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय विभाजन के कर्तव्य मानकर ने भारत ही बताया^{६७} किन्तु एक ने ही प्रारंभिक कौशल के कल का कुछ नहीं किया। अन्य कक्षों की भांति भारतीय लोक कल में भी प्रत्येक पदाधिकारी के समितियों एवं कर्मियों का विवरण दीक्षान में नहीं दिया है। महामंत्री कक्षा मंत्री द्वारा कौशल अध्यक्ष के समिति है मीटिंग बुलाई जाती है। --- किन्तु किसी स्तर पर कौशल के ११५ छात्र उन कौशल की मीटिंग की भाग लेते हैं तो कक्षा महामंत्री भी कौशल ही उनके लिए अनिवार्य होता कि वह भाग के एक भाग के बन्धन की मीटिंग बुलाये^{६८} का प्राधिकार छात्रों द्वारा पलट करने का अधिकार दीक्षान में अनिवार्य प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक कौशल की बैठकों की कोई क्वपि नियमित नहीं है कि कि कक्षा के लिए निर्दिष्ट है। प्रारंभिक कौशल की कार्य समिति में कोषाध्यक्ष का पद है किन्तु अन्य अन्य कक्षाओं की भांति छात्रों द्वारा के विवरण में उनका कोई अंत नहीं किया गया है।^{६९} प्रारंभिक कौशल का कार्यक्रम भी वर्ण है किन्तु किसी राष्ट्रीय केंद्र के अन्य राष्ट्रीय कौशल पार्टी चुनावों की एक वर्ण एक टाउल छात्र है और उन कक्षा में भी कक्षा कौशल और कौशलों का भाग उनके क्वपि के लिए पढ़ा दिया जाता है।^{७०} दीक्षान की द्वारा १२ के अनुसार चुनाव कौशल किया जा कर करने के लिए राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं कक्षा स्तर पर चुनाव न्यायाधिकरण

यदि संसदन के पदाधिकारियों का यह वैधानिक ही कार्य ही होता होता ? के ऊपर में नहीं है" बख्शा नहीं सीमा" क्या नहीं पर बख्शा, उपाख्यता एवं जीजाख्यता है" बख्शा रहना" ककर कमी समानि प्रकट किया ।" कम कमी है बायना" का उतर उपाख्यता एवं जीजाख्यता है" कड के बन्दे हैं" क्या और बख्शा है" वरकारी कजा है" ककर वारकरी में हाउ किया क्योंकि वरकारी जीजाख्यता है राजनीतिक कड के संसदन में कार्य करीवाते पदाधिकारी एवं उही कड की दुवा पर हाउम में कम प्राप्त कर उनीवाते प्रतिनिधि, उन सीमा की कम मिछी है वरकार एवं राजनीतिक कड का पैद मिछ बायना । उनीवाते पैद में का राजनीतिक कड के समान में वरकार का मदन कठिन है कम राजनीतिक कड की समत, मुनीति, मुनीति, मुनीति एवं राजनीतिक समीकरण का प्रमुत बायना बायना के उतर कम प्रमान करता उनी प्रतीत सीमा है ।

" एका ही कम पर एक व्यक्ति का बहुत बर्णों तक पदाधीन रहना क्या संसदन के लिए में है ? के ऊपर में उही पदाधिकारियों है" नहीं" क्या । कजा पदा में परिकर कम तक उनीवाती सीमा कम तक कड में वरकारी की माया मुन्य के सीमा सीमा किन्तु कम पर परिकर वनीमाती सीमा कम संसदन की कडिया मुनीति वरकारी दूखी बायनी वरकारी सीमा सीमा नहीं किन्तु बहापि, उनीवा, कम, वरकारी, वरकारी एवं मुनीतियों का प्रमान कम बायना ।

किन्तु सीमा के पदाधिकारियों का वाक्यन सीमा सीमा सीमा के सीमा में कमी कमी सीमा है" ऐसा उतर बख्शा, उपाख्यता एवं जीजाख्यता के किया और वनीवाते में की वरकारी किन्तु बायना- का नाम किया किन्तु वनीवाते वनीवाते उही किया कम सीमा में है । वरकारी कम मुन्य कम सीमा है" नियमित " वाक्यन बायना किन्तु किन्तु नहीं बताया कम उतर कम वनीवाते पदाधिकारियों के कम के वनीवाते है वनीवाते वनीवाते है ।" प्रतीत एवं पैद स्तर के पदाधिकारियों का वाक्यन किन्तु सीमा वनीवाते में किन्तु वरकारी है ? के ऊपर में बख्शा है " ४ वरकारी जीजाख्यता है" ४ वरकारी उपाख्यता एवं सीमा है" २ वरकारी बताया । कम

उपरांत वे उचित मित्रता है कि वाक्पत्तियों की वाक्पत्तरी उन से अधिक बख्शता की रही, ऐन पदाधिकारियों की वाक्पत्तरी या कयाभाव है पुनर्वाची पुनर्वाची नहीं करावी गई । वाक्पत्तरी है कि उपाध्यक्ष एवं मंत्री दोनों पदाधिकारी कतिपय में कृत्य कया वादी यह है और बख्शता कया कयाकया भारतीय वाक्पत्तरी यह है कृत्य रही है ।

‘ कतिपय कया की वाक्पत्तियों की वाक्पत्तरी कि वाक्पत्तरी है कतिपय है ? के कया में पदाधिकारियों ने ६६, ६ प्रतिकृत्य कया ; १६, ६ प्रतिकृत्य कयाकया कया कया १६, ६ प्रतिकृत्य कयाकया वाक्पत्तरी की वाक्पत्तरी कया । ‘ वाक्पत्तरी ’ की कतिपय है की वाक्पत्तरी नहीं कया । यह वाक्पत्तरी प्रतिकृत्य कतिपय है कि भारतीय कयाकया एवं भारतीय कयाकया की वाक्पत्तरी के प्रकार एवं प्रकार में ‘ वाक्पत्तरी ’ की कतिपय कया है कतिपय यह भारत के कतिपय कतिपय के कयाकया का कयाकया कया है । ‘ वाक्पत्तरी ’ पर पुनर्वाची कयाकया कया कयाकया कतिपय है कतिपयों की वाक्पत्तरी की कयाकया नहीं मित्र कया ।

कतिपय कतिपय के पदाधिकारियों ने कतिपय है कतिपय प्रतिकृत्य है उपरांत में कया कि कतिपय का कयाकया कया कया कया नहीं है और पुनर्वाची का वाक्पत्तरी कया है । कतिपय का कतिपय कया कतिपय, की कया कया है । यह कतिपय कतिपय कया रही है के कया में पदाधिकारियों ने बख्शता के कया कया और बख्शता ने मंत्री के कया कया की कयाकया कतिपय कयाकया है । कतिपय की कतिपय कया कया रही है कतिपय कयाकया की कतिपय । कतिपय की कतिपय कतिपय कया की कया नहीं करावी जा कतिपय । कतिपय कया है कि कतिपय पर कया कया कया कया कया है । कतिपय कया कया कया में कयाकया कयाकया कयाकया की कतिपय कया कया के पदाधिकारियों के कया नहीं है । (कयाकया) ने कतिपय कया के कयाकया के कया कया की कयाकया कया की कया कया कया है कि कया की नहीं कया का कया कया कया कया कया कया है ।

कया २४ कया में कया है कया कया कया कया कया कया है ? के कया में कयाकया ने ३ कया ; बख्शता ने २ कया ; मंत्री ने ४ कया कया कयाकया ने कयाकया नहीं कया । कयाकया एवं मंत्री दोनों की कयाकया कया एवं

काम ही करता है तब उसे कार्यकर्ता (Activist) कहा जा सकता है। कार्यकर्ता में पदाधिकारी के आवश्यक गुण विराजमान रहते हैं किन्तु उसी पदाधिकारियों में कार्यकर्ता के गुण नहीं पाये जाते हैं। कार्यकर्ता में वह है अतिरिक्त कार्यशक्ती होती है। दूसरे शब्दों में सक्रिय स्वभाव की वी कि वह है प्रारम्भिक कुराओं के केन्द्र में और उसके अन्तर्गत वह है उसी नीतिगत क्रियाकलाप वातावरण में, युद्ध (Militant) कहा जाता है।^{१०४} निम्नलिखित सभी कार्यकर्ता कुरा प्रेरक, वाक्य एवं राजनीतिक वह की पूर्ण होती है। कार्यकर्ता कुरा पदाधिकारियों का साम्य बनाता होता है क्योंकि उसी की दृष्टि और दृष्टि पर वह किसी समय की कसूर या कसूर करता है। कार्यकर्ता कुरा वह है जिसमें उसी धीरे की नीतिगत है जिसके अन्तर्गत अन्तर्गत सभी जाने पर वह की नीतिगत एवं कार्यगत क्रियाकलाप नहीं हो जाती। कार्यकर्ता अपना विकास करते करते नेता की कक्षा में पहुँच जाता है।

राजनीतिक के लिए प्रयुक्त समय के अन्तर्गत कार्यकर्ताओं की दो वर्गों में रत होती है १. अल्पकालिक २. पूर्णकालिक। अल्पकालिक कार्यकर्ता कुर्गों, बान्दीगो, प्रदर्शनों, परमा, धरान या इसी प्रकार की अन्य राजनीतिक क्रियाओं में प्रेरणा एवं सक्रिय योगदान देते हैं और जब कार्य अन्तर्गत हो जाता है तब पुनः अपने व्यक्तिगत कार्यों में लगे जाते हैं। पूर्णकालिक कार्यकर्ता व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने व्यक्तिगत परिवार या दायित्वों या वह के ऊपर जाति होकर अवस्थित वह है कार्यकर्ता की पूर्ण करने में उन एवं मन दोनों है सक्रिय रहता है। राजिया विधान सभा क्षेत्र में गठित वर्गों में है भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ एक है अतिरिक्त पूर्णकालिक कार्यकर्ता कुर्गों, सरकारी कार्यालयों एवं जमाने पूर्ण में विस्तारशील होते हैं जिसमें की कानून प्रणालि विम, कैप, अन्य प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ; की अन्तर्गत कानून विमारी के अन्तर्गत अन्य विम परिणाम ; की अन्तर्गत विम - अन्तर्गत ; की अन्तर्गत विम - अन्तर्गत, युद्ध कांग्रेस वापि प्रमुख है। भारतीय लोकसभा के साथ की अन्तर्गत विम विम विम के अन्तर्गत पूर्ण ली है अतिरिक्त भारतीय कानून के साथ एक की पूर्णकालिक कार्यकर्ता नहीं है अतिरिक्त अल्पकालिक योग्य कार्यकर्ता अतिरिक्त है।

राजनीतिक वर्गों के द्वारा कार्यकर्ता विम की प्रक्रिया अन्तर्गत किन्तु पन्थविम है होती है और अन्तर्गत प्रतिक्रिया की नक़ीत की भाँति न्यून

६ प्रसिद्ध नेताओं के परिचय ; ७ प्रसिद्ध पंडीय साहित्य का अध्ययन ; ८ प्रसिद्ध का कर्म ; ९ प्रसिद्ध प्रोत्साहन ; १० प्रसिद्ध पद के कार्य तथा ११ प्रसिद्ध पद ; के माध्यमों की महत्व दिया । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने ३३ प्रसिद्ध माध्यम ; १५.५ प्रसिद्ध साहित्य ; १६.५ प्रसिद्ध बैठकों ; १६.५ प्रसिद्ध लिखितों तथा १६.५ प्रसिद्ध छात्रों ; के माध्यमों पर पद दिया । राष्ट्रीय जीवित के पदाधि- कारियों ने बापट स्थापना ; साहित्य ; समाज ; प्रोत्साहन ; प्रभाव के रूप ; कला के कार्यों का साहित्य एवं माध्यम पर एक साथ पद केर साधन बताया । उन उपरों के यह विचारों विज्ञता है कि वहीनाओं एवं सामान्यों का विकास पद के विद्वान्तां, नीतियों एवं कार्यक्रमों का अधिकारिक बीच बैठकों, समाजों, लिखितों, पंडीय साहित्य विज्ञों अपने पद के मुक्त पद के लक्ष में आकर कठिन नीतियों के पदाधिकारियों ने २०-२२० प्रसिद्धों में क्या भारते, मण्डल समितियों के पदाधि- कारियों ने 'पान्थकम्' २-१० प्रति तथा 'कर्मिणाक्षर' २-५ प्रति और राष्ट्रीय जीवित के पदाधिकारियों ने २-५० प्रसिद्धों में 'मन्त्रान्ति' बताया है, के अध्ययन एवं नेताओं के प्रत्यक्ष कर्म के सीता है साथ ही साथ पद प्रवृत्त, का कर्म एवं ऊपरी कठिनायों की दूर करने के लिए अधिकारियों के परिचय बापट के प्रयोगात्मक अनुभवों के ज्ञान की नीतिरता पद पायी है ।

उपरोक्त माध्यमों के द्वारा एक और वहीनाओं एवं सामान्यों का विकास सीता है दूसरी और कार्यक्रमों कर्मिणाक्षर व्यक्ति के नास्तिक में पद की विचारवाराओं का प्रवेश व्यापि विद्वान्तीकरण की सीता है । विद्वान्तीकरण में वहीनाओं की विचारवाराओं की व्याख्या, वाणीका एवं मूल्यांकन करते हुए अपने पद की विचारवारा का एवं केवलत्व कर्म, व्यवहार एवं उपयोगिता के अनुसार पद करते, कार्यक्रमों कर्मिणाक्षर व्यक्ति के नास्तिक में, अन्तर्निहित सीता है । यह पाथों प्रवृत्त में व्यक्ति की पद की और है दीक्षित कर दिया जाता है और उचित कर्म पद की वहीनाओं की पूर्ति ; अधिकतम बापट है पद की विचारवारा का बापट एवं पद के वहीनाओं की पूर्ति का विचार दिया जाता है । कार्यक्रमों निर्माण की प्रक्रिया पंडीकरण का महत्वपूर्ण कर्म है ।

बापटों एक ही पुन ही उरी रावनीति में जाने के लिए क्या कर्म ? के प्रवृत्त उपरों में आकर कठिन नीतियों के पदाधिकारियों में है ३३ प्रसिद्ध

ने उत्पादित क्या ६० प्रतिशत ने कुछ नहीं कहे । क्या । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने २५ प्रतिशत ने उत्पादित क्या ७५ प्रतिशत ने कुछ नहीं कहे । राष्ट्रीय काँग्रेस के पदाधिकारियों ने १० प्रतिशत ने उत्पादित २५ प्रतिशत ने उत्तीर्ण किया क्या २५ प्रतिशत ने कुछ नहीं कहे । 'उत्पादित' करनेवाले पदाधिकारियों ने राजनीतिक क्षमताएँ जो स्तर तक पहुँच चुकी हैं फिर वह व्यक्ति कार्यकर्ता का वाता है और राजनीतिक पक्ष में वास्तव उत्पन्न प्रतीत होती है । 'कुछ नहीं कहे' करनेवाले पदाधिकारी कुछ के स्वतंत्र विकास के कदापि नहीं हैं विशेष स्पष्ट होता है कि पक्ष की प्रियाओं एवं उपजिम्मेदारों के मध्य सामंजस्य परिणाम के प्रति कुछ समझ नसकता है जो ग़ुए है । 'उत्तीर्ण' करने उपर देनेवाले पदाधिकारी राजनीति की किस्मत अच्छा नहीं समझते हैं ऐसा प्रतीत होता है ।

एन्डी पदाधिकारियों के वह वह प्रश्न किया क्या, कुछ लोग समझते हैं कि 'राजनीति' मन्दा रैड है 'बाप क्या अनुभव करते हैं ?' के उपर में 'काँग्रेस' काँग्रेस कीटियों के पदाधिकारियों ने ६० प्रतिशत ने 'हाँ' तथा २५ प्रतिशत ने 'नहीं' कहा । मण्डल समिति के पदाधिकारियों ने ५० प्रतिशत ने 'हाँ' तथा ५० प्रतिशत 'नहीं' कहा । राष्ट्रीय काँग्रेस के पदाधिकारियों ने ४० प्रतिशत ने 'हाँ' कहा । बावर्षी तो यह है कि अपने एकजोते कुछ को 'राजनीति' में जाने के लिए 'उत्पादित' करनेवालों में है ७५ प्रतिशत पदाधिकारियों ने राजनीति की मन्दा रैड बताया । 'कुछ नहीं कहे' उपर देनेवाले पदाधिकारियों में है २०, ५ प्रतिशत ने राजनीति की मन्दा रैड नहीं माना कुछ पदाधिकारियों का ७५, ५ प्रतिशत राजनीति की मन्दा रैड रैड अनुभव करता है जो किस्मतीय स्थिति का पीछा है । यह स्थिति डिप्लोमसीकरण एवं वजीकरण के कार्यों का परिणाम प्रतीत होता है ।

बाप क्या बावर्षी कैसा ज़िदी पानी है ? के उपर में 'काँग्रेस' काँग्रेस कीटियों के पदाधिकारियों ने प्रभाव नहीं समझती समझती नहीं, जो गुठलारी डाक मन्दा, भूतपूर्व कुछ नहीं, भारत सरकार ; की वि.समाप प्रभाव सिंह, राष्ट्रीय रैडल अवसर तक उस काणिज्य नहीं भारत सरकार तथा जीमती राजेन्द्र कुमारी काकीली प्रभावत अवसर नहीं उपर प्रवेश सरकार को बताया । मण्डल समिति के पदाधिकारियों ने समझी १० दीनकराड उपाध्याय, भूतपूर्व काँग्रेस भारतीय जनता अवस्था ; की कान्हाय राज बोली रैडल अवसर तथा समानीय नेताओं का नाम लिया । राष्ट्रीय

कौटिल के पदाधिकारियों ने भी चौपरी चरण सिंह, कौटिल भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष तथा पूर्व मुख्य मंत्री उग्र प्रदीप सरकार एवं श्री श्रीधर प्रसाद मिश्र (श्री श्रीधर भारतीय विचारण चौपरी के लक्ष्य १९५४ ई० के मध्यमस्थ चुनाव में विजयी हुए थे) का नाम दिया । उपरोक्त उपायों के एक कौटिल मित्रों के कि सरकार के उच्च पदों पर भारतीय व्यक्तियों की हाजीरता रहने वाली का वादों का वाद है कि मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने कौटिल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर है व्यक्तियों की ही वादों नेता बताया ।

यदि वास्तव वादों नेता कह है त्यागपत्र दे दे तो क्या उनके साथ के लिए वाप की त्याग कर दे देने ? के उग्र में कौटिल कौटिल के पदाधिकारियों में है २३ प्रतिशत में है वां क्या की कि चीनती गांधी, वादों की कि विस्मय प्रसाद सिंह की वादों नेता मानती है ।^{१००} चौपरी कौटिल के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों में है वां क्या की कि चौपरी चरण सिंह की वादों नेता मानती है ।^{१०१} मण्डल समिति के लक्ष्य प्रतिशत पदाधिकारियों में है नहीं" कहा । उन उपायों के स्पष्ट है कि चौपरी कौटिल में कौटिल मित्रों पराकाष्ठा पर है और मण्डल समिति में कौटिल मित्रों के त्याग पर विद्वान् मित्रों का परीक्षण प्रतीत होता है ।

कौटिल के कार्यकर्तियों के कौटिल पर किताब प्यार देना वादों ? के प्रदीप उपायों में कौटिल कौटिल, मण्डल समितियों तथा चौपरी कौटिल के पदाधिकारियों में है वादों कहा, जिससे की कौटिल मित्रों है प्रम या तो चरण का वाप लक्ष्य है और चौपरी या तो कार्यकर्तों का विस्मय की उनके चरण कह पर विमर है । वादों कह के कार्यकर्तों वादों कौटिल की नीतियों एवं विद्वान् की अपनी व्यावहारिक जीवन में कि कौटिल कह वादों हुए है ? के प्रदीप उपायों में कौटिल कौटिल के पदाधिकारियों में है ५० प्रतिशत वादों , २३, ५ प्रतिशत वादों तथा १९, ५ प्रतिशत वादों वादों का प्रयोग किया । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में है ५० प्रतिशत वादों , २५ प्रतिशत वादों तथा २५ प्रतिशत वादों वादों है उग्र किया । चौपरी कौटिल के पदाधिकारियों में है ७५ प्रतिशत वादों तथा २५ प्रतिशत वादों वादों है उग्र किया । इससे स्पष्ट की वाता है कि कौटिल के

पिधान्यों एवं कीटियों को यह क्या अधिक कार्यकर्ता बहुत कम कीर्तियों में अपनाये हुए हैं किसी संस्था की पक्षों में अधिक प्रवीण होती है ।

‘ यह कि शक्ति कार्यकर्ता की कीर्तियों में क्या कार्य की जाती है ? के उपर में एक शक्ति कीर्तियों के पदाधिकारियों ने एक प्रविष्ट कार्यकर्ता की कला की प्राप्ति तथा न मिलना, १४ प्रविष्ट सेवा के द्वारा उनके कार्य के करने में एक पक्षी, १४ प्रविष्ट यह की कार्य प्रजाती है वही ‘ तथा १४ प्रविष्ट कार्यकर्ता के कार्य के अनुसार प्रविष्ट का न मिलना ‘ कारण बताया । उपरान्त में कि विधान शक्ति परीक्षा १० वर्षों तक प्राप्ति प्राप्त प्राप्त रहा किन्तु वह वरदाती नहीं हो कर । कि वही प्रजात पाण्डेय - रवीश्वर के पक्षों की कला नारायण पाण्डेय की ठीक नौदरी है वही कर केना, ^{५२} बताया । मण्डल शक्ति के पदाधिकारियों ने २० प्रविष्ट कार्यकर्ता की वार्षिक स्थिति का विवरण ; २० प्रविष्ट उपर के वार्षिकियों के उत्पन्न का कला, २० प्रविष्ट वही नारायण का कला ; २० प्रविष्ट पदाधिकारियों के मुख्यकार ; तथा २० प्रविष्ट यह में वही मुख्यकार का न जीना ‘ उपरान्त का कारण बताया और उपरान्त में कि कला प्रजात विपत्ति, विधान अधिकार कीर्तियों है कि कलाकर पाण्डेय- कलापदी, कि रानीया कि ‘ निरुद्ध ‘ के मुख्यकार है उपरान्त जीना बताया ‘ कीर्तियों कीर्तियों के पदाधिकारियों ने ‘ यह के मण्डल कार्य ; ‘ स्वार्थ का कि न जीना, ‘ शक्ति का का न मिलना, ‘ अधिकार उत्कर्ष, ‘ यह में कला ‘ तथा उच्च पदाधिकारियों द्वारा कला पर जान यह के उपर उपरान्त के कारणों की स्पष्ट किया । उपरान्त किर्तियों है निरुद्ध किर्तियों है कि शक्ति कार्यकर्ता की उपरान्त के तीन मौलिक कारण हैं प्रजात यह की शक्तिपूर्ण कार्य प्रजाती, प्रीति सेवा का कला, कलापपूर्ण एवं कलाकार तथा प्रीति कार्य कार्यकर्ता की वार्षिक कला एवं कलाकारों में कलाकारी (आर-कला) ।

यह का सेवा या कार्यकर्ता यह का वार्षिक कार्य कर केना है ? के उपर में एक शक्ति कीर्तियों के पदाधिकारियों ने १० प्रविष्ट अधिकार महत्वा-कार्ता की शक्ति न जीना, १४ प्रविष्ट यह के कार्य है उत्कर्ष ‘ तथा १४ प्रविष्ट सेवा द्वारा कला का न माना माना ‘ बताया । मण्डल शक्तियों के पदाधिकारियों ने १० प्रविष्ट अधिकार महत्वाकार्ता की शक्ति न जीना ‘ १४, ५ प्रविष्ट किर्तियों

बन्धन कठ द्वारा प्रज्जमान का पिछा, १५, ५ प्रतिशत कठ का वार्षिक कटौत का १५, ५ प्रतिशत वरीय निष्ठा का बन्धन बताया। वरीय कौशल के पदाधिकारियों के ५० प्रतिशत अधिकतम परम्पराकारिताओं की पूर्ति न होना २० प्रतिशत प्रज्जमान तथा २० प्रतिशत शिक्षात्मक के विरुद्ध कार्य बताया। उपरोक्त उपर्युक्त है कि स्पष्ट होता है कि कठ परिवर्तन का प्रमुख कारण परिवर्तन की अधिकतम परम्पराकारिताओं की पूर्ति का अभाव आवश्यकताओं की पूर्ति, प्रतिष्ठा-बुद्धि बन्धन कार्य-विचार के रूप में प्रकट होती है। वही कठ के पदाधिकारियों के अपने अपने कठ के कार्यकारणों के द्वारा कठ के कठ परिवर्तन की प्रमाणित किया है। किन्तु कठ की पदाधिकारी के बन्धन कठ परिवर्तन नहीं किया है।

मुक्त (निश्चित - कार्यकारण) उपर्युक्त का नेतृत्व करता है उपर्युक्त कठों का नेतृत्व करता है एवं कार्यकारणों का नेतृत्व करता है।^{६६} पदाधिकारी उपर्युक्त एवं कार्यकारणों के बीच की कड़ी है। जो पदाधिकारी की अपेक्षा सम्मान की है मात्र उपर्युक्त कि उनके कार्यकारण का पाठन कार्यकारण करते हैं उन्हें कठ विचार करना चाहिए कि कार्यकारणों की कठों की पदाधिकारी का कार्यकारण होता है।

आनुवंशिक कठ एवं समितियाँ

राजनीतिक कठ सामान्य उद्देश्यों वाले समुदाय के के साथ के प्रति पूर्ण एवं कठ विचारों के संस्थानों की प्रमाण करती है। वे राष्ट्रीय की नहीं अपितु अन्तराष्ट्रीय बीच की पूर्ण कठों करने का उद्देश्य रखती हैं। उद्देश्य की कठ विचारों के बहुत है कि, जो कठ विचार उद्देश्य के सम्मान हैं पूर्ण के नहीं दूर की जाती हैं। आनुवंशिक कठ राजनीतिक कठों के प्रतिमात्रा की विचार है कि कठ के कार्य (सामान्य उद्देश्यों वाले समुदाय) काय प्रतियाँ की एक कठ की आवश्यकता की साथ कठों कठों की कठ उद्देश्यों वाले कठों उद्देश्यों -समुदायों की कठों की।^{६७} का: राजनीतिक कठ का सामान्य कठों की कठों पूर्ण है केना: कठ, एक बन्धन कठ कठों की कठ पूर्णता परिकल्पना, बन्धन उद्देश्यों वाले कठ पर विचार

भारतीय जनकेंद्र की मण्डल समितियों के कार्याकारियों ने इस वातावरण में यह पूछा कि "वापके कल का जिन जिन कार्यों में किस नाम से उल्लेख है, के ऊपर में 'विधायी परिषद्', 'भारतीय मजदूर संघ', 'भारतीय किसान संघ', 'मुक्त जनकेंद्र' के नाम दिए गये। यदि वे उल्लेख भारतीय जनकेंद्र के वापकीनिक हैं तो यह के संविधान में उल्लेख नाम क्यों नहीं? क्या अपनी विस्तार की विधान का उपाय किया गया है? विधायी परिषद्, मजदूर संघ तथा किसान संघ में उचित व्यक्तियों में भारतीय जनकेंद्र के प्रत्याक्षियों की ही उपायवाही करते दिखाने देते हैं। और जब इन संघों के कार्यक्रम कार्यावली जिसे जारी है तब उन्हें भारतीय जनकेंद्र के उचित कार्यकर्ता तथा नेता ही सम्पादित करते हैं।" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्य प्रवक्ता (Feeder -फीडर) उल्लेख न तो प्रभा सीसिडिल पार्टी न सीसिडिल पार्टी के साथ है^{१०१} जो कि भारतीय जनकेंद्र का प्रवक्ता माना गया है।

सीडिया विधान का दौर में भारतीय किसान संघ सीडिया की ओर से २० मार्च रविवार को १९७५ ई० को दीपपुर में लखीपुर के लक्ष्मी बन्धु उद्घाटन (Levy -लेवी) के विरोध में कार्यक्रम कार्यावली किया गया। उद्घाटन का विरोध भारतीय जनकेंद्र के प्रमुख स्थानीय कार्यकर्ताओं अं नेताओं द्वारा किया गया जिसके अध्यक्ष श्रीराम रैला सिंह सिंह (१९७५ ई० के विधान का निर्माण में भारतीय जनकेंद्र के प्रवक्ता) रहे। भारतीय किसान संघ ऊपर प्रवेश का उद्देश्य पूर्ण विनाश, वापकी स्वतंत्रता समुद्र जीवन एवं सामाजिक सम्बन्ध है।^{१०२}

भारतीय जनकेंद्र के संविधान की धारा ५, यह की उपायों के अन्तर्गत 'एक पक्ष की राष्ट्रीय कोष या राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा उल्लेख या स्वीकृत किए जाए'^{१०३} है वापकीनिक संघों अं पुरीमान संघों का उल्लेख मिलता है किन्तु उनके नामों की सूची किसी भी स्थान पर उल्लेख नहीं है जो वापकीनिक वापकीनिक संघ का उपायवाही प्रस्तुत करता है। भारतीय जनकेंद्र की राष्ट्रीय कोष के कार्याकारियों ने "वापके कल का जिन जिन कार्यों में किस नाम से उल्लेख है? के ऊपर में उल्लेख है 'मुक्त लोक संघ', 'सीसिडिल पार्टी' भारत मुक्त जनकेंद्र एवं उपायवाही है 'मुक्त ज्ञानि संघ' के नाम बताया। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय जनकेंद्र कने पर मुक्त ज्ञानि संघ की मुक्त लोक संघ ही गया किन्तु उपायवाही

होना, जस्य है केवल जनराशि प्रकृत कृत्रिम क्रीड़ा एवं अछिन्न भारतीय कृत्रिम क्रीड़ा में एक समान नई बावनी, प्रकृत कृत्रिम क्रीड़ा नहीं होती जिसमें हीन एवं सत्वावधान में यह बहुत हीन होनी । यह प्रकार स्पष्ट है कि अछिन्न भारतीय कृत्रिम में भारतीय स्वाधीन अभिवृद्धि है किन्तु दुर्भाग्य है कि विमान का हीन एक हमरी उदासीन स्वाधिन करने की जोई व्यवस्था नहीं हो गई है । विमान का चुनाव के समय चुनाव संवाहन समिति की कार्यवाहिक बाई अवश्य चुनाव चक्री है ।

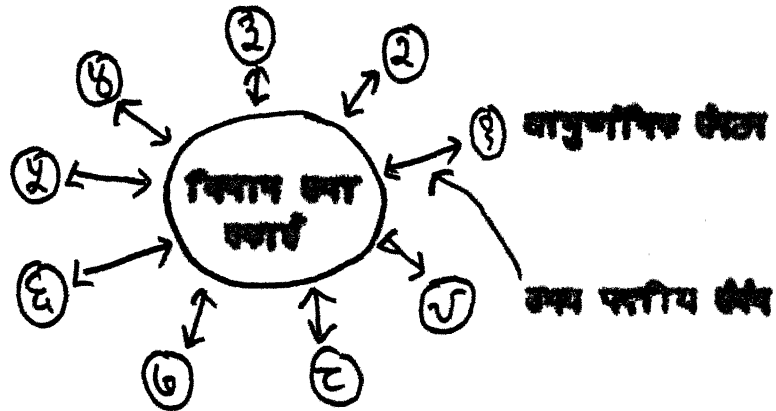
भारतीय जनसंघ के सम्मेलन की समितियों की प्रणाली विमान है, संघीय व्यवस्था^{१९९} (क) भारतीय कार्य समिति एवं संघीय व्यवस्था^{१९९} विस्ती व्यवस्था संस्था ७ होती, नियुक्त करीबी और विमान उद्योग संस्था तथा विमान कार्य के संवाहन के लिए उसे आवश्यक अधिकार देनी । (ख) प्रकृत कार्य समिति प्रकृत के लिए संघीय व्यवस्था^{१९९} विस्ती व्यवस्था संस्था ७ होती नियुक्त करीबी की केन्द्रीय संघीय व्यवस्था^{१९९} है प्रान्त निर्देश के अनुसार कार्य करनी ; स्वागत समिति^{१९९} विमान पर सम्मेलन करना निश्चित हो बजा की कार्य समिति स्वागत समिति का गठन करनी और कार्य प्रवर्धन करनी । समितियों के उपरान्त संपूर्ण वाय-व्यव का उद्योग एक माह के भीतर तैयार करके स्वागत समिति द्वारा स्वीकृत होना चाहिए और उसी एक प्रति प्रादेशिक तथा भारतीय कार्य समिति की देनी चाहिए । यदि कुछ पन बचा हो तो विनिर्माण यह प्रकार होना कि बड़े हुए पन का २० प्रतिशत केन्द्र की, २० प्रतिशत प्रकृत की तथा उद्योग ६० प्रतिशत स्वागत समिति निर्माधी समिति की भिडे । होकर विमान का हीन में विमान का है चुनाव ७४ के समय व्यवस्था चुनाव संवाहन समिति का गठन विमान समिति में किया या भी प्रचारक, समाधी, बावनी, व्यप्री एवं कार्यवाहिकों के संघीय विनयों का नियंत्रण करती रही और प्रत्यासी की आवश्यक निर्देश भी देती रही ।^{१९९}

भारतीय लोकसभा के सम्मेलन की समितियों की व्यवस्था हुई है, ' चुनाव स्वाधिन^{१९९} की कि तीन अवस्था का होता है जिसका गठन है, प्रकृत एवं विमान स्तर पर होता है और जिसका मुख्य कार्य मतीय चुनाव के विधानों का आधान करना है, किन्तु राष्ट्रीय लोकसभा स्तर पर एही गठन की जोई व्यवस्था

नहीं है काकि इसके अतीतस्थ प्रारंभिक कौशल का पुनः उद्भव होता है ।
 पाठ्यक्रम-सूची ११२- राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ७ छात्रों का एक
 पाठ्यक्रम-सूची ११३ का अंशों की ओर उन्नीसवाँ के लिए कहीं उन्नीसवाँ
 का काम करना । पर प्रथम कार्यकारिणी समिति-सूची ७ छात्रों
 का अंशों करना की प्रथम किया गया और उसे अतीत स्थानीय अंशों के उन्नीस-
 वाँ का काम करना । राष्ट्रीय कौशल का अन्तर्गत तथा प्रथम कौशल के अन्तर्गत
 अन्तः अपने पाठ्यक्रम-सूची ११३ के अन्तर्गत रहने ।

अतः किन्तु यह स्पष्ट है कि अतीत स्थिति का
 अन्तर्गत किन्तु न किन्तु नाम (पाठ्यक्रम-सूची ११३) के अन्तर्गत न किया है ।
 स्वतन्त्र समिति की अन्तर्गत भारतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में है कहीं
 पर पुनः अन्तर्गत किन्तु की अन्तर्गत एक ही अन्तर्गत में ही है । वास्तविक,
 पुरातन (नीचा) एवं समितियों के किन्तु की परिभाषा का पाठ्यक्रम-सूची
 कहीं में अन्तर्गत न किया है । वास्तविक एवं पुरातन अंशों के अन्तर्गत यह
 के अन्तर्गत में रहते हैं ।^{११३} राजनीतिक यह ही अन्तर्गत क्या काम निम्न है वह प्रथम
 किन्तु-सूची है । नीचा दृष्टि है प्रमुखता यह का नीचा विस्तार, नीचा अन्तर्गत
 अन्तर्गत है अन्तर्गत, नीचा किन्तु का काम एवं अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत नीचा, यह
 की अन्तर्गतता एवं वास्तविकता में अन्तर्गत, निम्नता में अन्तर्गत एवं अन्तर्गत की प्राप्ति
 यह के अन्तर्गतता एवं नीचा की अन्तर्गतता अन्तर्गत के अन्तर्गत एवं किन्तु के अन्तर्गत
 की प्राप्ति, नीचा अन्तर्गत का काम, प्रथम वास्तविक के अन्तर्गत की निम्नता में
 अन्तर्गत, राजनीतिक अन्तर्गतता के अन्तर्गत में अन्तर्गत तथा राष्ट्रीय अन्तर्गतता
 का नीचा एवं अन्तर्गत है । यह राजनीतिक यह निम्नता अन्तर्गत की एक अन्तर्गत
 अन्तर्गत या अन्तर्गत किन्तु का प्रथम नीचा बना पाते उस अन्तर्गत यह में अन्तर्गत अन्तर्गत
 एवं पुरातनता के कारण किन्तु का प्रथम ही पाता है किन्तु परिणामस्वरूप अन्तर्गत
 की नीचा यह पाती है ।^{११४} वास्तविक अन्तर्गत (अन्तर्गत, नीचा और अन्य वादि)
 का अन्तर्गत, नीचा कि अन्तर्गत नीचा है बाहर रहते हैं, वास्तविक अन्तर्गत के प्रथमों
 की अन्तर्गत करता है ।^{११५} नीचा किन्तु है प्रथम किन्तुता निम्नता नीचा में राजनीतिक

यह की गठित होनेवाली ऐकतात्मक इकाई की और फलतः की भाँति केन्द्र बनाया जाय तथा जैसे प्रकार के वायुनीयक केन्द्रों की उत्पत्ति की भाँति स्पष्ट प्रमाण किन्तु यहाँ हम सीधेसे स्पष्ट एवं स्पष्ट होना । (यहाँ के कर्तव्य के अधिक स्पष्ट होना ।)



केन्द्र की विशेषताएँ

राजनीतिक यह की शक्ति उसके केन्द्र में निवास करती है क्योंकि वही राजनीतिक यह किन्ता की शक्ति है यह उमा की शक्तिशाली शक्ति होती है । परन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि किन्ता शक्ति है ? इसका निवारण कैसे हो ? इसके उत्तर के लिए यह वास्तविक है कि केन्द्र की विशेषताओं तथा उनकी शक्ति का अध्ययन किया जाय । केन्द्र की निर्वहणशीलता, शक्तिशीलता, अनुमतिशीलता, शरीर निष्ठा, कुलपण्यता, शक्तिशीलता एवं शक्तिशीलता की विशेषताओं का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है जिससे सीधे विमान उमा क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय कांग्रेस एवं भारतीय शक्तिशाली की शक्तियों में उनकी उपस्थिति के शक्ति की शक्ति शक्ति होती है ।

* निर्वहणशीलता *

निर्वहणशीलता के अन्तर्गत केन्द्र की शक्ति की शक्ति की शक्ति की शक्ति की शक्ति । राजनीतिक यह अपनी शक्तियों, शक्तिशालियों, शक्तिशालियों, शक्तियों एवं

प्रशासकों (या प्रतिनिधियों) के राजनीतिक प्रियाच्छाओं को धीरे करना चाहिए ।
 वरुदा विमर्शित कराते हैं साथ ही फिर प्रियाच्छाओं के कठ का केंद्रन निमित्त ही काफी
 उन्हें प्रतिवर्धित भी कर देते हैं । राजनीतिक प्रियाच्छाओं के राजनीतिक व्यवहार का
 प्रभुन होता है । राजनीतिक कठ अपने है सम्बद्ध नागरिकों के राजनीतिक व्यवहारों का
 निर्देशन करते हैं जो व्यवहारप्रवृत्त , कल्याण , वैदुष्य , पतन , प्रवर्धन , व्यवहार ,
 वाञ्छा , प्रसार , प्रसार के अन्य परिणामित होता है ।

निर्देशनशीलता है दो रूप की होती है प्रथम पाक्षिक निर्देशन
 शीलता एवं द्वितीय-वार्त्तिक निर्देशनशीलता । पाक्षिक निर्देशनशीलता का प्रमुख
 कारण का होता है विपक्षी प्रवृत्ति में स्वाधीनता का जीव ही बात है और केंद्रन
 में उक्त प्रवृत्ति व्यापक बात का बाता है वहीं केना का धर्मिक । वार्त्तिक निर्देशन-
 शीलता का प्रमुख कारण लौक , प्रेम एवं श्रद्धा है विपक्षी नागरिक के मन में स्वयं निर्देशन
 व्यवस्था एवं वाञ्छापालन की कठ कथित व्यवहार का व्यवहार होता है । औपचारिक
 मूर्त्यों पर व्यापारित राजनीतिक कठ कथित व्यवहार पर कठ होती है ।

आज काग्रिप कीटियों, मण्डल समितियों तथा क्षेत्रीय कीटित
 के पदाधिकारियों ने शासनात्मक में बताया कि अभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी
 के उत्तर्य निर्दिष्ट समय पर बैठकों में नहीं पहुँचते हैं और विरुद्ध है जानेवालों में
 उपाध्यक्ष, अध्यक्ष, कीर्णाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी के उत्तर्य ही अधिक होती हैं ।
 वही स्पष्ट है कि महत्त्वपूर्ण मुनिता निम्नलिखित पदाधिकारी समय-मात्र का विपक्ष
 व्यापन करते हैं किन अपने दावित्व की तथैव (DL १६०) का धीमिस्त करते हैं
 बैठकों में व्यवस्था की अनुमति न ही अब भी आज काग्रिप कीटियों के ३३ प्रतिष्ठत
 तथा क्षेत्रीय कीटित के २५ प्रतिष्ठत पदाधिकारी अपने भाषण की स्वतंत्रता अनुभव
 करते हैं किन्तु मण्डल समिति का एक ही पदाधिकारी व्यवस्था की अनुमति के वभाव
 में बैठने की स्वतंत्रता नहीं अनुभव करता ।

वाक्य कठ में जीव जीव ऐसी नेता है किन्तु आपसी संबंध बंधी
 नहीं है ? के उतर में आज काग्रिप कीटियों के उक्त प्रतिष्ठत पदाधिकारियों ने
 की केमकी मन्त्र कल्याण एवं जीपती रावेन्द्र कुमारी बाबदेवी का नाम बताया ;

नम्बल समितियों के पदाधिकारियों ने भी डा० मुरली मनोहर जोशी, श्री रवीन्द्र किशोर झाड़ी एवं श्री रामजीराव शेट के नाम छिपे ; तथा राष्ट्रीय कौण्ड के पदाधिकारियों ने भी कल्याण सिंह यादव, एम०के०, प्रो०के० वी०पी० शर्मा एवं तथा श्री श्री प्रताप सिंह यादव (कल्याण) का नाम बताया । सभी स्पष्ट है कि दोनों राजनीतिक वर्गों में अब के मतभेद हैं जो कि इनके ऊपर के विचारों को व्यक्त करने के लिए कहा है ।

यदि कोई ऐसा प्रत्यादी का दावा है कि वह एकाई की संसुति नहीं रखता एवं पदाधिकारी क्या करते हैं ? के ऊपर में आकर कौण्ड कीटियों के ६० प्रतिशत तथा नम्बल समितियों के २५ प्रतिशत पदाधिकारियों ने ' कल्याण न करना ' की की विरोध करना ' कुछ विरोध करना ' बताया । सभी स्पष्ट है कि यह की उच्च वर्गों के द्वारा प्रत्यादी विरोध कि जाने पर कौण्ड उत्पन्न होता है । बापके यह है किने वर्गों ने यह है प्रत्यादी की किने किने का पुनः में मत नहीं दिए ? के ऊपर में आकर कौण्ड कीटियों के पदाधिकारियों ने ' पाप', ' पाप की ' 'अपि' तथा ६० प्रतिशत बताया ; नम्बल समितियों के पदाधिकारियों ने ' एक ' का ' कोई नहीं ' कहा, और राष्ट्रीय कौण्ड के पदाधिकारियों ने ' पाप ', 'मनीष' का ' जानकारी नहीं ' कहा । अब उधरों है स्पष्ट है कि अब है अधिक विरोध किने भारतीय राष्ट्रीय कौण्ड के प्रत्यादी का यह के वर्गों द्वारा हुआ जो कि पराक्रम का प्रमुख कारण का । अब है अब नम्बलविरोध भारतीय वर्ग के प्रत्यादी की देखा कहा जो कि अब एवं कल्याण की कल्प विचार का उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

' बापके यह के कार्यकर्ता और अभी यह का प्रत्यादी न होने पर क्या कुछ भी करने की स्वार्थ है ? के ऊपर में आकर कौण्ड कीटियों के ६० प्रतिशत नम्बल समितियों के ५० प्रतिशत तथा राष्ट्रीय कौण्ड के भी ५० प्रतिशत पदाधिकारियों ने ' हाँ ' कहा । सभी जानाकिता होता है कि कल्याण प्रत्यादी न होने पर भी वर्गों की विचारों में पूर्ण समर्थता प्राप्त नहीं रहती है । ' यह के जानाकिता मतों की कार्यकर्ता या देखा कि कि वर्गों में प्रकट होती है ? के ऊपर में आकर कौण्ड कीटियों के पदाधिकारियों ने २० प्रतिशत बाद विचार', ३३ प्रतिशत उच्च पदाधिकारियों ने

कभी पदाधिकारियों ने पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कहा। वही यह स्पष्ट भी बताता है कि गतिशीलता के विश्वास में ही विकास के अवसरों की बाढ़ा बौकल रहती है। ईश्वर में गतिशीलता रहने से व्यक्तियों की विकास का अवसर, विभिन्न समस्याओं के बीच का अवसर तथा कठिने स्थितियों के बीच का अवसर मिलने की बाढ़ा रहती है। गतिशीलता की बाढ़ा रहने के लिए ईश्वर में प्राचीन विश्वास^{१९५} अनिवार्य रूप से जीता है जिससे नवीन एवं प्राचीन दोनों अनुशासितों में प्रेरणा साधित रहती है।

बापकी दृष्टि है कि यह सब के कार्यकर्तियों की ईश्वर एवं पुरस्कार प्राप्त नहीं होता है। के ऊपर में काक कटिब कीटियों के पदाधिकारियों ने ६० प्रतिशत कटिब, १६, ५ प्रतिशत भारतीय जनसंघ तथा १६, ५ प्रतिशत भारतीय लोकसभा के नाम बताया; मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने ७५ प्रतिशत भारतीय जनसंघ तथा २५ प्रतिशत कटिब के नाम छिपे और राष्ट्रीय लोकसभा के पदाधिकारियों ने ५० प्रतिशत, एडमिनिस्ट्रेशन, २५ प्रतिशत कटिब तथा २५ प्रतिशत भारतीय लोकसभा एवं भारतीय जनसंघ के नाम छिपे। वही यह भी बताता है कि कटिब भारतीय राष्ट्रीय कटिब एवं भारतीय जनसंघ के बीच का विकास हुआ और इसके कार्यकर्तियों में अपने अपने घर है गहरा अंतर्भाव है जो कि बाढ़ित गतिशीलता में किसी न किसी प्रकार की कमी का परिणाम है। गहरे अंतर्भाव के अनेक उदाहरण कारणों में है उन दोनों वर्गों के विनाशक प्रत्याशियों की १९७४ ई० के चुनाव में पराभव प्रमुख है। चुनावों में किसी गतिशीलता का प्रतीक है।

“ दलीय निष्ठा ”

जाने का प्रत्येक जातीय, सामाजिक, पारिवारिक, व्यावसायिक, राजनीतिक एवं एक ही ही अनुपात करने समस्याओं में समुदायिक भावना की विकसितता रहता है जिससे अनेक समस्याएँ सरलता से हल हो जाती हैं। प्रत्येक राजनीतिक घर का राजनीतिक अनुपात है जो अपने समस्याओं के समाधान में दलीय निष्ठा की विकसित ईश्वर के माध्यम से विकसित करने का विस्तार प्रभाव करता रहता है। यह ईश्वर अविच्छिन्न होता जिससे प्रत्येक घर में दलीय निष्ठा पराकाष्ठा पर होती है। यह है

प्रति व्यापक एकाग्रता की पक्षीय निष्ठा है। छात्रोत्थानकारी एवं राष्ट्रोत्थानकारी यह की विचारधाराओं में विश्वास करते कम नागरिक जिंदगी यह के प्रति ध्या कक्षा है उन्हें सम्पत्ति, सुखता एवं सुदान पैदा हो जाता है और मुख्यतः त्याग की सम्पत्ति उत्पन्न हो जाती है जब कम एकाग्रता हो जाता है और बाह्य-कार्यों की निष्ठा है मुख्य की हो जाता है। नागरिक में प्रथम चरण में व्यक्ति निष्ठा, द्वितीय में पक्षीय निष्ठा और तृतीय में ज्यैव निष्ठा ईश्वर में की रहने है उत्पन्न होती है। जिस ईश्वर में ज्यैव निष्ठा व्यक्ति व्यक्ति होने का विराग्य होता है।

संख्या विमान बना दीव में तीनों राक्षसीय यहाँ के गतिज कक्षाओं है फ्याफिजारियों में पक्षीय निष्ठा का सुदान जैसे जिसे नवी साक्षात्कार में प्राप्त उत्तरों है छाया का कक्षा है। किसी बापकी प्रथम बार स्वल्प छाया उत्ती जिस बात है बाप प्रभावित हो गयी ; के उपर में आक कटिब कीटियों है फ्याफिजारियों में त्याग और बलिदान, छात्रोत्थान है बाकजिनि, जीवनदारी, नाथी (मीरुत्थाव करम बन्ध नाथी) की पुनार कटिब में रुक्मान एवं कार्यकर्तियों का सम्मान बताया। इन उत्तरों में छात्रोत्थान है बाकजिनि ज्यैव निष्ठा का प्रतीक है जिसकी १६, ५ प्रतिशत महत्त्व दिया गया, कटिब में रुक्मान पक्षीय निष्ठा का परिचायक है जिसकी १६, ५ प्रतिशत महत्त्व दिया गया और ईश्वर ६० प्रतिशत महत्त्व व्यक्ति निष्ठावाले उत्तरों को दिया गया। मण्डल समितियों के फ्याफिजारियों में 'छिदान्त', 'राक्षस', 'निष्ठा', 'चरित्र', 'वायित्वपूर्णता', 'यह के प्रतिनिष्ठा तथा' बलिदान के लिए बान्दीज बताया। इन उत्तरों में छिदान्त ज्यैव निष्ठा का प्रतीक है जिसे १४ प्रतिशत महत्त्व मिला ; निष्ठा यह के प्रतिनिष्ठा तथा 'कला पैर के लिए बान्दीज' पक्षीय निष्ठा का प्रतीक है जिसे ४३ प्रतिशत महत्त्व मिला और ईश्वर ४३ प्रतिशत व्यक्ति निष्ठा के परिचायक है। पक्षीय कटिब के फ्याफिजारियों में की चरणार्थक का हेतुत्व बलिदान छात्र की बलिदान की चरणार्थक में बताया, 'यह की विरोध' तथा 'यह की नीति' बताया। इन उत्तरों में ज्यैव निष्ठा मुख्य प्रतिशत है ; पक्षीय निष्ठा २० प्रतिशत तथा ईश्वर ८० प्रतिशत व्यक्ति निष्ठा स्पष्ट होती है। यह विवरण है स्पष्ट होता है कि मण्डल समिति के

पदाधिकारियों में वहीच निष्ठा एवं वे अधिक तथा दीर्घीय जीवित के पदाधिकारियों में अधिक निष्ठा एवं वे अधिक कर्मन्त है ।

कमरे पठ की कम ही बात अधिक पठ्य है ? के उतर में कमरे जीवित जीवितों के पदाधिकारियों में 'आपवाद' निम्नो की बढ़ावा कमरे का कतीत, 'कर्मियों का सेवा' तथा उत्तर विरोधी अभिमान कताया किन्तु वास्तविक परिस्थितियों है उत्पन्न प्रियाकर्तों का कमरे निम्नो की बढ़ावा 'कर्मियों का सेवा' 'उत्तर विरोधी अभिमान' नावात्मक निष्ठा की स्थापना का परिणम होता है ; मध्य अभिमानों के पदाधिकारियों में 'कुशल' 'राष्ट्रीयता' के ही वल्लभता तथा 'राष्ट्रीय विचारधारा' कायम किन्तु पूर्ण जीवित विचारधारात्मक वाणीय दिखाने होता है ; दीर्घीय जीवित के पदाधिकारियों में 'कुशल प्रशासन' 'कर्मियों का रित', 'कर्मियों का' 'कर्मियों की विरोधी' कताया किन्तु वास्तविक परिस्थितियों है उत्पन्न भावी की जीवित ही अधिक है कर्तु नावात्मक वाणीय स्थापित है । नावात्मक उतरों बाते अधिकियों में वहीच निष्ठा वास्तविक कर्तु वस्थापी ही कतीत है और विचारधारात्मक उतरों बाते अधिकियों में वहीच निष्ठा दीर्घीय कर्तु वस्थापी होती है । मध्य अभिमान के पदाधिकारियों में स्थायी निष्ठा अधिक है और दीर्घीय जीवित के पदाधिकारियों में वस्थापी वहीच निष्ठा अधिक है ।

कमरे पठ की कम ही बात किन्तु पठ्य नहीं है ; के उतर में कमरे जीवित जीवितों के पदाधिकारियों में 'कर्मियों की व्यापक मध्य वेना' कमरे पठ के वेना का पदापात, 'एता का एक के वाप में किन्तु राना (विन्ती विदिरानापी)' 'वीरिदार है राष्ट्रकति एक में की जना', 'मुद्रमन्वी' एवं 'वीरानुगत ठाक' काया विन्ता कर्म मूळ कर्तव्यों है है न कि कर्तव्यों के कर्त कर्म की कर्तव्य है । वही प्रत्य है उतर में मध्य अभिमान के पदाधिकारियों में 'कुशल का कमरे' 'कर्म की सेवा विदिरण', 'प्रत्याज्यों की कम विधि' एवं वहीच पुनः कर्तव्य कताया विन्ता वीरानुगत कर्म मूळ कर्तव्य है है । दीर्घीय जीवित के पदाधिकारियों में 'कर्मिणुता' 'वाणीय वापार कताया विन्ता कर्म मूळ कर्तव्यों है है । किन्तु पठ के कर्म के पदाधिकारियों में मूळ कर्तव्य है नापठ्यनी अधिक है

उन्हीं यहीय निष्ठा का प्रतीक होती है और किसी समस्या पर कोई मतभेद नहीं बतलाने वाली जिस प्रकार वह जिस बात को पसंद कर लेती है उन्हीं यहीय निष्ठा का प्रतीक होती है ।

अब किसी एक की ओर बात चलाते हैं ? के ऊपर में चार कठिनायियों के पदाधिकारियों ने २२ प्रतिशत मतों का नाम दिया और वह एक की विशेषताओं में अनुशासन, धार्मिक नीति, ईमान, कायूजों और वैसाखान की भावना बताया, और १० प्रतिशत हिंसा रहित साम्यवाद की बताया ; मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने १० प्रतिशत हिंसा एक की ओर बात नहीं, २५ प्रतिशत भारतीय लोकतन्त्र के नेता द्वारा लोकतन्त्र का विरोध तथा २५ प्रतिशत कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं में अधिक परस्पर लोभभाव^{१०} बताया और राष्ट्रीय लोभ के पदाधिकारियों ने १० प्रतिशत मतों का अनुशासन २५ प्रतिशत समाजवादियों का विरोध तथा २५ प्रतिशत हिंसा एक की ओर बात नहीं बताया । इन उत्तरों से स्पष्ट है कि मतों के मतों की यहीय निष्ठा अवधारित है किन्तु नहीं पर मण्डल समिति के पदाधिकारियों ने कम्युनिस्टों में अपने है अधिक यहीय निष्ठा का लोभ की प्रकट किया ।

‘ यदि आपका आपस में बात एक है त्याग कर दे दें तो उसके साथ के लिए क्या आप भी एक होड़ की ? ’ के ऊपर में चार कठिनायियों के २२ प्रतिशत पदाधिकारियों ने ‘ हाँ कहा ; मण्डल समितियों के एक प्रतिशत पदाधिकारियों ने ‘ नहीं ’ कहा और राष्ट्रीय लोभ के १० प्रतिशत पदाधिकारियों ने भी ‘ हाँ कहा । इसी स्पष्ट होता है कि मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में अधिक निष्ठा का अपाव है और चार कठिनायियों तथा राष्ट्रीय लोभ के पदाधिकारियों में प्रकट अवस्था है । कुछ मतों पक्षों पर है जो यदातीप्र अपने सदस्यों की अधिक निष्ठा की यहीय निष्ठा में परिवर्तित कर दें ।

प्रत्येक राजनीतिक एक के नेता आपस में मिलते जुलते रहे तो क्या ऐसा ? का ऊपर सीनी नहीं की हकायों के पदाधिकारियों ने ‘ अपना होगा ’ कहकर दिया । इसी स्पष्ट है कि यहीय निष्ठा का वैसाखान में त्याग दिया जा सकता है जबकि वह बाधक नहीं । राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए अधिक रा नीतिक लोभों की

कैसा सामाजिक जीवन की अधिक बढ़ोतरी देता प्रतीत होता है। क्याचिन्तारियों का अनुमान है कि बदलते मिलने से बहुत कम होनी, विचारों के सामान प्रदान के प्रत्यक्ष व्यवहार अधिक होने, ज्ञान में जीवन का होना, कार्यात्मक की बुद्धि होनी और देश-कल्याण होना। ये तीन राष्ट्रीय सत्ता में अवश्य छिड़ हो चुकी हैं। काः की राजनीतिक यहाँ है केवल यहाँ की बदलते नियमित हो है बहुत माफ़ता है अगर अगर देशीय में प्रत्यक्ष विचार विनिमय का प्रतिनिधित्व करनेवाले राजनीतिक संस्थाओं है बाहर भी करना चाहिए। यह प्रकार के वातावरण है यही निष्ठा देश जिस की जीव निष्ठा में परिवर्तित हो चुकी।

गुणवत्ता

जीव, जो का होना निम्नै कारणों की जाती है यही गुणवत्ता है। राजनीतिक यहाँ के जीवन, व्यवहार, नीति, कार्यक्रम, नियम, विचारधारा एवं निम्न प्रक्रिया में गुणवत्ता अनिवार्य गुण है। यदि किसी के बीच में गुणवत्ता का अभाव होना तो नैतिकता बनने की निम्न अवस्था में अवस्था बनना और राजनीतिक यहाँ का औद्योगिक स्वतन्त्र निम्नै का कारण क्या है नियम की निम्न वेडि पतलित होनी। जीवन में गुणवत्ता उत्पन्न करनेवाले तीन मुख्य कारण हैं जिन पर का प्रत्यक्ष नियम नैतिकता का सामान्य माफ़ता में लिख होना, द्वितीय-विचारों तथा जीवन अवस्था के लिए ज्ञान का प्रदान होना तथा तृतीय प्रत्यक्ष अवस्था तक नवीकृत जानकारी पहुँचाने के लिए सहायक रहित एवं प्रगामी केवल व्यवस्था होना। जिस राजनीतिक यहाँ के जीवन में ये तीनों कारण अनुपलब्ध हैं उनमें गुणवत्ता की अधिक यहाँ में होनी।

राजनीतिक यहाँ का जीवन, नीति, कार्यक्रम तथा जीवन लिख होना है। यही जीवन के अनुसार जीवन किया जाता है। जीवन में गुणवत्ता उत्पन्न करने के लिए नियम एवं व्यवस्था बनाये जाती हैं। जीवन की अवस्था में जीवनिक अवस्था, अवस्था है जीवनिक क्याचिन्तारियों की निम्नै विधि, पदा-विधि, विचारों एवं कार्य, आनुवंशिक जीवन, पुरी माफ़ता एवं समितियों :

केता है क्योंकि यह के धीकान की चारा १४ में विवरण दिया गया है । क्या इन व्यवस्थाओं के दो कारण होने नहीं है कि यह का धीकान का ही मुख्य न हुआ हो, या मुख्य होने पर भी सबसे धीकान व्यवस्था न व्यवस्था हुई हो या इन विधियों का फल ही न दिया जाता हो बादि ।

यह के विधी व्यवस्था की यह की व्यवस्था है धीकान करने का क्या नियम है ? के उतर में 'आर्य समाज कीटियों' के २२, ५ प्रविष्ट पदाधिकारियों में 'वारीयण' स्पष्टीकरण, निष्कासन एवं विधी की प्रस्ताव का इन बताया गया १६, ५ प्रविष्ट में 'कभी तक कोई प्रस्ताव ही नहीं दिया' कहा क्योंकि यह यह के धीकान 'आर्य समाज कीटियों' के फलन में के अनुसार तीन तथा पदाधिकारियों के अनुसार एक व्यवस्था के साथ व्यवस्था है धीकान करने की कार्यवाही की गई है केवल व्यवस्था की कार्यवाही में विधी की व्यवस्था के साथ धीकान कार्यवाही नहीं हुई है । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में ५० प्रविष्ट वारीयण, स्पष्टीकरण एवं निष्कासन २५ प्रविष्ट निष्कासन एवं विधी की प्रस्ताव तथा २५ प्रविष्ट 'माहान' नहीं 'कहा' तथा राष्ट्रीय कीटियों के पदाधिकारियों में ५० प्रविष्ट 'माहान' नहीं २५ प्रविष्ट स्पष्टीकरण एवं निष्कासन तथा २५ प्रविष्ट 'वैधानिक, वारीयण, स्पष्टीकरण, निष्कासन एवं निष्कासन' बताया । इन उतरों में स्पष्ट है कि 'आर्य समाज कीटियों' के पदाधिकारियों में 'अनु विनियम व्यवस्था धीकान' है राष्ट्रीय कीटियों के पदाधिकारियों में व्यवस्थाओं का है जो है । विधी की यह का धीकान पूर्ण प्रविष्टों की स्पष्ट नहीं करता है । 'आर्य समाज कीटियों', मण्डल समितियों तथा राष्ट्रीय कीटियों के एक ही पदाधिकारी की वही यह के अस्त वास्तुवािक फलन एवं पुरातन फलनों की पूर्ण जानकारी नहीं है ।^{१२०}

'वाक्य यह तीन तीन है उत्तर बताया है ? के उतर में 'आर्य समाज कीटियों' के पदाधिकारियों में 'अनुप्रविष्ट' में १५ अस्त ('वैधानिक विनियम') २ अस्त ('वैधानिक विनियम') तथा २५ अस्त ('वैधानिक विनियम') बताया २२, ५ प्रविष्ट में १४ अस्त ('वैधानिक विनियम' - 'वाक्य विनियम') बताया ; २३, २ प्रविष्ट में २० अस्त ('वैधानिक विनियम') बताया और १६, ५ प्रविष्ट में १६ अस्त ('वैधानिक विनियम') बताया ;

संश्लेषण कर दे। किन्तु आजकल जहाँ के एक पदाधिकारी ने उत्तीर्ण (पूरा) तथा 'दान' में भी अन्य का उल्लेख किया बिना ही प्रसिद्ध राष्ट्रीय कौशल के एक पदाधिकारी ने भी की। यदि वह उत्तीर्ण एवं दान में वह अन्य करते हैं तो उल्लेख करता वह ही क्यों नहीं उन पास। अब: वह के उल्लेख में दुस्वप्नता के लिए वह के साथ एवं अन्य के प्रतीकों का निर्धारण और जहाँ तक आवश्यक होना चाहिए।

वह ही नीतियों, कार्यक्रमों एवं विचारधाराओं की किसी दुस्वप्नता उनके उल्लेख में है उनके लिए पदाधिकारियों की किसी दुस्वप्नता उनके उल्लेख में है उनके लिए पदाधिकारियों के व्यक्तित्व समस्याओं में है कुछ पर आधारित रूप में प्रत्यक्ष लिये गये। 'राष्ट्र में उल्लेख की जाती या नहीं है ? के अन्त में आजकल जहाँ के पदाधिकारियों के पदाधिकारियों में 'कुछ कुछ' की भावना' 'कभी कभी के बापसी' 'कभी की बुद्धि', 'कभी के कार्य' 'परिणाम पर वह', 'राजनीतिक कर्तों की उल्लेख की होना' 'आत्मनिष्ठता', 'आधिपत्य एवं नीति-नीति का फल' 'उन होना' 'क्याया'। उन उल्लेखों में वह उल्लेख होता है कि राष्ट्रीय उल्लेख उत्पन्न करने के लिए किसी (व्यक्ति, राजनीतिक वह तथा राज्य) प्रत्यक्ष होना चाहिए। वह निर्विवाद रूप प्रतीत होता है कि राष्ट्र में विद्यमान उत्पन्न करने में राजनीतिक कर्तों की अधिक उल्लेख की उल्लेख होती है। मण्डल समितियों के पदाधिकारियों ने राष्ट्र में उल्लेख होने के लिए 'न्याय' एवं 'उत्थ', 'मान' 'उत्तर', 'मान' 'मान', 'वर्ष' एवं 'उत्पत्ति' 'राष्ट्र' 'मान' 'मान' तथा 'उत्पत्ति' का उल्लेख उल्लेख उल्लेख बताया। उन उल्लेखों के समस्या के समाधान का दायित्व व्यक्ति, मान तथा उत्तर तीनों पर है। राष्ट्रीय कौशल के पदाधिकारियों ने भी 'वर्ष' 'निर्देशात्मक', 'क्या के विरोध में वह वह' 'गरीबी दूर करना' एवं 'उल्लेख' के उल्लेख बताया। राष्ट्रीय कौशल के एक पदाधिकारी ने तो कहा वह कहा कि 'राष्ट्र में उल्लेख वा ही नहीं होती' 'कि वैचारिक' 'रिक्तता का अधिक है बिना कारण वह की स्पष्ट योजना का उल्लेख है। आजकल जहाँ के पदाधिकारियों, मण्डल समितियों तथा राष्ट्रीय कौशल के पदाधिकारियों के उल्लेखों में मान 'उत्पत्ति' का उल्लेख है कि वैचारिक दुस्वप्नता के उल्लेख का उल्लेख होता है। यदि संश्लेषण राजनीतिक कर्तों के विचारों की पिछा की होती तो समस्या निश्चय ही रहती।

‘ भारत का उत्थान किंवा विचारधारा है किम है ? के उत्तर में ‘आर्य कर्षि-
जीवियों के पदाधिकारियों के’ की धारणा काज’, ‘आत्मवाद’, ‘नापीवाद’,
‘वैयक्तिकता का उत्थान’ तथा ‘यम का महत्व का होना’ है किम बताया । इन उत्तरों
में कर्षि की आत्मवादी विचारधारा का नाम बताया किन्तु की धारणा काज की
बाद इसके विपरीत भी है । वैयक्तिकता का मत एवं यम का विशेष महत्व पदाधि-
कारियों के वास्तविक पर प्रभाव डालना प्रतीय होता है । मण्डल समितियों के
पदाधिकारियों के की’, ‘आत्मवाद’, ‘हिन्दूवाद’ है भारत का उत्थान
होना बताया किसे भारतीय कार्य का उत्थान मानकर भी स्पष्ट होता है
यह भी जय राष्ट्रीय कार्य केक एवं की हिन्दूवादी विचारधारा का भी प्रभाव
करकेवास होता है । राष्ट्रीय कीम के पदाधिकारियों के वैयक्तिकता एवं
व्यक्तित्व पर आधारित आत्मवाद’ नापी विचारधारा’ तथा ‘आत्मवाद’ इसका
उत्थान बताया किसे आत्मवाद की वैयक्तिक कर्षि का आवश्यकता का किम भिन्नता
है । वास्तव्य वास्तव्य है कि भारतीय कीम के अपनी विचारधारा आत्मवादी नहीं
योग्यता किम है किम की पदाधिकारी मण्डल रहे हैं की कि राष्ट्रीय विचारधारा
की मुख्यता है वसाव का परिणाम होता है । वैयक्तिक दृष्टि है राष्ट्रीय कीम के
पदाधिकारी ‘आर्य कर्षि जीवियों के किम है किम ‘आर्य कर्षि जीवियों के
पदाधिकारी मण्डल समितियों की वास्तविकता है किम विचारों है प्रभावित प्रतीय
होते हैं ।

‘ वैयक्तिकता ’

—————

वैयक्तिकता किम की वर विवेचना है की कि अपनी वर के
चित्तों, कर्षियों, वास्तव्य, भिन्न एवं वृत्तों के प्रति किम का वसाव मानकर
रहती है । किम वर के किम में वैयक्तिकता का होना वर का वसाव, वसाव-
पावों एवं वसाव का वास्तविक प्रतिनिधित्व नहीं कर किम वर वसाव में वसाव
की वसावों है मुख्यकर प्राण स्थान होता । किम विचार का में राजनीतिक
वरों की किम वसावों में किम वैयक्तिकता है वसाव वसाव वर प्रयोग के
उत्तरों है बताया का वसाव है ।

बापकी यह की किस यह है अधिक कम होता है ? के ऊपर में पञ्चक कट्टिब कीटियों के फटाफिराहियों ने ६० प्रतिशत भारतीय लीकड के तथा ३० प्रतिशत भारतीय जलज के कम बताया किन्तु बाप बाप यह भी कहा कि बापकजालीय पीनणा के परभाव कम जितनी है के कम नहीं होता है । मज्जु कमिठियों के फटाफिराहियों ने ६० प्रतिशत कट्टिब तथा ६० प्रतिशत भारतीय लीकड के कम का अनुभव है और राष्ट्रीय कीट के फटाफिराहियों ने ७५ प्रतिशत कट्टिब तथा २५ प्रतिशत जितनी की यह है नहीं कम का अनुभव है । उन उत्तरों के स्पष्ट है कि भारतीय लीकड के जितनी पर भारतीय जलज बापास नहीं कर रहा है क्योंकि भारतीय जलज के फटाफिराही भारतीय लीकड जं कट्टिब दोनों के मनीस है, कट्टिब के फटाफिराही भारतीय लीकड है अधिक मनीस है और भारतीय लीकड यह के कट्टिब है अधिक मनीस है कट्टिब कट्टिब जं भारतीय लीकड के फटाफिराही एक दूसरे के यह है अधिक कम अनुभव करते हैं ।

यहां अनुभव बाप क्यों करते हैं ? के ऊपर में पञ्चक कट्टिब कीटियों के फटाफिराहियों ने भारतीय लीकड है कम का अनुभव उनके जातीय बापास पर केउन जं बिरादरीबाद की प्रीस्थापन है किया और भारतीय जलज है कम का अनुभव उनके धार्मिक छिद्वान्तों जं निष्ठावान कार्यकर्ताओं है किया ; मज्जु कमिठियों के फटाफिराहियों ने कट्टिब है कम का अनुभव ' जर्म प्रष्ट जर्मों का प्रवेक तथा हाज में होने ' है किया और भारतीय लीकड है कम का अनुभव उनके जातीय बापास जं व्यवसायों के पटकों की केठिड फिये जाना ' है किया ; राष्ट्रीय कीट के फटाफिराहियों ने कट्टिब है कम का अनुभव उनके अनुभव तथा कम तक हाज में की रहना ' है किया । कम का उदीपन कट्टिब के हाज में की रहने है ; भारतीय जलज धार्मिक छिद्वान्तों जं निष्ठावान कार्यकर्ताओं है और भारतीय लीकड के जातीय बापास पर केउन है हो रहा प्रीति हुआ ।

किस यह है बापकी कम क्यों नहीं होता है ? के ऊपर में पञ्चक कट्टिब कीटियों के फटाफिराहियों ने ६० प्रतिशत केउन कट्टिब कीटिब जलज और केउन और बापकज नहीं, १४, ३ प्रतिशत कीटिबिष्ट कीटिब एका की और केउन नहीं, १४, ३ प्रतिशत कट्टिबिष्ट यह यह नहीं है तथा १४, ३ प्रतिशत

राष्ट्रीय जनसंघ काँग्रेस द्वारा भारतीयता का व्यापार नहीं बताया ; पण्डित जयप्रकाश के महापितामहियों ने हिन्दू महासभा , राष्ट्रवादी परिषद्, ईश्वर कृष्ण, श्रीकृष्ण कृष्णनन्द तथा कृष्ण के साथ प्रसिद्ध में यह का व्यापार नहीं किया का यह पर न होता क्या कृष्ण के प्रचारों में प्रकाश प्रतिपादित बताया और भारतीयता का यह है महापितामहियों ने जाना कि है भारतीयता का - काँग्रेस यह यह का ईश्वर ईश्वर है जान बताया है, ईश्वर का श्रीकृष्ण - काँग्रेस यह यह का ईश्वर है, इन कारणों है यह का व्यापार बताया । अतः यह स्पष्ट है कि किन राजनीतिक वर्गों की एकताई होकर विमान का नीचे में नहीं है उसे विस्तृत यह नहीं बताया और किसी एकताई नहीं है एवं प्रति स्वीकृत है उसे ही यह का उद्दिष्ट शिष्टों के लिए अस्वीकृत बताया गया है ।

राजनीतिक यह बताया की अन्तर्गत, उच्चतम, अस्वीकृत व्यापारियों तथा विचारियों के प्रति उत्तर है कि कि उनकी एकताई का परिष्कार होता है । बताया की उच्चतम का जान कि है कि ? के उत्तर में किनी वर्गों की एकताई के महापितामहियों ने अस्वीकृत है बताया । विचारणीय प्रश्न है कि अस्वीकृत अस्वीकृत किया जाता है या विचार अस्वीकृत पर ही ? प्रकाश वास्तविक उद्दिष्ट बताया की यह उत्तर है । होकर विमान का नीचे के अस्वीकृत एवं अस्वीकृत नीचे विचारों के नागरिकों ने प्रभाव में महापितामहों की बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है और प्रभाव के प्रभाव नीचे की बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है । यह प्रसिद्ध उद्दिष्ट प्रसिद्ध कि । यह स्पष्ट है स्पष्ट होता है कि प्रभाव में अस्वीकृत का प्रभाव यह के ईश्वर द्वारा विचार रूप है होता है और प्रभाव अस्वीकृत ही जाने पर नागरिकों द्वारा राजनीतिक वर्गों है अस्वीकृत नहीं है ईश्वर का प्रभाव होता है । राजनीतिक वर्गों की अस्वीकृत के प्रति उत्तर देने के लिए प्रभाव एवं अस्वीकृत अस्वीकृत है ।

‘ वाप कि उद्दिष्ट है कि उत्तर करने वाली है ? के उत्तर में उच्चतम कृष्ण कीर्तियों के महापितामहों ने अस्वीकृत जान तथा उच्चतम उद्दिष्ट, ‘ परिष्कार अस्वीकृत एक नडा है , ‘ यह की उच्चतम के लिए और राजनीतिक नेता के रूप में उत्तर के लिए उद्दिष्टों की स्पष्ट कि कि अस्वीकृत एवं अस्वीकृत शिष्टों के साथ

कार्य की परिशिष्टता होती है ; मण्डल समितियों के पदाधिकारियों में, कार्य की विषय हो, यह का प्रभाव नहीं, कार्य का प्रकार हो और विधानों का प्रकार होने के अर्थों को बताया जिसे यही चीजें पर विशेष ध्यान ला प्रतीत होता है और यह भी बिलम्ब होता है कि वे ही कार्य का सभी गुणों को ही बना की पूर्ण नहीं और यही चीजें के पदाधिकारियों में सभी कार्य के अर्थों को विचार एवं वास्तविक की वास्तविक, यह का प्रभाव नहीं, कार्य का प्रकार है स्पष्ट किया किसे पण्डित एवं वास्तविक चीजों के प्रति सम्बन्धित मिलती है । किन्तु राजनीतिक यह के अर्थ में यही चीजों की ही चीजें प्राथमिकता की जाती है उन्हें वास्तविक अर्थ-हीनता अर्थ है और किसे कार्य की ही चीजें प्राथमिकता की जाती है उन्हें वास्तविक हीनता अर्थ है । वास्तविक अर्थ है किसे वास्तविक एवं वास्तविक हीनता अर्थ है किन्तु किसे वास्तविक है ।

वास्तविक दृष्टि है कि राजनीतिक यह का पवित्र अर्थ किसे मिलती है रहा है और चीजों के अर्थ में यह चीजें चीजों के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों में सभी का नाम बताया गया है ५० प्रतिशत में भारतीय कार्य का नाम उल्लिख बताया कि कार्य की नीतियाँ हैं उन्हें ज्ञान गया है और उल्लिख पवित्र वास्तविक है । मण्डल समितियों के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों में सभी का अर्थ पवित्र है किन्तु २५ प्रतिशत में सभी विरोधी चीजों के अर्थ के कारण यह कार्य का नाम २५ प्रतिशत में राजनीतिक दृष्टिकरण के कारण भारतीय हीनता का पवित्र अर्थ है भारतीय चीजों के ५० प्रतिशत पदाधिकारियों में सभी का अर्थ पवित्र है तथा ५० प्रतिशत में भारतीय कार्य का पवित्र अर्थ है किसे उल्लिख अर्थ वास्तविक अर्थ और किसे अर्थ किसे अर्थ है अर्थ बताया कि । अर्थ किसे अर्थ है स्पष्ट है कि प्रत्येक यह के पदाधिकारियों में सभी का अर्थ अर्थ अर्थ पवित्र की अर्थ की अर्थ है । भारतीय कार्य के अर्थ पवित्र की अर्थ का अर्थ कार्य चीजों एवं भारतीय चीजों के पदाधिकारियों में है । मण्डल समितियों के पदाधिकारियों कार्य एवं भारतीय हीनता चीजों का अर्थ पवित्र है किन्तु सभी यह है का ही ।

राजनीति में आपके तीन दृष्टि बिन्दु जिन जिन हैं वे उपर
में व्यापक दृष्टि जिनके हैं वे पदाधिकारियों ने ६६, ७ प्रविष्ट स्वरातीय, मण्डल
व्यक्तियों के पदाधिकारियों ने ६६, २ प्रविष्ट स्वरातीय तथा राष्ट्रीय कार्यकर्ता के
पदाधिकारियों ने ६६, ७ प्रविष्ट स्वरातीय व्यक्तियों के नाम बताये । इससे
स्पष्ट है कि व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में प्रविष्ट करने पर अन्य व्यक्तियों के व्यक्तियों के
वे भी नहीं भाव रखी जाता है किन्तु स्वरातीय भावना का छाप नहीं होता है ।
राष्ट्रीय कार्यकर्ता के पदाधिकारियों में फिर कानून की प्रक्रिया में लक्ष्यवादीभाव व्यक्त
प्रतीत होती है ।

क्या वापस विश्वास है कि कला के सभी कार्य वैयक्तिक एवं
 औपचारिक ही हैं ही होते हैं ? के अन्त में मूल कविता कीटों के पदाधिकारियों
 ने ६६, ७ प्रविष्ट नहीं" क्या ३३, ४ प्रविष्ट " हाँ " क्या, मध्यम समितियों
 के पदाधिकारियों ने ७५ प्रविष्ट " नहीं" क्या २५ प्रविष्ट " हाँ " क्या, क्या
 राष्ट्रीय कविता के पदाधिकारियों ने ७५ प्रविष्ट " नहीं" तथा २५ प्रविष्ट " हाँ "
 क्या । इसी स्पष्ट होता है कि यहाँ के अधिकांश पदाधिकारियों में औपचारिक प्रणाली
 है सभी कार्यों की छिद्र में पूर्ण विश्वास नहीं है । वैयक्तिक एवं औपचारिक प्रणाली
 है कला के सभी कार्यों की पूर्ण करनेवाली पद्धतियों का राजनीतिक पक्षों की पूर्ण
 करना चाहिए तथा सभी क्षेत्रों में प्रविष्ट पद्धतियों की उच्च प्रतिष्ठित करके बाहर
 अन्यथा औपचारिक है प्रति कलात्मक व्यवस्थाएं एवं कलात्मक के माध्यमों से सभी
 राजनीतिक पक्षों सामुदायिक अधिकारों में परिवर्तित हो जाता है ।

साप्ताहिक रोजी पुर कार्याकार्याची का कीर्तन विवरण :

१- वरुण कीर्तन

<u>कार्याकार्याची का नाम</u>	<u>कार्याकार्याची का नाम</u>	<u>साप्ताहिक कार्याकार्याची का नाम</u>
कार्याकार्याची का नाम	कार्याकार्याची का नाम	६
कार्याकार्याची का नाम	कार्याकार्याची का नाम	४
कार्याकार्याची का नाम	कार्याकार्याची का नाम	४
		<hr/>
	योग -	१४

२- कार्याकार्याची का नाम

<u>कार्याकार्याची का नाम</u>	<u>प्रतिफल</u>
कार्याकार्याची का नाम	७५. २ प्रतिफल
कार्याकार्याची का नाम	७. २ ११
कार्याकार्याची का नाम	७. २ ११
कार्याकार्याची का नाम	७. २ ११
कार्याकार्याची का नाम	७. २ ११
	<hr/>
योग -	१००

३- कार्याकार्याची का नाम

<u>कार्याकार्याची का नाम</u>	<u>प्रतिफल</u>
२२-२२ वर्ष	२५. १०
२२-२२ वर्ष	१०. ००
२२-२२ वर्ष	१५. २६
२२-२२ वर्ष	७. १५
	<hr/>
योग-	१००

३- राजनीतिक वायु के अनुसार वर्गीकरण

<u>वायु विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>
२-१० वर्ग	४२, ८०
११-१६ "	३५, ७१
१७-२८ "	७, १४
२९-४० "	—
४०-४६ "	१४, २८
	<hr/>
योग -	१००

४- शैक्षिक योग्यता के अनुसार वर्गीकरण

<u>स्तर</u>	<u>प्रतिशत</u>
कक्षा ५ तक	७, १४
कक्षा ८ तक	२१, ४१
कक्षा १० तक	३५, ७२
स्नातक + विभागाध्यक्ष + पदवीधारी	२१, ४१
स्नातकोपर + " + "	१४, २८
	<hr/>
योग -	१००

५- पिता के सम्मान-क्रम के अनुसार वर्गीकरण

<u>श्रेणी</u>	<u>प्रतिशत</u>
प्रथम सम्मान	१४, २८
द्वितीय सम्मान	४२, ८०
तृतीय सम्मान	७, १४
चतुर्थ सम्मान	२८, ५७
पंचम सम्मान	७, १४
	<hr/>
योग -	१००

७- विभिन्न धान्यान्तों की संख्या के अनुसार कीटनिर्णय

<u>वर्णना</u>	<u>प्रतिशत</u>
कुम्ह	१४, २८
लक	७, १४
दी	७, १४
तीन	१४, ७२
चार	७, १४
पांच	१४, २८
छः	७, १४
सात	७, १४
<hr/>	
योग -	१००

८- वैवाचिक बीजों के अनुसार

<u>प्रकार</u>	<u>प्रतिशत</u>
दन्धवर्ति	६२, ८६
विपुल	७, १४
<hr/>	
योग -	१००

९- फलामयों के अनुसार कीटनिर्णय

<u>वर्णना</u>	<u>प्रतिशत</u>
२ मास से २ वर्ष तक	७१, ४४
३ वर्ष तक	१४, २८
४ वर्ष तक	१४, २८
<hr/>	
योग -	१००

१० - व्यवसाय के अनुसार वरीकरण

<u>नाम व्यवसाय</u>	<u>प्रतिशत</u>
कृषि	७१.४४
व्यापार	१४.२८
व्यापार	७.१४
अन्य	७.१४
	<hr/>
योग -	१००

११- कृषि के सीमकृत के अनुसार वरीकरण

<u>कृषि सीमकृत विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>
५ - १० बीघा	२८.५७
११- २०	२८.५७
२१- ३०	१४.२८
३१- ४०	७.१४
४१- ५०	७.१४
कमी जिनका स्वाभिव्यक्ति नहीं	१४.३०
	<hr/>
योग -	१००

१२- गौण व्यवसाय के अनुसार वरीकरण

<u>नाम व्यवसाय</u>	<u>प्रतिशत</u>
कृषि	२१.४२
गौण	१४.२८
टीका	१४.२८
व्यापार	७.१४
कौन नहीं	४२.८८
	<hr/>
योग -	१००

१४- राजनीति में प्रवेश के समय की वायु के अनुसार कृषि

<u>वायु</u>	<u>प्रतिशत</u>
१३-१७ वर्ष	२८, ५८
१८-२२ वर्ष	१३, २८
२३-२७ वर्ष	३५, ७२
२८-३२ वर्ष	१४, २८
३३-३७ वर्ष	७, १४
	<hr/>
योग -	१००

जारीत कृषि राजनीति में निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं :-

- (१) राजनीति पदाधिकारियों का प्रतिशत कम है ।
- (२) २८, ५७ प्रतिशत पदाधिकारियों की वायु २२-४३ वर्ष तक है जो कि नई पीढ़ी की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिकाओं का लेते हैं ।
- (३) ७१, ४७ प्रतिशत पदाधिकारी कदा १० या उससे कम की उमिर में कार्यरत होते हैं । इस भी निम्नलिखित पदाधिकारी नहीं हैं ।
- (४) पदाधिकारियों में शिक्षा की दूसरी स्तर का प्रतिशत कम है । उच्च शिक्षा पापी स्तर का कम है ।
- (५) पदाधिकारियों में तीन स्तरों के लोगों का प्रतिशत कम है जिनकी वायु का विस्तार २६-३८ वर्ष तक है जिन पर परिवार नियोजन का प्रभाव प्रतीत होता है । कुल ६३, २८ प्रतिशत पदाधिकारियों के पास एक से तीन ही स्तर हैं ।
- (६) ६२, ३६ प्रतिशत पदाधिकारी सामान्य जीवन व्यतीत करनेवाले होते हैं जो यह लेते हैं कि विपुल जीवन पदाधिकारी अपने में बाक है ।

- (७) दो वर्ग है यह वर्ग तक किसी राजनीति में प्रवेश किए हुए हुआ
ऐसे पदाधिकारियों का प्रविष्टता अनधिक है । राजनीति में प्रवेश के
काल की न्यूनतम आयु १७ वर्ष तथा अधिकतम २२ वर्ष निर्धारित है ।
- (८) २५, ७२ प्रविष्टता पदाधिकारियों में २२-२७ वर्ष की आयु में राजनीति
में प्रवेश किया और २८, ७३ प्रविष्टता पदाधिकारियों में २७-३० वर्ष
की आयु में राजनीति में प्रवेश किया यह प्रकार ६४, २ प्रविष्टता पदाधिकारियों
में ३१-३७ वर्ष की आयु में राजनीतिक वर्गों में अपना समय बीता है।
- (९) ७९, ४४ प्रविष्टता पदाधिकारी २ पाठ है २ वर्ष तक अपने एक पद पर बने
रहनेवाले निर्धारित हैं और एक ही अधिक वर्गों में अपने पद पर वापस है ।
- (१०) ७९, ४४ प्रविष्टता पदाधिकारियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है ।
- (११) ६०, ६४ प्रविष्टता पदाधिकारियों के पाठ पाठ है बीस बीस तक भूमि
निर्माण । भूमिहीन वर्गों की पदाधिकारी नहीं निर्धारित । ६०, ६२ प्रविष्टता
पदाधिकारी गौण व्यवसाय में करनेवाले निर्धारित हैं । इन वर्गों में स्पष्ट है
कि राजनीतिक वर्ग में अग्रणी रहने या पदाधिकारी वर्गों के लिए
गौण व्यवसाय करने वार्षिक आय-भत्ता रहना अधिक आवश्यक है ।

- [illegible]

- २३- प्रतापपुर विभाग कम्प है कुछ ग्राम सीमा विभाग तथा निवास नीम में सम्मिलित है ।
- २४- १२ कु, १७७७ ई० के निवास के कम्प ।
- २५- कही
- २६- कही
- २७- श्री लखीराम पन्त निम्न, नरामणी है शासनात्कार दिनांक ५-६-७६ तथा लखीराम पन्त के लखीराम कम्प है शासनात्कार दिनांक ६-१०-७६ ।
- २८- श्री कल्याण ठाठ ठाठ, कल्याण है शासनात्कार दिनांक २०-६-७६ तथा नरामणी के लखीराम पन्त है शासनात्कार दिनांक १०-६-७६ ।
- २९- लखीराम ठाठ ठाठ की लखीराम कम्प, लखीराम = (४) पृष्ठ ८ ।
- ३०- लखीराम कम्प की लखीराम है शासनात्कार के लखीराम पर ।
- ३१- २२ लखीराम ६ पृष्ठ ७ ।
- ३२- श्री लखीराम कम्प, लखीराम कम्प लखीराम कम्प, लखीराम, शासनात्कार दिनांक २०-६-७६ ।
- ३३- लखीराम ठाठ ठाठ लखीराम लखीराम १(७) पृष्ठ १६ ।
- ३४- लखीराम, पृष्ठ ३०-३१ ।
- ३५- २२ लखीराम २० (२५) पृष्ठ २० ।
- ३६- २६ लखीराम १० (४) के लखीराम पृष्ठ १३ ।
- ३७- २२ लखीराम ५ (५-६) पृष्ठ ५ ।
- ३८- श्री लखीराम निम्न, लखीराम है शासनात्कार दिनांक २०-६-७६ ।
- ३९- लखीराम : लखीराम लखीराम लखीराम पृष्ठ ३ ।
- ४०- लखीराम लखीराम लखीराम लखीराम लखीराम १(४) लखीराम लखीराम १(४) पृष्ठ १२ ।
- ४१- " " " " " " ३(४) पृष्ठ १३ ।
- ४२- लखीराम ३(६) ।
- ४३- श्री लखीराम निम्न, लखीराम लखीराम लखीराम है शासनात्कार दिनांक २०-७-७६ ।
- ४४- ३४ लखीराम ६ (५) पृष्ठ ४ ।

- ४५- १४ अनुच्छेद २२ पुच्छ ११ ।
- ४६- श्री हुसैन बन्धु मिश्र, मंत्री, कैलाशपुर मण्डल समिति, बाघातार विभाग १-८-७५
- ४७- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम अनुच्छेद १(१) पुच्छ २ ।
- ४८- उपरीक्षा अनुच्छेद ६ (क) पुच्छ १ ।
- ४९- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम, अनुच्छेद ६ (क) पुच्छ १
- ५०- श्री राय पिछौर मिश्र, बीरापुर, जलनि, मंत्री, मण्डल समिति, बीछवा, बाघातार १६-२-७५ ।
- ५१- श्री विजय नारायण कुंवर, जलरीरा, जलान्वय, मण्डल समिति, बीछवा है बाघातार विभाग १०-८-१९७५ ।
- ५२- श्री कुंवर राविकुंजर प्रसाद सिंह, जलरीपुर जलान्वय मण्डल समिति, जलपुर, है बाघातार विभाग १४-६-१९७५ ।
- ५३- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम अनुच्छेद १२ (क) पुच्छ ५
- ५४- उपरीक्षा, १२(क) पुच्छ ५ ।
- ५५- श्री विजय नारायण कुंवर, जलरीरा, जलान्वय, मण्डल समिति, बीछवा है बाघातार विभाग १०-८-१९७५ ।
- ५६- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम अनुच्छेद १२ (क) पुच्छ ५ ।
- ५७- उपरीक्षा अनुच्छेद ६ (न) पुच्छ ४ ।
- ५८- उपरीक्षा अनुच्छेद १२ (क) पुच्छ ६-७ ।
- ५९- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम अनुच्छेद १८ पुच्छ १० ।
- ६०- उपरीक्षा, अनुच्छेद १५(४) है व के अन्तर्गत २ (१) वा पुच्छ १२ ।
- ६१- उपरीक्षा, अनुच्छेद १५ (४) व के अन्तर्गत ५(क) पुच्छ १५ ।
- ६२- श्री कलेश्वर कैठरानी, कैलाशपुर मण्डल समिति बीछवा-जल है बाघातार विभाग १-८-१९७५ ।
- ६३- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम २(क) पुच्छ १२ (अनुच्छेद १५(४) व के अन्तर्गत ।
- ६४- भारतीय जनक शोधनार्थ जल निगम २ (क) पुच्छ २ ।
- ६५- उपरीक्षा ६(क) पुच्छ २ ।
- ६६- उपरीक्षा ६(क) पुच्छ २ ।

- [illegible]

- ६०- श्री सुरेशचन्द्र मिश्र, भाषापर मन्त्रालय की वे साप्ताहिकार के दिनांक १-१०-७६ ।
- ६१- ए० हुसैनार, पोलिटिकल पार्टी, १६६५, पृष्ठ ११४।
- ६२- श्री, पृ० १०० ।
- ६३- श्री, पृ० १०६ ।
- ६४- "हस्त बाक" हीडल निडल कट्टि, मिडिफिकल = पृष्ठ ३१ ।
- ६५- उपरीका, मिडिफिकल ६, पृष्ठ ३१ ।
- ६६- ए० हुसैनार, पोलिटिकल पार्टी, १६६५, पृष्ठ ३१ ।
- ६७- श्री लीला चन्द्र मिश्र, पञ्जाबी युक्त कट्टि-संसाधनार वे साप्ताहिकार दिनांक ७-१०-७६ ।
- ६८- श्री विजयनाथ पाण्डेय, व्यवसाय उक्त विद्यालय एवं प्रत्यक्षा की ।
- ६९- भारतीय कर्षण हीडल एवं निडल, अनुषंग १४(क) ४-५ पृष्ठ ७ ।
- १००- उपरीका, अनुषंग १४ (क) पृष्ठ ८ ।
- १०१- एन्विडा सङ्ग उपरीका नरार, कौमिल एवं ए कानिनीट पार्टीरिप्टन, पृ० ६४
- १०२- भारतीय विधान एवं उतर प्रदेस, उदेस व कानिनीट सदेस प्रिड, रावेन्द्र नार (पूर्व) उत्तर १, पृष्ठ पृष्ठ ।
- १०३- भारतीय हीडल, हीडलन वारा ५ (१) पृष्ठ २ ।
- १०४- कानिनीट बाक की हीडल निडल कट्टि, अनुषंग १५, पृ० १५ ।
- १०५- उपरीका, अनुषंग २५(ब) पृष्ठ २४ ।
- १०६- उपरीका, अनुषंग २५(ब) पृष्ठ २४-२५ ।
- १०७- "हस्त बाक" हीडल निडल कट्टि, अनुषंग १२(ब) उव सङ्ग (द) के वरीन १-४ पृष्ठ १४ ।
- १०८- भारतीय कर्षण हीडल एवं निडल अनुषंग १६, पृष्ठ ६ ।
- १०९- उपरीका, निडल ४ (ड) पृष्ठ १४ ।
- ११०- श्री कट्टाचंनर पाण्डेय कानिनीट, व्यवसाय कुनार उवाडल कानिनीट, हीडल, वे साप्ताहिकार दिनांक ७-१०-७६ ।
- १११- भारतीय हीडल हीडलन वारा १३ ब, व, व, पृष्ठ ७ ।
- ११२- उपरीका, वारा १६, ब, व, व ।
- ११३- ए० हुसैनार, पोलिटिकल पार्टी, १६६५ पृष्ठ ३१ ।

- ११४- स० कुबलूर, पॉलिटेक्निक पाटीष्ट, १९६५ पुस्तक ४१५ ।
- ११५- एच० के० बल्लभमैत, पॉलिटेक्निक पाटीष्ट ए बिस्वीर्सिडस एनालीसिस,
१९७१, पुस्तक ४७२ ।
- ११६- श्री क्रीड बन्धु मिश्र, मराठी, प्लाक कन्ट्रिब्यूट्री, सीडिंगा है साप्ताहिकार ।
- ११७- श्री क्रीड बन्धु मिश्र, मराठी, सीडिंगा, साप्ताहिकार ।
- ११८- क्रीड बन्धु मिश्र, मराठी, सीडिंगा, साप्ताहिकार, अनुसंधान १९६५ पुस्तक १० ।
- ११९- भारतीय क्रीड बन्धु मिश्र, अनुसंधान १९६५ पुस्तक १० ।
- १२०- साप्ताहिकार है साप्ताहिकार ।
- १२१- श्री क्रीड बन्धु मिश्र, मराठी, प्लाक कन्ट्रिब्यूट्री, सीडिंगा ।
- १२२- श्री क्रीड बन्धु मिश्र, मराठी, प्लाक कन्ट्रिब्यूट्री, सीडिंगा ।

नैतत्व

राज्यशास्त्र

राज्य की संस्थाओं की पूर्ति का केवल साधन सरकार है। सरकार का साधन एक व्यवस्थापिका, कार्यवाहिका तथा न्याय प्राधिकार है ही नृप, मानव या मानव कर्तृत्व है प्रकट सीधा है। ऐसी मानव या मानव कर्तृत्व का प्रत्येक राज्य में सरकार के साधनों का भार प्रकट करती तथा उक्त निष्कर्ष करने के लिए निर्धार विधि, विधियाँ एवं कार्रवाई होती रहती है।

असीमित प्रविष्टा औद्योगिक राज्यों में नृपत्व के बीर व्यवस्था पर पर सीधी है विद्यमान प्रतीति, परिणाम एवं सीधे होता है। नेता एक वह है जो एक या और मानव कर्तृत्व द्वारा निर्दिष्ट परिस्थिति एवं सीधे में किसी निश्चित उद्देश्य है व्यक्ति की साधन प्रदान किया जाता है। नेता एक प्रारम्भ करनेवाला व्यक्ति जो नृपत्व इसके कर्तृत्व में विभाजित है यही नैतत्व है। नैतत्व एक व्यक्ति और कर्तृत्व के साथ नृप उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए में स्थापित होता है। नैतत्व का सीधे कार्य, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कार्य को करता है बीर विस्तार परिहार है राष्ट्र का ही करता है तथा साथ ही साथ नृपत्व है अधिकतम को करता है। सीधे किया जाता सीधे के राजनीतिक सीधे में नैतत्व की सीधे सीधे है। यही विचारणीय प्रत्यक्ष है। राजनीतिक नेता वह है जो कि नेता का प्रारम्भ है, जिस समय में उत्पन्न हुआ है उसी नेता की संस्थाओं की सीधे करता है बीर सरकार की संस्था एवं उसके अन्तर्गत करने में जाता रहता है। राजनीतिक वह का एक है अधिक अन्तर्गत राजनीतिक नेताओं में उनका नृप उद्देश्य की कला एवं सत्ता का विकास करने में सीधा है। जो व्यक्ति किसी भी मन कर्तृत्व के निर्माण, नृपत्व एवं यही की अधिकतम के निर्माण, विचारपर तथा मानवता के प्रति उद्देश्य, प्रत्यक्ष एवं अन्तर्गत विद्यमान होता है वह नेता वह का उत्पन्न मान है। राजनीतिक नेता की नैतत्व की नृपत्व निर्माण के लिए

यह अनिवार्यता है की :- भारतीय वायव्य युग, अनुनामियों का युग, अनुनामियों का विस्मय उस अनुकूलता, विविध उद्देश्य, विविध परिस्थितियों या परिणत ; निवारित जीव और अन्य की पुनर । ज्वरित बार अनिवार्य तथ्यों में किसी एक का स्थान पर प्राप्ति में बाधक सिद्ध होता है । इन तथ्यों की उपस्थिति में की सभी चीजों की विन्यासता में विविधता होने के कारण नेतृत्व का स्वाभाविक प्रभाव होता है । राजनीतिक कल का उद्देश्य कल में की नेता है वह उचित कल में की ही वह वायव्य नहीं, की प्राप्त बार का ही वह विचार कल बार का ही की वह वायव्य नहीं ; की राजनीतिक कल के अन्तर एक युद्ध का नेता ही नहीं की युद्धों का ही वह उद्देश्य नहीं ; की एक राजनीतिक कल का नेता ही नहीं दूसरे कल का भी नेता ही उसे वह उद्देश्य नहीं , एक नेता किसी प्रकृति उसके कल के बाहर एक कल बायी है और की सभी कल के अन्तर वायव्यता के लिए अन्तर्निहित नहीं है, अन्तर्गत है कल का स्थान पर उन्मत्ता है की पूर्ण परिणतों का नेता ही नहीं अन्तर्गतों का भी नेता ही वह उद्देश्य नहीं ।

ज्वरित बारों के स्पष्ट है कि नेतृत्व की प्रणिका एक ' विविध स्थिति ' में ही निमायी जाती है की ज्वरित अनिवार्यताओं का पुनरिन्तान होता है , वह एक ' विविध स्थिति ' स्थिर है उन एक ही नेतृत्व की स्थिर है और परिवर्तन होने पर नेता का परिवर्तन अनिवार्यता है ।

सन् १९५२ ई० से १९५२ ई० तक विश्व जटिल में की महावीर प्रसाद मुखर्जी को विचारक प्रस्थापिता बनाया था और किसी रूप में उन्हें ही १९५२ के सामान्य निर्वाचन में प्रस्थापितता ही नहीं मुख्य हुई । की की अन्तर्गत वायव्य सन् १९५०-५१ तक सभी चीज है विचारक रहे नहीं सन् १९५१ में अन्तर्गत प्रतिद्वन्द्वी के कारण पराजित हो गये । भारतीय जनता के विश्व विचारक प्रस्थापिता की राम रत्न सिंह ' निर्वाचन ' की सन् १९५१ के निर्वाचन में १९५२ तक फिरे उन्हें ही १९५३ के निर्वाचन में १९५३ तक प्राप्त हुए ।^{१५}

इन तथ्यों के स्पष्ट ही जाता है कि नेतृत्व की तीव्रता विविध स्थिति परिवर्तन है यद्यपि उस बहूती रहती है की सिद्ध करता है कि नेतृत्व अतिशय है । राजनीतिक कल के अन्तर्गत एक ही अन्तर्गत अन्तर्गत, अन्तर्गत,

“ वेड सभारिणसाय परचरण पुसिह नैकल कन्दर काठि, सीका
 न पाई लुठ का काय था, उह समय विवाह न विवाही छै नाय की लउ छैक
 की विवाह प्रसिह कथाय न कीर न कीर काठिह कीर बाय-विवाह, बीच प्रसिहिका,
 कथावी प्रसिहिका बाय सीका लुठ था । की बाय-विवाह न नाय छिह न
 कीर कथा नायन कीर के काठि कथायलीं बाय न प्रसिह का काय था । फिर
 काय का कथाय नाय छै छै का कीर उह विवाही छै का कथायल न कथाय की
 विवाहिक पुका । एउ १८५२ ई० के सामान्य विवाह न की कथायल प्रसिह पुका
 काठिह विवाह प्रसिहिका के काय न काठिह काय छिह कीर उह कथाय नाय काय
 के काठी प्रसिहिका के काठिह सामान्य विवाहकाय न नाय छै का, एउ समय न एउ
 कन्दर काठि का काय न कीर विवाह परचरण का काय की छै ।” जरीका
 विवाह की विवाहिक पुका न विवाह ।

“ न प्रसिह विवाहिकाम न की० काय का काय था, उही
 समय कथायल सामान्य उह प्रसिह कथाय कथायल नायकल पुका न विवाह
 के काठिह एउ कथायल विवाह । की कथायल के उह कथायल के विवाह न विवाह
 काठिह विवाहिकाम के काठिह काय न नायन विवाह । विवाह न कीर काठिह प्रसिह
 की । की काठिह कायकल विवाहिकाम के प्रसिहिका के काय न पुका लुठ ली के
 कीर विवाह न पुका के काय न नायन विवाह काय काठिह के काय न विवाह ।
 काठि पर कीर के काठिह विवाहिकाम के काठिह की कथायल के के उह कथायल । काठि
 न विवाहिकाम काय का उहका काठिह सामान्य विवाह काय की कीर पुका का ।

जरीका विवाह की सामान्य प्रसिह विवाहिका न विवाह की
 कि विवाह काठिह कीठी, नायन काठिह काय काय उह प्रसिह कथायल काय के
 काठिह काय पर लुठ के कीर एउ काय काय विवाह काठिह कीठी के काठिह काय
 कीर के ।

“ कीर की पाई की कथायल प्रसिह पुका एउ १८५२ के काय विवाह
 न काय के कीर विवाह की के काठिहकाय काठिह के काय कथायल न सामान्य पुका ।
 काठि के सामान्य के काठिह प्रसिहिका की काठि काठि काय पर पर के काठि, उह काठि

यै अब काम काम था । नाथि के लोनों की कलह करके, कभी-कभी का विहीन,
कभी काय्य हता के नाथ है किया। कलहकलह कभी नाथिकीकाँ कभी कीर
पैरी काय्यकाय की काय्य निक गई । कभी काम है राय्यीति की कीर प्रीति हुआ,^१
कभीकाय कलहकलह के केनाथ विहीन कलह की, नाथीय कलह है किया ।

यह १९४२ ई० में मैं प्रभाव विस्मयिवाक्य मैं काम था । नकाय्य
नाथि के करी या मरी के मारी के काम विस्मयिवाक्य है एक कलह कलह । एक कलह
मैं मैं की कलहकलह था । कलहकलह कलह कलह था री की कीर कलह
कलह कलह की कीर था री था । कलह के कलह है कलहकलह कलह कलह की
री की की कलह कलहकलह करके एक कलह कलहकलह की कलह कलह कलह कलह कलह
कीर कलहकलह के कलह कलह कलह कलह । कलह की कलह कलहकलह के कलह पर कलह,
कलह मैं कलहकलह कलह कीर कलह कलह कलह कलह कलह की कलह, कलह पैरी कलह
कलह प्रभाव कलह कलह राय्यीति मैं कलह की कलह ।^२ कभीकाय कलहकलह
की कलहकलह कलह कलह, कलहकलह मैं किया की कलह कलहकलह, कलहकलह कलह
के कलहकलह कलह, कलह प्रीति कलहकलह मैं कलह की री कीर कलहकलह, कलहकलह कलह-
कलह कलह नाथीय कलहकलह के कलहकलह मैं कलह के कलहकलहकलह की री कलह है ।

कभीकाय कलहकलह है एक कलह कलहकलह कलह है कि कलहकलह
की कलहकलह कलह कलहकलह मैं कलह कलह है :

(१) राय्यीतिक कलहकलह कलह (Political Orientation) :

राय्यीतिक कलहकलह कलह कलहकलह कलह कलह कलह है, कलह
कलहकलह कलह कलह की कलहकलह कलहकलहकलह मैं है कलह राय्यीतिक कलहकलहकलह
के कलह कलहकलह कलह है कलहकलह कलहकलह है । एक कलहकलह के कलह के कलह मैं
कलहकलह, कलहकलह कलह कलह के कलहकलह कलहकलह कलह है । कलहकलह कलह कलह कलह
पर कलहकलह, कलहकलह कलह कलह कलह है कलह कलह कलहकलह मैं कलहकलह, कलहकलह,
कलहकलह, कलहकलहकलह कलह राय्यीतिक कलहकलहकलह कलह कलहकलह कलह कलहकलह कलह है
कलह कलह है, कलहकलह कलह कलह कलह की कलह कलह कलह कलह कलह कलह कलह
कलह । कलह कलह कलहकलह कलहकलह कलहकलह है कलह कलहकलह कलह कलहकलह कलह
कलह कलह कलहकलह कलह है कलह कलहकलह की कलहकलह कलह कलह है ।

यदि यह उचित राक्षीतिक प्रवृत्ति का है तो इसी राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान करनी है। क्या कि ज्ञान: पिछड़ाया क्या है कि एक ज्ञान परिस्थिति एवं परिदृश्य में हमारे व्यक्तियों में राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान ज्ञान की है। जो कि या पिछड़ाया नहीं की होता है। जो नागरिक राक्षीतिक ज्ञान का एक ज्ञान करता वास्तव में उसे कम्पार का है कभी राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान की वा अभिवर्धन प्रकाश है।

संख्या विधान का नीचे के राक्षीतिक नेताओं का राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान एक एवं का एक १ प्रविष्टि परिवार, २० प्रविष्टि विद्यालय, २ प्रविष्टि निगम, ३० प्रविष्टि कर्मचारी, ४० प्रविष्टि सामाजिक, ४१, २ प्रविष्टि वाणिज्य, ४२, २ प्रविष्टि नेताओं है और एवं ४३, २ प्रविष्टि स्वयं पर हुए वास्तविक है। राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान की कि राज्य के नागरिकों में ज्ञान: ज्ञान, विभिन्न राक्षीतिक पटना जैसे ज्ञान का व्यवस्था, पराक्रम, पुनर्, वास्तव, ज्ञान वादि है वाणिज्य की वादि और फिर वाणिज्य न उक्त का ज्ञान का वादि वादि की और नहीं बढ़ प्रकाश। जो राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान के उचित है वे ही राक्षीतिक समाधीकरण के व्यक्तियों हैं जैसे परिवार का व्यवस्था, विद्यालय का व्यवस्था, निगम, राक्षीतिक ज्ञान वादि। राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान के लिए राक्षीतिक एक एक विभिन्न विभिन्न रूप नीचे का प्रतिनिधित्व करता है।^{१०}

(२) राक्षीतिक सम्मिश्रता : (Political Involvement) :

राक्षीतिक व्यवस्थिति ज्ञान की स्वाधिक्य प्रमाण करने के लिए व्यक्ति की उचित कार्यों के प्रति रुचि और भाग प्रकाश ज्ञान वास्तविक है। इसी भाग प्रकाश करने की ज्ञान की राक्षीतिक सम्मिश्रता करनी है। राष्ट्र उक्त है राक्षीतिक सम्मिश्रता के वा: कारण विवक्षित किया है।^{११} १- राक्षीतिक ज्ञान वादि वाणिज्यिकों का पुनर्वास्तव व्यक्तिकार की २- समाधि विवक्षित में राक्षीतिक में बहुत परवत्पूर्ण की ३- राक्षीतिक परिवर्तनों में परिवर्तन कर करने का व्यक्तिकार विवक्षित की ४- यदि कार्य न मिले की व्यक्तिकार की वाणिज्य परिवर्तन के विवक्षित की ५- वाणिज्यिक प्रवृत्ति पर उचित कम्पार व्यक्तिकार ज्ञान या पुनर्वास्तव की ६- कार्य करने के लिए व्यक्तियों पर विवक्षित ज्ञान कर करता की। व्यक्तिकार कार्यों

एकदम एवं कठोर सीमा है जिसे मैं राक्षसीय वापसीकरण कहा हूँ वह विधि में व्याप्त सब के विधानों, नीतियों एवं मूल्यों को अपने व्यावहारिक जीवन में अंगीकार करता है तथा अन्तर्गत लक्ष्यों के लिए अनुकूलन आवश्यकताओं का विचार करता है। यह प्रणम में व्याप्त सब के मूल्य की ओर सभी को कतार करता है। राक्षसीय सब राक्षसीय वापसीकरण के लिए व्याप्त कठोर नीति नीतियों में से है। इसका जो अंगीकृत आचार्य को सभी के लिए सब सब वास्तविक एवं अनुकूलनीय की सभी वास्तविक है किन्तु सभी पर भी यह विचार है कि एक ही सब के साथ स्थायी नीतियों का राक्षसीय वापसीकरण साथ न सभी पर सब सब प्रभाव उत्पन्न करता है जिसे विचारता व्यक्ति की होती है। अंगीकृत विचार सब सीमा के नीतियों के राक्षसीय वापसीकरण के सब प्रतीक का अंगीकृत अंगीकृत सीमा।

‘ राक्षसीयों के लिए वास्तविक एवं प्रतिकारण की सीमा क्या रहता ? के ऊपर मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय कार्य, भारतीय लोकमत, लोकमत कांग्रेस, मुस्लिम लीग एवं भारतीय रिपब्लिकन पार्टी के नेताओं ने एक ही स्तर में सब सब सीमा’ उत्तर दिया। इसी सब स्पष्ट की बात है कि राक्षसीय वापसीकरण का साथ सभी अनुभव कर रहे हैं। यह वास्तविक एवं प्रतिकारण क्या की सब पर सब एक ही सीमा क्या माना चाहिए। वास्तविक के अंगीकृत व्यापक, सामाजिक, राक्षसीय एवं अन्य अंगीकृतनीय मूल्यों, संस्थाओं एवं व्यक्तियों का सब की राक्षसीय प्रजाती के साथ साथ अन्य प्रजातियों का साथ करानेवाला सीमा चाहिए।

प्रतिकारण में साथ की सब सब प्रदान करने की मनोबुद्धि एवं बुद्धि और परिस्थितियों का अन्तर्गत के आचार्य की बुद्धि लोक लक्ष्यों का विकास सीमा चाहिए। यह वास्तविक एवं प्रतिकारण है राक्षसीय सामाजिकरण की सीमा। एक और राक्षसीय क्या कहा सभी लिए वापसीकरण के निमित्त वास्तविक एवं प्रतिकारण की आवश्यकता का अनुभव करते हैं सभी पर सब के वास्तविकों के लिए भी क्या सीमा है।

‘ सभी वास्तविकों को अपने करीबों एवं व्यक्तियों का

जान ली कराका नामा बाधिए ? के ऊपर हैं 'डिमाण', 'प्रडिमाण', 'अधिकारी' के अर्थात् पर छुट कम कर्मियों की कमीलता पर कण्ड' नीतिज कमीटी पूरा करे', 'बापई प्रचुन करे', 'बाधिक हुनार', 'बापई हुन प्रजाजन ल' प्रतिनिधित्व' बाधि कमीटी की वीर लीज किया गया । इनके की यह प्रचुन प्रष्ट हो बाधा है कि बापई डिमा, प्रडिमाण, प्रजाजन, बाधिक कर्मिज ल' प्रतिनिधित्व के अभाव में कर्मियों ल' अधिकारी का ज्ञान की नहीं हो उल्ला ।

आ: राजनीतिक बाधकीकरण में व्यक्ति की कमी कर्मियों ल' अधिकारी के लीज बाधों का रक्य की ज्ञान हो बाधा है वीर यह ज्ञान की अस्थिति का अनुपन लीज में जानेवाले व्यक्ति की की होने उल्ला है की कि अन्तान, प्रडिमा, अनुपन, अनुपन, अनुपन, वीर बाधि बाधकों है अन्तान्तर प्रष्ट किया बाधा है ।

कर्मियों के कर्मियों ल' अधिकारी का ज्ञान कराने का बाधित्व डिमाण लीजकों, प्रजाजन कर्मियों ल' राजनीतिक कड के ऊपर लीज वीर लीज निमित्त के लिए अधिकारी ज्ञान डिमा, ज्ञान स्तर पर बिहार किमई नीतिजों, लीटी लीटी का ऊपर ; यह कड बाधकों है ऊपर लीज लीज की बाधित्वों का उल्ला ल' ल' हुन प्रजाजन, प्रथम ज्ञान में राजनीतिक बाधकों ल' पुस्तकालय, हुनानी वीर बाधों की अस्थिति की लीजों की ।

एन लीजों है यह बाधित्व प्रतीय लीज है कि बाधि व्यक्ति रक्य अन्त बाधकीकरण कर है वीर अन्त बिज, राष्ट्र बिज ल' बिजविज के लिए उल्ला कमी अन्तारी है प्रतीयकरण अन्त कर अन्त राजनीतिक बाधकीकरण की बाधि हुन की वीर लीज बाधों ।

(v) राजनीतिक प्रकृति (Political Manifestation) :

यह राजनीतिक प्रकृति का अन्त ल' लीज बाधा है । की कि लीज के ज्ञान स्थापित लीज की रक्य प्रदान करता है । ज्ञान: लीज बाधा की की प्रकृति वीर अन्त बाधा है । लीज लीज ज्ञान में बाधकों, राजनीतिक लीजकों में बाधकों, बाध-नीतिज , बाधकों, हुनानी का बाधकों

का का प्रभाव, ६ प्रविष्टा अनुशासनीयता, ७ प्रविष्टा उदा, ८ प्रविष्टा 'सर्व' १० प्रविष्टा 'स्वार्थ' और ११ प्रविष्टा 'वात्सल्य' के कारणों पर यह किताब । उपरोक्त कारणों की स्वीकार करने पर यह प्रष्ट हो जाता है कि सभी कारणों का केन्द्र बिन्दु 'सर्वभाव' की प्रभावता है ।

यह सर्वभाव उदा, पर, स्वार्थ एवं व्यक्तिगत वस्तुवाचकता के लिए उत्तर हो सकता है या नेताओं द्वारा किये गये प्रभाव है राज क्षेत्र, व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय स्वाधिकाय के दृष्टिकोण में बाहुल्य हो सकता है । यह सर्वभाव की वाचक उदा है या सभी की व्यक्तिगत उत्पन्न होने की संभावना प्रतीय होती है यह नेता के द्वारा गये हुए का वस्तु वाचक उत्तर किताब जाता है । यह सब १९३३ ई० के विमान उदा विमान में श्री राधेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी की कविता की वीर है अनुचित नहीं पिछी यह उनके समस्त प्रभाविताओं में 'प्राप्तिकारी परिणाम' बनाकर यह के ही प्रभावता का विरोध होने के लिए किया । पूर्ण मुक्त शक्तियों का कारण यदि हमें 'सर्वभाव' ही है तो यह निश्चित रूप से वस्तुवाचक हो जाता है कि प्राप्तिकारी प्रभाव की मुख्यता का प्रकाश करता है । प्राप्तिकारी प्रभाव अपने व्यक्तियों पर पूर्ण नियंत्रण रखे का प्रत्यक्ष करता है और स्वार्थ वाचक १० की अपने राज्य में केन्द्रित करता है जिसकी वस्तु 'परिणामिता' उदा का वैयक्तिकरण है।

(Personalization)

'अनुशासनीयता' की भी मुख्यता का कारण बताया जा रहा है उदा की प्रभाव प्रेरक सर्वभाव ही है । कठिना विमान उदा क्षेत्र में भारतीय कविता में मुख्यता की सीधुता अधिक है क्योंकि कविता में उदात्त रूपों के कारण उन्हें सर्वभाव विनिर्दिष्ट होने के अधिक अवसर मिली रहे । भारतीय कविता में भी मुख्यता विराजमान है जिसका प्रमुख कारण कुछ वर्गों का उदा के लिए अधिक उत्साहना हो चुकी है किन्तु स्थानीय नेताओं के 'स्व' का विनिर्दिष्ट नहीं हुआ । 'स्व' के विनिर्दिष्ट की प्रविष्टा अधिक, वस्तु तथा वास्तववादी होती है । भारतीय समाज का संसार भी वह संसार ही है जो वास्तविकता के प्रत्यक्ष है नष्ट नहीं में प्रभावित है किन्तु सभी व्यक्तिगत बाहुल्य उदा नहीं दिखता है रहे हैं ।

'यह है प्रभावता का व्यक्तिगत, विनिर्दिष्ट क्षेत्र में

[illegible]

“यस्य सारम्” निरूपित करनेवाले नेता कि प्रवृत्ति प्राधिकार-वादी प्रवृत्ति होती है क्योंकि वे विजय का अधिकार सार्वभौमिकताओं को नहीं देना चाहते । “यस्य सारम्” निरूपित करनेवाले नेता भारतीय समाज के पिछे लोगों के सम्पर्क में । “यस्य प्रवृत्ति” तथा “मुक्तियों पर नीति-साधक विचार” करने का उत्तर देनेवाले नेताओं में दोनों प्रवृत्तियाँ उपस्थित हैं प्रवृत्ति होती है । एक ओर वे नेता ऊपर से प्रवृत्ति (नीति नीति) निर्णयों को अधिकार समझते हैं तो दूसरी ओर सार्वभौमिक विजय है उस की समाज की विशिष्टताओं की सम्स्था भी कहते हैं । इस उदाहरण में विजय की अधिकतम विचारों की समस्त उन्नति एवं माया है । क्या यह समझा जाय कि अधिक विचारों की सम्स्था औद्योगिक एवं प्राधिकार-वादी दोनों प्रवृत्ति के कारण , एक ही व्यक्ति के सम्पर्क में बन जाती है ।

इसी पूर्ण औपजातिक कक्षा प्राणिकार्यापी नेतृत्व का
 यह क्षुब्ध की औपजातिक का बाधा है । का नीची प्रकार की प्रकृति का नेतृत्व एक ही
 कक्षा में ही एक विपक्ष की बाधा है । इसके अनुसार दूसरी प्रकृति का भी नाम व्यवस्थ
 किया जाय की यदि औपजातिक नेतृत्व की बाधा बाधित है तो प्रकृति औपजातिक
 प्राणिकार्यापी ; का प्राणिकार्यापी प्रकृति के की बाधित है तो प्राणिकार्या औपजातिक
 इन्हीं का प्रकृति बाधित होता ।

एक ही पैसा समय, स्थान, कार्रवाई, अनुयायी, उद्देश्य

मैत्रा में किन्- किन् विशेषताओं का होना आवश्यक है ? के उत्तर में मैत्राय के बीच, कर्म, परिस्थिति के अनुसार का कर्मों का प्रतिविम्ब स्वरूप^{१६} उत्तर देखाते मैत्रा कि प्रभुवि विष्णु कर्मस्वामी प्रवीण होती है । वह मैत्रा के कर्मों पर कर्म का विश्वास अत्यन्त रहता है क्योंकि स्वार्थ विच्छेद किसी व किसी कर्मकाण्ड में नष्ट हो जाती है ।

राजनीति कर्मकाण्डों के प्रति कर्म का आवश्यक मैत्रा भाव रहती है । के उत्तर में ६२, ५ प्रतिज्ञा मैत्राओं में पुनः के भाव 'समष्टि दुर्गा में अन्तः प्रिय प्रभु कर्मों के रूप में कर्मों की परिणत एवं अन्तः प्रिय, राजनीति की व्यवस्था करना, उद्योग, पर एवं कर्मों के लिए राजनीति करना, प्रवीण भावि निरूपित किया । ३०, ५ प्रतिज्ञा मैत्राओं में अन्तः एवं दूरी दोनों भावों का अनुभव बताया की मैत्रा कर्मस्वामी है उनके प्रति वाक्य, विच्छेद, निःस्वार्थ, विश्वास, महा एवं उन्माद के अनुभव कर्म रहती है क्योंकि विष्णु एवं निःस्वार्थ मैत्रा में उद्योग हो करती है, की मैत्रा नहीं करती उनकी उद्योग बाधित है । वह कारण छोटी मैत्राओं की कर्म प्रभु, पूर्ण, विराट् का दृष्टि^{१७} समकती है । महान वाक्य वह भाव का है कि का राजनीति कर्मकाण्डों के प्रति कर्म के पुनःपूर्व अनुभवों है ये मैत्रा पुनःस्थित है फिर भी राजनीति में कर्म अन्तः प्रिय है । का राजनीति करना की एक व अन्तः प्रिय है । किसी समाज में राजनीति समाविष्ट हो नहीं है का निरूपित की कर्मस्वामी होने के लिए वाक्य है क्योंकि बिना राजनीति किसी उद्योग व्यवस्था कर्म हो वाक्य मैत्रा का उद्योग उन्हें प्रिय फिर है ।

उद्योग के वास्तविक प्रभाव के आधार पर मैत्राओं के दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है १-वास्तविक मैत्रा २- नाम मात्र मैत्रा ।^{१८}

वास्तविक मैत्रा : किसी की राजनीतिक कर्म या उद्योग का कर्म अन्तः प्रिय कर्म में कर्मों की विविध अनुवादी उद्योग हो वाक्य, वास्तविक मैत्रा है । वास्तविक मैत्रा के अन्तः प्रिय मैत्रा की विशेषताओं का उद्योग अन्तः प्रिय है और उनके उद्योगों एवं अनुवादी उद्योग उद्योग की वाक्य है । वास्तविक मैत्रा में उद्योग कर्म कर्म अन्तः प्रिय रहती है उनके की विशेषता में कर्म की छोटी प्रियायें

रखा है । क्या वैदुष्य प्रेम अध्यापन में नाम मात्र का होता है किन्तु बीरे बीरे कर्षी के अन्तर्गत सर्व अन्तर्गत के विचार के साथ वास्तविक सेवा की नीति में पूर्ण भाव है ।

कम और नाम मात्र का पैसा वास्तविक पैसा की कीर्ति में
 पहुँची वह प्रमाण करने लगा है जब वह पार के वास्तविक पैसा में प्रतिस्पर्धा उपलब्ध
 होती है, कम सीमा का सीकुर का ही और कुछ बाता है जब ईसाई का वास्तविक
 होता है । कम एक (कम ही) के विनाम का का प्रस्तावी करने के लिए वास्तविक
 की भारतीय राष्ट्रीय कठिब की और है वास्तविक राज का और विनिधि नहीं मिल
 पाया जब की राबेन्द्र प्रसाद विवादी, की कलाकाम्य विवादी केक ल
 की राबेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने कला-काम्य वास्तविक का कठिब प्रस्तावी के का में वास्तविक विधि,
 नाम वास्तविक का विनिधि की राबेन्द्र प्रसाद पाण्डेय के पता में ही क्या जब की राबेन्द्र
 प्रसाद विवादी ने ही कला वास्तविक वास्तव है किता किन्तु की केक स्वकीय
 प्रस्तावी के का में प्रसाद केका में ली रहे और की पाण्डेय का विवादी विवा ।

उस प्रियाकाश के लम्बे ली की कारण रहे ही किन्तु इसका ती स्पष्ट हो ही जाता है कि वो ब्रह्म ने कलिय युगावधि की परिधि में बाहर निकलकर अत्रिपद के वास्तविक प्रत्यासी के कला रौप्य पाद का अभिनय किया ।

अनुभव के आधार पर नेता की प्रकार के होते हैं १- कौशलपूर्ण
नेता २- चरित्रवादी कथ्य नेता ।

१- आनुवंशिकी :

बंशानुसंग केवल एक ही बात है जिसके पूर्णत्व के लक्ष्य में वैदिक
का पुनः प्रतिष्ठा ही पुनः ही बात है जिसके प्रतिष्ठा का लक्ष्य एक ही बात है—
वैदिक राजनीतिक व्यवस्थाओं का पुनः ही बात है । बंशानुसंग केवल ही बात है
पूर्णत्व की प्रतिष्ठा उत्तराधिकार के लक्ष्य में उत्तराधिकारी ही बात है । बंशानुसंग
का, लक्ष्य ही बात है लक्ष्य करने पर ही उत्तराधिकारी ही बात है । उत्तराधिकार
के लक्ष्य में ही बात है ही बात है बंशानुसंग केवल है, क्योंकि लक्ष्य ही बात है
लक्ष्य ही बात है लक्ष्य ही बात है लक्ष्य ही बात है लक्ष्य ही बात है ।

यह राज्य क्या है अथवा इसे और कौशल में की उपर प्रवेश कठिण कौटी के बहाली की रहे हैं ।^{२४} के रावेन्द्र प्रसाद भिमाठी की पिता कठिण कौटी, कठिण केसाव एवं उपर प्रवेश वरगारी के में काकाहु रहे और बाव की सर्व पिता कठिण के अन्तर्गत बहाली है । काकाहु नेता की कृत या क में की विहीनियों की उपलब्ध करता है । यह प्रमाण, सीमा विमान का बीच में भारतीय राष्ट्रीय कठिण में उपलब्ध कुछ प्रमाण करते हैं ।

काकाहु नेता :

काकाहु नेता वह है जो काका नेतृत्व परी के अन्तर्गत में प्रमाण करता है । वे नेता या जो वह प्रमाण के लिए जिसे बानेवाले कथन उपलब्ध में कभी की कभी पाते हैं या प्रति दिग्गता में विमान का विचार की पुं है या राजनीतिक परिवर्तन के पर्यटन की पर्यटन कर किया है । काकाहु नेता की दृष्टि काकाहु नेता की कठिणों, कठिणों, कठिणों, कठिणों, कठिणों पर कठिण टिक बाती है का बाणी बाणी, कथन, उपलब्ध एवं विमान के बाणी है कथी पर्यटन करते हैं । यदि काकाहु नेता का व्यक्तित्व औद्योगिक एवं बाव अन्तर्गत का बाणी प्रमाण काकाहु नेता के प्रमाण है बाव है का कथी उपलब्ध, कथन एवं कथन के कथनों की बाणी बाणी की बाती है ।

सीमा विमान का बीच में भारतीय राष्ट्रीय कठिण के अन्तर्गत डा० विमान के कथन के कथी की कथन पर नहीं है किन्तु कथन प्रमाण नेतृत्वों की प्रमाण करता है । भारतीय कथन में के रावेन्द्र प्रसाद भिमाठी, कठिण का राजनीति बाणी, कथन, वे बाणी नेता काकाहु है किन्तु बीच पर का क में कथी व्यक्तित्व की बाणी पिता बाती है ।

राजनीतिक नेता के कार्य :

राजनीतिक नेता कथन बाणी की कथन राजनीति में व्यक्त करता है किन्तु कथन औद्योगिक, बाविक एवं बाविक विमान, कथन, प्रतिष्ठा, प्रमाण एवं कथन का कथन बाणी बाती है । प्रमाण यह है कि राजनीति में प्रमाण कथन का कथन नेता कि कि बाणी के कथन में करता है ? कथन है

है कार्यकर्ताओं का हीन स्थापित करना, कमीर बन के कार्यों को पूरा करके खुला
 दिखाय का लय बनाना, ऐसा कैम्पों के स्थापना, कर्मियों के लिए हीन, बन्धन
 का विरोध, कर्मियों के कर्मों का , कर्म केवी एवं कर्मों को लाना की लाना की
 मिलाना का विरोध स्थापित करना को उत्थापित करना, प्रत्येक पर लाने प्रत्येक
 का प्रदान किया गया ।

उपरीका उपायों में एक का होना, एक की नीतियों का प्रचार एवं प्रसार, कला की अभ्यासों का आवागम, न कौन का कारिगारियों के प्रयोग नवाकपूर्ण प्रदीप्त होते हैं किन्तु उन का एक केन्द्र' एक का होना' ही है । यदि होना पूर्णरूपेण स्वल्प है तब अन्य उपाय भी ही उन्नि सम्पन्न न की नीतियों का प्रचार-प्रसार, न का अभ्यासों का आवागम, न का कौन कीर न कारिगारियों का विकास ही होता । अतः केवल का प्रथम कार्य एक की सर्वशक्तिी बनाने के लिए उन्नि होना की कर्तों की सर्व साधारण एक का समीप के नीचण उत्तरी के लिए पड़ना आवश्यक है ।

राष्ट्रीयता का एक ऐसा देश की वर्तमान का अन्वेषण के
अपर संश्लेषण के एक कार्यपूर्ण है। इसी कारणों के परामर्शों की प्रवृत्ति करते
हैं। यह निश्चित है या अज्ञान प्रभाव होता है। यह अन्वेषणों की कठिनी प्रवृत्ति
की कठिनी का परिणाम है। ऐसा हमें अन्वेषणों की एक तरी की नीति
बनाता है और नीति के अनुसार कार्यवाही का निर्धारण भी करता है। अन्वेषण
अन्वेषणों के अन्वेषण तो यह के अन्वेषणों एवं नीतियों तथा कार्यवाही में निश्च
बताता है किन्तु अन्वेषण, अन्वेषण, अन्वेषण एवं निश्चित अन्वेषणों के
अन्वेषण के लिए आवश्यक है, नीतियों एवं अन्य कार्यवाही की अन्वेषण करते
हैं। यह अन्वेषण एवं अन्वेषण है यह के अन्वेषण एवं ऐसा के अन्वेषणों एवं
बताता है अन्वेषण अन्वेषण का अन्वेषण प्रवृत्ति है कि यह एवं ऐसा में अन्वेषण की
अन्वेषणों, अन्वेषणों, अन्वेषणों एवं अन्वेषणों की अन्वेषणों तथा अन्वेषणों
है अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण करते की अन्वेषण नहीं होती, यह अन्वेषण है
नीति एक अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण में अन्वेषण नहीं होती। अन्वेषण
का अन्वेषण कार्यपूर्ण अन्वेषणों अन्वेषण, अन्वेषण अन्वेषण में अन्वेषण एवं अन्वेषणों
अन्वेषण का यह की अन्वेषणों में अन्वेषण की अन्वेषणों करता है।

होटी बरफा बड़ी, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं के समाधान के लिए हमें द्वारा एक मान्य हो नीति एवं उपाय प्रस्तावनी करते हैं । राजनीतिक कद के और वैयक्तिक के लिए विद्वान्मन्त्री नीति संस्कारात्मक कल्याण का विचार है ।^{११}

चौथी विधान सभा में विचार हुए राजनीतिक

नेताओं का जिस एक एक विद्वान्मन्त्री नीति हुआ है वही एक कद का अनुमान लगाया जा सकता है । इन नेताओं के साधारणतः में पूर्ण नई प्रत्येक एक परिस्थिति पर आपका क्या विचार है ? के उत्तरों के एक संग्रह, मिली है । एक परिस्थिति की नेताओं के ६, २५ प्रतिशत 'बम्बई', ६२, ५ प्रतिशत 'पुरा' तथा ३९, २५ प्रतिशत 'मिथिला' विचार व्यक्त किया । क्या: यह स्पष्ट है कि एक परिस्थिति की पुरा विचारणीय, इन मान्यताप्राप्ति एवं महाप्राय संकल्पनाओं नेताओं की संस्था चौथी विधान सभा सत्र में अधिक है , संस्था: वही का परिणाम रहा कि स्वीय ही साधारण मान्यता अनुगत साधारण कद के प्रत्यागती के रूप में विचारक हुए लिए नये, किन्तु एक एक परिस्थिति करे कल्याण कर्तव्य के एक संस्था ही में प्रत्यागती हुए एक पराजित हो नये ।

३२

एक परिस्थिति की बम्बई मान्यताओं नेता ने 'सांस्कृतिक' का प्रतिबन्ध किया । 'मिथिला' कर्तव्य बम्बई और पुरा दोनों कल्याणों नेताओं ने ही प्रतिबन्ध उत्तर दिया कि स्वीय कद एवं प्रतिबन्ध के लिए किया गया एक परिस्थिति 'पुरा' है और विद्वान्मन्त्री, नीतियों, कार्यकर्ताओं एवं व्यक्ति के कारण स्वीयता एक परिस्थिति 'बम्बई' है । 'मिथिला' उत्तर स्वीयता नेताओं में २० प्रतिशत वही एक कर्तव्य तथा २० प्रतिशत 'संस्था' कर्तव्य के नेता रहे । क्या एक संस्था था कि भारतीय राष्ट्रीय कर्तव्य की प्रत्येकाली विचारधारा का प्रभाव एक परिस्थिति ही राजनीतिक सत्र पर ही पड़ा है ?

जिन नेताओं का विद्वान्मन्त्री नीति पूर्ण कर्तव्य ही बात है और पूर्ण कर्तव्य ही ही बात है, वे एक परिस्थिति की 'पुरा' मानते हैं । क्योंकि उन्हें सांस्कृतिक विचारक अनुभव ही बात है । दोनों के साथ में स्वीय

नाकाम हो प्रभाव नुसला बिनाही है और नेता की वह परिवर्तन का उदाहरण है, वह प्रवृत्ति है व्यक्तियों के लिए वह स्वार्थ पूर्ण का प्रभावकारी उद्यम ही उनका है वास्तव में । उद्योग में मजदूरों की संख्या है उनकी वृद्धि वह है प्रत्यादी की प्रवृत्तिपूर्ण पुनर् का अधिकार है किन्तु है वह निश्चित है पूर्ण निश्चित में एक ही वह की किसी उद्यम नहीं बनाते ।

मजदूरों के लिए की सामाजिक है उद्यम हुआ कि एक ही मजदूर वह पुनर् में उद्योग, पूर्ण में उद्यम सामाजिक वह उद्यम ही उद्यम में भारतीय कार्य के प्रत्यादी के पुनर् में मजदूर किया हो कि पुनर् नहीं प्रवृत्ति पुनर् व्यक्तिक वह वह परिवर्तन है । मजदूर वह परिवर्तन उद्यम है और उद्यम, मजदूरकारी, कार्यकर्ता नेता एवं उद्यम वह परिवर्तन उद्यम है । वह की निवारण, विधि, कार्यक्रम आदि में समस्या का पाव मान्य वह परिवर्तन का पुनर् उद्यम है । वह परिवर्तन विद्यमान नीति के उद्यम का पुनर् उद्यम है । उद्यम नेता का पुनर् एवं पावन कार्य वह है उद्यम नीति का विद्यमान नीति है । विद्यमान नीति है नेता एवं उद्यम व्यक्तियों के मध्य का और उद्यम वह उद्यम है कि उद्यमता का नीति नीति उद्यम है और नीति उद्यम ही नीति है ।

२- नागरिकों की राजनीतिक जिम्मा नेता :

राजनीतिक वह है नेता का कार्य है कि वह राज्य के उद्यम नागरिकों - नागरिक, उद्यम, उद्यम एवं उद्यम, नीति एवं पुनर्, की राजनीतिक जिम्मा है । वह राजनीतिक जिम्मा है उद्यम राजनीति के उद्यमों एवं उद्यम पूर्ण के उद्यम उद्यमों, उद्यम के उद्यमों एवं उद्यमों ; नागरिकों के उद्यमों एवं उद्यमों, राष्ट्रीय विधि एवं उद्यमों, नागरिक के विचार-नागरिकों, राजनीतिक व्यवहार के उद्यम विचारों, विधि का उद्यम किया जाना चाहिए । वह नागरिकों की उद्यम की उद्यम राजनीतिक परिवर्तनों का उद्यम उद्यम उद्यम ही उद्यम का है वास्तविक राजनीतिक विधि है में उद्यम ही उद्यम । राजनीतिक वह का नेता की उद्यमों, विचार नीति उद्यमों विधि में नागरिक नेता है उद्यम वह राजनीतिक विचार का कार्य करता है विधि किन्तु उद्यम उद्यम है :

उत्तर :—

राष्ट्रीयता का मत मान्यता एवं मान्यता ; मान्यता एवं
 मन ; मन एवं मन ; मन एवं सुखाय ; सुखाय एवं सुखाय ; सुखाय एवं सुखाय ;
 है भारतीयता व्यवहारों में मन की मान्यता व्यवस्था की जाती है जो सभी व्यवस्थाओं
 या व्यवस्था करता है किन्हीं पुनः व्यवस्था करता व्यवस्था की है । राष्ट्रीयता मत
 मान्यता की विस्तृत करनेवाले मान्यता का व्यवस्था करता है और सभी पुनः करने खाति
 स्थापित करता है । ये मान्यता व्यवस्था : व्यवस्था की है जो कि व्यवस्था करता है और
 व्यवस्था मन मान्यता है व्यवस्था भारतीय स्तर पर है । यदि कोई व्यवस्था कर दिया तो
 व्यवस्थाओं की व्यवस्था एवं व्यवस्था फिर तब जाती है । मत मन का है व्यवस्था
 मान्यता की भी पुनः या व्यवस्था करता है जैसे मान्यता एवं व्यवस्था मन में व्यवस्था का
 व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था की रखी है । भारतीय राष्ट्रीयता व्यवस्था के व्यवस्था के
 मान्यता व्यवस्था भारतीय स्तर पर है ।

कम कमी ऐसी स्थिति का नाशी है कि नेता के प्रति अनुयायियों में वाङ्मन्यता करने उन्हा है और उन्ही कपी नेतृत्व का जीव प्रतीत होता है उस नेता स्वयं काना की जन्म नेता है जो कि एक पुणित कार्य है । ए. १९६० ई० के विधान कया निवाचन में कम की राकितराम बापूजी पराजित हो की उस उन्ही की ए. १९६१ ई० के विधान में बापूजी के विरोध में ब्राह्मणों कटूता हो नाकी का नाश केवल ब्राह्मण कानाताओं की पैरर विषय प्राप्त कर दिया और की कटूताम बापूजी कानाता विषय पराजित हो की । बाप की सीक्या विराम काना दान में ब्राह्मण एवं बापूजी की कानाताओं में परस्पर विरोधी-भाका प्रीति कम नहीं है । काना क्षेत्रिय के लिए नेता मज्जम, उन्हीर, निवेदन, मतिरीकता बापि के रूप में कार्य करता है । काना क्षेत्रिय के लिए जीव उपायों का उलारा नेता है किन्तु कम में प्रत्यक्ष विचार किर्त की अधिक महत्व मिता है क्योंकि नेता जीव है उन्ही नेतृत्व की काना एवं बापूजी का दान विस्तृत हो जाता है । युद्ध की काना क्षेत्रिय का एक हाका है किन्तु की उपाय की की किया है ।

सूची संख्या : १०००

राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र का नया मानक की प्राप्ति के लिए सहायक शिक्षक

जीनेवाले नहीं कीं कारीरिह और मानसिक ; शारीरिक एवं वाय्वाणिक , शारीरिक एवं वैचारिक , प्राकृतिक एवं बुद्धि , मानवीय एवं शारीरिक बाप में का परस्पर विरोध की विचारों विचारणी की है का नेता उन उन के नम्य सम्मन सम्मनकरका है । सम्मन सम्मन की प्रक्रिया विचारवाद, प्रतिवाद के सम्मन सम्मनकरका के रूपों में बदली रहती है । राजनीतिक का का नेता सभी का की सम्मन रूप प्रदान करने की लक्ष्य पैदा करता है विचारों के परस्पर विरोधी नीतियों, कार्यक्रमों एवं विचारों पर नीतिवादी के विचारों के पैदा की परिस्थितियों के अनुसार का पैदा होता है उसी प्रवर्धनीय बुद्धि सम्मन करता है । परस्पर विरोधी नहीं में सम्मन स्थापित करना बहुत की एक कठिनाई है । कर्तव्य में नीति एवं नीति के नहीं में बहुत होता है ।^{१५}

श्रीमान विमान का नीति के नेताओं है सम्मनकरका के सम्मन नहीं पर प्रदान की नहीं के नेता सम्मन में निरुद्धि बहुत है का पैदा पर का प्रदान नीति १ के उत्तर में ५०, ५ प्रतिशत सम्मन का १२, ५ प्रतिशत पुरा सम्मन सम्मन । सम्मन प्रदान का सम्मन करनेवाले नेताओं में सभी पैदा विचार एक पुरा की विचारवादी की सम्मनकारि एवं सम्मनकार का सम्मन, विचारों की कार्य पैदा का पैदा के विचारों का सम्मन-प्रदान नीति की सम्मन सम्मन किया की सम्मनकारि नीति की सम्मनकार पर का किया । सम्मन प्रदान सम्मन वाले नेताओं में १०, ०५ प्रतिशत पैदा के सभी प्रदान पर, नीति सम्मन में सम्मन का पैदा विचार है निरुद्धि सम्मन नीति, पैदा प्रक्रिया की सम्मन । पुरा प्रदान का सम्मन करनेवाले नेता सभी सम्मनकारि, नीति कार्यवाही की सम्मन का सम्मन की सम्मन सम्मनकारि की सम्मन किया ।

कै नेता भारतीय राष्ट्रीय सम्मन एवं भारतीय सम्मन के ही है सम्मन का नीति नीति । नेता प्रक्रिया नीति है कि पुरा प्रदान का सम्मन करने वाले नेता का विचार की सम्मन है सम्मन सम्मन प्रदान करती है तथा सम्मन के सम्मन सम्मन का सम्मन सम्मन सम्मन प्रक्रिया के सम्मन है । ५०, ५ प्रतिशत नेता सम्मन नीति है कि परस्पर विरोधी नहीं की पैदा विचार के लिए एक-दूसरे सम्मन

बिरोधी यह का नेता ऐसे प्रशासन का वह बिरोधी करता है
 जो कानून पर धारा का कर्मचारी स्थापित करना चाहता है । प्रशासन का धारा की
 ओर देना स्थापना है क्योंकि जो के कानूनों की स्थापना करना उचित
 प्रत्यक्ष कर्मचारी है, परन्तु वह धारा का धारा उचित है कि कानून की स्थापना की
 उचित धारा है न कि उचित सामान्य धाराओं का काम करना । राजनीतिक नेता
 का कार्य है कि प्रशासन की स्थापना रहे, उचित धारा न ही उचित धारा पर
 निर्माण का धारा रहे और वह धारा में कानूनी धाराओं की धारा धारा निर्माण करे ।
 धारा में धारा प्रशासनिक धाराओं एवं कर्मचारियों की धारा धारा धारा-
 नीतिक नेता का कार्य है कि उचित धारा धारा की धारा है ही धारा धारा
 धारा है न कि जो धारा, धारा, धारा, धारा, धारा, धारा, धारा, धारा
 धारा है, धारा धारा है । धारा प्रशासन धारा की धारा है कि धारा धारा
 है धारा धारा का धारा धारा धारा और प्रशासन के धारा धारा धारा धारा का कार्य है ।

इस विचार को यदि मैं समझूँ केन्द्र, विचार केन्द्र, धारा,
व्यवस्था, विचार केन्द्र को पढ़ूँ तो कुछ भी नहीं बचता है। राजनीतिक
विचारों की प्रवृत्ति को देखी-पुछ करके का बचिक व्यवहार मिलता है। उपरी-पुत्र केन्द्रों
के व्यवहारी या व्यवहारी का विचार का है विचारित होवे हैं तो वेता का उन
विचारों में कला का व्यवहार में व्यवहार का व्यवहार व्यवहार, विचारित व्यवहार
व्यवहार करते हैं। तो हाँ वेता का विचार है तो वेता प्रचार विचार व्यवहार व्यवहार व्यवहार

[illegible]

यदि मज्झिमासाली की बरीयता का भी का बयानार कि वह
 का बयान का बयान पर का प्रभाव होता ? के उपर में बयानों में २० प्रतिशत
 बयान, ४४ प्रतिशत बुरा का ६ प्रतिशत कोई काय नहीं बताया । बयान
 प्रभाव बयानेवालों ने बयान के बीच की प्रतिनिधि भी नहीं बारी बयानका
 लक्ष्यो ऐसी जानों की स्पष्ट किता की कि स्पष्ट रूप है प्रतिनिधित्व एवं
 जानका के दृष्टी पर बाधा है । कुछ बयानों ने प्रतिनिधित्व बयान बताया
 का कि मज्झिमासाली किता एवं प्रतिनिधित्व की । बुरा प्रभाव बयानेवालों बयानों
 ने बयान की उत्पत्ति, बयान की विद्यमानता, प्रत्यक्ष बयान, नदीय प्रत्यक्षी
 प्रभाव नहीं बयान नहीं बताया बयान किता में न बयानों की बयानों एवं कारणों
 के बाधार स्पष्ट किता किता प्रभाव: स्पष्टता, बाधा, बयान प्रतिनिधित्व
 बारी बाधाका के दृष्टी की काय प्रभाव होती है ।

एषु १८७४ ई० के विधान का निम्नलिखित हैं बायें पक्ष की वीस या बार जिन स्थितियों में पूर्ण १ के अन्तर में तथा अग्रिम के पैदा कर्ने पक्ष की पराजय के कारणों में ४४ प्रविष्ट प्रत्याक्षी का मुटि पक्ष ३० प्रविष्ट बायें पक्षी मुत्तन्वी , १२ प्रविष्ट अनुवाक का वनाव , ६ प्रविष्ट बायें पक्ष , ६ प्रविष्ट कर्नेकर्तव्यों का वनाव तथा ६ प्रविष्ट दहिनी लई मुत्तन्वी का कर्ने न मिलना बताया विरही पक्ष के वाच्यारि कारणों का प्रविष्ट २२ बार वाच्य कारणों का प्रविष्ट १२ रहा । वाच्य कर्ने के पैदाओं में कर्ने पक्ष के पराजय के लिए ३४ प्रविष्ट " प्रत्याक्षी की मुत्तन्वी " ११ प्रविष्ट कर्ने का वनाव , ११ प्रविष्ट

निम्नांकित ६ - १- कृष के छिड़ बाहुन काको है नवीं वनियु वाञ्छित
 कलापिता है बाय-बाय रानी की एक प्रवृत्ति २- विनायकीक कर्त का एक मूलक
 स्तर ३- कृष की वृद्धता की कि परिस्थितियों के परिणति है वाञ्छित कला-
 योक्त में कर्त की निर्देश की । ४- कृष के कर्तों में कर्त कलापिता
 ५- प्रवृत्ति कला के कला में वाञ्छितकला ६- कृष के कर्तों का निरूप है
 प्रति कला में कलाकला कलापिता ७- कृष के कर्तों में कृष की कला है रानी कला
 उनके निम्नांकित कला की कलापिता कला की बाय ।

कला: कर्तों का निम्नांकित कला वाञ्छित कलापिता, मूलक
 विनायकीकला, कलाकला वृद्धता, कर्त कलापिता, विनाय कलापिता,
 कर्तों एवं कलाओं के प्रति विनाय कला कृष में रानी की उत्कृष्ट वाञ्छित, का
 निम्नांकित, प्रवृत्ति कला एवं कलापिता कला कला है । राजनीतिक कला की निम्नांकित
 का स्तर कला रानी के छिड़ कला वाञ्छित कला की निम्नांकित कला है, कलाकला
 वाञ्छितकलाओं की कला कला है, कला की कला प्रवृत्ति प्रवृत्ति कला है, वाञ्छितकलाओं
 एवं कलापिताओं में कला रानी है, कला पर कलापिता कला की कलापिता प्रवृत्ति कला
 है, स्वायत्तकला एवं कला में कलापिता कला है, कला, कलापिता एवं कलापिता के
 बाय कला है कला कला की कलापिता कला कला है ।

कला राजनीतिक कला का निम्नांकित राजनीतिक कला स्तर निम्नांकित
 का बाय कला कला कला, कला कला कला में निम्नांकित, कलापिता, कलापिता,
 कलापिता, कला, कला विनायकीकला, कलापिता, कलापिता, कलापिता, कलापिता,
 स्वायत्त कला एवं कलापिता की कला कला कला । राजनीतिक कला के
 कलापिता के छिड़ कला के कलापिता कला कला है कला कला पर कलापिता
 का कलापिता कला है । कला का कलापिता कला के राजनीतिक कला का
 कलापिता कलापिता है ।

कला में कलापिता कला रानी के छिड़ बाय कला कला कला
 कला है ? कला के कला कला का कलापिता कला पर कला कला है कि
 १५ कला कलापिता कला - कला कला कला पर कलापिता, कलापिता,
 कलापिता, कलापिता कला का कलापिता, कलापिता के कला-कला में कला कला

जब यह समझना चाहिए कि जो नेता का पूर्ण प्रतीकीकरण हो गया है। वही प्रतीकीकरण के कारण ही नेता का सम्मान, कमान, शक्त, सम्पत्ति, विभव, पराक्रम, उत्थान, पतन आदि उसके साथ साथ वह का हो जाता जाता है। राक्षसीय नेता वह है प्रतीकीकरण के लिए पूर्ण छिटावही बनकर जो प्रियायों में सम्पत्तिहीन होता है, अधिकाधिक जल तक उपरीपर बाधितव्य पूर्ण कर्तों पर बाधित रहता है और वह ही जीवप्रिया का अधिपति करता है।

बापई राक्षसीय नेता जमी जमी में बाधित प्रियायों पर वह की विधेयताओं का अधिपति करता है किन्तु वह ही क्षुधाधियों की क्षुधा बुद्धि होती है। यदि नेता मिथ्यावादी, धूर्तवादी, बाधितवादी, विधेयतावादी, धूर्त वादी, धर्महीन तथा अधिकाधिक धर्महीन का हुआ हो जाता है तो वह ही धर्महीन धर्महीनता का प्रतीक बनकर रहता है और अपना अपने नेता बन कर बैठा है। बीछा स्तनीय विधान का बीच में लापवासी वह है प्रभु स्तनीय नेता के लक्ष्मणों के कारण जो धूर्त, धर्महीन एवं धूर्त का वह अपना जाता रहा और धर्महीन लक्ष्मण में भी धर्म के ही धर्मों का प्रतीक बनकर जाता है। एक नेता अपने प्रान्त करने के लिए लोक धर्मों का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व करता है।

७- नीति-विधान एवं प्रियाम्कन :

राक्षसीय नेता निधी क्या वह क्या लक्ष्मण के लक्ष्मणों का लक्ष्मण के लिए, लक्ष्मणों के लक्ष्मण के लिए, बापई स्तनीय के लिए एवं धर्महीनता का लक्ष्मण, धूर्तता एवं धूर्तलक्ष्मण के लिए, धर्महीनता का लक्ष्मण, धर्महीनता एवं विचार विविधता के परकाष्ठ, धर्महीनता का लक्ष्मण एवं धर्मों की प्रतीकलक्ष्मण करनेवाली धार्मिक, धार्मिक, राक्षसीय, धर्महीन, धर्महीनता का लक्ष्मण एवं वही प्रकार की अन्य धर्मियों का विधान करता है या उन्हें पराजित, धर्महीन, धर्महीन, धर्महीन के लक्ष्मण में विधेयता है। राक्षसीय धर्मों में नीति-विधान नेता है। राक्षसीय धर्मों में नीति-विधान प्रियाम्कन धर्महीन के धर्म-विधान का पाठ करता है।

* वह ही धर्मियों का विधान किन्तु धर्म ही है ? के अर्थ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं में धर्म ही - धर्म ही नष्ट हो है,

कठिण भारतीय अग्रिम कमेटी, 'अग्रिम की कार्यवाही की समिति' अग्रिम 'राष्ट्रीय कमेटी, 'राष्ट्रीय कमान्ड' बनाया जिससे वास्तविक तथा नाम-मात्र दोनों प्रकार की नीति निर्धारण पद्धति का आभाव हो जाता है । 'राष्ट्रीय कमान्ड' तथा 'पन्डलीन' कमेटी है अत्यन्त का कम कार्यवाहीय हो जाता है जिसमें औपचारिक मुक्तियों के बजाय के कारण ही एक देश में दूसरी 'कम' होने की स्थिति कभी कभी उत्पन्न प्रकट किया ।

भारतीय कमान्ड के नेताओं में 'जुब मुहूर्तकी' ; केन्द्रीय कार्य समिति' तथा 'राष्ट्रीय कमान्ड' बनाया । भारतीय कमान्ड के नेताओं के ऊपर की 'अत्यन्त के औद्योगिक' की सम्पुष्टि करते हैं । भारतीय कमान्ड के नेताओं में 'प्रतिभाषण दीन बार तीन' ; 'कठि मुहूर्तकी पन्डलीन-दीन तीन' ; 'कुम्भी नेताओं की कमेटी' बनाया । इन नेताओं के ऊपर की अत्यन्त की सम्पुष्टि करते हैं । अतः यह निश्चित तथ्य प्रतीय होता है कि यह का लक्ष्य प्रियाकान्त पर मुक्तियों का प्रसार की नीतियों के पोषण, प्रवर्धन एवं प्रसार के लिए स्थापित किया जाता है । क्या इससे यह धर्म नहीं उत्पन्न होता कि लक्ष्य कमान्ड, कुम्भीन पर बनना जिसे जानेवाले प्रमुख तथा प्रतिभाषण नेताओं की तीव्र भाव है ? क्या नीति निर्धारण में अपनायी जानेवाली पद्धति औपचारिक प्रणाली के प्रतिकूल नहीं है ? स्पष्ट रूप में यह पद्धति निम्नोक्त स्वतंत्रता का समर्थन करती है । निम्नोक्त स्वतंत्रता का सम्बन्ध ही अन्तिम का सम्बन्ध है । राष्ट्रीय कमान्ड के नेताओं की यह धारणा कि कमान्डों का विभिन्न आधारों पर कार्य करना उनके लक्ष्य के पक्षों की उत्तरी लक्ष्य विनियमों की कमी की स्वतंत्रता प्रदान करे जिससे यह के अन्तर्गत औपचारिक मुक्तियों की प्रवृत्ति रहे ।

'भारत की कमान्ड प्रवृत्ति कमान्ड परिस्थितियों में कभी की कभी है' के ऊपर में भारतीय राष्ट्रीय अग्रिम के नेताओं में 'दलों में धार्मिक तथा राष्ट्रीय मुक्ति' नीतियों का तीव्र कार्यवाहीय तथा वास्तविक प्रवृत्ति बनता लक्ष्यों के प्रति मानक का अत्यन्त तीव्र एवं अत्यन्त आवश्यक है तथा इसका मान्यता, सीधे और पक्ष पर नहीं बल्कि वास्तविक कमान्ड पर प्रभाव है, 'राष्ट्रीय

व्यवहारों में विचार, प्रवृत्तियाँ तथा प्रमाणित सेवाएँ, कला की कलाओं के प्रति प्रेरित करें, नदी की पूर हो, ऊँच नीच का भेद मिटे, पैर नाचना सेवा की भाव, सभी राजनीतिक का एक ही मान्य विधान पर एकान्त कार्य करें तथा भारत का स्वाधीनता, तथा किसी भी विधि एवं विधि विरुद्ध विधानों का परिणाम मित्रता है।

उपरोक्त उद्देश्यों का निर्वहन करने हेतु प्रायः कहा है कि विधि विधान में त्रिभुवीय (राज्य, शासन एवं नागरिक) दृष्टि अनिवार्य है। राज्य के रूप में राष्ट्रीयता, व्यावस्थिकता, नदी की उन्मुख तथा ऊँच-नीच के भावों का समापन, शासन के रूप में योजनाओं का ठीक कार्यान्वयन, वन्द्यनीय शासन, प्रवृत्तियाँ, कर्तव्य विचार एवं स्वाधीनता, तथा नागरिक के रूप में राजनीतिक, सेवा उत्साह तथा कला का स्वाभाविक भाव सब बातों की दृष्टि करता है कि विधानों के विधान में त्रिभुवीय दृष्टि अनिवार्य है। तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं के उद्देश्यों है यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि भारत की वर्तमान अवस्था में राष्ट्रीय प्रगति के लिए वे सभी अनिवार्य अनिवार्य हैं ?

भारतीय जनता के नेताओं ने के अनेकानेक प्रगति के लिए उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में प्रमाणित कर्तव्य-व्यवहार है राष्ट्रपति का, जीवन विधीय व्यवस्था में व्यवस्था का विकेंद्रीकरण^{५१} भारत को सभी की सेवाओं पर कार्य करें, 'राजनीतिक शासन, धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के प्रचारों की एक ही व्यवस्था को बना है सभी न्यूनतम व्यवस्था पर कार्य करें^{५२} बताया। इन उद्देश्यों में की त्रिभुवीय दृष्टि की कलक मित्रता है। राज्य के रूप में जीवनविधीय व्यवस्था तथा भारत की शासन विधीय है, शासन के रूप में व्यवस्था का विकेंद्रीकरण एवं न्यूनतम कार्यक्रम पर व्यवस्था है तथा नागरिक के रूप में प्रमाणित कर्तव्य, विभिन्न जीवन के प्रचार तथा व्यवस्था व्यवस्था है। इन नेताओं के उद्देश्यों है प्रमाणित कर्तव्यों, व्यवस्था के विकेंद्रीकरण तथा सभी विधानों में कार्यरत नेताओं की व्यवस्था व्यवस्था के अन्तर्गत पर प्रभाव बताया है।

भारतीय जीवन के नेताओं ने अनेकानेक प्रगति के लिए उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में कुछ अन्य भी, भारतीय दृष्टि योग्य व्यवस्था बताया है,

६. २२ 'क' इसकी सीमा (जै नकल) तथा ७. २२ प्रविष्टि पुनः वापस है ।
 यह केंद्र समस्त का समस्त ही समस्त है कि जिसका नाम केन्द्र मूल ही समस्त
 इसकी सीमावा ही कि कि विस्थापित की जायगी न न समस्त ही या पुनः
 का वापस मूलवाप न ही ।

७- राक्षसीय छेदी का विकास :

वर्तमान युग में राक्षसीय मूल्यों की उत्पत्ति करने के लिए
 जो भी कार्य किए जा रहे हैं, उनके विकास की उच्च समस्त वापस ही राक्षसीय
 छेदी है । प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक विशिष्ट छेदी होती है जो कि वास्तविक
 छेदी, वादीवा, अविश्वस्य, कष्ट, पुरस्कार, कष्ट-वस्तुवापस, समस्त वापस
 वापस के समस्त पर विविध रूप है समस्त की वापस है । किन्ती की वापस है
 विकास विविध करने में किता वापस-वापस वापस की प्रवृत्ति करने के लिए प्रियवर्ती
 छेदी समस्त है किन्ती वास्तविक कष्ट अविश्व न ही वापस ही कार्य विविध का
 विकास है । किता का कार्य है कि समस्त प्रियवर्ती है किन्ती के समस्त में प्रिय
 कष्ट न ही वापस न ही ।

सत्यं कर्म युवाय । प्रिय युवाय । युवाय, कर्म प्रियं न ही
 वापस प्रवृत्ति का किता कर्म युवाय कर्म वापस कर्म वापस कर्म छेदी का विकास
 कर्म है कर्म कर रहा है । किता के किन्ती प्रवृत्ति में वापस एवं वास्तविकता का
 कर्म समस्त वापस वापस की प्रवृत्ति है किन्ती वापस कर्म के समस्त कर्म
 होती है । 'वापस कर्म नहीं होता किन्ती प्रिय कर्म होता', 'न वापस के लिए
 कर्म वापस है', 'न वापस वापस कर्म है', 'न ही कर्म किन्ती कर्म ही वापस,
 'वापस किन्ती की कर्म किन्ती है कर्म की', 'वापस प्रवृत्ति न ही कर्म किन्ती की
 वापस', 'वापस वापस कर्म न कर्म ही किन्ती राक्षसीय कर्म है', 'न ही वापस
 कर्म है किन्ती कर्म है, वापस वापस प्रियवर्ती छेदी के उत्पत्ति वापस है । प्रवृत्ति
 छेदी वापस छेदी है किन्ती कर्म वापस वापस का पूर्ण वापस कर्म वापस है वापस
 वापस वापस की कर्म न ही । कर्म वापस कर्म है', 'वापस वापस वापस
 पूर्ण है', 'कर्म वापस है पुनः है', 'वापस वापस छेदी के उत्पत्ति है ।

किता कर्म के बीच में कर्म प्रवृत्ति कर्म है कर्म की किता वापस

पिछाना, पिछला एवं पछुता, समय निवारण, कारणों एवं बाधाओं का पूर्णचक्षण वादि । प्रलय में जल्ला की कानि का कातर कैर लकी पराजयका वैली बादी है, दीव एवं लीकी कादि में जल्ला के दीव की एवं लकी लीकी की शीपिज किया बादा है, मुहम्मद केन्द्र शिखी में जल्ला पर है ज्वाप लडा किया बादा है ; रूप परिचयी में जल्ला के रज्ज में बाधिका ली है परिचयी कर किया बादा है, कलामका वा कलीकला में कैरा रज्ज लकी मुहम्मदकी की प्रष्ट करके शान्ति प्रदान करता है ; पिछला एवं पछुता में जल्ला की पिछला करके लकी कलापानी में पल्ल निवारिका कर ली बादि है , समय निवारण में बाधिका कलापान की मुक्ति के छिर लक समय निवारिका कर किया बादा है ; लक कारणों के पूर्णचक्षण में जल्ला की कलाम करनेवाले कारणों की की कल कलैर के छिर वष्ट कर किया बादा है ली कलामी की प्रान्त वष्ट ।

कलामी के कलापान की ली में कलामी है लीपिज निवारिका लकी के प्रदाव (ली) का प्रदाव किया बादा है ।

- १- कारण ली २- प्रदाव दीव ३- लीपिज लीप्रदाव
४- लीकला ५- प्रदाव ६- लीकल
७- मुहम्मदकी ८- कलामका

(जल्ला के ली)

ली की जल्ला का कलापान लरीका लकी में है लक या लीक के प्रदाव लरी की लीर प्रदाव करनेवाली ली पर लीर करता है । बादि लरीका लकी का लीकली किया बादा ली कलामी लीकल, प्रलम्बीक, कलाम ली लीक ली बादी है ।

कलामका ली ली ली ली ली ली

१- ली

ली

ली

ली ली ली ली ली

७

ली ली ली

४

४- राबरीतिक बायुक्तबायु विसाद

७ - १६ वर्ग
२० - ३२ वर्ग
३३ - ४५ वर्ग
४६ - ५८ वर्ग

प्रतिशत

२५, ००
२५, ००
३१, ००
१६, ००

कुल योग -

१००

५- विविध योगदानसार

कला १० तक
कला १२ तक
स्नातक + अन्य विधीपाणि + पदीपाणि
स्नातकोपर + ०० + ००

प्रतिशत

२५, ००
१२, ५
३०, ५
२५, ००

कुल योग -

१००

६ - व्यवसायिकव्यवसाय

कुल
विधि
व्यवसाय
राबरीति
कलाय केला
विधिवा
व्यापार
वीकरी

प्रतिशत

१५, २५
२५, ००
१२, ५
१, ५२
१, ५२
१, २५
१, २५
१, २५

० वर्ग १५, २५ प्रतिशत पूर्णराबरीति

कुल योग -

१००

૩- ગાંધી અવસાનકાળ

અવસાન

પ્રતિભા

કુળિય

૨૦, ૫

આપાર

૬, ૨૫

કુલ યોગ -

૨૬, ૭૫

૮- વાંચક

કર્મ

પ્રતિભા

ચિન્મય

૨૦, ૫

ચીટ

૬, ૨૫

હસ્તાવ

૬, ૨૫

કુલ યોગ -

૩૨

૯- માળાવલ

માળા

પ્રતિભા હાથ

ચિન્મય

૨૦

ચીટ

૨૦, ૫

હસ્તાવ

૩૨, ૦૦

ચૂં

૫૦, ૦૦

ચીટ

૧૨, ૫

કુચરાલી

૬, ૨૫

ચાલી + જાલી

૬, ૨૫

માળા

પ્રતિભા

કુલ માળા

૦

ચી માળા

૩૦ ૫

पाणी

पीपे हे

तीस पाणी

चार पाणी

पाच पाणी

सहा पाणी

प्रमाण

२०, ५

१२, ५

६, २५

६, २५

कुल पाप -

१००

१०- पारिवारिक व्यवसाय

व्यवसाय

धुन

विपदा

प्रमाण

६२, ५

२०, ५

कुल पाप -

१००

११- परिवार उत्पन्न उत्पन्न

उत्पन्न विस्तार

५ - १०

११ - १६

१७ - २०

सहा उत्पन्न

प्रमाण

५०, ००

११, २५

१२, ५

६, २५

कुल -

१००

१२- परिवार में पुनर्जात

पुनर्जात

उत्पन्न

विपदा

पारिवारिक

प्रमाण

६, २५

६, २५

१५, ०५

१३- राखीय व प्रयुक्त समान्य

<u>प्रयुक्त सम</u>	<u>प्रतिशत</u>
बाधा कटौती के पीछे पन्ना का	३९, २५ व
वीन के पीछे पन्ना का	२५, ००
कटौती के पीछे पन्ना का	३९, २५ व
कुल योग -	१००

- क + क, ७५ प्रतिशत कटौती का १२, ५ प्रतिशत कटौती
 व + २५ प्रतिशत कटौती, १२, ५ प्रतिशत बाखीय लीक का
 ६, २५ प्रतिशत कटौती ।

१४ - फर्श के समान्य

<u>फर्श की संख्या</u>	<u>प्रतिशत</u>
१	३९, २५
२	३९, ७५
३	६, २५
४	१२, ५
५	३९, ७५
६	१२, ५
कुल योग -	१००

अधिक बाखीयों के निम्नलिखित सम प्रयुक्त

की है :-

- (१) उच्च वर्ग के बच्चों का प्रतिशत अधिक है ।
- (२) ३९, २५ प्रतिशत बच्चों के स्तरों के हैं तथा ३९ प्रतिशत बच्चों की बाखीय उच्च वर्ग के समान है ।

- (१) ७५ प्रतिशत नेताओं की राजनीतिक आयु २० वर्ष से अधिक है ।
- (२) स्नातक, स्नातकोत्तर स्नातकियों तथा अन्य विधीवाचिकों या कमीशनीयों की योग्यताप्राप्ति, नेताओं की प्रतिशत ६२, ५ है । क्षेत्रीय योग्यता के कारण बाधा नहीं नेता नहीं मिलता ।
- (३) कृषि का मुख्य व्यवसाय करनेवाले नेता १२, ५ प्रतिशत की गिने और कृषि का गौण व्यवसाय करनेवाले ७७, ५ प्रतिशत है । पूर्ण रूप से कृषि पर बाधालिख व्यवस्थाओं में केवल राजस्व का कारण मिलता ।
- (४) नेताओं में ७५ प्रतिशत हिन्दी भाषा का ज्ञान मिलता, इसके परवाह में केवल भाषा का ; ७५ प्रतिशत नेताओं की दो या तीन भाषाओं का ज्ञान है तथा बाक़ एक भाषा बोलनेवाला नहीं है नेता नहीं मिलता ।
- (५) ५० प्रतिशत नेताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या ५-१० तक मिलती तथा ६२, ५ प्रतिशत नेताओं के परिवार श्रमिक मिलते । श्रमिक परिवारवाले नेताओं की राजनीतिक आयु एवं क्षेत्रीय योग्यता अधिक निम्नी और वे राजनीति में अधिक काम प्रयुक्त करते हैं ।
- (६) ६३, ७५ प्रतिशत नेता अपने परिवार में परामर्शदाता, निदेशक या सहायी की भूमिका निभाते हैं ।
- (७) तीन पण्डे हैं अधिक काम राजनीति में प्रयुक्त करनेवाले नेताओं की दो या दो से अधिक पार्षदों का अनुभव है ।

अतः उपरोक्त अनुसंधान नेरी यह परिचयना की प्रमाणित करती है कि श्रमिक परिवार नेता के लिए उत्तम कल्याण प्रदान करता है क्योंकि उच्च शिक्षा, अधिक व्यवसाय तथा अन्य विचारों की भूमि रूप में का कारण श्रमिक परिवार प्रजापति में विशेष प्रमुख होता है ।

सन्दर्भ - संकेत:-

- १- ई० बी० वीरिन, ए० ए० डायरेक्ट : ए० बी० वेल : द्वारा संश्लिष्ट
काउन्सिलर बाफ बाउलीलापी, १९६१, पृष्ठ ६०० ।
- २- डेक्टर बी० डेविलेन, ए० ए० बाफ बाउलीलापी डायरेक्ट : संश्लिष्ट
बाउलीलापी विनिर्माण, ए० ए० ए० बी० डायरेक्ट ए० बाउलीलापी
बाउलीलापी, १९७२, पृष्ठ १०० ।
- ३- ए० बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी ए० बाउलीलापी, १९६० पृष्ठ २५० ।
- ४- विनिर्माण बाउलीलापी बाउलीलापी के बाउलीलापी के बाउलीलापी पर ।
- ५- ए० बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी ए० बाउलीलापी, १९६० पृष्ठ २५१ ।
- ६- २ पृष्ठ १०० ।
- ७- ए० ए० डायरेक्ट, बाउलीलापी बाउलीलापी : ए० विनिर्माण बाउलीलापी,
१९७६, पृष्ठ १००-१०१ के बाउलीलापी पर ।
- ८- ए० बाउलीलापी, विनिर्माण बाउलीलापी, पृष्ठ ४१० में उद्धृत ।
- ९- बी० डायरेक्ट, पृष्ठ ३६६ : बी० डायरेक्ट, पृष्ठ ७५५ ।
- १०- ए० बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी, १९५६, पृष्ठ २० ।
- ११- बाउलीलापी ए० बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी, पृष्ठ ८५ ।
- १२- बी० डायरेक्ट बाउलीलापी, बाउलीलापी - विनिर्माण बाउलीलापी के बाउलीलापी ।
- १३- बी० बाउलीलापी बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी बाउलीलापी के बाउलीलापी, यु० ए० मंत्री,
बाउलीलापी बाउलीलापी के बाउलीलापी ।
- १४- डायरेक्ट बाउलीलापी बाउलीलापी ए० बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी बाउलीलापी बाउलीलापी,
बाउलीलापी, पृष्ठ ४१६-२० ।
- १५- बाउलीलापी, पृष्ठ ४१६-४१७ ।
- १६- ए० बाउलीलापी, बाउलीलापी बाउलीलापी, पृष्ठ १४२ ।

- १०- १६ पुष्ठ १०० ।
- ११- ल० कुत्तर, पीछिटिक पाटीपु, १६५, पुष्ठ ११४ ।
- १२- श्री रावेन्द्र प्रसाद बिवाडी के साप्ताहिक है दिनांक २८-६-०६ ।
- १३- श्री कैव मुन्नाय मजी, बिना प्रविनपि, मुन्नाय मन्त्रि, राजावाय है साप्ताहिक दिनांक ६-६-०६ ।
- १४- ल० कुत्तर, पीछिटिक पाटीपु, पुष्ठ ११६ ।
- १५- डा० दुबीर, मन्त्रि विन्नी दिवसरी ।
- १६- श्री कल्याण बिवाडी, कल्याण है साप्ताहिक दिनांक १५-११-०६ ई० श्री श्री पाण्डेय श्री के कल्याण कल्याणी री ।
- १७- श्री महावीर प्रसाद कुष्ठ है साप्ताहिक दिनांक १८-६-०६ ।
- १८- ल० श्री कल्याण, पीछिटिक पाटीपु, ए बिन्नीरिक्त साडीपि, पुष्ठ ११६ ।
- १९- मुन्नाय, पुष्ठ २०२ ।
- २०- श्री कल्याण बिवाडी- बिना बिन्नाय कल्याण श्री महावीर कल्याण बिना कल्याण श्री, राजावाय है साप्ताहिक है दिनांक १-६-०६ ।
- २१- श्री कल्याण श्री कल्याण दिनांक २०० प्रविनपि, मुन्नाय कल्याण कल्याण पाटीपु, १६५, पुष्ठ ११६-२० ।
- २२- कल्याण साडीपि, कल्याण, ए बिन्नीरिक्त दिवसरी कल्याण २, १६५, पुष्ठ ११६ ।
- २३- श्री कल्याण कल्याण दिवसरी कल्याण कल्याण कल्याण, १६५, पुष्ठ २६८ ।
- २४- ल० श्री कल्याण, पीछिटिक पाटीपु : ए बिन्नीरिक्त साडीपि पुष्ठ २३८ ।
- २५- श्री रावाकल्याण पाटीपु मुन्नाय (श्रीविना कल्याण कल्याण श्री कल्याण कल्याण) है साप्ताहिक दिनांक २०-६-०६ ।

- ३३ - मार्केट प्रेस, पोलिटिकल लिबरल एन वीरिया, दै लाडीजिज बाकू
पुस्तक, एडीन्बुर्ग, १८५६, पृष्ठ ३३ ।
- ३४- श्री राबिन्ड्र प्रसाद त्रिपाठी (जू १८६६ ई० में बना कज़िब के फिनायक
प्रस्थापी) है बापात्कार विनाकि ३८-६-१८७६ ई० ।
- ३५- एड० ए० डिप्टिट, पोलिटिकल मैन, पृष्ठ २३ ।
- ३६- श्री राबिन्ड्र प्रसाद त्रिपाठी, बना कज़िब ।
- ३७- बापात्कार के बापार पर ।
- ३८- मार्केट प्रेस, पोलिटिकल लिबरल एन वीरिया, दै लाडीजिज बाकू
पुस्तक एडीन्बुर्ग, १८५६, पृष्ठ ४२ ।
- ३९- मकरासाजी है बापात्कार के बापार पर ।
- ४०- डा० पैराच रिड है बापात्कार विनाकि १६-१२-७६ ।
- ४१- डा० हरिद्वार राम एवं डा० मोठा प्रसाद रिड, बापुनिक राजनीतिक
विस्लेषण, १८७४, पृष्ठ १७२ ।
- ४२- प्रिंसा की कैप्टल, प्रेस पुस्तक एड पोलिटिकल कलर, १८५४, पृ० १३ ।
- ४३- श्री कर्ताराम बाकू कर्मान पीपीय फिनायक ।
- ४४- निवाफि कलाडि, कलाबाबाद के वनिडेड है
- ४५- २८, पृष्ठ ४०४-५ ।
- ४६- डा० हरिद्वार राम एवं श्री मोठा प्रसाद रिड, बापुनिक राजनीतिक
विस्लेषण, पृष्ठ १६२ ।
- ४७- एड० ए० डिप्टिट, पोलिटिकल मैन, पृष्ठ ३१ ।
- ४८- श्री कलाकाम्ब त्रिपाठी केक के बापात्कार है विनाकि ८-१३-७५ ।
- ४९- डा० पैराच रिड है बापात्कार (विनाकि २८-८-७६ (बापात्काराहीन
पीपजना कलाकाम्ब में) ।
- ५०- श्री महावीर प्रसाद मुक्त, मुक्तुई वीर्य कलस्य ।

- ५१- श्री राधाचरण बिस्वाही के धारास्कार है
- ५२- श्री विनाय जिंदी के धारास्कार है
- ५३- श्री राधाकान्ध बाण्डे के धारास्कार है
- ५४- डा० केदारध सिंह
- ५५- श्री महावीर प्रसाद शुक्ल, मूलपूर्व पीपीय बिनायक एवं मूलपूर्व रीत कर्ण
(राज्य का)
- ५६- श्री बलदा प्रसाद सिंह मूलपूर्व बिनायक प्रत्याही का
बिना कार्य व्यक्त ।
- ५७- श्री दाम महापुर सिंह, काक प्रमुख, सीता, बिना नहीं ।
- ५८- रा० ए० डिप्टि, पीपिटिक के, मुख ११ ।

[illegible]

१ - निर्वाचन कक्षा

राजनीतिक का कक्षा प्राप्त करने के लिए निर्वाचन कक्षा है।
 औद्योगिक प्रणाली में निर्वाचन कक्षा वस्तुस्थिति का प्रतिबिम्बित चित्र है।
 निर्वाचन राजनीतिक का वह चरित्र है जो प्रति जमीन के निर्वाचन का कक्षा
 द्वारा प्राप्त है। निर्वाचन की कक्षा के अनुसार चरित्र की नींवों के
 निर्वाचन की वस्तु करने का निर्वाचन एक प्रकार है। निर्वाचन कक्षाओं
 का निर्वाचन की वस्तुस्थिति है। निर्वाचन कक्षा की एक प्रणाली कक्षा निर्वाचन
 है प्राप्त निर्वाचन का प्रतिबिम्बित द्वारा प्राप्त करने की नींव की एक नींव है।
 निर्वाचन राजनीतिक कक्षा की प्रतिबिम्बित का चरित्र करनेवाली औद्योगिक
 वस्तु है। निर्वाचन कक्षा की वस्तुस्थिति का परिचायक कक्षा प्राविशाली के
 वस्तुस्थिति की प्रणाली है। निर्वाचन का चरित्र की नींवों पर निर्वाचन करने
 का निर्वाचन एक प्रकार है। एक या दो प्रणाली पर निर्वाचन की वस्तुस्थिति प्राप्त
 करने की औद्योगिक कार्यवाही निर्वाचन है। औद्योगिक वस्तुस्थिति का चरित्र करने
 है निर्वाचन के आधारकृत प्राप्त वस्तुस्थिति है :-

- (१) एक पक्ष के लिए दो या दो से अधिक प्रतिबिम्बित हैं।
- (२) प्रति वस्तुस्थिति की वस्तु का निर्वाचन करने के लिए एक
 कक्षा का कक्षा है।
- (३) का कक्षा एवं प्रति वस्तुस्थिति के मध्य कक्षा वस्तुस्थिति-निर्वाचन
 के लिए कक्षा काचरित्र है।
- (४) निर्वाचन का वास्तविक स्वयं कक्षा है।
- (५) निर्वाचन-कक्षा, कक्षा एवं वस्तुस्थिति की वस्तुस्थिति
 कक्षा है।
- (६) प्रति वस्तुस्थिति एवं का कक्षा में परस्पर वस्तुस्थिति निर्वाचन है।
- (७) निर्वाचन का कक्षा की वस्तुस्थिति में कक्षा वस्तुस्थिति है।

नोट: निर्वाचन की कार्यवाही में औद्योगिक प्राप्त वस्तुस्थिति

की वह निश्चित की 'निर्वाण' है ।

संक्षेप विधान का बीच में राजनीतिक कल विधान का का निर्वाण उद्देश्य है किन्तु संक्षेप , विधान परिषदीय का अन्य निर्वाणों में की भाग लेती है । विधान का एक ओर का है निर्वाण में की कि प्रत्यक्ष निर्वाण है उन्हीं राजनीतिक कल प्रत्यक्ष भाग लेती है अन्य निर्वाण की भाग संसाधन, न्याय संसाधन, विचार कल अभिधि, हाथ रखता अभिधि, विचार परिषद् भाग में कृतवत्ता भाग लेती है क्योंकि इनकी पुनः कल भाग पर लेन लेती नहीं विचारों की है क्योंकि इनकी द्वारा प्रत्यक्ष निर्वाण या निर्वाण अभिधान, या निर्वाण पर अन्य या प्रत्यक्ष इनकी विचार भाग है । कई पर विधान का निर्वाण के विचारों का अन्य निर्वाणों में राजनीतिक कल की भूमिकाओं का विचार प्रत्यक्ष नहीं है । राजनीतिक कल प्रत्यक्ष निर्वाण, पुनः अभिधान संसाधन, कल भागों का कल प्रयोग, कल में कल, कल भाग का कल, इन का की व्यवस्थाओं में वार्षिक अन्य कल पुनः विचार कल है । राजनीतिक कल का प्रत्यक्ष प्रयोग विचार, कल भागों का, प्रचार अभिधान प्रयोग, भागों (वार) कल-कल, कल का विचार इन तीनों की भूमिका निर्वाण है और कल पुनः का विचार प्रयोग कल है । संक्षेप: उन्हीं विचारों की पुनः कल भाग है । राजनीतिक कल इन का में कल भूमिका निर्वाण है किन्तु अन्य निर्वाण उद्देश्य भाग है ।

विधान का का निर्वाण उद्देश्य के लिए उन्हीं राजनीतिक कल कल प्रत्यक्ष का प्रयोग कल के निर्वाण कल की ओर एक प्रत्यक्ष की उद्देश्य निर्वाण कल है । एक प्रत्यक्ष की निर्वाण कल के पूर्व विचार कल प्रयोग पर उद्देश्य कल भागों के विचार-कल भागों कल कल है । उद्देश्य कल का की व्यवस्था भारतीय राष्ट्रीय कल, भारतीय कल एवं भारतीय कल की भाग में है किन्तु कल की भागों में और कल है ।

कल-कल कल की कल भागों की कल कल कल है । भारतीय राष्ट्रीय कल में भारतीय एवं कल निर्वाण कल भारतीय कल

में प्रान्तीय संसदीय अधिकरण तथा केन्द्रीय संसदीय अधिकरणों और भारतीय लोकसभा में भारतीय संसदीय बोर्ड प्रस्तावी का निर्णय किया है ।

‘ वापस का विधान क्या है फिर प्रस्तावी का निर्णय किया जाता है ? के उपर में वापस का निर्णय बोर्डों के प्राधिकारियों में विधान कर्म स्तर पर वापस का प्रस्ताव प्राधिकार करके उपर फैली है, ‘ वापस, बोर्डों के वापस का निर्णय का नाम प्रोविसन बोर्डों के वापस फैला जाता है, ‘ बोर्डों के निर्णय पर ही उम्मीदवार का नाम फैला है, विधान कर्म बोर्डों के निर्णयों का अपवाद बहुत नहीं है ‘ विधान बोर्डों नामों के निर्णय प्रान्त की, प्रान्त वापस बोर्डों का निर्णय बोर्डों के प्राधिकारियों बोर्डों में फैली है ; प्राधिकार-बोर्डों बोर्डों में विधान प्रोविसन बोर्डों है जो ही प्रस्तावी निर्णय किया जाता है, ‘ विधान प्रान्त, प्रान्त है वापस बोर्डों का निर्णय बोर्डों के वापस फैला है, १९५२ ई० के निर्णय के लिए कहा है ‘ वापस ही बोर्डों ‘ निर्णय बोर्डों नामों द्वारा ।’

उपरोक्त उपरों है स्पष्ट ही जाता है कि वापस का निर्णय बोर्डों का प्रस्तावी निर्णय में प्रस्ताव क्या संसदीय की निर्णय है ही कि निर्णय प्रोविसन बोर्डों है निर्णय निर्णय निर्णय एक निर्णय का प्रस्ताव या निर्णय के द्वारा ही फैला है । उही प्रान्त के उपर में भारतीय निर्णय के प्राधिकारियों में फैला है ही या ही निर्णयों के नाम फैली है, निर्णय प्रान्त फैला है, निर्णय निर्णय है फैला है, ‘ निर्णय स्पष्ट निर्णय नहीं है ‘ बोर्डों का प्रस्तावी निर्णय फैला है, ‘ विधान स्तर के निर्णय फैला है बोर्डों है ही प्रान्तों नाम फैली है, ‘ विधान निर्णय के प्राधिकार है निर्णय निर्णय में जाता है ।’

उप उपरों है ही स्पष्ट है कि निर्णय निर्णय की निर्णय निर्णय है । उही प्रान्त के उपर में भारतीय निर्णय के प्राधिकारियों में, निर्णय है प्रस्ताव, ‘ फिर विधान प्रान्त है राष्ट्रीय स्तर के निर्णय, ‘ विधान निर्णय निर्णय फैला है, ‘ कहा है प्रस्तावित किया जाता है, ‘ निर्णयों की निर्णय विधान की, विधान की निर्णय प्रान्त की फिर प्रान्त द्वारा निर्णय फैला है ।

उप उपरों है ही स्पष्ट है कि निर्णय निर्णय की निर्णय निर्णय निर्णय

विचार-विनिमय करी हैं और जूनी के लिए काफी पैसों हैं । विचार-विनिमय में कहीं तो प्रचारकों का स्वागत किया जाता है और कहीं कहीं "पुलाव का कथ" का^{१६} के जगह अन्य बातों की उल्लेख करते जूनी हैं । राजनीतिक एक काली प्रचार विभाग का अनुशासन का यह प्रचारकों की पैर में पुलाव पूर्ण नींव का पुलाव कार्यक्रम पर करते हैं । सन् १९३३ ई० के सामान्य विभाजन में भारतीय कार्य के पुलाव विभाग का दो कालों के बीच विचारों कापरीके में १६ कालों सन् १९३४ ई० की विचार का का की सम्पादित करते किया था ।^{१७} कालों, पुलावों, प्रचारों, रीतियों, है राजनीतिक एक ही जगह बताते हैं प्रचार काली कार्य क्षेत्र का प्रचार का पुलाव कार्य का है प्रचारियों की सकलता की कालाकारों में प्रचार विचार ।^{१८}

संसार विचार का विभाजन सन् १९३३ ई० में विविध राजनीतिक कालों द्वारा प्रचार विभाग में प्रचार प्रचार विचारों के रूप कालों का कालीन कालीन काल ।

(१) प्रचार विभाग,

परीची, कालाकार और वापिक विचार का की कालों के लिए कालाकार कालों करता होता है । ——— काली पैर की पुलावों है साधारण कालाकार कालों के लिए, विचारों राजनीतिक एक काल काल-काल कालाकार कालाकार और कालाकार पैर कर रहे हैं । ——— राजनीतिक कालाकार और कालाकारों के साथ कालाकार कालाकार कालाकार कालाकार है । कालाकार और कालाकार पैर और प्रचार कालों में पैर काय है । कालों लिए काल काली पैर के काली कालाकार की कालाकार काल काल कालाकार ।"

का विचार

(हस्ताक्षर) कालाकार काली

काली विचारों - काल प्रचार कालों, काल कालों पर काल कालों ।^{१९}

(सन् १९३३ ई० कालीकालीकालों, दिल्ली)

(२) भाष्यों एवं कवियों,

जगदा उदर और पिछा उस कमर बगानी २४ और
२६ फुरतरी की चौकियाँ पुनाप की बरसभियाँ है विभिन्न पाठियों के
सं-विधि कण्ठों, गारों, नाचणों और सरस सरस के कुठ-रुप प्रसारों
है वाच्यीकृत की रहा है । ----- जगदी बापों का है यही और
मस्तकपूर्ण जगदा का है कि जगदी प्रिय में रचायी और जगदा, प्रगतिशील
जगदा जगदा ही का जगदा परस्पर विरोधी पाठियों के प्रतिनिधियों द्वारा
रचायी गयी जगदायी, जगदीर और प्रगतिवादी जगदायी बरसाद की ।-----
जगदाबाप पिछा और उदर की पिछाकर कुछ नीच सीधों में जगदा
भारतीय राष्ट्रीय कटिब के प्रगदायी पुनाप जगदा में नाम है ही है ।
ये कटिब के जगदी बापों और जगदीयों के प्रगदायी हैं । ----- बापका का
उन्हीं कमर की प्राप्ति सीमा, गरीबी जगदायी के प्रतिजगदी गरी की
बरसाद बगानी में जगदीय प्रगदायी हैं -----

बापका,

श्रीजगदीराज बापका

कुठ-रुप जगदा बाटें प्रिय, जगदाबाप

(३) " प्रिय की बगानी है उदर प्रिय कटिब की जगदा "

उदर प्रिय में विनाम जगदा का पुनाप फुरतरी, १९७४ में
रचि का रहा है । उस पुनाप पर न केवल प्रिय की बगानी, पुनापों की
विनाम जगदा प्रिय हैं । उस पुनाप प्रगदायी की जगदी है । पिछे जगदा ७१
के प्रिय जगदायी है पुनाप की जगदी के बाप बाप पुनाः प्रगतिवादी
विनाम जगदी जगदी जगदी जगदायी, पुनापों की जगदा
पुनाप के जगदा में जगदा रचि हैं । ----- जगदा पुनापों है जगदीर जगदा,
जगदा है जगदा जगदायी जगदा जगदा कटिब पाठियों का जगदा है । -----
जगदा में जगदा जगदायी न केवल जगदी प्रिय में है जगदा विनाम जगदायी हैं ।
----- जगदा की बगानी जगदा प्रिय जगदा प्रिय जगदा = जगदी जगदा

कर दी गयी है । ----- हमारा ही है उक्त नियम के अन्तर्गत
कृषि युक्त संस्थानों कि सामान्यतया परम्परागत बनाये गये, गरीबी
दूर होती, अन्तर्गत मिली गरीब उस राज्य की वास्तविक प्रगति के
होती। उस कार्य की उम्मीद के लिए कृषि का पुनर्गठन ही वास्तविक
पूर्ण अर्थव्यवस्था का आधार बनती है ।

कम निम्न

महतीय

केन्द्रित कृषि

अन्तर्गत, केन्द्रित अन्तर्गत, केन्द्रित अन्तर्गत अन्तर्गत
(क अन्तर्गत अन्तर्गत के नाम है)

केन्द्रित केन्द्रित अन्तर्गत, अन्तर्गत

(४) 'कम अन्तर्गत केन्द्रित अन्तर्गत'

कृषि अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गतों की अन्तर्गत
कृषि अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गतों का आधार
का अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत ।

कृषि १ अन्तर्गत अन्तर्गत २ अन्तर्गत

कृषि अन्तर्गत अन्तर्गत,

गरीबी अन्तर्गत केन्द्रित अन्तर्गत के अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत
अन्तर्गत, अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गतों की अन्तर्गत अन्तर्गत
अन्तर्गत अन्तर्गत, कम अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत के २० अन्तर्गत, १९०४ के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
का अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत केन्द्रित, केन्द्रित, अन्तर्गत, अन्तर्गत
अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत

(६) पिछनी कमीच पठा है - कभी पैर की ।

कहाँ पैरों । कुछ है कड़वी जीब । पिछनी बाऊ, कमावों की
पीट पर पीट, कमाव कमावों की बाईं पुनार । क्या हम का का पैर
कुछ-कुछ की पैरों रली ?

मेरे कमाव पैरों ।

मेरी जीनार पैरों ॥

जहाँ । कमावों परीसा की कड़ी है । कमावों
की बाईं है - बाऊ पिछनी बाऊ बाऊ की कड़ी है । कमावों
परिषद की पुनार है,

एक एक परीसाओं की कड़ी है कड़ी । जहाँ कमावों के
की कमावों की है । बाऊ का बाऊनीय कमाव का कमाव है । जहाँ पर
की कमाव पर कमाव कमाव कमाव है । कड़ी बाईं की पुनार है ।
कमाव पिछनी कमाव पर । कमाव कमावों है ॥

पिछनी बाऊ पिछनी

(कमाव बाऊ है कड़ी, पैरों)

(७) कमावों की बाईं

- कमावों में कमाव कमावों की बाईं
- कमावों परीसा कमावों की कमाव
- कमावों का कमाव के बाईं कमाव
- कमावों में कमाव के कमाव के बाईं

कमावों की बाईं

कमाव :

एक एक में कमावों के कमावों कमावों की कमावों कमावों
कमावों की कमावों के कमावों एक कमाव कमावों - कमावों
- कमावों -

(कमावों के कमावों के कमावों के कमावों)

(८) 'कम की बात कम चुने

कम नीति कम नीतिवर'

- कलकत्ता विचारणीय

कलकत्ता के घर उन्नीसवार की विचारणीय

(कलकत्ता बाजार के प्रेम, केसी)

(९) नाथी की है राखी पर बल्लर की पैर की समस्याओं का समाधान
कलकत्ता है - नाथी पर बल्लर विचार

- भारतीय प्रान्तीयता का कार्यक्रम -

- १- प्रान्तीयता की समस्याओं पर बल्लर बनाया बाजार । प्रान्तीयताओं
व बल्लर की समस्याओं के विचारों को बल्लर की समस्याओं की समस्याओं
- २- नाथी प्रान्तीयता की समस्याओं के विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।
- ३- बल्लर बनाया बाजार बल्लर बनाया बाजार ।
- ४- (कलकत्ता) प्रान्तीयता की समस्याओं के विचारों पर बल्लर बनाया बाजार
कलकत्ता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।

कलकत्ता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।
कलकत्ता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।

भारतीय प्रान्तीयता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।
कलकत्ता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।

(१०)

कलकत्ता विचारणीय

कलकत्ता

कलकत्ता

कलकत्ता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।

कलकत्ता के घर नाथी के घर की विचारों को बल्लर बनाया बाजार ।

अरीय प्रचार समिती के बकीरों के निम्नलिखित कुछ स्पष्ट होते हैं कि पुनाय विधान में राजनीतिक यह सभी सम्पूर्ण के अनुसार नीतिगत पर प्रकाश डाली है :-

- (१) विरोधियों के पिछानों, नीतियों एवं कार्यवाहियों के पुनर्निर्माण
- (२) राज्य की योजनाओं के कार्यान्वयन में सकलताओं एवं सकलताओं
- (३) विरोधियों के नवीन नीतियों
- (४) विरोधियों के नवीनीकृत कार्यों
- (५) विरोधी प्रचारकों के नवीनीकृत या अन्य पुनर्निर्माण
- (६) नवीन पुनर्निर्माण, व्यवस्थाओं, कार्यों एवं वास्तविकताओं
- (७) सभी यह के वास्तविक कार्यों
- (८) सभी यह के प्रचारकों के नवीन या नवीन के नवीनीकृत कार्यों
- (९) नवीनीकृत कार्यों के कार्यों के नवीन नीतिगत पुनर्निर्माण

अरीय समिती पर प्रकाश डालकर ही राजनीतिक यह यह वाता नहीं करते कि प्रचारकों उनके यह के नवीन या नवीन का निर्माण नवीन या निर्माण कर ही पर ही निम्न राज यह बहूत रहना । राजनीतिक यह के प्रचारकों प्रचारकों के बार-बार नवीनीकृत का नवीनीकृत प्रचार करते हैं और नवीनीकृत: हीन ही करते हैं । नवीनीकृत हीन के नवीन एवं नवीन के नवीनीकृत, प्रचारकों, वास्तविकता, यह के प्रचारकों नवीन यह के विरोधी निर्माणों के नवीनीकृत की नवीनीकृत करते हैं । यह प्रचार के नवीनीकृत के पुनर्निर्माण, नवीनीकृत एवं नवीन नवीन के हीन पर नवीन प्रचारकों के नवीनीकृत प्रचार ही करते हैं - हमें ' यह वास्तविकता', ' यह नवीनीकृत', ' नवीन नवीनीकृत', ' प्रचारकों', ' नवीनीकृत वास्तविकता' पुनर्निर्माण', ' प्रचारकों', ' नवीन के पुनर्निर्माण', ' नवीन नवीनीकृत' वास्तविकता के हीन में नवीनीकृत-निर्माण नवीन नवीन है ।

अरीय निर्देश प्रचार के नवीनीकृत के राजनीतिक यह नवीनीकृत

का वास्तविक किया गया। बताया भीरु नहीं, बलवान नहीं भी कहा। कमल समिति के महापितामहों ने एक स्वर से जीर्ण नहीं कहा तथा राष्ट्रीय कौशल के एक महापितामहों ने भीरु पारम्परिक विचारों को एक किया। बताया है कि जीर्ण नहीं भी कहा। उपरीकृत वास्तविकता है स्पष्ट है कि उपर्युक्त एक कला की राष्ट्रीय पुष्पावली की वास्तविकता को बनाया है और जो भी कला करने की कर कहा है काकि विदेशी कला नहीं कर पाये।

बाप महापितामहों की कला भीरु होने के लिए किन किन चीजों का उद्योग है ? के उपर में एक कठिन कौशलियों के महापितामहों ने १६ प्रतिशत विद्यालय १४, १ प्रतिशत वास्तविक, ६, १ प्रतिशत वास्तविक ६, १ प्रतिशत वास्तविक केरनाम का उद्योग, ६, १ प्रतिशत बन्धु बंधों की वास्तविक ६, १ प्रतिशत नैतिकता द्वारा उद्योग ६, १ प्रतिशत उनके महापितामहों कार्य करते ४, ७५ प्रतिशत प्रतीक ४, ७५ प्रतिशत वास्तविक तथा ४, ७५ प्रतिशत अपने कला के वास्तविक का विचार बताया। कमल समितियों के महापितामहों ने ४४, १ प्रतिशत विद्यालय, २२, २५ प्रतिशत बन्धु बंधों की वास्तविक २२, २५ प्रतिशत नैतिकता द्वारा उद्योग ११ प्रतिशत वास्तविक ११ प्रतिशत वास्तविक केरनाम का उद्योग तथा ११ प्रतिशत वास्तविक वास्तविक का उद्योग बताया। वही प्रत्येक के उपर में राष्ट्रीय कौशल के महापितामहों ने ३० प्रतिशत विद्यालय २० प्रतिशत वास्तविक, २० प्रतिशत बन्धु बंधों की वास्तविक १० प्रतिशत वास्तविक १० प्रतिशत नैतिकता द्वारा उद्योग तथा १० प्रतिशत उद्योगकर्ता के उद्योगकर्ता एवं कार्य का उद्योग बताया। उपरीकृत उद्योग का महत्व प्रत्येक एक प्रत्येक विद्यालय बन्धु बंधों की वास्तविक वास्तविक नैतिकता द्वारा उद्योग तथा वास्तविक केरनाम का उद्योग है।

महापितामह के वास्तविक उद्योग है प्रत्येक वास्तविक है ?

के उपर में एक कठिन कौशलियों के महापितामहों ने ३४ प्रतिशत वास्तविक उद्योग २२ प्रतिशत वास्तविक ११ प्रतिशत विद्यालय, ११ प्रतिशत वास्तविक ११ प्रतिशत नैतिकता द्वारा उद्योग तथा ११ प्रतिशत वास्तविक विद्यालय पर कला किया। वही

[illegible]

काकाब नली में किसी की छात्र की स्वाधिक छत्र मानते हैं ?
 के छत्र में छात्र काचित कौटो के स्वाधिकारियों में वह के नेता, "छात्राणा"
 "काचित के नेता" किसी छात्र कार्य किया हो, "वेष्ट, पुष्टि कीचित कता मुक्तिया"
 की छात्र की स्वाधिकार पण्डित छत्रिय के स्वाधिकारियों में प्रभावशाली स्वाधिकार
 कनी निर्वा कता काचित नेता की छात्र स्वाधिकार । इन उपरों के वह कथ्य वीर

[illegible]

एक के मध्य कीर्ती का उपाचरण ईश्वर अङ्गित, भारतीय जनता का स्वतंत्र चर्चा का एक १९३१ ई० का 'महाभारत' है ।

कीर्तन विधान का बीच में एक १९३३ के निर्देश में भारतीय ग्रामिण एक, ईश्वर उपाचरणीय एक का मुक्ति का मुक्ति का विधीय कीर्ती कीर्ती का एक उपाचरण है किन्तु प्रत्यक्ष के रूप में कि ईश्वर का एक एक रूप है । कीर्तियों के अन्तर्गत सभी एक के प्रत्यक्ष की विधीय करने के लिए 'कीर्तन प्रत्यक्ष' किन्तु एक या निम्न प्रत्यक्ष के रूप में प्रभाव स्थायी में उपाचरणीय है । ऐसा क का वाता है कि एक १९३३ ई० के विधान का निर्देश में कि ईश्वर नाम विन्ध निर्देश प्रत्यक्ष की उपा अङ्गित ने 'कीर्तन प्रत्यक्ष' के रूप में एक विधा या कीर्ती विन्ध' (ईश्वर) वापि के मन्त्रालयों की कमी और ईश्वर कर है । वास्तव में कि इन विन्धों के मत विधीय रूप है भारतीय ग्रामिण एक के रूप में जाने की वाता की ।^{१९}

कीर्तन वास्तव विधीय प्रत्यक्ष विन्ध की स्थिति में का वाप की उपाचरण का करी १ के उपाचरण में वाता अङ्गित कीर्तियों के वापि-वापि १९ प्रचार कीर्तन, 'मुक्ति वापि' की का की, 'विधी' एवं रिश्वरणी का वाप हाथी और वाप कीर्ती की विधीय^{२०} प्रत्यक्ष के वापि की कीर्ती है और वेता की है, 'वापि' के वापि वापि है ।^{२१} कीर्ती वापि प्रत्यक्ष है वापि-वापि^{२२} की मुक्ति की वापि । ऐसा प्रतीत होता है कि हमें उपाचरण (एक) वापि, प्रचार कीर्तन एवं वापि की वापि वापि एवं मुक्ति वापि की वापि है । वही प्रत्यक्ष के उपाचरण में वापि वापि के वापि वापि १९ कीर्तन प्रत्यक्ष, 'मुक्ति प्रचार'^{२३} वापि प्रचार एवं कीर्ती तथा 'कीर्तन कीर्ती' की मुक्ति की वापि वापि वापि है कि 'वापि प्रचार एवं' के वापि वापि कीर्ती वापि वापि वापि के वापि वापि में नहीं वापि प्रतीत होता कि वापि की उपाचरण का वापि वापि है । कीर्ती कीर्ती के वापि वापि १९ कीर्तन वापि की स्थिति वापि वापि, प्रचार एवं कीर्ती, वापि वापि नहीं करी 'कीर्ती वापि वापि वापि है कि ईश्वर अङ्गित के बीच भारतीय ग्रामिण वापि वापि ।^{२४}

(सन् १९७४ ई० के विधान तथा विधानों में भारतीय जनता या जनता का हिस्सा न हो
उसी विधान के अन्तर्गत के प्रत्येक कानून में भारतीय जनता का हिस्सा
राज्य में बनने दिया)

‘जनतावादी’ या ‘जनतावादी’ की धारणाओं का विवरण
दिया । सन् १९७४ ई० के विधान तथा विधानों के अन्तर्गत में यह धारणा
केन्द्रों की धारणाओं के अन्तर्गत (विधानों के अन्तर्गत)
राज्य का हिस्सा है या नहीं । सन् १९७४ ई० के विधान तथा विधानों में जनता
की पूर्ण राशि में जनताओं में यह धारणा दिया गया कि यदि जनता ही भारतीय
जनता का हिस्सा नहीं होती तो जनता का प्रत्येक हिस्सा ही जनता ही
जनता ।^{१२} जनता का विवरण है यह स्पष्ट होता है कि जनता की विधि का
प्रत्येक के विरुद्ध में राजनीतिक यह सभी जनतावादी कानूनों, प्रत्येक,
प्रत्येक धारण के अन्तर्गत कानूनों, कानूनों, कानूनों, प्रत्येक के द्वारा नैतिक
तथा नैतिक प्रत्येक कानूनों का प्रत्येक कानूनी है ।

विधानों के अन्तर्गत में विधि की प्रत्येक के अन्तर्गत
जनता का विधानों में है विधानों की सभी विधि विधानों के अन्तर्गत की जनता
जनता का विधानों के अन्तर्गत की जनता है । राजनीतिक यह जनतावादी की जनता
की है यह विधान का हिस्सा है विधानों के अन्तर्गत विधानों के अन्तर्गत
जनता के अन्तर्गत, जनता के अन्तर्गत, जनता के अन्तर्गत तथा जनता का विवरण दिया
जाता है । सन् १९७४ ई० के विधानों के पूर्ण के विधानों में यह के प्रत्येक का
नाम तथा जनता के अन्तर्गत की विधानों का नाम तथा । यह है जनता के अन्तर्गत में जनता के अन्तर्गत
कानूनी या नैतिक है के विधानों का ही जनता के अन्तर्गत की जनता राजनीतिक यह विधानों
कानूनी या नैतिक का हिस्सा है । यह विधानों की जनता के अन्तर्गत का विधानों
कानूनी है ।

जनता की विधि के अन्तर्गत राजनीतिक यह विधानों
विधानों की विधानों कानूनी है की विधानों के अन्तर्गत, जनता के अन्तर्गत, जनता के अन्तर्गत
जनता के अन्तर्गत यह के अन्तर्गत, जनता या जनता के अन्तर्गत है । जनता के अन्तर्गत का प्रत्येक

परीक्षित कर दिया जाता है।^{१०} परिष्कृत विमान का विनिर्माण १९४३ ई में राखीय विभाग में हुआ।^{११} विमान का विनिर्माण करने वाले उद्योगों की लक्ष्मि विभाग के परामर्शियों की सलाहों एवं अनुमान के आधार पर उद्योग विभाग दिया जा रहा है।

विमान का के पिछले विनिर्माण (१९४३) में अनुमानः वापके कद का विमान का अन्य हुआ चीना १ के अंदर में अंतर कटिब कीटी के एक विचार परामर्शियों में बना रही, एक विचार में १० हजार रुपये का है एक विचार में २० हजार है २५ हजार रुपये का^{१२} बताया। वहीं प्रत्येक के अंदर में नष्ट विनिर्माण के परामर्शियों में २५०० रु०, ५ हजार रुपये ६ हजार रुपये का ६ हजार रुपये बताया। सीरीय कीट के परामर्शियों में ६ हजार रुपये ६ हजार रुपये = हजार रुपये का १० हजार रुपये^{१३} बताया। उपरोक्त विचारों के अन्तर्गत कि कटिब के परामर्शियों में अनुमान राशि का और वर्गीकृत है और कटिब प्रत्येकी का अन्य के वर्गीकृत है। का है नष्ट अन्य भारतीय वर्गीकृत के प्रत्येकी का रहा। कटिब एवं भारतीय वर्गीकृत के प्रत्येकी का वर्गीकृत अनुमान विनिर्माण वर्गीकृत का अन्य चीना है बाहर है किमें कटिब का ही उद्योग चीन हुआ वर्गीकृत है।

यह परामर्श कि कि वर्गीकृत है और किनी प्रत्येकी पूर्ण चीनी १ के अंदर में कटिब कीटी के परामर्शियों में ५० प्रतिशत है एक प्रतिशत एक कद एवं कद के वर्गीकृत है प्रत्येकी बताया। कि वर्गीकृत कि में कि २०-२५ हजार रुपये का अनुमान कि उद्योग पूर्ण कटिब कद है ही बताया। नष्ट विनिर्माण के परामर्शियों में ५० प्रतिशत = ४५ प्रतिशत एक कद है कि प्रत्येकी उद्योग विनिर्माण, वर्गीकृत, वर्गीकृत वाप है प्रत्येकी बताया। सीरीय कीट के परामर्शियों में ५०-५० प्रतिशत कद का है अन्य वर्गीकृत, वर्गीकृत, वर्गीकृत एवं प्रत्येकी है प्रत्येकी बताया। एक विचार है अन्तर्गत कि कटिब अन्य चीनी वर्गीकृत की चीना वर्गीकृत प्रत्येकी की वर्गीकृत परामर्श प्रत्येकी वर्गीकृत है।^{१४} कुछ प्रत्येकी कटिब कद द्वारा प्रत्येकी के अंदर ही वर्गीकृत परामर्श में है अन्य वर्गीकृत पर ही कुछ का वर्गीकृत है।^{१५} का अन्य कद विनिर्माण में अन्य वर्गीकृत चीना है का

कि प्रत्यक्षी की यह पुनः विचार ही था कि विना ही अन्य की किन्तु विचारों में एकता नहीं मिली ।

बिरोधी यह है किना अन्य किना ? नाम और कारागि का अनुसंधानिक ? के उतर में यथा कतिपय कीटियों के पदाधिकारियों ने भारतीय ग्रामिण यह ८ हजार है २० हजार रुपये का कया विना बीछ १४ हजार की की रुपये है, भारतीय काल ५ हजार है १५ हजार रुपये का कया विना बीछा १० हजार रुपये है और कीटन कतिपय : १० हजार है २० हजार रुपये का कया विना बीछा १४ हजार का की कया रुपये है । एक पदाधिकारी ने कहा कि बिरोधी यह बात है कि पैसा अन्य नहीं है ।^{४२}

कया कतिपयों के पदाधिकारियों ने कहा कतिपय -

२० - ३० हजार रुपये विना बीछा २५ हजार का की रुपये है, भारतीय ग्रामिण ५-१५ हजार रुपये विना बीछा १० हजार का की रुपये है यथा कीटन कतिपय १०-१५ हजार रुपये , विना बीछा १० हजार पाँच की रुपये है कया । भारतीय कीटन के पदाधिकारियों ने, कहा कतिपय : १० -२५ हजार रुपये, विना बीछा २० हजार की की रुपये है । भारतीय काल : ५-१२ हजार रुपये विना बीछा ६ हजार रुपये है यथा कीटन कतिपय : १५-२५ हजार रुपये विना बीछा १५ हजार पाँच की रुपये है, कया ।

पदाधिकारियों द्वारा की यह बात बिरोधी यह है किनय में विचार के विचार अन्य की यह कारागि का प्रत्यक्ष विचार का अवलोकन करी है यथा कतिपय का अनुसंधानिक अन्य २०, ४२ हजार रुपये, कीटन कतिपय का १५, ६ हजार रुपये ; भारतीय ग्रामिण यह का १०, ७२ हजार रुपये यथा भारतीय काल का ८, २ हजार रुपये का है । का: यह अनुसंधानिक ही का है कि यथा कतिपय ने का है किनय का भारतीय काल ने का है का का कीटन विचार का विचार १५०० की में अन्य किना । का कारागि किन-किन कायों है और किना प्राप्त हुई की ? के उतर में किन भारतीय राष्ट्रीय कतिपय (यथा) के उतर एक पैसा भारतीय काल के उतर यह, कया, का कीटन यथा प्रत्यक्षी , भारतीय ग्रामिण

पक्ष के प्रत्याभिकारियों की श्रेष्ठि में	पक्षों का नाम		मजदूरी (रुपय में)
	पक्ष का नाम	पक्ष विस्तार (रुपय में)	
प्राथमिक कमीटी (संघ कमीटी)	भारतीय प्रोफेसर (क)	८ - २०	२०. २
	भारतीय कर्मचारी	५ - १५	१०. ०
	संघ कमीटी	१० - २०	२०. ०
	संघ कमीटी	१० - २५	२५. २५
मजदूर समिति (माध्यमिक)	संघ कमीटी	२० - ३०	२५. ०
	भारतीय प्रोफेसर	५ - १५	१०. ०
	संघ कमीटी	१० - २५	२०. ५
	भारतीय कर्मचारी	२. ५ - ६	५. ६ २५
परीक्षीय कमीटी (भारतीय संघ कमीटी)	संघ कमीटी	१० - २५	२०. ५
	भारतीय कर्मचारी	५ - १२	१०. ००
	संघ कमीटी	१५ - २५	२५. ५
	भारतीय प्रोफेसर	५ - १०	०. २५

२ - राजनीतिक निष्पत्ति - प्रभाव

निष्पत्ति कुछ है किन्तु क्या प्रभाव का तब कारण होती है किन्तु
 एवं पूर्व राजनीतिक यह संस्थाओं द्वारा ली जानेवाले राजनीतिक निष्पत्तियों की अपनी
 लक्ष्य नीतियों के अनुसार होती है किन्तु प्रभाव होती है ।^१ यद्युक्त निष्पत्ति-निष्पत्ति
 मानवीय जीवन का तब तब है ; तब तब राजनीति किन्तु न निष्पत्ति प्रभाव का निष्पत्ति
 होती रहती है, राजनीतिक निष्पत्ति-निष्पत्ति अपनी संस्था निष्पत्ति प्रभाव का एक नाम
 है किन्तु अनेक राजनीतिक जीवन में जानेवाली संस्थाओं, संस्थाओं का परिणाम
 के प्रथम प्रतिक्रियाशील होता है ।^२ किन्तु का एवं किन्तु है कि एक का
 प्रभाव होता है, प्रभाव तब है किन्तु तब तब का कारणों पर राजनीतिक निष्पत्ति
 होनेवाली संस्थाओं (प्रभाव प्रभाव है किन्तु तब) में जानेवाले निष्पत्तियों की राजनीतिक
 यह प्रभाव होती है ।

निष्पत्ति क्या है किन्तु है कि सामुहिक उत्पत्ति के कारण
 क्या सामुहिक वास्तवों के अधिकतम कारण के लिए प्रभाव होती है ।^३ ऐसी स्थिति
 में किन्तु कुछ है कि राजनीति संस्थाओं की वास्तवों का अधिकतम तब होती
 की ओर कदम होती रहा है किन्तु सामाजिक, जातीय, सामुहिक, वैश्व ,
 वैश्विक एवं राजनीतिक वास्तव निष्पत्तियों के किन्तु तब में राजनीतिक निष्पत्ति प्रभाव
 प्रभाव किन्तु है । निष्पत्ति- निष्पत्ति यह प्रभाव है कि सामाजिक तब है
 परिणामिक क्या किन्तु प्रभाव किन्तु अधिकतम निष्पत्तियों (उत्पत्ति) की उत्पत्ति की
 होती रहती है किन्तु निष्पत्ति है किन्तु तब तब के लिए किन्तु तब तब का कार्य
 के तब में निष्पत्ति निष्पत्तियों के कारण उत्पत्ति होती है । राजनीतिक निष्पत्ति क्या
 के द्वारा उत्पत्तियों के किन्तु तब तब तब में है किन्तु, तब तब तब, उत्पत्ति
 क्या तब तब निष्पत्ति उत्पत्ति है । राजनीतिक निष्पत्तियों की प्रभाव है किन्तु के
 उत्पत्ति तब तब तब तब का उत्पत्ति क्या किन्तु एक उत्पत्ति में उत्पत्ति तब
 किन्तु तब तब प्रभाव होती है ।

राजनीतिक निष्पत्ति की संस्था - है किन्तु तब तब तब तब
 पर राजनीतिक निष्पत्ति होती है किन्तु राजनीतिक निष्पत्ति की संस्था होती है । किन्तु

कानून, न्याय, प्रशासन तथा संरक्षण की दृष्टियों से प्रमुख है। कानून की राजनीतिक कठ विभाजिका के अन्तर्गत के विभाजित में प्रभावित करी है यदि कठ के अन्य प्रभावक बाध, कर्म, नाश, बाधित कर, विना एवं राजनीतिक क्षेत्र तथा अन्य संरक्षण की है।

राजनीतिक कठ विभाजिका द्वारा विभिन्न बाधित विधियों की प्रभावित करने के विभिन्न की प्रमुख एवं है विभाजित में प्रभावित प्रभाव करी है। उक्त क्षेत्र विभाजित कठों के विभाजितों में विभिन्न प्रभावित के विभिन्न होने की बाध प्रमुख एवं होती है। उदात्तक बाधित की प्रभावित में कठ के विभिन्न अन्तर्गत में है की कठ कठ कानून 'उत्तरीय क्षेत्र' का कानून करता है। उत्तरीय क्षेत्र कानून कठ के प्रभावित पर विभाजित कानून प्रभावितियों का प्रभावित करता है। कानून कठ के कानून प्रभावितियों के विभाजित प्रभावितों में लक्ष्यता या बाधित कानून रखने के लिए उपस्थितों तथा अन्तर्गतों का कानून राजनीतिक कठ के बाध विभाजित करता है। राजनीतिक कठ कानून उत्तरीय प्रभावितियों की बाधित रखने की प्रमुख बाधित करी है विभिन्न क्षेत्र कानून प्रभावित की बाध प्रमुख प्रमुख करी प्रमुख है। कानून के बाधित उत्तरीय प्रभावित कठ का प्रभाव बाधित है कर क्षेत्र है क्षेत्र कि की बाधित बाधित क्षेत्र में कानून १९६० ई. में उत्तर प्रदेश विभाजित कानून में बाधित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रभाव कर कानून कठ कानून।

कानून प्रभावित विभिन्न राजनीतिक विधियों की प्रभावित करना बाधित है कानून कानून कानून कानून कठ की विभाजित विधियों के बाधित कानून कानून की प्रभावित करी है विभिन्न कानून बाधित कठित है।^{५१} कठ की राजनीतिक कठ के कानून राजनीतिक विधियों के पूर्व या प्रभाव कानून क्षेत्र है विभिन्न प्रभावित प्रभावित कठित के की बाधित बाधित बाधित एवं बाधित विभाजित कानून उत्तर प्रदेश बाधित कानून १९७५ का कानून कानून के प्रभावितों की प्रभावित है प्रभावित प्रभावित के लिए कानून है प्रभावित कानून है।^{५२} राजनीतिक कठ का प्रभाव बाधित कानून विभाजित में प्रभावित की बाधित प्रभावितों का प्रभाव बाधित कानून बाधित प्रभावित कानून है।

एक किसानिका किसी विषय पर विवेचन-विमर्श करते होती है एवं राजनीतिक कर्तों के विचारों पर कक्षाविधि, नेता, कार्यकर्ता, क्रांतिकारी, कार्यकर्ता, किसानों की अपनी नीतिगत नीतियों के अनुसार उसी वाक-विवाद है, प्रस्ताव, टीका, टीका (कभी) वापि उत्तरों है एवं वापि का विवरण प्रस्तुत होती हुए सभी बहुत राजनीतिक- विमर्श प्रभाव करते हैं प्रभाव करते हैं । किन्तु यह का किसानिका में बहुत सीमा है किन्तु उही के कर्त में सीमा है, यदि बहुत प्रभाव करने के लिए किसी अन्य कर्त है सीमा की सीमा है एवं सीमा की सीमा सीमा रहने के कर्त की स्वर किन्तु सीमा ।

किसानिका में बहुत स्थापित करने के लिए परस्पर विरोधी विचार वारावाही कर्त की वापि में मुख्य अङ्गुली (Bell and Socratic Joke) का है कि किसान प्रमाण उपर प्रविष्ट की किसानिका में एवं १९६० ई० में भारतीय कर्तों एवं भारतीय कार्यवाही कर्त का मुख्य किसान कर्त का कर्त फल है । किन्तु यह का किसानिका में बहुत सीमा किन्तु वापि का विरोधी कर्त की प्रविष्ट किसानिका है किन्तु सभी वाक-विवादवापि कर्तों की एवं कर्तों की का वापि है । राजनीतिक कर्तों द्वारा किसानिका में बहुत - स्थापित का प्रमाण- कर्त है प्रमाण राजनीतिक किन्तु प्रमाण का किन्तु उत्तर सीमा है ।

संसारिक प्रमाणी में किसानिका के वन्द्य कर्त स्थापित है राजनीतिक कर्त किन्तु की कार्यवाही करने का वापि कार्यवाही पर एवं किन्तु प्रभाव कर्त है किन्तु कर्तों के एवं में नीति परिचय के जैक किन्तु है वन्द्य एवं कर्तों की एवं किन्तु (टीका) सीमा है । कार्यवाही की किन्तु में राजनीतिक कर्त के सीमा , प्रमाण एवं अन्य टीकावाही किन्तु सीमा है किन्तु कारण कर्त प्रमाण सीमा , टीका, प्रमाण वापि में किन्तु सीमा है । राजनीतिक कर्त किसानिका एवं कार्यवाही के वन्द्य है सीमा है । कार्यवाही में प्रविष्ट किन्तु पर राजनीतिक कर्त किन्तु कर्त है वापि रक्ता है किन्तु है की राजनीतिक किन्तु के अनुसार सीमा है और कर्त प्रमाण पर पूर्ण वापि सीमा है । ऐसा किन्तुवाही किन्तु है कि राजनीतिक कर्त का सीमा एवं राजनीतिक किन्तुवाही किन्तु कर्तों का प्रमाण का वापि है ।

यह के अंदर में कार्य करीबान कर अंदर के पर की प्रभाव कर दिया है तो उन्हीं का का परिलक्षित होता है ? के अंदर में पञ्चक काष्ठिक क्षीयों के फलप्रकारितों में 'कम-कर्म', 'कर्मकार-मुक्ति', अंदर में अन्ध विषी अन्ध का अन्ध^{१३}, 'अन्ध का अन्धकार', 'अन्धकार पर अन्ध' कार्यप्रकारों पर अन्ध नहीं, 'का अन्ध अंदर में अन्ध', अन्ध अन्ध का कार्यप्रकारों के अन्ध^{१४}, अंदर में का अन्ध, कार्यप्रकारों का अन्ध स्वार्थ के अंदर प्रतीत^{१५} अन्ध^{१६} अन्ध उन्हीं के अन्ध है कि अन्ध में अन्ध के परभाव अन्ध राक्षसीयिक विषयिक अन्ध के परभाव यह के अंदर का प्रतीत विषी अन्धों के अंदर अन्ध होता है । अन्ध अन्ध यह स्पष्ट नहीं ही जाता कि वे अन्धों यह की प्रभावित करने अन्ध हैं का कि अन्ध यह है प्रभावित होना अन्ध ।

अन्धों प्रत्य के अंदर में पञ्चक क्षीयों के फलप्रकारितों में 'अन्धों में अन्ध नहीं', 'अन्धों अन्ध का, अन्धों का अन्ध', 'अन्धों अन्ध का अन्ध' है^{१७} अन्ध अन्ध नहीं, अन्धों अन्धों अन्ध यह के अन्धों के अन्धों का अन्ध अन्ध अन्धों के अन्धों का प्रभाव अन्धों है । अन्धों अन्धों के फलप्रकारितों में उन्हीं प्रत्य के अंदर में का अन्ध का, अन्धों अन्धों है अन्धों का अन्धों की अन्ध अन्ध^{१८}, 'अन्धों अन्धों', 'अन्धों के अन्धों कार्य नहीं', 'अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों है, अन्धों अन्धों अन्धों हैं अन्धों अन्धों अन्धों हैं^{१९} अन्धों । अन्धों अन्धों है ही यह अन्धों अन्धों की अन्धों है कि अन्धों के अंदर प्रभावितों ही अन्धों है अन्धों अन्धों अन्धों की अन्धों का अन्धों की अन्धों है । यह अन्धों अन्धों प्रत्य है कि अन्धों अन्धों अन्धों के अन्धों की अन्धों अन्धों राक्षसीयिक विषयों की अन्धों अन्धों प्रभावित करता है । अन्धों राक्षसीयिक विषयों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों के अन्धों अन्धों अन्धों के अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों है ?

राक्षसीयिक विषयों के अन्धों विषयों अन्धों के अन्धों अन्धों हैं अन्धों अन्धों अन्धों १८७०-७५ में अन्धों अन्धों में ही अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों अन्धों, वे अन्धों अन्धों अन्धों हैं । अन्धों ?

कीर का ? किं ज्ञ है ? उन्हीं के अनुसार निम्न प्रमाण देना । प्रमाण के अधिकारी एवं कर्मचारी राजनीतिक विषयों प्रमाणित करने के अन्तर्गत राज्य का अनुसार निम्न विषयों के विभिन्न राजनीतिक वर्गों के प्रमाणित करने लगे हैं । अनुमान (छात्राध्य), अनुमान (चरित्र) निम्न (कीटा) अनुमान, अनुमान, विमुक्त-अनुमान, अनुमान विमुक्त, अनुमान की माधुर्य, अनुमान, अनुमान, अनुमान (अनुमान) अनुमान, अनुमान का विषय विषयों के अन्तर्गत प्रमाणित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अनुसार निम्न विषयों की राजनीतिक का प्रमाणित करने हैं ।

राजनीतिक वर्ग के नेता उन्हीं कर्मचारियों के का अधिकार करने का कर लेते हैं ? के अन्तर्गत का अधिकार कीटा के अधिकारियों के का अधिकार, अनुमान अधिकारियों के अधिकारियों के का अधिकार कीटा कीटा कीटा के अधिकारियों के का अधिकार ' का' का विषय का अधिकार ' का' का नाम लेता । उन उन्हीं के अन्तर्गत है कि प्रमाण द्वारा उन्हीं कर्मचारियों राजनीतिक विषयों की का अनुमान का अधिकार के प्रमाणित करता है । के निम्न विषयों में अनुमानों की हैं का अधिकार का अधिकार का करता है ।

का का अनुमान है अनुमान है कि राजनीतिक वर्गों के कारण अनुमान करने अनुमानों की अनुमान का रही है ' के अन्तर्गत का अधिकार कीटा, अनुमान अधिकारियों का कीटा कीटा के अधिकारियों के का अधिकार ' का' का । उन्हीं अनुमान है कि राजनीतिक वर्ग अनुमानों के अनुमान का अनुमान विषय है । अनुमानों एवं अनुमान विषय मुख्य कार्य राज्य में अनुमानों की अधिकार का अनुमानों की अनुमान की अनुमानों है का करना है , उन अनुमानों पर राजनीतिक वर्ग की अनुमानों के अनुमान अनुमान अनुमानों की अनुमान का अनुमान करने लेते हैं तथा का अनुमान करने अनुमानों की अनुमान का रही है । का राजनीतिक वर्ग अनुमानों की अनुमान है अनुमान करने का अनुमान लेते हैं ? नहीं अनुमान का अनुमान के अनुमान अनुमानों के अनुमान में राजनीतिक विषयों की अनुमान लेते हैं ।

वास्तुनिरीकरण का प्रक्रिया है किसे अतिदृष्ट तथा अनिष्ट दुष्टियों का निवृत्तन किया जाता है । वास्तुनिरीकरण की प्रक्रिया , आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, प्रौद्योगिक , सांख्यिक वैज्ञानिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में आर्थिक क्षेत्रों में होती रहती है किन्तु प्रभाव एक ही हीन पर भी पड़ता है । यहाँ पर राजनीति के क्षेत्र में होनेवाले वास्तुनिरीकरण में राजनीतिक क्षेत्रों की भूमिका पर ही विचार करना चाहिए है । अतिदृष्ट तथा अनिष्ट राजनीतिक दुष्टियों का निवृत्तन राजनीति का वास्तुनिरीकरण है । वर्तमान युग में राजनीतिक क्षेत्रों की सामाजिक प्रभावित करने की क्षमता बढ़ा में उत्पन्न करना, सामाजिक क्षेत्रों पर अधिक का प्रभाव करना, क्षेत्रों एवं राज्यों के विकासकरण की प्रोत्साहन देना , नई विवेचनाओं को स्वीकार करना, जनता के आधार पर राजा का प्रभाव या त्याग करना, नवीनतम तकनीकों से कक्षाधारण की सामाजिक करना यदि कक्षागत भूतलों की प्राप्ति करनेवाला दुष्टिहीन बन का में उत्पन्न करने में राजनीतिक क्षेत्रों की प्रमुख भूमिका है ।

सह० पी० एम्. एल० के अनुसार राजनीतिक जाग्रतकीकरण के तीन महत्वपूर्ण चरण हैं १- जागरण की शुरुआत करना - जहाँ परंपरागत सामूहिक, सांस्कृतिक, और राष्ट्रीय राजनीतिक जागरणस्थितियों का प्रतिस्थापन एक व्यापक राष्ट्रीय राजनीतिक जागरण के द्वारा होता है। २- विवेकीकरण और चिंतनीकरण - इसके अन्तर्गत सभी राजनीतिक कार्य में विवेक प्रियतम बनाया है तथा चिंतन और कार्यों का उन कार्यों की प्रेरणा देने के लिए किया गया है। ३- राजनीतिक मान प्रकाश में आना - जहाँ समाज का प्रत्येक वर्ग राजनीति में भाग लेता है।

राष्ट्रीयता का अर्थ यह नहीं है कि हमें अपने देश, जाति, धर्म, भाषा की रक्षा करनी है। राष्ट्रवाद का अर्थ यह है कि हमें अपने देश के लोगों की रक्षा करनी है। हमें अपने देश के लोगों की रक्षा करनी है। हमें अपने देश के लोगों की रक्षा करनी है।

मनुष्य ज्ञानि धरार का उत्तिष्ठ ज्ञानी है उनी उनी हितों के लिए मुक्ति वस्तुओं की कल्प किया है वास्तव तत्ता के लिए उत्साहपूर्ण, प्रवृत्त मनो, चिकित्सा शास्त्री राजनीतिक सुधारों एवं संस्थाओं का उद्भव एवं विकास उक्त प्रत्यक्ष ज्ञान है । मनुष्य द्वारा निर्मित उपकरणों का उद्भव उनी हितों की सुरक्षा है । पूर्व है मनुष्यिक तत्ता का वाचिष्कार मनुष्य के हितों की प्रगति का विस्तार है । कल्याणकारी राज्य की भावना ने क्रांतिकारी देशों में राजनीतिक क्रांति के माध्यम में वास्तविक मुक्ति किया है । राजनीतिक क्रांति का यह कार्य है कि वह प्रथम माणविक के सर्वोच्च हितों में है वास्तविक हितों का अभिव्यक्ति करे और जी संस्थापित करने के लिए राजनीतिक विचारधारा के समुचित प्रसार करे ।

कार्यक्रमिक विधि की व्यवस्था है। हमें यह स्पष्ट करना
राजनीतिक दल की जीवन दिव्य व्यवस्था प्रणाली है। 'व्यक्तिगत' क्या लोगों के
द्वारा राजनीतिक निर्णय निर्धारणों के अन्तर्गत विधि विधान है। यदि की जाती है
हम जो विधि व्यवस्था करते हैं।¹⁴ राजनीतिक निर्णय निर्धारणों के साथ एक
या उनके द्वारा एक एक व्यक्ति या लोगों की प्रणाली के अन्तर्गत व्यवस्था है।¹⁵ व्यक्तिगत
व्यवस्था है। व्यक्तिगत व्यवस्था, किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त

आधीनता, किसी या अधिकार की विनाश प्रवृत्ति न हो पाये।

आ: नीति निर्माण का कार्य अत्यन्त विवेकी, व्युत्पत्ति, विचार्य चीजों का विस्तार प्राप्त नेताओं के द्वारा किया जाता है। उही नीति निर्माण की 'चिन्तन' की रीति की ओर लक्ष्य है कि जिससे कि 'व्युत्पत्ति' नहीं की सामान्य नीति निर्माण में संश्लेषण करने की प्रिया की चिन्तन प्रवृत्ति है।^{१०} ऐसा कि का प्रवृत्ति में विर की विचारणा है स्पष्ट है कि चिन्तन की प्रिया विचार का निर्माण स्तर पर नहीं होती है न ही यहाँ की राजीय नीति, मण्डल विधि या मंडल कानून नीतियों की अधिकार की है काकि स्थानीय विचारों के लिए स्वीकृति होनी चाहिए।

कार्यक्रम कि के तीन तीन है कार्य कार्य के द्वारा पुर है : के अन्त में मंडल कानून नीतियों के कार्यान्वयन में 'व्युत्पत्ति' का निर्माण, 'विचारों की व्यापक एवं सामान्य' लक्ष्य मंडल कानून विचार के सम्बन्धों की अन्त केन पिछाना^{११}, 'राज्यीय लक्ष्य की लक्ष्य', 'केन का प्रिया का विचार' ४० लक्ष्य प्रिया नीतियों में कार्यान्वयन करना तथा 'जावान है व्युत्पत्ति का निर्माण करना' बताया। मण्डल विधियों के कार्यान्वयन में उही प्रवृत्ति के अन्त में, विचारों की स्थापना, 'निम्न का पुन निर्माण', 'राज्यीय लक्ष्य का लक्ष्य', 'कीर्ति की' ^{१२} 'मानव सम्बन्ध' तथा 'पुन विचारण में पुनर्निर्माण की लक्ष्य' बताया।^{१३}

राज्यीय नीति के कार्यान्वयन में 'व्युत्पत्ति' लक्ष्य प्रिया की स्थापना, 'मंडल विचारों की रीति तथा नीति, 'राजीय प्रिया की स्थापना, 'लक्ष्य का लक्ष्य', 'राज्यीय लक्ष्य के अन्त का स्थापना' ४० लक्ष्य प्रिया नीतियों में कार्यान्वयन करना तथा 'जावान है व्युत्पत्ति का निर्माण करना' बताया। मण्डल विधियों के कार्यान्वयन में उही प्रवृत्ति के अन्त में, विचारों की स्थापना, 'निम्न का पुन निर्माण', 'राज्यीय लक्ष्य का लक्ष्य', 'कीर्ति की' ^{१२} 'मानव सम्बन्ध' तथा 'पुन विचारण में पुनर्निर्माण की लक्ष्य' बताया।^{१३}

अन्त में उहाँ है स्पष्ट है कि मंडल कानून नीतियों के कार्यान्वयन में कार्यक्रम कि के द्वारा पुर है : के अन्त में मंडल कानून नीतियों के कार्यान्वयन में 'व्युत्पत्ति' का निर्माण, 'विचारों की व्यापक एवं सामान्य' लक्ष्य मंडल कानून विचार के सम्बन्धों की अन्त केन पिछाना^{११}, 'राज्यीय लक्ष्य की लक्ष्य', 'केन का प्रिया का विचार' ४० लक्ष्य प्रिया नीतियों में कार्यान्वयन करना तथा 'जावान है व्युत्पत्ति का निर्माण करना' बताया। मण्डल विधियों के कार्यान्वयन में उही प्रवृत्ति के अन्त में, विचारों की स्थापना, 'निम्न का पुन निर्माण', 'राज्यीय लक्ष्य का लक्ष्य', 'कीर्ति की' ^{१२} 'मानव सम्बन्ध' तथा 'पुन विचारण में पुनर्निर्माण की लक्ष्य' बताया।^{१३}

70

- [illegible]

- १०- श्री अस्मा प्रसाद मिश्र, पुस्तक संग्रह श्री राम झा सिंह मिश्र, भारतीय काव्य, विभाग २०-१२-७६ ।
- ११- एच० के० मुखर्जी, लेखक हूँ कि साक्षात् वाणिज्यमित्री जम्हरीमूनी १९७६, प्रकाशित १९७६, पृष्ठ ७० ।
- १२- पा० रा० ज० द्वारा विवरित का है ।
- १३- एच०बी० झा, कलाउ नारायण जीर कर्मावी, बीटिंग पिरीयर का शिक्का सीसायटी, १९७७, पृष्ठ २०५ ।
- १४- एच० ज० डिमिट, सीडिटीज के, पृष्ठ १६५ ।
- १५- श्री का नारायण मिश्र सायाद कवय विता कविता कीटी, प्रसाद, सायादकार विभाग २०-४-७६ ।
- १६- श्री कर्मायकाउ झा, कवयता, काक कविता कीटी सायाद सायादकार विभाग २०-५-७६ ।
- १७- एच०बी० झा, कलाउ नारायण जीर कर्मावी, बीटिंग पिरीयर का शिक्का सीसायटी, १९७७, पृष्ठ ३०० ।
- १८- श्री जर्ज राम साका विभाग के बाबा है प्रसादी भारतीय ग्रामिण्ड जू १९७४ के ।
- १९- श्री टैमपर पुस्तक, संग्रह श्री, काक कविता कीटी, सीडिया
- २०- श्री कर्मायकाउ झा, कवयता, काक कविता कीटी, सायाद ।
- २१- श्री सीरुत पन्त मिश्र, कर्मावी, काक कविता कीटी, सीडिया ।
- २२- श्री राकिण्ड प्रसाद सिंह, कवयता, नन्कड शिपि, कपूर ।
- २३- श्री कर्मायकाउ पुके, कर्मावी, सीडिया सीडि, सीडिया ।
- २४- श्री सीरुतपन्त सीरुत के सायादकार है ।
- २५- सीरुत कर्मायकाउ कवय कर्मावी, कर्मावी है सायादकार ।

- १२- श्री शांतिराम कायन्नाड, प्रभाव है शांतात्कार दिनांक १०-६-७६ ।
- १३- डा० सुनील, उन्नीय, पुस्त १३९ ।
- १४- श्री देवदर कुंठ, कल्ल नदी, चारु कट्टि कटी, चीन्हा ।
- १५- श्री कल्याण काठ काँ, कल्याण, चारु कट्टि कटी, कल्याण ।
- १६- श्री सुनील कट्टि पिन्, कल्याण नदी, कल्याण ।
- १७- श्री शांतिराम नदी कल्याण, नदीय कट्टि, चीन्हा ।
- १८- श्री रामकृष्ण कायन्नाड, कल्याण, नदीय कट्टि चीन्हा ।
- १९- नयकाय कल्याण, कल्याण, कल्याण काय, श्रीकल्याण कल्याण, कल्याण कायन्नाड दिनांक, कल्याण काय, कल्याण काय, १९६३, पुस्त १०० ।
- २०- कल्याण है कल्याण पर पुस्त १२५०० ।
- २१- रायट ७० है कल्याण काय कल्याण, व कल्याण काय काटी कट्टि, कल्याण काय कल्याण काय दिनांक, १९६३, पुस्त १००-१२०, कल्याण काय काय, कल्याण काय दिनांक, १९७६, पुस्त १०० ।
- २२- कल्याण कल्याण काय, कल्याण काय काय काय दिनांक, १९७२ पुस्त १००-१२० ।
- २३- कल्याण काय, काय काय काय काय काय काय, १९७६ पुस्त १२ ।
- २४- श्रीकल्याण काय, कल्याण काय दिनांक १९७६, पुस्त ७६ ।
- २५- कल्याण, ७०
- २६- श्री रामकृष्ण काय, कल्याण काय है शांतात्कार दिनांक ०२-२-७७।
- २७- श्री ७० काय, कल्याण काय दिनांक १९७६ पुस्त ७६ ।
- २८- श्री कल्याण काय, नदी, चारु कट्टि कटी, चीन्हा है शांतात्कार दिनांक ६-६-७६ ।
- २९- श्री देवदर पुस्त, कल्ल नदी, चारु कट्टि कटी, चीन्हा, शांतात्कार दिनांक ६-१०-७६ ।

- ७०- श्री कर्पूरा लाल शर्मा, बम्बला, चारक जट्टिब जीटी, सीता,
बापतास्कार दिनांक २०-६-७६ ।
- ७१- श्री राकेश कुमार सिंह, बम्बला, पञ्चक अविधि पञ्चक, बापतास्कार
दिनांक १७-६-७६ ।
- ७२- श्री सुनन्दन सिंह जीजाबन्सा, दिनांक १२-६-१९७६ ।
- ७३- श्री पद्माकर कुँवर, बम्बला, बापतास्कार दिनांक १०-६-७६ ।
- ७४- श्री रामलाल बम्बला, बापतास्कार दिनांक २०-७-७६ ।
- ७५- श्री ० ३ बाबानन्द, कर्पूरा, बापतास्कार, १९७६, पुण्ड ६४ ।

[illegible]

छतार में सम्पादीकृत का एक वैध संकेत ज्ञापन की विश्वव्यापकता
 प्रमाण करता है । किन्तु एक अन्य तथ्या है कि सभी पाठकों की 'श्रुतियों' एवं 'ज्ञान-श्रुतियों'
 है मुझ छतार एवं वास्तविकता का (जो कि विश्व के एक ही भाग के रूप में) ही
 होती है । बीरे बीरे वास्तु में ही नहीं बल्कि प्रजापति में ही प्रदि होती जाती
 है और छतारों का मानविक विकास प्रारंभ होता है किसी व्यक्ति या व्यक्ति
 का भार कम करने की क्षमता होती होती है । ज्ञापन के एक संकेत एक ही अपनी
 प्रजापति की एकता करने के लिए ही ज्ञापन है ही ज्ञापन प्रमाण है । वैध का के
 प्रजापति का संकेत अपनी वास्तवता के अनुसार करने हुए व्यक्ति को ही अपनी ही
 वैधता करता है । ज्ञापन में संकेत प्रमाणों, विचारों, मूल्यों एवं विश्वासों
 है मुझ संकेतों की वास्तवता करता हुआ ज्ञापन है ही ही ही के लिए प्रमाणों

का लक्ष्य देता हुआ व्यक्ति अन्य में वैयक्तिक गुणों को प्राप्त करता है। अन्य है ठीक गुणों के साथ एक व्यक्ति अपनी जीवन में सामाजिक जीवन के साथ सामाजिक-स्थापना का प्रभाव करता है। साथ के साथ सामाजिक-स्थापना का दूसरा व्यक्ति में सामाजिक जीवन का वास्तविक करता है।

कई विद्वानों ने समाजीकरण की परिभाषा किया है। 'समाजीकरण का प्रक्रिया है जिसके द्वारा वास्तविक व्यक्तिगत विशेषताओं, व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत को प्राप्त करता है।' समाजीकरण एक प्रकार की सीख है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं को करने सीख जाता है। समाजीकरण का प्रक्रिया है जिसके मध्यम दूसरे मध्यम और ऊपरों के अन्य: प्रिया कर सामाजिक परिवर्तितों और संस्कृति के अनुसार व्यवहार करता हुआ एक सामाजिक मध्यम बन जाता है। समाजीकरण है व्यक्ति में वास्तविक जीवन, वास्तविक जीवन, समा-पायना, सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक उपस्थिति के गुण का वादी है जो उसके व्यक्तिगत को संपूर्ण करता है।

यह प्रत्यक्ष प्रस्तावित किया जाता है (कि) समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति साथ के अन्य व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित व्यक्तियों को, व्यक्तियों की विभिन्नता में एकताओं की मध्यमिक भाषा के साथ, पूरा करनेवाले अपने व्यवहार के लिए निर्मित होता है। समाजीकरण इसलिए एक बड़े रचना का निरूपण करता है जिसके माध्यम से व्यक्तिगत वस्तुताओं, प्रेरणों, ज्ञान तथा मूल्यों को, जो कि एक विशिष्ट सामाजिक संस्था में समाजीकरण की वादी उनके जीवन की विभिन्न वस्तुताओं में वास्तविक उनकी सभी भूमिकाओं को निभाने के लिए वास्तविक जिये जाये, सीखते हैं। समाजीकरण की अवधारित परिभाषाओं से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं।

- (१) यह एक प्रक्रिया है जिसमें निरंतरता तथा पुनरिर्गतिशीलता होती है।
- (२) इसके अन्तर्गत संस्कृति (जिसमें वस्तुता, विस्तार, मूल्य, ज्ञान वादि निर्मित है सीखी जाती है)।

- (३) कसरी 'पब्लिक' या कसूर में सामाजिक क्षति किछि होती है ।
- (४) कसरी 'पब्लिक' का अन्वय सामाजिक सम्बन्धों के अनुसार कसरी
हुकूमत का परिणाम होता है ।
- (५) कसरी कसरी की परिस्थितियों के अनुसार नैतिक मूल्यों का
अनुसरण होता है तथा सामाजिक मूल्यों का अभाव कसरी मूल्यों
के द्वारा ही दूर किया जाता है ।

‘सामाजिकरण’ शब्द के निहित अर्थों का स्पष्टीकरण होने के पश्चात् ‘राजनीतिक सामाजिकरण’ का अन्वय स्पष्ट हो जाता है । कसरी में निवास करनेवाला मनुष्य एक दूसरे के साथ या कसूर के साथ कसरी प्रकार के संबंध स्थापित करता है जैसे व्यापारी है वाणिज्य संबंध, वैकी वैकीकों है वाणिज्य संबंध, परिवार एवं कसरी है एक संबंध तथा राज्य के साथ राजनीतिक संबंध वाणिज्य । राजनीतिक संबंध राज्य की नहीं कसरी प्रकार की राजनीतिक संस्थाओं जैसे राजनीतिक कसरी, संबंध, सामाजिक वाणिज्य के साथ स्थापित होते हैं ।

‘राजनीतिक कसरी अन्वय संस्थाओं के मध्य संबंध की राजनीति के सामाजिक का विवेक विषय होत है । की० साहसी ने कहा है ‘राजनीतिक सामाजिक कसरी है एक बौद्धिक कसरी है - प्रतिनिधित्व कसरी में, जिसे की प्रकार है राजनीतिक सामाजिक का राजनीति के सामाजिक का अन्वय नहीं अन्वय कसरी है । नै वास्तव में कसरी की कसरी की परस्पर विरोधी मान-कसरी का प्रयोग प्रस्थापित करता है । राजनीतिक सामाजिक एक अन्वय-व्यवस्था कसरी है, सामाजिक एवं राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियों की सम्पत्ति करने का यत्न है की सामाजिक कसरी द्वारा हुकूमत की कसरी के साथ राजनीतिक कसरी द्वारा हुकूमत की (Law) कसरी है ।’ उपरोक्त वाक्यों है स्पष्ट है कि ‘राजनीतिक सामाजिकरण’ एक कसरी विषय राजनीतिक सामाजिक कसरी की परिस्थितियों है अन्वय सम्पत्ति है ।

राजनीतिक सामाजीकरण की परिभाषा

- (१) 'जब राजनीतिक सामाजीकरण की परिभाषा की है तो कहा जा सकता है कि यह (विचारों) एक प्रक्रिया है जो कि किसी द्वारा व्यक्तिगत राजनीतिक व्यवस्थितियों का व्यवहार के प्रति रुचों की विकाश करती है ।'

We shall define political socialization restrictively as those developmental processes through which persons acquire political orientations and patterns of behavior.

David Easton, Jack Dennis, Children in Political System, 1969, page 7.

- (२) राजनीतिक सामाजीकरण - नयी पीढ़ी के व्यक्तित्व परिवार, विद्यालय एवं मीट (Peer Groups) समूहों के द्वारा राजनीतिक मूल्यों का सम्प्रेषण ; व्यवहार विशेष रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की राजनीतिक मनीषित्वों तथा परीकारों का संचरण (पारंपरण) (Transmission) (१) -६

Political Socialization. The inculcation of political values into younger generations by family, school and peer groups, more specifically the transmission of political attitudes and preferences from one generation to the next.

Stephen L. Vashy - Political Science - The Discipline and its Dimensions - and the Introduction - 1972, page 46.

- (३) 'राजनीतिक समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा राजनीतिक संस्कृतियाँ संभ्रूत (Maintained) तथा परिवर्तित की जाती हैं ।'^{१०}

Political Socialization is the process by which political cultures are maintained and changed.

G.A.Almond- Comparative Politics, page 64.

- (४) (राजनीतिक समाजीकरण) एक प्रक्रिया (है) जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक दृष्टि से सुसज्जित बनाई जाती हैं, विश्वासों, संज्ञाओं एवं मूल्यों की वास्तविकता से ।'^{११}

Political Socialization a process through which the individual internalizes politically relevant attitudes beliefs, cognitions and values -Roderic Gerald "Political Socialization and political changes". Western Political Quart (1967) 20 page 392.

(Quoted Public Opinion 419 and Political attitude page 419.)

- (५) 'राजनीतिक समाजीकरण सीखने की एक विधा (प्रक्रिया) की विशेषता है जिसमें एक प्रयोज्य राजनीतिक प्रणाली की स्वीकार्य राजनीतिक प्रक्रियाएँ एवं व्यवहारों की पीढ़ी दर पीढ़ी एक पारंपरिक विधा प्राप्त है ।'^{१२}

Political Socialization refers to the learning process by which the political norms and behaviour acceptable to an ongoing political system are transmitted from generation to generation.

(Sigol Roberts "Assumes about the learning of

Political Values * Annals American Academy
 Politic and Social Sciences-1955, page 1.

- (4) राजनीतिक समाधीकरण - राजनीतिक ज्ञान, मूल्यों एवं विचारों की जड़ें बिखारने। प्रारंभिक उम्र में, यहाँ तक कि बच के पूर्व ही बच के अधिष्ठान की विरासत करने का कारण बनता है। बाद में, १३ वर्षों का विरासत समाधीकरण तथा पठ-अधिष्ठान के द्वारा होता है।

Political Socialization - the process of acquiring political knowledge, values and beliefs - causes party identification to develop at an early age, even before opinion. Later opinions are determined by socialization and party identification.

Allen R. Wilson - Public opinion and political attitudes, page 655.

राजनीतिक समाधीकरण की परिभाषाओं में निम्नलिखित कुछ स्पष्ट होते हैं -

- (1) राजनीतिक समाधीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें निरन्तरता तथा पुनरिद्वितीयता है।
- (2) इसके अन्तर्गत राजनीतिक संस्कृतियों सीखी जाती हैं।
- (3) सभी सामान्य एवं पानी व्यक्तियों का राजनीतिक व्यवहार राजनीतिक मान्यताओं के अनुसार बनता हुआ कुछ कुछ परिचित होता है।
- (4) सभी राजनीतिक अवस्थाओं के सामान्य में छाया ज्ञानों, मूल्यों एवं विचारों का व्यवहार होता है और जिसमें वे नवीनों का प्रकाश भी होता है।

(५) इसके परिणाम स्वयं व्यक्ति, कुछ और राष्ट्र में राजनीतिक पैना विकसित होती है ।

अतः राजनीतिक कारीकरण राजनीतिक संसृष्टि के द्वारा व्यक्ति, कुछ और राष्ट्र में राजनीतिक पैना को विकसित करने की प्रक्रिया है जिससे पैना का सभी राजनीतिक कार्यों में उनकी सुविधाएँ सुनिश्चित की जाएँ या परिवर्तित की जाती है ।

संक्षेप विधान उक्त चीज में राजनीतिक कुछ और राजनीतिक कारीकरण के सम्बन्ध के विभिन्न अनुपातित विशेषताओं से मुख्य ७६ नागरिकों से साक्षात्कार किया । प्रत्येक के सम्बन्ध से नागरिकों में राजनीतिक भाव प्रकट, राजनीतिक विचारधाराओं की प्रभावशाली का सामाजिक व्यवस्थाओं पर प्रभाव और राजनीतिक संस्थाओं से हीनता पैना के सम्बन्ध का प्रभाव किया है । राजनीति क कुछ राजनीतिक कारीकरण के प्रसृत व्यक्तियों के रूप में प्रतिपादित है ।

साक्षात्कृत नागरिकों का विवरण

१- व्यक्ति

<u>व्यक्ति का नाम</u>	<u>प्रतिफल</u>	<u>वर्ष</u>
प्राज्ञ	२१, १०	१६
राज्य	१७, ११	१०
वैश्य	१७, ११	१०
विश्वी व्यक्ति	२६, १०	२०
व्यक्तिगत व्यक्ति	१७, ११	१०
मुक्तमानव	१७, ११	१०
	<hr/>	<hr/>
योग	१०० - ००	७६

२६२

१ - वायु का

<u>वायु विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>तैल्य</u>
१६ व २० वर्ष	१०, ५४	८
२१ - २५ वर्ष	१६, ७१	१५
२६ - ३५ वर्ष	१६, ७१	१५
३६ - ४५ वर्ष	१६, ७१	१५
४६ - ५५ वर्ष	१६, ७१	१५
५६ - ७० वर्ष	१०, ५४	८
योग	१००-००	७६

२- जिला का

<u>जिला का</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>तैल्य</u>
निरस्तार	१०, ५	८
काचार	१५, ८	१२
प्राथमिक	२४, ०	१८
चार्ज स्कूल	१६, ७	१५
स्वातंत्र्य है नीचे	१५, ५	११
स्वातंत्र्य एवं स्वातंत्र्य	१५, ८	१२
योग	१००-००	७६

४ - मुख्य व्यवसाय का

<u>कार्य का नाम</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>तैल्य</u>
व्यवसाय	१०, १	१४
व्यवसाय	५, १	४

रु०

भूमि	४४, ७	४४
पक्कुरी	६, २	७
बाँकरी	२, ६	२
आधार	१४, ५	१४
अन्य	६, ६	६
योग	१००-००	७६

५- गीता व्यवसाय

<u>कार्य का नाम</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>हिसा</u>
भूमि	४४, २	४४
अन्य	२६, ४	२०
बाँकरी नहीं	२६, ५	२२
योग -	१००-००	७६

६- भूमि वीचकट का

<u>वीचकट विस्तार</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>हिसा</u>
एक बीघा एक	१०, ५	८
दोन बीघा एक	२५, ५	१४
चार बीघा एक	६, २	७
सब बीघा एक	१२, ७	१५
बीघ बीघा एक	१०, १	१३
हकीकत बीघा के ऊपर	१५, ८	१२
भूमिहीन	६, २	७
योग-	१००-००	७६

७- परिवार व्यवस्था का

<u>परिवार व्यवस्था</u>	<u>प्रतिशत</u>	<u>वर्षा</u>
पति	१४, ५	१९
पुत्र	१०, ५	२
पुत्र	२५, ३	२०
पुत्र	२२, ४	१०
पुत्र है कथर	२५, ३	२०
	<u>योग - १००-००</u>	<u>७५</u>

राजनीतिक मान प्रमाण

(क) राजनीतिक मत है कार्य

जाय कि राजनीतिक मत के व्यवस्था है १ के उत्तर में नागरिकों ने ५५, ६ प्रतिशत किती मत का नहीं, २५ प्रतिशत काग्रेस, ७, = प्रतिशत कार्य का १, २ प्रतिशत " नास्तिक प्रान्तिगत " बताया । काग्रेस के वितर्कित व्यक्तियों की उम्र ३५-४० वर्ष है बीच है तथा कार्य के वितर्कित व्यक्तियों की उम्र २५ है ३५ वर्ष के पूर्ण है मध्य है । काग्रेस के व्यवस्था की कारितियों में है किन्तु उच्च कारित में वितर्क है किन्तु कार्य का वितर्कित कारितियों एवं मुक्तमानों में एक भी व्यवस्था नहीं मिला । काग्रेस के ३०, ३ प्रतिशत व्यवस्था काग्रेस है प्राथमिक विद्या, ५२, ७ प्रतिशत कार्य स्कूल है स्वायत्तीपर विद्या मीमांसा के विभिन्न कार्य के ३३, ३ प्रतिशत व्यवस्था प्राथमिक विद्या का ५५, ७ प्रतिशत कार्य स्कूल है स्वायत्तीपर विद्या

योग्यता के बिना ।

कमिशन के अध्यक्ष महाशय, सुनि, मजदुरी, नौकर, व्यापार आदि व्यवसायों में मिले कम कि मजदुरी एवं नौकरों के व्यवसाय में कार्य के एक ही व्यवसाय नहीं मिलता । कमिशन के ५२, ७ प्रचिन्ना तथा कार्य के ५७ प्रचिन्ना सभी को व्यवसाय स्वीकार करनेवाले नागरिकों के साक्षात्कार बाधातु अखीन चौकजा की काकायाय में मिले नहीं हैं । इन उपरों से स्पष्ट है कि कमिशन की व्यवसाय व्यवसाय में व्यवहारि अत्रिपता है ।

बापका कोई दिखीदार कमा मिल क्या किसी एक का व्यवसाय या सेवा है ? के उपर में नागरिकों ने ५६, १ प्रचिन्ना नहीं तथा ५२, ६ प्रचिन्ना " वा " क्या । वां कमीवाले नागरिकों में स्वयं किसी न किसी एक के व्यवसाय बाकी का २१, १ प्रचिन्ना है तथा केवल २२, ७ प्रचिन्ना के नागरिकों का है जो स्वयं किसी एक के व्यवसाय नहीं है । " नहीं " कमीवाले नागरिकों में किसी एक व्यवसाय बाधातु के नागरिकों का प्रचिन्ना बाधक है । स्पष्ट स्पष्ट सीता है कि कमाया नागरिक राक्षसीयक कलों के कार्य बाध है बाधर भी हुए हैं । सामाजिक कार्य के ज्ञ में मिल तथा रमा कार्य के ज्ञ में दिखीदार की कि कार्य की व्यापक कमाती है, इन दोनों में है किसी का भी न मिलता राक्षसीयक कलों की बाधकता एवं एक पिता में निश्चिन्ता का प्रमाण है ।

" किसी राक्षसीयक कलों के नेताओं के बाधे बाधका हुए हैं " के उपर में ५५, २ प्रचिन्ना नागरिकों ने विविध कलों के नाम लिखे किले हैं १३, ५ प्रचिन्ना एक कल ; २१, १ प्रचिन्ना दो कल, २५ प्रचिन्ना तीन कल, १६, ७ प्रचिन्ना चार कल, २, ६ प्रचिन्ना पांच कल तथा ५, ३ प्रचिन्ना छः कलों के नाम कमाये । इन राक्षसीयक कलों में कमायिक प्रचिन्ना कमिशन, फिर भारतीय कार्य के भारतीय लोक कल का है । बाधातुकाहीन चौकजा की साक्ष्य के बाधातु बाधातु हुए २२, ३ प्रचिन्ना नागरिकों में है ५५, ५ प्रचिन्ना ने कमाया बाटी का भी नाम कमाया ।

लेख ११, = प्रविष्ट नागरिकों ने मान ली किसी भी एक के पैसा का नाशना नहीं हुआ है किन्हीं के अन्य वर्गों के १, २ प्रविष्ट विदेशी नागरिक के ५, ३ प्रविष्ट तथा अनुविष्ट नागरिक के ५, ३ प्रविष्ट नागरिक हैं। कहीं विस्तार एवं व्यापार की विशेष रूप से ही और किसी बाहु ३६ है ३५ वर्ग के मध्य की अवस्था है। इसी स्पष्ट है कि राक्षसीय वर्गों के नाशनाओं में ५५, २ प्रविष्ट नागरिकों ने मान लिया है किन्हीं के बीच वर्गों की कुलीवालों का प्रविष्ट कौलाग्रुव अधिक है जो प्रमाणित करता है कि बीच एक की वर्गों अधिक अधिक है।

बापने किसी प्रवर्तन, प्रवृत्त, उत्थाग्रुव, पैराय बापि राक्षसीय नाशनाओं में कभी मान लिया है १ के ऊपर में १६, ३ प्रविष्ट नागरिकों में कहीं " कभी किन्हीं ११, = प्रविष्ट कर्षक के, १ ६ प्रविष्ट भारतीय जनसंघ के कर्षक हैं तथा ५, ३ प्रविष्ट किसी भी एक के कर्षक नहीं हैं। हाँ कौलीवाले नागरिकों में १३, २ प्रविष्ट की बाहु ३६ है ३५ वर्ग के मध्य है, ३, ६ प्रविष्ट की बाहु ५६ है ३० वर्ग के मध्य है और मात्र २, ६ प्रविष्ट की बाहु २१ वर्ग है ३५ वर्ग के मध्य रही। उपरीय राक्षसीय प्रिमाकलापों में मान लेनाओं में है १०, ६ प्रविष्ट उन्मादि, ३, ६ प्रविष्ट विदेशी नागरिक, ३, ६ प्रविष्ट अनुविष्ट नागरिक तथा १, ३ प्रविष्ट मुकलान है, १०, ६ प्रविष्ट चार्ज स्कूल है नाशनापर, ३, ६ प्रविष्ट प्राथमिक शिक्षा २, ६ प्रविष्ट व्यापार तथा २, ६ प्रविष्ट विस्तार, कौलीय योग्यता है है तथा १०, ६ प्रविष्ट पुष्प, ३, ६ प्रविष्ट व्यवस्थापन तथा ठीक मकदूरि, व्यापार या अन्य व्यवसायों में लेख है।

इसी स्पष्ट है कि अन्य नागरिक के विराय तथा प्रविष्ट वस्था बापि, पुष्प एवं व्यवस्थापन कार्य कौलीवाले, नागरिक विशेष रूप से प्रवर्तन, प्रवृत्त, उत्थाग्रुव, पैराय बापि में मान लेते हैं। कहीं पर राक्षसीय वर्गों की अवस्था प्रमाण कौलीवालों का प्रविष्ट ३३, ६ और उपरीय प्रिमाकलापों में मान लेनाओं का प्रविष्ट १६, ३ है कहीं पर स्पष्ट ही जाता है कि कभी कल्प इन प्रिमाओं में मान नहीं लेते और मान लेनाले कभी कल्प की नहीं होते हैं क्योंकि ५, ३ प्रविष्ट नागरिकों ने

किन्ती भी यह है क्या सम्झना- नहीं नहीं कहाया । २०, ३ प्रविष्ट नागरिकों ने प्रत्येक के ऊपर में " नहीं" क्या किन्ती स्पष्ट है कि बहुत बड़ा नाम इन प्रिन्सों से बहुत रहना चाहता है ।

क्या आपके पास पुनः अभिमान में और राजनीतिक यह नाम भी नहीं आया ? यदि किन्ती भी किन्ती ? के ऊपर में १०, ५ प्रविष्ट नागरिकों में " हाँ" क्या किन्ती है ५, ३ प्रविष्ट किन्ती काधि, ३, ६ प्रविष्ट उच्च काधि क्या उच्च मुसलमान हैं, इन कैमालों में ६, ६ प्रविष्ट पुनः, ९, ३ प्रविष्ट सम्झना क्या २, ६ प्रविष्ट उच्च सम्झना करते हैं । इन कैमालों में ६, ६ प्रविष्ट काधि क्या ३, ६ प्रविष्ट उच्च यह के नाम किन्ती । की काधि किन्ती काधि काधि ५१- ५० है १००१- ५० यह की है । इसी स्पष्ट है कि काधि प्रिन्स नागरिकों से भी सम्झना करते हैं ।

(४) राजनीतिक वर्गों के प्रति सम्झना

क्या काधि, किन्ती एवं मुसलमानों पर किन्ती सम्झना की है यह कम है ६३, ४ प्रविष्ट नागरिकों ने सम्झना प्रत्येक की किन्ती २, ६ प्रविष्ट मुसलमानों ने नाम किन्ती के किन्ती की कम की सम्झना । ६, ६ प्रविष्ट नागरिकों ने सम्झना प्रत्येक किन्ती किन्ती है ९, ३ प्रविष्ट काधि क्या ९, ३ प्रविष्ट नास्तीय काधि के सम्झना है उच्च ४ प्रविष्ट किन्ती की यह के सम्झना नहीं है । कम है सम्झना नागरिकों में है ४ प्रविष्ट उच्च काधि, ९, ३ प्रविष्ट सम्झना काधि क्या ९, ३ मुसलमान काधि के हैं क्या किन्ती सम्झना की मुक्ति है निरदार, सादार एवं सम्झना यह की सम्झना है । इसी स्पष्ट है कि कम है की काधि किन्ती, सम्झना, सम्झना क्या किन्ती ६३, ४ प्रविष्ट नागरिक सम्झना है किन्ती- किन्ती सम्झना का किन्ती है ।

कम में सम्झना की और उच्च किन्ती के किन्ती किन्ती है ? यह कम है ३५ प्रविष्ट नागरिकों ने सम्झना प्रत्येक की, ९५, ८ प्रविष्ट ने सम्झना

वीर ६, २ प्रविष्ट है उपर की वीर विना की राखीविष कड के वीरों का ज्ञान
 कहावा है । १५, ८ प्रविष्ट वल्लभावि प्रष्ट करेवालों में है ७, ६ प्रविष्ट कट्टि
 के ज्ञान १, २ प्रविष्ट वल्लभावि के ज्ञान का ६, ६ प्रविष्ट विनी की कड के ज्ञान
 नहीं है, १० ५ प्रविष्ट ज्ञान वाचि के २, ६ प्रविष्ट विनी वाचि के ज्ञान के
 मुक्तमान है किन्हीं है १६, ८ प्रविष्ट, वृत्ति २, ६ प्रविष्ट वल्लभावि ज्ञान के
 ज्ञानांतर करेवाले हैं वीर वीरान्त वीरान्त के अनुसार ६, २ प्रविष्ट ज्ञानांतर
 ज्ञानांतर ज्ञानांतर, २, ६ प्रविष्ट वल्लभावि, २, ६ प्रविष्ट ज्ञानांतर ज्ञानांतर
 के ज्ञानांतर है । उपर ५ वीरान्तों में है ६, ६ प्रविष्ट विनी वाचि १, २ प्रविष्ट
 ज्ञान वाचि का १, २ प्रविष्ट वल्लभावि वाचि के नागालि है । ७५ प्रविष्ट वल्लभावि
 प्रष्ट करेवाले नागालि में वीर वाचि, वायु, विना और ज्ञानांतर करेवाले नागालि
 वीरान्त है किन्हीं ज्ञान है कि ज्ञान में ज्ञानांतर वाचि है ।

वीरान्त कट्टि में वीर वृत्ति वीर वीर है, वीर ज्ञान है ७२, ४ प्रविष्ट
 नागालि में वीर वल्लभावि प्रष्ट की, १२, ७ प्रविष्ट अनुसार वीर ज्ञान ७, ६ प्रविष्ट
 में वल्लभावि प्रष्ट विना । अनुसार करेवाले नागालि में है ६, २ प्रविष्ट वीर वीर
 वीर वल्लभावि के विना में वीर अनुसार वीर वीर ज्ञान १०, ५ प्रविष्ट वीर वीर किन्हीं है
 २, ६ प्रविष्ट वल्लभावि वाचि २, ६ प्रविष्ट विनी वाचि २, ६ प्रविष्ट ज्ञान वाचि
 (वीर) के ज्ञान मुक्तमान है । वल्लभावि प्रष्ट करे वाचि में है ६, ६ प्रविष्ट वीर वीर
 वीर वल्लभावि के विना में वीर वीर ज्ञान है वल्लभावि वीर ज्ञान १, २ प्रविष्ट वीर वीर ।
 वल्लभावि प्रष्ट करेवाले वीर वाचि, वायु वीर, विना वीर और ज्ञानांतरों के वीर
 वीर ज्ञान है कि वीरान्त कट्टि में वृत्ति वीर वीर वीर वीर है ।

वालीय वीरान्त में वीर वाचि का वीरान्त है, ज्ञान
 है ७५, ६ प्रविष्ट नागालि में वल्लभावि प्रष्ट की किन्हीं वीर वाचि, ज्ञानांतरों
 वायु वीर और विना वीरों के वीर । १४, ५ प्रविष्ट नागालि वल्लभावि है किन्हीं है
 ६, ६ प्रविष्ट ज्ञान वाचि, २, २ प्रविष्ट वल्लभावि वाचि का २, ६ प्रविष्ट
 विनी वाचि के वीर, ६, ६ प्रविष्ट वीर वायु २६ है २५ वीर २, ६ प्रविष्ट वीर वायु

४६ है ४६ वर्गों का क्षेत्र ६, २ प्रतिशत की जायदादों के एक लाख है और ६, ६ प्रतिशत विभागी, ६, ६ प्रतिशत कुम्हक का ९, २ प्रतिशत पक्कुर है । ६, ६ प्रतिशत नागरिक कर्म के पदाधिकारी का किन्हीं कालों में अवकाश होने के कारण उत्तर नहीं है की कालों है २, ६ प्रतिशत पिछड़ी जाति २, ६ प्रतिशत अनुसूचित जाति का क्षेत्र अन्य जाति (क्षेत्र) है । इसी स्पष्ट है कि भारतीय लोकतांत्रिक में छोटी जातियों का चौकाला अधिक है ।

हिन्दू महाकाय एवं राष्ट्रराज्य परिवर्तन के एक और वास्तविकता नहीं है अन्य है नागरिकों का २४, २ प्रतिशत कर्म का ४६, २ प्रतिशत अनुसूचित रखा । इसी स्पष्ट है कि इन दोनों राष्ट्रराज्य कालों के विषय में ६०, ६ प्रतिशत नागरिकों की ही वास्तविकता है की इन दोनों कालों की चौकाला विभाग का न निश्चितता का एक मात्र का परिवर्तन है । पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति का अन्य जाति में क्षेत्र वर्गों का एक ही नागरिक हिन्दू महा का क्षेत्र राष्ट्र राज्य की वास्तविकता का अनुसूचित नहीं करता है जाति २, ६ प्रतिशत मुसलमान अवकाशों में सम्मिलित है ।

मुसलमान नवविध मुसलमानों की विशेष वर्गों विभाग वास्तविक है नागरिकों का ४६ प्रतिशत कर्म, ६, ६ प्रतिशत अवकाश का ४०, ४ प्रतिशत अनुसूचित रखा । मुसलमान नागरिकों का ६० प्रतिशत कर्म का २० प्रतिशत अवकाश क्षेत्र अनुसूचित रखा । इसी स्पष्ट है कि मुसलमान नवविध के प्रियाकालों है वर्गों नागरिक अवकाशों में वर्गीकृत एक एक में की अपने एक का प्रत्यापत्ति विभाग का धुआँ में लुप्त नहीं किया । अन्य में वर्गों जाति प्रतीय होती है ।

जाय कि एक है प्रभावित है और कालों १ है उत्तर में नागरिकों में ४४, २ प्रतिशत कर्म, २६, २ प्रतिशत अवकाश, ४४, २ प्रतिशत कर्म पाटी, २, ६ प्रतिशत भारतीय लोकतांत्रिक ६, ६ प्रतिशत पिछड़ी है नहीं २, २ प्रतिशत कर्म और कर्मों की है का ६, २ प्रतिशत अनुसूचित रखा । पिछड़ी एक का नाम न वास्तविकता की कालों का नाम हैनाते एवं अनुसूचित रखाते एक प्रकार कुल ४४, २ प्रतिशत नागरिकों का वास्तविकता वास्तविकता में किया गया है । कर्म है प्रभावित हैनाते नागरिकों में २६, २ प्रतिशत एक के अवकाश है का

कार्य भारतीय संसुचित का पीछा है^{१०} बताया ।

जाय कि वह की का है पुरा समय से ही और क्यों ? के उपर
में नागरिकों में १०, १ प्रतिशत ' कटिब ' ७, ६ प्रतिशत कार्य , ६, २ प्रतिशत
भारतीय लोकसभा, १०, १ प्रतिशत संसुचित ' ७, ६ प्रतिशत लोकसभा ' १, ३ प्रति
शत लोकसभा संसुचित पीछा १, ३ प्रतिशत ' हिन्दू समाज का और मुसलमान
की पीछा १, ३ प्रतिशत समाजकी , १, ३ प्रतिशत प्रसिद्ध मुन्नीकाका ,
१, ३ प्रतिशत लोकसभा का १, ३ प्रतिशत रामराज्य और १, ३ प्रतिशत
लोकसभा कटिब का १, ३ प्रतिशत ' कार्य के लता की पीछा, के नाम बताया और
२३, ७ प्रतिशत किरी की पीछा ' ७, ६ प्रतिशत में उपर की पीछा किया ।
कटिब की पुरा समय में पीछा में ६, २ प्रतिशत कार्य ३, ६ प्रतिशत कार्य ,
१, ३ प्रतिशत भारतीय लोकसभा है प्रभावित नागरिक हैं और के पीछा है पीछा ।
संसुचित जाति का एक की नागरिक कटिब की पुरा नहीं समय ।

कार्य की पुरा समय में ६, ६ प्रतिशत कटिब का
१, ३ प्रतिशत किरी की पीछा है पीछा, प्रभावित नागरिक हैं किमें उच्च जाति का
एक की नागरिक नहीं है । भारतीय लोकसभा की पुरा समय में ६, ६ प्रतिशत
कटिब, १, ३ प्रतिशत कार्य का १, ३ प्रतिशत निमित्त पीछा है प्रभावित नागरिक
हैं किमें निमित्त जाति का एक की नागरिक नहीं है । संसुचित की पुरा समय में
पीछा में ६, ६ प्रतिशत कार्य , ३, ६ प्रतिशत कटिब, १, ३ प्रतिशत भारतीय
लोकसभा का १, ३ प्रतिशत कार्य पीछा है प्रभावित नागरिक हैं किमें एक की
मुसलमान नागरिक नहीं है । लोकसभा की पुरा समय में ६, ३ प्रतिशत
कार्य का २, ६ प्रतिशत कटिब है प्रभावित नागरिक हैं किमें एक की मुसलमान
नागरिक नहीं है ।

कहा पीछा की पुरा समय में पीछा ' कटिब
है प्रभावित उच्च जाति हैं संसुचित जाति के नागरिक हैं । किरी की पीछा की
पुरा न समय में १०, १ प्रतिशत कटिब, ७, ६ प्रतिशत कार्य पीछा का

१. २ प्रतिक्रिया विधी की यह है नहीं प्रभावित की कारियों के नाशितक है ।
नवसंस्कारी, प्र० पु० का, जीवित कल, रामराज्य परिवर्तन एवं जीवन कालों की
दुरा समझनेवाले की कालों के प्रभावित है किन्तु की अन्य काल एवं विविध
काल के नाशितक है ।

कालों की दुरा समझने के प्रमुख कारण, कार्य न होना,
सुख पीछियों का प्रसन्न होना, कला पर ध्यान देना, कार्यकर्तव्यों का हीनकारी
है कार्य न करना, ^{२१} मर्यादा का च्युत, सुख की की बुराई न देना, नीति
व्यवहारों का हीनकारी ^{२२} हीनकार का उत्कर्ष तथा सुख करना, बताये की ।

कालों की दुरा समझने के प्रमुख कारण, कीदारी भावना,
बाधित विचार, की की नकार, पुरानी राज्य कला ^{२३}, कीदारी का च्युत होना ^{२४}
तथा सुखनारी का विरोधी ^{२५} बताये की । भारतीय जीवित की दुरा समझने के प्रमुख
कारण बाधित प्रभावित, कालों एवं सुखित के मर्यादा के साथ पीछा ^{२६} बताये
की । सम्पूर्ण पाटी की दुरा समझने के प्रमुख कारण, बाधितता एवं राष्ट्रियता
का च्युत, का की सम्पूर्ण हीनकारी, मानव की च्युत के का : मान्यता, ईश्वर का
विनाश, की जीवन की च्युत, की एवं का का व्यवहार, ज्ञान की भावना,
तथा प्रभावित के विरोधी ^{२७} होना बताये की । जीवित की दुरा समझने के कारण
कीन्तु एवं बाधितकीन्तु मर्यादों का यह कल में होना, कीन्तु कालों में मित्र
माना, कालों के च्युत तथा काच्युत ^{२८} माना बताये की ।

प्रतिक्रिया सुनिश्चितता की प्रमुख राज्य की मान एवं नकार
पीछियों की सुनी ज्ञानित काली दुरा समझने के कारण बताये की । कला पाटी
की दुरा समझने के कारण कीदारी, मर्यादा, कीदारी कालों में सुख होना बताये ^{२९}
उपरीन्त कालों के स्पष्ट है कि काल में रचनेवाले यह है प्रभावित नाशितक काल
यह की कीन्तु केवल अन्य कालों की दुरा समझने हैं कीदारी कीदारी यह काली प्रमुख
प्रति कालों की दुरा समझने हैं ।

कीन्तु का राष्ट्रियता यह कल में बाधित काला कल ते ती

बापकी स्थिति बहुत बन्धी सीधी १ के ऊपर में नामांकों में ३५, ६ प्रविष्ट "कट्टि" ३४, २ प्रविष्ट "काली" १९, ६ प्रविष्ट "काला पाटी" , ५, ३ प्रविष्ट भारतीय लोका, ३, ६ प्रविष्ट "वीरचिह्न" ३, ६ प्रविष्ट परिवर्तन सीधा रहे २, ६ प्रविष्ट की हुई है, तथा २, ६ प्रविष्ट "वर्गिक" कहाया । कट्टि की उता के कुछ पता-परा में १४, ५ प्रविष्ट उन्म वाधि, ६, ६ प्रविष्ट पिछड़ी वाधि, ६, २ प्रविष्ट अनुसूचित वाधि तथा ५, २ प्रविष्ट मुख्यमान है किन्हीं वर्गीकृत संख्या २९ से २५ वर्ष की वायु बाजी की है । काली की उता में उता के कुछ पता परा में १६, ७ प्रविष्ट उन्मवाधि , १९, ६ प्रविष्ट पिछड़ी वाधि, ९, २ प्रविष्ट अनुसूचित वाधि तथा ९, २ प्रविष्ट मुख्यमान है किन्हीं वर्गीकृत संख्या २६ से ३५ वर्ष की वायु बाजी की है ।

भारतीय लोका की उता के पतापरा में प्राचन , किन्हीं तथा अनुसूचित वाधियों का एक ही नामांक नहीं मिला । बापाकुला के पूर्व के बापाकुल कुल नामांकों के कुछ १६, ७ प्रविष्ट में १४, २ प्रविष्ट "काली" ३, ६ प्रविष्ट कट्टि तथा २, ६ प्रविष्ट भारतीय लोका के पतापर रहे । बापाकुला के उन्म बापाकुल कुल नामांकों के कुछ २७, ६ प्रविष्ट में २४, ७ प्रविष्ट कट्टि, २९, ९ प्रविष्ट काली २, ६ प्रविष्ट भारतीय लोका तथा उन्म उन्म पता के पतापर रहे हैं । बापाकुला के पताकुल बापाकुल कुल नामांकों के कुछ २२, ४ प्रविष्ट में १९, ६ प्रविष्ट काला पाटी ७, ६ प्रविष्ट कट्टि तथा उन्म वर्गिक पता के रहे हैं । उन्म स्पष्ट सीधा है कि कट्टि से प्रभावित नामांकों का प्रविष्ट १४, २ या परन्तु कट्टि उता में रहे इसके पता में वह प्रविष्ट मात्र ३५, ६ एक तथा और काली की उता में उता के पता में कुछ तथा किन्हीं काली से प्रभावित पतापरा का प्रविष्ट २६, ३ है बहुत काली उता में वायु इसके पता में ३४, २ प्रविष्ट सीधे तथा । उन्म पता की स्पष्ट सीधा है कि की नामांक एक एक से प्रभावित है है उन्म पता की उता के पतापर नहीं की थी इसके हैं ।

(ग) राजनीतिक वर्गों के वर्गों से नामांकों की प्रविष्टों पर प्रभाव

का वर्गीकरण वर्गिक उन्म के पता सीधी बाधि १ के ऊपर

में नागरिकों में ६५, १ प्रतिशत 'हाँ' तथा ३, ६ प्रतिशत 'नहीं', तथा १ 'हाँ' करनेवाले नागरिक सभी नागरिकों, वायुमार्ग, जिला जमा, व्यवसायी, नागरिकों के ६ तथा 'नहीं' करनेवाले १, ३ प्रतिशत निम्नलिखित नागरिकों के साथ, १, ३ प्रतिशत कुमिलीन, कुमिलीन (जो कठिण का उदय है) तथा १, ३ प्रतिशत एक बीपे की सीमा स्तर का कयोपुद वसुधुषि नागरिक का कठिण का उदय है । एवम् स्पष्ट है कि कठिण के २५ प्रतिशत उदय में है २, ६ प्रतिशत ही व्यवस्थित सम्पत्ति के विरोधी हैं और केवल २२, ४ प्रतिशत पदावर हैं । भारतीय जनता एवं भारतीय लोकमत से प्रभावित नागरिक व्यवस्थित सम्पत्ति के पूर्ण विरोध पदा में है ।

जनता पदाव, धूमि और व्यवसाय का सरकार के कार्यों में बाध देना देना चीना १ के उदर में नागरिकों में ६, २ प्रतिशत बहुत अच्छा, ५, ३ प्रतिशत 'अच्छा', ६, २ प्रतिशत का अच्छा, १३, १ प्रतिशत 'बराब' तथा ६३, २ प्रतिशत बहुत बराब' तथा । इस प्रकार २९, ७ प्रतिशत नागरिक इसकी अच्छी दृष्टिकोण से और ७६, ३ प्रतिशत नागरिक इसकी बराब दृष्टिकोण से देखते हुए प्रतीत हो रहे हैं । सरकार के कार्यों में उन कुछ बाधों की अच्छी दृष्टिकोण से देखते हुए कुछ नागरिकों में ६, २ प्रतिशत उच्च बाधें ५, ३ प्रतिशत निम्नलिखित बाधें ७, ६ प्रतिशत वसुधुषि नागरिकों तथा १, ३ प्रतिशत 'मुक्तमान' है, १०, ५ प्रतिशत की आयु १६ है २५ वर्ष, ३ प्रतिशत की आयु २६ है ३५ वर्ष और ६, २ प्रतिशत की आयु ३६ है ७० वर्ष के मध्य है, ७, ६ प्रतिशत 'विपत्ती' १०, ५ प्रतिशत कुमिलीन ३, ६ प्रतिशत मजदूर तथा ६, ३ प्रतिशत व्यापारी हैं, ३, ६ प्रतिशत कुमिलीन तथा १, ३ प्रतिशत 'एक बीपे कुमिलीन' परिवारों के उदय हैं ।

१०, ६ प्रतिशत कुमिलीन की अच्छी दृष्टिकोण से देख रहे हैं उन्हें १, ३ प्रतिशत उन नई व्यापारी का भी है किन्तु बाधा का कारण में जनता मुख्य व्यवसाय धूमि बताया किन्तु यह उनके लिए ही व्यवसाय चीना नागरिक, केवल ६, २ प्रतिशत कुमिलीन उन परिवारों के उदय हैं किन्तु परिवार में प्रति उदय धूमि १०, ५ प्रतिशत

विश्वास ही है । उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इन जायदादों की छीनी छीन करनी सम्पादित सरकार की छविता बर्खा नहीं करके है । २७, ७ प्रतिशत की मागिरि यह बड़ी मुश्किलीय है देखी है जहाँ १४, ६ प्रतिशत 'कटिब' २, ६ प्रतिशत 'कपरी' २, ६ प्रतिशत 'कसापाटी' १, २ प्रतिशत भारतीय लोकल है प्रभावित करा २, ६ प्रतिशत 'कपुलवाडि' है जहाँ यह के अनुसार कुछ प्रभावित करणों का ११० कटिब ११२० कार्य, ११५ कसा पाटी के है । इससे स्पष्ट है कि कटिब, कार्य, कसा पाटी है प्रभावित करणों का बहुत कम कुछ सरकार के कार्य में छीने के फल में नहीं है । क्या जायदादी प्रमाण मात्र २७, ७ प्रतिशत मागिरि में ही किमान है ?

कसा विचार कर देने के लिए क्या लड़की और लड़का की स्वतन्त्र कर फल चाहिए ? के उत्तर में मागिरि में ७६, ६ प्रतिशत नहीं तथा २७, ७ प्रतिशत 'रि' करा । विचार के लिए स्वतन्त्र के कपुलों में है १२, २ प्रतिशत 'कपुलवाडि' २, ६ प्रतिशत 'पिछड़ी' बाधि २, ६ प्रतिशत 'कपुलवाडि' बाधि तथा २, ६ प्रतिशत 'मुसलमान' है किन्हीं १२, ४ प्रतिशत की वास्तु छीन है बन्धी बन्ध, ६, ५ प्रतिशत की वास्तु 'कपुलवाडि' है किताबि बन्ध तथा २, ६ प्रतिशत की वास्तु 'विवाडि' है उत्तर बन्ध 'कसा' तक की है । विचार में स्वतन्त्रता की कसबा रसिवाडि ६, २ प्रतिशत 'विवाडी' ५, २ प्रतिशत 'पुणक' ५, २ प्रतिशत 'कसापाटी' २, ६ प्रतिशत 'मकुदूर' तथा १, २ प्रतिशत 'कपुलवाडि' है किन्हीं 'गर्ह' रसु है स्नातकीपर किता बाडि का प्रतिशत १५, ६ प्रतिशत 'प्राथमिक' है 'गर्ह' रसु का बाडि का प्रतिशत २, ६ प्रतिशत तथा 'शेष' २, ६ प्रतिशत 'विराट' रसु उत्तर है ।

सापानु क्रम २७, १ प्रतिशत 'विवाडि' में है ६, २ प्रतिशत 'स्वतन्त्रता' बाडि है 'शेष' ७, ६ प्रतिशत 'स्वतन्त्रता' नहीं बाडि । स्नातक है नीचे तथा स्नातकीपर 'कपुलवाडि' सापानु क्रम २७, २ प्रतिशत 'मागिरि' में है १५, ६ प्रतिशत 'विवाडि' में स्वतन्त्रता के कपुल है तथा १४, ४ प्रतिशत 'विरोधी' है । इन लड़कों से स्पष्ट है कि विवाडि कपुलों में विवाडि के प्रति 'लोकतांत्रिक' भावना बढ़ रही है और मुहाँ में 'प्राथमिक' प्रमाण कुछ बढ़ रही है किन्तु 'मुसलमान' बाधि का मागिरि 'मुसलमान' प्राथमिकता ही निज । अतः विवाडि में स्वतन्त्रता का विरोधी रहा ।

जाय जमीन बाधित स्थिति का मूल्यांकन करते हुए जमीन की सेवा सम्पत्ति है ? के उत्तर में नागरिकों ने ६, २ प्रतिशत बहुत बन्धा, १३, १ प्रतिशत हाथारण है बीघे तथा ७०, ७ प्रतिशत हाथारण का १, १ बहुत बन्धा बहुत करनेवाले नागरिकों में है २, ६ प्रतिशत उच्च जाति २, ६ प्रतिशत पिछड़ी जाति २, ६ प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा १, ३ प्रतिशत मुसलमान है जो जमीन बाधित का प्रतिनिधित्व करते हैं । जमीन की बहुत बन्धा बहुत करनेवाले अनुसूचित जाति के जाय एवं मजदूर ; पिछड़ी जाति के कुम्हार ; उच्च जाति के कुम्हार एवं व्यापारी तथा मुसलमान जाति के भी कुम्हार, कारी के हैं ।

उसी स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के हाथारण कुल १३, १ प्रतिशत नागरिकों में है २, ६ प्रतिशत जमीन की बहुत बन्धा सम्पत्ति का है । हाथारण है बीघे बहुत करनेवाले नागरिकों में है ३, ६ प्रतिशत उच्च जाति २, ६ प्रतिशत पिछड़ी जाति १, ३ प्रतिशत मुसलमान तथा १, ३ प्रतिशत अनुसूचित जाति के हैं किन्हीं के जाय जमीन की बाधित २१ है २५ वर्ग सड़ है बीर क्षेत्र में जमीन बन्धा बाधित कारी का प्रतिनिधित्व मात्र है । जमीन की हाथारण है बीघे बहुत करनेवाले उच्च जाति के जाय कुम्हार एवं व्यापारी, पिछड़ी जाति के कुम्हार एवं मजदूर फाड़ने का कार्य करनेवाले, मुसलमान जाति का पतल काटनेवाला तथा अनुसूचित जाति के कपड़ा मजदूर तथा बस्ताई जाय है । उसी स्पष्ट है कि सामान्य बीघा स्तर है बीघे का बीघा बसाई करनेवाले जमीन जातियों एवं व्यवसायों के जमीन हैं किन्तु उच्चतर सामाजिक विधाओं के सम्बन्ध में भी नहीं मिले परन्तु अनुसूचित जाति के नागरिकों में इनका प्रतिशत अधिक है ।

जाय में उन है जमीन बीघा कपटीय करने के लिए जाय जमीन का कार्य सम्पन्न करने ? के उत्तर में नागरिकों ने ५१, ४ प्रतिशत कुम्हार १०, १ प्रतिशत व्यापार, ६, २ प्रतिशत व्यवसाय ६, २ प्रतिशत राजनीति ५, ३ प्रतिशत हाथारण, १, ३ प्रतिशत करवाने में मजदूर, १, ३ प्रतिशत कपटीय की बाधित, १, ३ प्रतिशत कपटीय १, ३ प्रतिशत बिना हाथारण, १, ३ प्रतिशत हाथारण तथा १, ३ प्रतिशत कपटीय के कार्यों की बताया ।

दुष्कर के जीवन की हम है पूरी समझनेवाले नागरिकों में है वर्तमान काल में हमने अपने कार्य में हमें हुए २२, ३ प्रविष्ट, दुष्कर ६, ३ प्रविष्ट कलाकारी, ७, ६ प्रविष्ट विवाची, ६, ३ प्रविष्ट अन्य (कर्मों में हमें हुए) ३, ६ प्रविष्ट मजदूर तथा २, ६ प्रविष्ट व्यवसायक हैं । कारखाने का है कि दुष्करों में है ७, ६ प्रविष्ट व्यापार, ६, ६ प्रविष्ट राखीति, २, ६ प्रविष्ट, व्यवसाय, १, ३ प्रविष्ट लिखा कलाकारी, १, ३ प्रविष्ट छावरी, १, ३ प्रविष्ट कारखाने में मजदूर तथा १, ३ प्रविष्ट छावरी के पदमन्तर रहे हैं । १७, ६ प्रविष्ट व्यापार में हमें हुए नागरिकों में है ३, ६ प्रविष्ट व्यवसायक, ६, ३ प्रविष्ट दुष्कर में तथा १, ३ प्रविष्ट कलाकारी में पूरी जीवन देखी हैं वीर छावरी, राखीति एवं व्यवसाय की शिक्षा के भी पदमन्तर नहीं किया ।

व्यवसाय कार्य करनेवाले ६, ३ प्रविष्ट नागरिकों में है २, ६ प्रविष्ट व्यवसायक तथा हैम दुष्कर का जीवन पदमन्तर कर रहे हैं । व्यवसाय कार्य की पदमन्तर करनेवालों में वेद्यों एवं मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नहीं है वही स्पष्ट होता है कि हम कार्य में हमकी कृति बहुत कम है । राखीति में हमें व्यक्तियों की पूरी अनुभव करने बाहों में ३ प्रविष्ट व्यवसाय के ३३ वर्ष है ऊपर की वायु के २, ६ प्रविष्ट पिछड़ी जाति के ३५ है ३६ वर्ष की वायु के तथा २, ६ प्रविष्ट अनुसूचित जाति के ३३ वर्ष है ३३ वर्ष की वायु के नागरिक हैं किन्तु मुसलमान कोई नहीं है । अनुसूचित जाति की एक महिला की राखीति में कुछ का अनुभव करती है । छावरी के जीवन की हम है पूरी समझनेवालों में पिछड़ी जाति एवं मुसलमान एक समान है अन्य जातियों का प्रतिनिधित्व ही नहीं है ।

कारखाने में मजदूर एवं कलाकार अनुसूचित जाति, कायस्थ की वायु निरी पिछड़ी जाति, कलाकारी वेद्यों जाति, लिखा कलाकार जाति जाति तथा छावरी के प्राकृत जाति के नागरिकों ने पदमन्तर किया है । १७, ६ प्रविष्ट विवाची में है ७, ६ प्रविष्ट दुष्कर १, ३ प्रविष्ट " राखीति" २, ६ प्रविष्ट व्यवसाय, २, ६ प्रविष्ट व्यापार १, ३ प्रविष्ट कलाकारी तथा

२५ प्रविष्ट नागरिकों की कसौटी के पेशानों की बाँटें प्रिय
 लीं किन्हीं ५२ प्रविष्ट नागरिकों की के बड़ा विहारी नागरिकी (योजना
 पर राष्ट्र नीति) की करीबी निदानी के ली, राष्ट्र प्रेम, मुक्त व्यापार, उद्योग
 के विवेकीकृतता, 'हूँ' नहीं कहना' लक्ष्य प्राप्त, पाक युद्ध एवं जातीय नीति,
 के लीकृत बाँटें हैं और केवल ६० प्रविष्ट नागरिकों की स्वयं दीनकृत
 उपाध्याय का वाप्यालिक विचार, डा० मुहम्मद नवीर कीड़ी का हिन्दी भाषा
 प्रेम तथा की कलाकृत विवादी, के नलना प्रभाव प्रिय एवं राष्ट्रहित ली' निरी
 का उपाधीय कसौटी पर मुकाम ६ की बाँटें प्रिय ली ।

19. ४ प्रविष्ट नगरों की भारतीय लोकतांत्रिक नेताओं की पार्टी द्वारा जारी किया गया २. ५ प्रविष्ट नगरों की एक संस्था प्रचार विभाग

(वर्तमान केंद्रीय राज्य नवी वैधानिक) की" सेपरी सेपरा नापी की वासीका
 बरकर की वासीका एवं वायाव काठ में हुए वायावारी का विवरण है कीपि
 २, ६ प्रविष्ट नागरिकों की की सेपरी बरकर कि (वर्तमान स्तराव नवी)
 की" सेपरी काठ एवं मुनि विचार है कीपि वारी में वीर केव २, ६ प्रविष्ट
 नागरिकों की सेपरी काठ राम नवीकर कीपि की" नवीर की ३ वीर वीर
 नातिक की ३ का एवं की राव नवीकर कि (वर्तमान स्तराव एवं वीरकर
 कल्याण नवी, वारव बरकर) की मुनि वायावारी के विरुध है कीपि वारी
 प्रिय की ।

कापि के नेतावी की वारी की प्रिय कनेवाठ नागरिक
 ३१, = प्रविष्ट कने ३१ प्रविष्ट, पिक्की २० प्रविष्ट वुनिवि का २० प्रविष्ट
 मुकनान वाकिरी में है की की वायु वारी (विनिकर २६-२६ वर्य एवं २६-३० वर्य)
 केपाव सारी (विनिकर वारार एवं प्रापिक) एवं वुनिवि वारी (वुनिवि
 एवं वीर की वीर) का प्रविनिविष्ट वारी है । वर्य स्पष्ट है कि कापि की
 नेतावी की वायु वुनिवि एवं मुकनान वाकिरी के प्रापिक केपाव वीरवा वारी
 नागरिकों की वीर प्रिय वारी है ।

कापि के नेतावी की वारी की प्रिय कनेवाठ नागरिक
 २०, = प्रविष्ट कने, ३० प्रविष्ट पिक्की, २० प्रविष्ट वुनिवि का २० प्रविष्ट
 मुकनान वाकिरी में है की की वायु वारी (वुनिवि की वीर एवं विनिकर
 २६-२६ वर्य) केपाव सारी (विनिकर वीर वीर एवं वीर का वीर वीर)
 एवं वुनिवि वारी (वुनिवि वीर) का प्रविनिविष्ट वारी है । वर्य स्पष्ट है
 कि वुनिवि वारी एवं वुनिवि कनेवाठ नागरिकों की कापि के नेतावी की वायु
 वारी का प्रिय वारी है ।

वारवी वीरवा के नेतावी की वारी की प्रिय कनेवाठ
 नागरिक ३१, ३ प्रविष्ट कने, २० प्रविष्ट पिक्की का २० प्रविष्ट मुकनान
 वाकिरी में है की की वायु वारी (२६-३० वर्य वीर विनिकर ३६ है ३६ वर्य)

औद्योगिक स्तरों (चाई एंड लीड होल्डर) एवं व्यवसाय वर्गों (मजदूरी एवं नौकरी होल्डर) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि भारतीय के नेता के बहुत विचारों बावलीय है एवं वह व्यक्ति प्रिय नेता है । मुख्यतः क्या व्युत्पन्न बावली के नागरिकों में कांग्रेस के नेताओं के बावली एवं वह व्यक्ति प्रिय है और भारतीय होल्डर के नेताओं के बावली उच्च बावली में एवं वह व्यक्ति प्रिय है । प्रिय कर्मीवाली बावली का कर्मीवाली करने है स्पष्ट होता है कि नागरिकों की २५, ६ प्रतिशत बावली, २०, ६ प्रतिशत उच्च, २०, ६ प्रतिशत " कुलकर्णी ", १९, ६ प्रतिशत " बावलीवाली " १९, ६ प्रतिशत " व्यवसाय " १९, ६ प्रतिशत " व्यवसाय कुलकर्णी " तथा २, ०९ प्रतिशत विवरण के बावली प्रिय होती । एवं स्पष्ट है कि ७६, ७ प्रतिशत राजनीतिक कर्मी की बावली का मुख्यतः क्या होता है और एवं कर्मी बावली बावली नागरिकों की प्रिय होती है और बावलीवाली का मुख्यतः क्या होता है । प्रिय बावली का मुख्यतः क्या बावली एवं कर्मीवाली होती है ।

बावली में की की कर्मी बावली है उच्च मुख्य क्या होती ? (विवर या पट्टा या बहुता) के स्तर में नागरिकों में २९, ७ प्रतिशत " विवर " १९, ६ प्रतिशत पट्टा " तथा २, ६ प्रतिशत बहुता " १, ६ प्रतिशत बावली " तै बताया । " विवर " बावली बावली में की बावली, बावली वर्ग, औद्योगिक स्तरों , व्यवसायों तथा वर्गों के नागरिक हैं । पट्टा तै कर्मीवाली में २, ६ प्रतिशत उच्च बावली, १, ६ प्रतिशत विवर बावली " २, ६ प्रतिशत " व्युत्पन्न बावली " तथा १, ६ प्रतिशत " मुख्यतः " नागरिक हैं किन्हीं १, ६ प्रतिशत बावली तथा ७, ६ प्रतिशत मुख्यतः है की कि बावली में वा उच्च कर्मीवाली विवर विवर कर्मीवाली या नौकरी में की हुए हैं किन्हीं प्रायः प्रति दिन कर्मीवाली मुख्य बावली का मुख्यतः क्या है एवं कर्मीवाली कर्मीवाली में बावली है ।

बहुता तै कर्मीवाली नागरिकों में की उच्च बावली एवं कर्मीवाली बावली के कर्मीवाली की प्रायः कर्मीवाली बावली बावली में की है । उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि ७६, ७ प्रतिशत नागरिक कर्मीवाली मुख्यतः की उच्च का कराना बावली है

क्या २१, ७ प्रविष्ट बायीं मुख्य कुट्टि की रीखा जाती है तब: कुट्ट २३, = प्रविष्ट बायीं मुख्य कुट्टि है व्याकुल प्रतीय होती है । स्थला के पदा में बायातु कुट्ट २३, १ प्रविष्ट व्यापातियों में है २३, २ प्रविष्ट है और २, ३ प्रविष्ट घटने के पदा में है ।

स्वीकृता के पदातु बायीं मैमाय में क्या परिवर्तन हुआ है ? (वद्धा : घटा : क्षान :) के ऊपर में नागरिणी में २७, १ प्रविष्ट 'घटा' २१, १ प्रविष्ट 'वद्धा' क्या ७, १ प्रविष्ट 'क्षान' क्या । बायीं मैमाय के घटने का अनुभव प्रथम बाधि, बाधु, जिनास्ता एवं व्यसताय के नागरिणी में किया । बायीं मैमाय में कुट्टि का अनुभव १८, ४ प्रविष्ट 'उत्पन्न बाधि' ७, १ प्रविष्ट 'पिच्छी बाधि' क्या २, २ प्रविष्ट 'मुक्तमान' बाधि के नागरिणी कती हैं किन्हीं है २३ = प्रविष्ट का कम्प स्वीकृता के पदातु क्या २२, = प्रविष्ट का कम्प स्वीकृता के पूर्व हुआ है । विवेचना एवं तात्त्विक समीक्षा का स्पष्ट प्रभाव यह है कि अनुपस्थित बाधि का एक ही नागरिणी किन्ना कम्प स्वीकृता के पूर्व या पदातु हुआ है बायीं मैमाय में कुट्टि का अनुभव नहीं करता ।

अनुपस्थित बाधि के बायातु कुट्ट २३, १ प्रविष्ट नागरिणी में है २१, = प्रविष्ट 'घटने' क्या १, २ प्रविष्ट 'क्षान' घटने का अनुभव कती हैं । बायीं मैमाय में क्षानता का अनुभव करनेवालों में प्रथम बाधि एवं व्यसताय के नागरिणी हैं किन्हीं बाधि निस्तार एवं बायातु स्वीकृता के पूर्व कम्प छेपाटे क्या वाणि चार्ल स्मूथ के ऊपर स्वातन्त्र्य है नीचे की छेपाट योग्यता एवं स्वीकृता के पदातु कम्प छेपाटे हैं) कती स्पष्ट है कि बायीं मैमाय घटने का एक ही बाधि अनुभव अनुपस्थित बाधि, फिर पिच्छी बाधि के नागरिणी की हुआ है । क्या उसका मैमा तात्त्विक कती एवं बरतार द्वारा किन्हीं की छेपाटिक प्रयासों की फेरा अन्तिम न होया ?

क्या कतिमाय कुट्ट में हुआ, बाध, यह और दान करना क्या है ? के ऊपर में नागरिणी में २८, २ प्रविष्ट 'नहीं' क्या २१, = प्रविष्ट 'हाँ' क्या ।

उन पार्षिक प्रियाओं की जहाँ समझनेवालों में ७, ६ प्रियता, खुशनुमा वाति २, ६ प्रियता उम्मीदवाति क्या १, ३ प्रियता निम्नी वाति के नामलिख हैं । एक की प्रियता एवं मुकमान वाति के नामलिख में उन प्रियाओं की जहाँ नहीं जहाँ । जहाँ समझनेवालों में बीच बर्ष एक वायु एवं हल्कीय है बीच बर्ष एक की वायु का एक की नामलिख नहीं है और ठेक की वायु का के साथ एक है अधिक समझ है बर्षीय बर्ष की वायु वातों का प्रियता ६, ३ प्रियता है ।

पार्षिक प्रियाओं की जहाँ समझनेवालों में विशेष रूप है खुशनुमा वाति के नामलिख हैं जो कि बर्षीय, मकुरी एवं शुचि जहाँ में ही की किया स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी स्पष्ट है कि खुशनुमा वाति के नामलिखों में पार्षिक नामना एक है जो है कि राक्षसीय का प्रभाव समझ का समझ है । का राक्षसीय, जहाँ की प्रभाव का है में ही समझ नहीं ही की है ?

यदि राक्षसीय केा और पार्षिक महापुरुष दोनों एक ही समय आपके दरबारे पर जायें तो पहले आप किसी निम्नी ? के उतर में नामलिखों में ८२, ६ प्रियता पार्षिक महापुरुष १६, ८ प्रियता राक्षसीय केा क्या १, ३ प्रियता दोनों है, पहले पिछता स्वीकार किया । राक्षसीय केा का पहले स्वागत करनेवाले हुए नामलिखों में ६, ७ प्रियता खुशनुमा वाति, ३, ६ प्रियता प्रियता वाति ३, ६ प्रियता निम्नी वाति क्या १, ३ प्रियता मुकमान वाति के हैं किन्हीं ६, ७ प्रियता पुनर् ३, ६ प्रियता मकुरी ३, ६ प्रियता निम्नी क्या १, ३ प्रियता नाका निम्नी हैं जो ही वायु का क्या किया स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।^{३३}

ऊपर लिखे दोनों प्रश्नों के उत्तरों में जहाँ की निम्नीय माननेवाले नामलिख ७६, ३ प्रियता है का राक्षसीय की निम्नीय माननेवाले पात्र ३, ६ प्रियता हैं जो कि खुशनुमा वाति के ही हैं । ठेक १६, ७ प्रियता नामलिख निम्नीय मानना के हैं किन्हीं ७, ६ प्रियता राक्षसीय केा में ही और क्या ११, ८ प्रियता जहाँ है राक्षसीय की और मुक है । राक्षसीय है जहाँ की और प्रभाव की वातों में वाते खुशनुमा वाति क्या वाते में उम्मी एवं निम्नी वाति के नामलिख हैं ।

अन्यथा विवेचना के स्पष्ट सीमा हैं कि ६१. ६ प्रतिशत नामांकित राजनीतिक नेताओं की बाजों पर बहुत का विश्वास नहीं है और कि वे नामांकित का जिला का स्तर बहुत कम है अन्य विश्वास पड़ता क्या है । नेताओं की बाजों पर काका का विश्वास पड़ना राजनीतिक उपाधीकरण के लिए राजनीतिक कर्तों के कानून का पुनर्जाति है । क्या यह नेताओं के वास्तविकता, वास्तविकताओं एवं वास्तविक विचारों का दुष्प्रमाण है ?

यों राजनीति में बहुत सक्रिय रहता है अन्यथा क्या उद्देश्य है ? के प्रत्येक उपाधी नामांकितों में ३० प्रतिशत 'नामांकित' ३१. ६ प्रतिशत प्रतिशत के साथ बाजों के प्रकार ३३. ९ प्रतिशत नामांकित प्रतिशत , १०.५ प्रतिशत 'द्वितीय' क्या ७. ८ प्रतिशत 'स्वार्थ' 'विधि' का उद्देश्य बताया । (पारशीयों का कर्तव्य करें)

सारणी -१

बाज	नामांकित (क)	प्रतिशत के साथ बाजों के प्रकार (ख)	उपाधी प्रतिशत (ग)	द्वितीय (घ)	स्वार्थ (ङ)
उप	११. ६५	११. ६५	१. ६५	६. ६५	६. ६५
विधि	१०. ६५	६. २५	१. ६५	२. ६५	-
व्यक्ति	६. ६५	१. ६५	२. ६५	-	-
मुक्तता	३. ६५	१. ६५	२. ६५	६. ६५	६. ६५
योग	३०.५	३१. ६५	३३	१०. ५५	७. ८५

२००

सारिणी - २

वायु विस्तार	क	ख	ग	घ	ङ
१६-२० वर्ष	१. ६५	१. ६५	२. ६५	३. ६५	१. ३५
२१-२५ वर्ष	१०. ६५	-	३. ६५	३. ६५	१. ३५
२६-३५ वर्ष	७. ६५	६. ६५	२. ६५	१. ६५	३. ६५
३६-४५ वर्ष	६. ६५	६. २५	२. ६५	-	-
४६-५५ वर्ष	६. ६५	७. ६५	-	१. ३५	१. ३५
५६-६० वर्ष	३. ६५	६. ६५	-	-	-
योग	३६. ६५	३१. ६५	१३. ५	१०. ४५	७. ५५

सारिणी - ३

वैयक्तिक खर्च	क	ख	ग	घ	ङ
भिरदार	७. ६५	-	२. ६५	-	-
वापार	२. ६५	६. २५	२. ६५	-	१. ३५
प्राथमिक	१२. १५	७. ६५	१. ३५	२. ६५	-
वापसकृत	७. ६५	६. २५	१. ३५	-	१. ३५
स्वास्थ्य के योग	२. ६५	२. ६५	२. ६५	३. ६५	२. ६५
स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्यपर	२. ६५	२. ६५	२. ६५	३. ६५	२. ६५
योग	३७. ५	३१. ५५	१३. ५	१०. ४५	७. ५५

रुपय

सारिणी - ४

मुख्य व्यय	क	ख	ग	घ	ज
अध्ययन	२. ६	१. ६	२. ६	७. ६	२. ६
अध्यापन	-	२. ६	१. ६	-	१. ६
कृषि	६. ६	१०. ६	१. ६	१. ६	२. ६
मकदूरी	५. ६	२. ६	१. ६	-	-
नौकरी	२. ६	-	-	-	-
व्यापार	३. ६	५. ६	२. ६	१. ६	१. ६
वन्द्य	३. ६	२. ६	-	-	-

सारिणी - ५

वस्तु व प्रमाणिक	कापाकी	प्रमाणिक कापाकी मुना	कापाकी प्रमाणिक	कापा कापा	कापाकी	कापा
	(क)	(ख)	(ग)	(घ)	(ज)	(झ)
कापा	१४. ६	१५. ६	६. ६	३. ६	१. ६	३४. ६
कापा	१९. ६	६. ६	-	२. ६	२. ६	२६. ६
कापा पार्टी	२. ६	१. ६	३. ६	२. ६	२. ६	४. ६
कापा कापा	१. ६	१. ६	-	-	-	२. ६
वन्द्य	६. ६	३. ६	-	१. ६	१. ६	१२. ६

अवधिगत धारणा १ : हे स्पष्ट है कि राजनीतिक व्यक्तियों की सक्रियता में जनोपाकी का उद्देश्य सम्पन्न करने वाले नागरिकों में प्रथम स्थान अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के नागरिकों का है क्योंकि इन दोनों जातियों के सामान्य रूप से नागरिकों का प्रत्यक्ष प्रभाव एवं परोक्ष प्रतिक्रिया जनोपाकी के उद्देश्य से उत्पन्न है ।^१ प्रतिष्ठा के साथ वार्षिक चुनाव के उद्देश्य का सम्पन्न करने वाले नागरिकों में अनुसूचित जाति तथा मुसलमानों का प्रथम, उच्च जाति का द्वितीय तथा पिछड़ी जाति का तृतीय स्थान है ।

“ सामाजिक प्रतिष्ठा” के उद्देश्य का सम्पन्न करने वाले नागरिकों में अनुसूचित जाति एवं मुसलमानों का प्रथम, पिछड़ी जाति का द्वितीय तथा उच्च जाति का तृतीय स्थान है । इसी स्पष्ट सीमा है कि अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के नागरिकों की सामाजिक प्रतिष्ठा के कार्यों की पूर्ति के लिए राजनीतिक महत्त्वपूर्ण भाग ले ।^२ “ देश सेवा” के उद्देश्य से राजनीति में सक्रिय व्यक्तियों की उत्पत्ति सम्पन्न करने वाले नागरिकों में अवधिगत स्थान उच्च जाति का है पिछड़ी जाति एवं मुसलमान एक स्थान है किन्तु वास्तव में कि अनुसूचित जाति के नागरिक “ देश सेवा” के उद्देश्य का सम्पन्न नहीं करते हैं ।^३ स्वार्थ धर्म के उद्देश्य में विश्वास करने वालों में उच्च जाति एवं मुसलमान नागरिकों की प्रत्यक्ष प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त है ।

धारणा - २ के अवलोकन से स्पष्ट है कि “ जनोपाकी” के उद्देश्य का सम्पन्न करने वाले नागरिकों में २१ से २५ वर्ष की आयु का प्रथम, २६ से ३५ वर्ष की आयु का द्वितीय और ३६-४० वर्ष की आयु का तृतीय स्थान है ।^४ प्रतिष्ठा के साथ वार्षिक चुनाव के उद्देश्य का सम्पन्न करने वाले नागरिकों में २६ से ३० वर्ष के नागरिकों का प्रथम तथा ३६ से ४५ वर्ष के नागरिकों का द्वितीय स्थान है । वास्तव में कि २१ से २५ वर्ष की आयु का एक ही नागरिक प्रतिष्ठा के साथ वार्षिक चुनाव के उद्देश्य का सम्पन्न नहीं करता है ।

धारणा ३ के अवलोकन से स्पष्ट है कि निरक्षर नागरिकों में राजनीति में सक्रियता के लिए जनमानस की सामाजिक महत्त्व दिया और प्रतिष्ठा

पुनः पुनः पुनः के बाद क्या किया जा सकता था ?
 के उद्देश में ६८, ७ प्रविष्ट नागरिकों में नहीं गया १, २ प्रविष्ट में नहीं गया ।
 इस उद्देश में स्पष्ट है कि राजनीतिक कर्तों में जो कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है उसकी
 ६८, ७ प्रविष्ट नागरिक व्यक्तिगत रूप से हैं । कुछ परिवर्तन के बाद में अग्रिम के
 अग्रिम प्रत्यक्ष हैं जो कि 'वैधानिक' नतीजों की स्थिति में जीवित रह जाते हैं ।
 ' जो पुनः पुनः पुनः ' कुछ नहीं क्या उसका एक अन्तर्गत कर दिया गया ? के
 उद्देश में ६९, ४ प्रविष्ट नागरिकों में नहीं गया २, ६ प्रविष्ट में नहीं गया ।
 इसी स्पष्ट है कि ६९, ४ प्रविष्ट कर्तव्य इस प्रकार में है कि निर्वाचित प्रतिनिधि
 यदि कुछ परिवर्तन करे तो उसे पुनः कर्तव्य के अन्तर्गत कर दिया गया था
 बाहिर । दोनों प्रस्तावों के उद्देश में स्पष्ट है कि कर्तव्य निर्वाचित प्रतिनिधियों की
 अपने हाथ की कमी पूर्णता उत्पत्ती है और उन्हें ऐसा कुछ देना चाहती है कि
 किसी नियम का अधिकार पुनः कर्तव्य के ही शर्तों में जाये । के उद्देश कर्तव्य की
 'वैधानिक' की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप है जो कि राजनीतिक कर्तों द्वारा राजनीतिक
 उत्पत्ती का पुनर्निर्माण है ।

क्या वक्त कर्तव्य योजना या योजना योजना में जाये या नहीं ?
 के उद्देश में नागरिकों में ६९, ४ प्रविष्ट ' नहीं ' गया २१, ६ प्रविष्ट ' नहीं '
 गया । इसी स्पष्ट है कि कर्तव्य की इन योजनाओं में ६९, ४ प्रविष्ट नागरिक
 व्यक्ति हैं । इन योजनाओं में अनुपस्थिति होने के अनेक कारण अनेक हैं जैसे निमित्त,
 प्रसार का अभाव, अन्तर्गत पूर्ण अधिकार, अभावता, कर्तव्य के सम्बन्ध अधिकार
 बाहिर । यदि राजनीतिक उत्पत्ती की प्रक्रिया आवश्यक स्तर पर हो तो
 कर्तव्य के ही अधिकार उत्पत्ति में उत्पत्ती अधिकार प्राप्त कर सकती है । अधिकार
 प्राप्त करनेवाले २१, ६ प्रविष्ट नागरिकों में १४, ६ प्रविष्ट उच्च अधिकार
 ६, २ प्रविष्ट निम्न अधिकार , २, ६ प्रविष्ट अनुपस्थिति अधिकार तथा ६, २ प्रविष्ट
 अनुपस्थिति अधिकार के हैं किन्हीं १४, ८ प्रविष्ट प्राथमिक के शर्तों स्तर , १०, ६ प्रविष्ट
 स्तर के ही अधिकार एवं उत्पत्ती के स्तर ६, २ प्रविष्ट निम्न स्तर एवं उत्पत्ती

बीज्यता के हैं और बीज्यताओं के सब प्रचिन्त के साथ साथ सभी व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन बीज्यताओं में नाम प्रकट करनेवाले नामांशों में ३०, २ प्रचिन्त काग्रेस, ६, २ प्रचिन्त कर्म, २, ६ प्रचिन्त कर्म, १, ३ प्रचिन्त भारतीय लोकता, तथा १, ३ प्रचिन्त अन्य वहाँ है प्रभावित है। उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि यह है प्रभावित (३६ प्रचिन्त काग्रेस, ३६ प्रचिन्त कर्म तथा २० प्रचिन्त कर्म पार्टी) नामांश इन बीज्यताओं में नाम लिखे हैं।

‘हस्ताक्षर के बिना कानून है वाक्य और या उन हुआ है ?

के उपर में ३०, ६ प्रचिन्त नामांशों में नाम तथा ३६, ६ प्रचिन्त में कोई नाम नहीं बताया गया है, २ प्रचिन्त अनुसर रहे। हस्ताक्षर के बिना न बिना कानून है सामान्यतः होनेवाले नामांशों में ३०, ४ प्रचिन्त कर्मन्दी तथा २०, ५ प्रचिन्त। ने विभिन्न विभिन्न कानूनों के नाम और किन्हीं अनुसूचित जाति के नामांशों में ‘रिक्ता वाक्य’ ‘‘ नृपि वाक्य’, ‘‘ निःशुल्कता’, ‘‘ रिक्ता जाति का नाम नृपि’, ‘‘ वैचारिक’, ‘‘ वस्तुतः उन्मुख’, ‘‘ अनुसूचित’ तथा ‘‘ कर्मन्दी का अधिकार’ बताया। सामान्यतः होनेवाले नामांशों में २६, २ प्रचिन्त ‘‘ उच्च जाति’ १५, ८ प्रचिन्त ‘‘ पिछड़ी जाति’ ७, ६ प्रचिन्त अनुसूचित जाति तथा ७, ६ प्रचिन्त मुख्यतः जाति के नामांश है किन्हीं कुछ एक राष्ट्रीय नामांशों में उच्च जाति का प्रचिन्त है जो है। सामान्यतः होनेवाले नामांशों में ३०, ४ प्रचिन्त कर्म १०, ५ प्रचिन्त विपरीत ६, ६ प्रचिन्त व्यापारी ३, ६ प्रचिन्त व्यवसाय ३, ६ प्रचिन्त मकूर तथा २, ६ प्रचिन्त नौकर है। स्पष्ट है कि सभी व्यवसाय के नामांशों को कानून में प्रभावित किया है। किसी कानून में कोई नाम न अनुमति देनेवाले ३६, ६ प्रचिन्त नामांशों में १८, ४ प्रचिन्त उच्च जाति, ६, ३ प्रचिन्त ‘‘ पिछड़ी जाति’ ५, २ प्रचिन्त मुख्यतः तथा ३, ६ प्रचिन्त अनुसूचित जाति के हैं किन्हीं १९, ६ प्रचिन्त कर्म ७, ७, ६ प्रचिन्त व्यापारी ५, २ प्रचिन्त मकूर ३, ६ प्रचिन्त विपरीत १, ३ प्रचिन्त व्यवसाय तथा ६, ७ प्रचिन्त अन्य व्यवसायों हैं। हस्ताक्षर का कानून राजनीतिक कार्याकरण का एक अच्छा माध्यम है किन्हीं नामांश तथा में स्थापित या परिवर्तन के लिए अपनी मनोबुद्धि पनाता है और सभी ऐसे राजनीतिक वर्गों में नाम प्रकट करता है।

सरकार के कुछ कानून के अन्तर्गत जिन की शानि हुई १ के अन्तर में २३, ४ प्रतिशत नागरिकों में कोई शानि नहीं तथा २६, ६ प्रतिशत में शानि हुई बताया है कि ३, ८ प्रतिशत सुधार रहे । सरकार के किसी कानून के शानि का अनुमान करनेवाले नागरिकों में २६, ४ प्रतिशत उच्च शानि, ३, ८ प्रतिशत पिछड़ी शानि तथा २, ६ प्रतिशत मुसलमान शानि के हैं किन्तु उनी व्यवसायिक वर्ग का प्रतिनिधित्व है किन्तु दूसरों का व्यापिक प्रतिशत है । शानि का अनुमान करनेवाले नागरिकों में दूसरों ने व्यापिक शानि विकास कर है अनुमान किया कि र जमना मुनि बीमा निर्योग, पञ्चमी, १९३- ४० प्रति शानि बाहर विमुक्तार, विचार कर तथा अधिकाधी अधिनियम हैं । व्यापार पर प्रतिशत तथा शानि परिवर्तन कर का व्यापारी वर्ग ने बहुत अनुमान किया । अनुमानित शानि ने जून मुक्ति है जनी शानि इसलिए अनुमान किया कि उनी उच्च शानि में जून नहीं मिल पाया ।^{३४} सरकार के किसी कानून के शानि का न अनुमान करनेवालों में उच्च प्रतिशत मुसलमान ६० प्रतिशत अनुमानित तथा ५५ प्रतिशत पिछड़ी शानियों का प्रतिनिधित्व है किन्तु उनी व्यवसायों के नागरिक हैं ।

अधिकाधी शानि प्रती के अन्तर्गत है स्पष्ट है कि २५ प्रतिशत नागरिकों की सरकार के अन्तर्गत है जमना-शानि शानि का अनुमान है, २२, ६ प्रतिशत नागरिकों की मात्र शानि का अनुमान है, २१, ६ प्रतिशत नागरिकों की मात्र शानियों का अनुमान है, २०, ६ प्रतिशत नागरिकों की जमना-शानि में है एक ने की प्रमाणा नहीं किया है तथा २, ६ प्रतिशत शानि में सुधार रहे हैं । राजकीय आधीकरण के माध्यम के रूप में कानून २०, २ प्रतिशत नागरिकों के लिए अनुमाधी शानि की रहा है ।

जमा करीबन सरकार के बीच, उन बाहर प्रतिशत की सुरक्षा अनुमान करी है १ के अन्तर में नागरिकों में ६२, ४ प्रतिशत नहीं तथा २९, ६ प्रतिशत शानि का । उन शानि पर संकेत का अनुमान करने वाले नागरिकों में २९, ६ प्रतिशत उच्च शानि २९, ६ प्रतिशत पिछड़ी शानि ३, ६ प्रतिशत अनुमानित शानि तथा

७, ६ प्रचिन्न पुस्तकानां कांति के हैं विभिन्न जमी खेताक सारों के साथ जो प्रचिन्न सारों मूल की सीमायां बांटे हैं जो जमी खेतायां का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु नीचरी, मझुरी, बन्धान, व्यापार, तथा जूनि बांटे प्रसङ्ग कथीत हैं ।
 बन्धान बस्तार के दुरता का अनुस्र करीबांटे नामांति में १६ प्रचिन्न वन्य उन्म कांति ६, १ प्रचिन्न पिछड़ी कांति, ६, १ प्रचिन्न अनुस्रित कांति तथा ६, १ प्रचिन्न पुस्तकानां कांति के हैं विभिन्न सारों के वितरित वन्य खेताक सारों बांटे हैं और जमी खेतायां का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

बापाकजातीय सीमायां के पूर्व साराय मूल १६, ७ प्रचिन्न नामांति में १०, १ प्रचिन्न दुरता का अनुस्र नहीं करते, बापाकजात में साराय मूल १०, ६ प्रचिन्न नामांति की में है ३३, ६ प्रचिन्न दुरता का अनुस्र नहीं करते तथा बापाय काठ कसाय सीमे के परपात बापाय मूल २२, ४ प्रचिन्न नामांति में ११, ६ प्रचिन्न दुरता का अनुस्र नहीं करते हैं । बापाकजात के पूर्व दुरता का अनुस्र न करीबांटे नामांति में १०, ६ प्रचिन्न कर्षण ३, ६ प्रचिन्न काठिण, १, ३ प्रचिन्न भारतीय लीकड तथा १, ३ प्रचिन्न वन्य पड से प्रमांति है । बापाकजात में भी दुरता का न अनुस्र करीबांटे नामांति में १०, १ प्रचिन्न काठिण, ११, ६ प्रचिन्न कर्षण, १, ३ प्रचिन्न भारतीय लीकड तथा २, ६ प्रचिन्न वन्य पड से प्रमांति है । बापाकजात के परपात भी दुरता का न अनुस्र करीबांटे नामांति में ७, ६ प्रचिन्न काठिण तथा ३, ६ कसा पाटी से प्रमांति है । बापाकजात में साराय मूल ४२ प्रचिन्न काठिण से प्रमांति न नामांति में २६, ८ प्रचिन्न ने दुरता अनुस्र नहीं किया कहीं पर कर्षण से प्रमांति २५ प्रचिन्न नामांति में है २२, ४ प्रचिन्न ने दुरता का अनुस्र नहीं किया । बड़े स्पष्ट है कि कर्षण से प्रमांति नामांति में दुरता का लेट बापाकजात के पूर्व एवं बापाकजात में एवं से अधिक रहा ।

बन्धान काठ में सीमा, एवं एवं प्रचिन्ता ही दुरता अनुस्र करने के कारणों की विभिन्न नामांति में बताया उनकी यदि प्रचिन्न में नकल किया बाक सी २६, ६ प्रचिन्न उन्मी ६, ७ प्रचिन्न नीरी ८ प्रचिन्न बस्तार की सीमायां एवं उनके कानून ८ प्रचिन्न हाका की कमीरी ४, ८ प्रचिन्न प्रन्ताचार ३, २ प्रचिन्न नीचा ३, २ प्रचिन्न

नागरिकों में उच्च शिक्षा एवं व्युत्पन्न बावत के प्रतिनिधि हैं किन्तु एक भी मुसलमान नहीं है। राजनीतिक दलों के ६६, २ प्रतिशत सदस्यें उम्र में विवाह में निश्चाय नहीं प्रवृत्त हैं।

(ब) मतदान :

जाफे का एक किसान क्ला के किसी चुनावों में अपना बहुमत मत दिया है ? के उतर में नागरिकों ने १७, १ प्रतिशत मतदाता नहीं ६, २ प्रतिशत एक बार २२, ४ प्रतिशत दो बार ६, २ प्रतिशत तीन बार, ११, ६ प्रतिशत चार बार ३, ६ प्रतिशत पांच बार २२, ४ प्रतिशत छः बार तथा ३, ६ प्रतिशत सात बार मतदान किया बताया। सादास कुल नागरिकों में भी १७, १ प्रतिशत मतदाता नहीं हैं उन्हीं में १७, ५ प्रतिशत की वास्तव में मतदाता होने की नहीं बावत किन्तु ६, ६ प्रतिशत की आयु २१ से २३ वर्ष हैं किन्तु उनका नाम की मतदाता सूची में नहीं है। १, ३ प्रतिशत ऐसे नागरिक हैं जो उम्मीद करते हुए भी मतदाता सूची में सम्मिलित हैं और मतदान में भी भाग लिया। ८२, ६ प्रतिशत नागरिक भी मतदान में भाग ग्रहण लिये हैं उन्हीं में ५६, ४ प्रतिशत ने बाँधित सभी मत धारों में भाग लिया है तथा शेष ६, २ प्रतिशत में एक बार ७, ८ प्रतिशत में दो बार ३, ६ प्रतिशत में तीन बार तथा १, ३ प्रतिशत में पांच बार। बाँधित सभी बाकी संख्या में भाग नहीं लिया। इस प्रकार स्पष्ट है कि २२, २ प्रतिशत मतदाता मतदान की अन्य कार्यों की औसत प्रमत्त तरीकता नहीं प्रदान लिये। राजनीतिक दलों के ८०, २ प्रतिशत सदस्यों ने बाँधित पूर्ण मतदान किया है। इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक दलों के सदस्य सामान्य नागरिकों की औसत मतदान में अधिक भाग लेते हैं जो राजनीतिक छापीकरण का परिणाम है।

मतदान के पहले किसी भी तीन मत धारों का क्या उन्हें वास्तविक देना बावत ? के उतर में ६३, १ प्रतिशत नागरिकों ने हाँ तथा ३६, ६ प्रतिशत ने नहीं कहा। इससे स्पष्ट है कि बहुत ही मत धारकों की वास्तविक देने के पक्ष में है। वास्तविक देना २, ६ प्रतिशत नागरिकों ने कहा कि

केवल एक वर्ग की वास्तविक सेवा बाधित । प्रत्येक वर्ग के मतदाताओं की वास्तविक सेवा देने के पक्ष में २८, ६ प्रतिशत उच्च बाधित ९८, ४ प्रतिशत पिछड़ी बाधित ६, २ प्रतिशत मुसलमान तथा ६, ६ प्रतिशत अनुसूचित बाधित के नामांकित हैं जो की सभी बाधित, शैक्षणिक स्तरों तथा व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । सभी मत बाधितों की वास्तविक न देने के पक्ष में ९८, ४ प्रतिशत उच्च बाधित ७, ६ प्रतिशत पिछड़ी बाधित , ६, ६ प्रतिशत अनुसूचित बाधित तथा २, ६ प्रतिशत मुसलमान बाधित के नामांकित हैं । राजनीतिक दलों के १७, ७ प्रतिशत सदस्यों ने सभी मतदाताओं के पक्ष में मतदान का वास्तविक देने की प्रवृत्ति का परिष्कृत प्रस्तुत किया है । राजनीतिक दलों के ४२, ३ प्रतिशत सदस्यों ने सभी की वास्तविक देने का विरोध प्रकट करके पक्ष के प्रति बलवत्ता प्रकाशित किया है जो कि सामान्य नामांकितों की औसत अधिक है ।

सारणी - ६

सारणी - ७

वायु वर्ग	वास्तविक के पक्ष में	वास्तविक के विपक्ष में	शैक्षणिक स्तर	वास्तविक के पक्ष में	वास्तविक के विपक्ष में
१६-२० वर्ष	८७, ५५	१२, ५५	निरक्षर	६२, ५५	३७, ५५
२१-२५ वर्ष	६८, ५	३२, ५	साधार	५८, ३, ५	४१, ७, ५
२६-३५ वर्ष	७६, ५	२४, ५	प्राथमिक	५०, ५	५०, ५
३६-४५ वर्ष	६९, ५	३१, ५	प्राथमिक	७१, ६, ५	२९, ४, ५
४६-५५ वर्ष	५३, ५	४७, ५	स्नातक	६०, ६, ५	३९, ३, ५
५६-६० वर्ष	३७, ५, ५	६२, ५, ५	स्नातक एवं उच्च स्तर	५०, ५	५०, ५

रक

छाहणी - ८

व्यय	वास्तविक के फल	वास्तविक के विपरीत
व्यय	६२. ५	३०. ५
व्यय	२५.५	७५.५
व्यय	६५. ५	३३. २.५
मकुरी	७९. ५	२५. ५
वीकरी	१००.५	-
व्यापार	६३. ५	३३. ५
व्यय	७०.५	६०.५

छाहणी - ९

व्यय	वास्तविक के फल	वास्तविक के विपरीत
व्यय	६३. ५	३०.५
व्यय	२५. ५	७९. २. ५
व्यय	६५. ५	३३. ७. ५

कारिणी ६ के स्पष्ट है कि (२५-२६ वर्ष की आयु वाले नागरिकों के अन्तर्गत के साथ) की वे आयु में कुछ छोटी है नागरिक मतदाताओं की आवश्यकता को दर्शाते हैं । कारिणी ७ के स्पष्ट है कि स्नातक है पीएचडी के विद्यार्थी या छात्रा के अन्तर्गत नागरिक आवश्यकता देने के साथ में उन है अधिक है किन्तु प्रमुख कारण मतदाता की नागरिक अधिकारों के अन्तर्गत का अन्तर्गत प्रतीत होता है । कारिणी ८ के स्पष्ट है कि नीचरी में उनी हुए नागरिक को प्रविष्ट आवश्यकता के देने के साथ में है उनके परभाव मजदूरी एवं अन्तर्गत करिवाले नागरिक है । अन्तर्गत में उनी हुए नागरिक आवश्यकता देने के किन्ता में उन है अधिक है । कारिणी ९ के पर प्रमुख स्पष्ट की जाता है कि की नागरिक को भी बार मतदान में भाग नहीं लिए हैं है उन है अधिक आवश्यकता देने के साथ में है और उनके परभाव उन नागरिकों का भी अन्तर्गत है की प्रत्येक बार मतदान मिले हैं । क्या प्रत्येक निवास में मतदान करनेवाला नागरिक की मतदाताओं की आवश्यकता देने के लिए किन्ता या अन्तर्गत की जाता है ?

मतदान में भाग किन्ति छात्र की उन है अधिक मतदान की है ? के प्रमुख उधारी में नागरिकों के अन्तर्गत अन्तर्गत २१, २ प्रविष्ट परिवार ६, २ प्रविष्ट निम्न ५, २ प्रविष्ट ग्राम प्रमाण ३, ६ प्रविष्ट मजदूरी ३, ६ प्रविष्ट राजनीतिक नेता २, ६ प्रविष्ट बासीय नेता, २, ६ प्रविष्ट नीचरी बासा, १, २ प्रविष्ट रिस्कार का १, ३ प्रविष्ट अन्य की जाता है । उन उधारी के स्पष्ट है कि मतदान में अन्तर्गत निर्णय करने का प्रविष्ट अन्तर्गत की अन्तर्गत अधिक है किन्तु २१, २ प्रविष्ट नागरिक धुरी के निर्णयों पर आधारित है । अन्तर्गत यह है कि ३, ६ प्रविष्ट नागरिक की उन्म बासि, पिछड़ी बासि एवं अनुपस्थित बासि के है, राजनीतिक नेताओं की छात्र की अन्तर्गत मतदान देते हैं । उन उधारी के स्पष्ट है कि मतदान की कि राजनीतिक व्यवहार का एक अन्त है यह ४२, ८ प्रविष्ट अन्तर्गत राजनीतिक अन्तर्गत की परिवार, निम्न, मजदूरी, बासीय नेता, नीचरी बासा, रिस्कार बासि है अन्तर्गत होता है ।

अन्तर्गत अन्तर्गत परिवार की मतदान के लिए अन्तर्गत मतदानपूर्ण मतदानकर्ता

नामनिवाडे की बाधियाँ, बाहु बर्त, डिगा सार, व्यापारी (नीकरी के बाधिरपद) एवं बर्त के नामरिह है । ' भिह' की छाह की छाधिक मरतय देखाडे, की बाधियाँ के २२-२५ बर्त की बाहु के , की छाधिक सार के बिनायी, मुनक एवं व्यापक नामरिह है । ' भान प्रमान' की छाह की मरतय में छाधिक मरतय प्रमान देखाडे, बिहड़ी एवं व्यापक बाध के २२-२५ बर्त की बाहु के, बाधार एवं प्राथमिक डिगा सार के व्यापक मरतय एवं व्यापारी नामरिह है । ' बर्तिया' की छाह की छाधिक मरतय देखाडे उच्च एवं मुकमान बाध के, २२-२५ बर्त एवं ३५ से ४५ बर्त की बाहु के विरदार , बाधार एवं प्राथमिक डिगा सार के मुनक एवं व्यापारी नामरिह है । ' राखीतिक मेवा' की मरतय की छाधिक मरतय देखाडे उच्च, बिहड़ी एवं व्यापक बाध के २५ से ३५ बर्त की बाहु के, विरदार , प्राथमिक एवं व्यापक डिगा सार के, मुनक एवं व्यापक नामरिह है । ' बासीय मेवा' की छाह की मरतय में छाधिक मरतय देखाडे, बिहड़ी बाध के ३५ से ४५ बर्त की बाहु के विरदार तथा बाधार डिगा सार के बाधिक एवं मुनक नामरिह है । ' नीकरीपासा' के मरतय है प्रभावित होने वाली में, बिहड़ी बाध के , २१ से ३० बर्त की बाहु के बाध स्तुत डिगा सार के, नीकरी देखाडे नामरिह है । ' रितीदार' की छाह की मरतय में छाधिक मरतय देखाडे मुकमान नामरिह है की बाधस्तुत डिगा सार एवं ३५ बर्त की बाहु का व्यापारी है । इन विवरणों से स्पष्ट है कि मरतय का व्यवहार राखीतिक बर्त के अतिरिक्त उच्च अधिकरणों द्वारा की निर्दिष्ट होता है ।

बिहड़े विधान का प्रभाव में किसे किसे राखीतिक पद के कार्यकर्ता बाधते नहीं बिहड़े १ के अन्त में ३०, ७ प्रविष्ट नामरिहों में क्या कि उनी बिहड़े बर्तों ५, २ प्रविष्ट है नामरिह सम्पत्ति है की मरतया नहीं है, २१, २ प्रविष्ट है क्या कि नीकरी नहीं बिहड़े बर्तों ७, ४ प्रविष्ट है नामरिह है की मरतया नहीं क्या १३, ३ प्रविष्ट मरतयाकर्तों है बिहड़े की पद के कार्यकर्ता में प्रभाव में नीकरी नहीं बिहड़े ; ६, ३ प्रविष्ट है उच्च बर्तों

(कटिब, कर्तव्य एवं भारतीय लोकसभ के अधिकार) के नाम न मिलीवालों में
 किसे कर्तव्य की १, ३ प्रतिलिपि मन्दाता नहीं है, २, ३ प्रतिलिपि में भारतीय लोकसभ
 का नाम न मिलीवालों में किसे, ३, २ प्रतिलिपि में न मिलीवालों में कटिब का
 नाम किसे कर्तव्य १, ३ प्रतिलिपि मन्दाता नहीं क्या २, ६ प्रतिलिपि में कटिब का
 नहीं मिले ; ३, २ प्रतिलिपि में कटिब एवं भारतीय लोकसभ दोनों के नहीं मिले
 २, ६ प्रतिलिपि में कर्तव्य एवं भारतीय लोकसभ दोनों के नहीं मिले मन्दाता ;
 १, ३ प्रतिलिपि में कटिब एवं कर्तव्य दोनों के नहीं मिले मन्दाता और केवल ६, २ प्रतिलिपि
 नामांकित सुधार रहे । कुल १६, ७ प्रतिलिपि मन्दाताओं में कटिब, १६, ७ प्रतिलिपि
 में कर्तव्य तथा २६, २ प्रतिलिपि में भारतीय लोकसभ के कार्यकर्ता मिली विधान का
 निष्पत्ति में नहीं मिले । इससे स्पष्ट है कि भारतीय लोकसभ के कार्यकर्ता का नहीं
 है का का ही नहीं मिले । भारतीय लोकसभ के कार्यकर्ता मिली का केवल नाम के
 मन्दाताओं में ही नहीं मिले ।

किन्तु यह का प्रत्याक्षी जापके दस्तावेज पर जाया ? के उत्तर में
 स्पष्ट हुआ कि २२, ६ प्रतिलिपि नामांकित के दस्तावेज पर कटिब प्रत्याक्षी पुनः के
 अन्य पक्षों किसे की जाकिरी, जायु कर्तव्य, विचार स्वर्ग एवं उच्चमय कर्तव्य
 के नामांकित हैं । ३४, २ प्रतिलिपि नामांकित के पाठ कर्तव्य का प्रत्याक्षी पक्षों
 किसे की जाकिरी, जायु कर्तव्य, विचार स्वर्ग एवं उच्चमय कर्तव्य के प्रतिनिधि हैं ।
 २६ प्रतिलिपि नामांकित के दस्तावेज पर भारतीय लोकसभ का प्रत्याक्षी पक्षों किसे
 की जाकिरी, जायु कर्तव्य विचार स्वर्ग (विधीनकर १०, १ प्रतिलिपि जापार एवं
 प्राथमिक) उच्चमय कर्तव्य (मन्तुरी की हीकर) के प्रतिनिधि हैं । १५, ८ प्रतिलिपि
 नामांकित के द्वार पर दोनों कर्तव्य के, २६ प्रतिलिपि के द्वार पर कटिब एवं कर्तव्य के,
 २६, १ प्रतिलिपि के द्वार पर कटिब एवं भारतीय लोकसभ के १८, ४ प्रतिलिपि के द्वार
 पर कर्तव्य एवं भारतीय लोकसभ के तथा ७, ८ प्रतिलिपि के द्वार पर कटिब काता के,
 प्रत्याक्षी पुनः में पक्षों । १०, ५ प्रतिलिपि नामांकित के द्वार पर केवल कटिब
 ६, २ प्रतिलिपि के दस्तावेज पर केवल कर्तव्य तथा १, ३ प्रतिलिपि के दस्तावेज पर केवल
 भारतीय लोकसभ के प्रत्याक्षी पक्षों । १०, ५ प्रतिलिपि नामांकित के दस्तावेज पर
 का कर्तव्य के मन्दाता अन्य कर्तव्य में के ही नहीं किया । कटिब का प्रत्याक्षी ५५ प्रतिलिपि
 और कर्तव्य का प्रत्याक्षी ३०, ८ प्रतिलिपि अन्य कर्तव्य के प्रत्याक्षि नामांकित के

परवाची पर नही । उन विवरणों से स्पष्ट है कि जटिल के प्रत्यासी ने उन के व्यक्ति नागरिकों के तारी पर बाहर चुनावों में कोई किया बिना ५५ प्रतिशत का मत है प्रभावित हो रहे । क्या राक्षसीय कर्तों के प्रत्यासी अपने कार्यकों के ही चुनावों में व्यक्ति कोई करते हैं ? कुल ६५, = प्रतिशत नागरिकों के परवाची पर किसी न किसी मत का प्रत्यासी बहुत कम है ३४, २ प्रतिशत के कर्तों कोई नहीं पहुंचा बिना है २६, १ प्रतिशत है किसी भी मत के कार्यकों की नहीं मिली । क्या एक राक्षसीय कर्तों के लिए कर्तों के नियमित उन चुनावों नहीं है ? प्राकृत एवं व्यक्ति मतदाताओं के परवाची पर अन्य बातों की अपेक्षा प्रत्यासी उन के व्यक्ति नहीं । ६० प्रतिशत अनुसूचित जाति के नागरिकों के परवाची पर किसी भी मत का प्रत्यासी नहीं गया भी कि अपेक्षा का परिमाण है ।

राक्षसीय कर्तों के अलावा क्या अन्य कोई व्यक्ति जायते चुनाव के क्षेत्र में बिना १ के उपर में नागरिकों ने ६६, ६ प्रतिशत नहीं का ३६, २ प्रतिशत " हा" क्या का है ६, २ प्रतिशत नागरिक अनुपार रहे । इससे स्पष्ट है कि मतदान के निर्णय को प्रभावित करने के नियमित राक्षसीय कर्तों के प्रत्यक्ष व्यक्तियों के अलावा अन्य व्यक्तियों भी प्रभाव करते हैं । चुनावकाठ में अन्य व्यक्तियों के राक्षसीय प्रित्त क्षेत्रों की स्वीकार करनेवाले नागरिकों में कुल मुसलमान जाति के ६० प्रतिशत पिछड़ी जाति के ६० प्रतिशत, अन्य जाति के २६, ७ प्रतिशत का अनुसूचित जाति के १० प्रतिशत प्रतिनिधि हैं । इससे स्पष्ट है कि मुसलमान एवं पिछड़ी जाति के नागरिक अग्रतया राक्षसीय क्षेत्रों के व्यक्ति प्रभावित होती हैं । क्या यह अनुसूचित जातीय क्षेत्रों की अनुपातिक नहीं करता ? अन्य व्यक्तियों के क्षेत्रों की न स्वीकार करनेवालों में प्राकृत अन्य जाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं मुसलमान नागरिक हैं ।

क्षेत्र के अन्य क्षेत्रों के जायदा क्षेत्र है १ के उपर में स्पष्ट हुआ कि ६६, ६ प्रतिशत नागरिकों के अन्य क्षेत्रों के क्षेत्र हैं । कुल क्षेत्रों के क्षेत्र नागरिकों में १६-२० वर्ष की आयु वाले उन के उन के और ३६-४५ वर्ष की आयु वाले उन के व्यक्ति हैं । वहीं व्यक्तियों का अनु प्रतिशत, चुनावों का ६५ प्रतिशत एवं व्यापारियों का ६५ प्रतिशत क्षेत्र है और उन के उन ३० प्रतिशत विभागी हैं । वे क्षेत्र, ग्राम पंचायत, सरकारी समिति, विराज्य प्रथम समिति, ग्राम विराज

है । क्या मजदूरगणों में लोक कर्माचारों को लागू करने की आवश्यकता का विकास निम्नलिखित की ओर चलाने की मनोबुद्धि का प्रतीक है ? क्या मजदूरगणों की वास्तविक स्थिति का यह प्रभाव कारण है ?

मजदूरगणों की ओर किस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए ? के प्रत्येक उत्तरों में नामांकित हैं २६, ४ प्रतिशत औद्योगिकारी, १६, ७ प्रतिशत श्रमिक १०, ६ प्रतिशत "देवा" ७, ६ प्रतिशत "जम्हदार" ६, २ प्रतिशत "सिद्धान्त" २, ६ प्रतिशत कीलें की बाधा" १, ३ प्रतिशत "सिद्धान्त" १, ३ प्रतिशत खुप तथा २५ प्रतिशत निम्नलिखित विशेषज्ञताओं पर विशेष ध्यान देना चाहिये । निम्नलिखित उत्तरों में ६, ६ प्रतिशत औद्योगिकारी तथा देवा" ३, ६ प्रतिशत औद्योगिकारी तथा श्रमिक ३, ६ प्रतिशत "सिद्धान्त" तथा श्रमिक १, ३ प्रतिशत "सिद्धान्त" तथा देवा" १, ३ प्रतिशत "सिद्धान्त" तथा औद्योगिकारी १, ३ प्रतिशत "जम्हदार" तथा औद्योगिकारी १, ३ प्रतिशत श्रमिक, सिद्धान्त तथा खुप १, ३ प्रतिशत श्रमिक, सिद्धान्त तथा जम्हदार, १, ३ प्रतिशत श्रमिक औद्योगिकारी तथा देवा १, ३ प्रतिशत श्रमिक औद्योगिकारी तथा निम्नलिखित श्रमिक का निम्नलिखित" तथा १, ३ प्रतिशत औद्योगिकारी, देवा, सिद्धान्त तथा जम्हदार" बताये गये । प्रत्येक उत्तरों में वार्षिक पन्ना, प्रचार एवं वाणिज्य पर एक ही नामांकित में ध्यान नहीं दिया जो वास्तविक प्रतीक होता है।

औद्योगिकारी पर अधिक ध्यान देनेवाले नामांकितों में कुछ प्रतिशत का ५० प्रतिशत "उपस्थिति" २० प्रतिशत "निम्नलिखित वाणिज्य" १५ प्रतिशत खुपवाणिज्य वाणिज्य तथा १५ प्रतिशत खुपवाणिज्य वाणिज्य का है, जो एनी वायु कारी (कार्मिक ४६-५५ वर्ष) की ओर एक स्तरों एवं एनी जम्हदार कारी (जम्हदार एवं नौकरी की ओर) का प्रतिनिधित्व करती हैं । श्रमिक पर अधिक ध्यान देनेवाले नामांकितों में कुछ प्रतिशत का ५० प्रतिशत "उपस्थिति" १६, ३ प्रतिशत निम्नलिखित वाणिज्य तथा ६, ७ प्रतिशत खुपवाणिज्य वाणिज्य का है जो एनी वायुकारी (कार्मिक २६-२५ वर्ष) का प्रचार एवं एक स्तरों के ओर एक स्तरों तथा एनी जम्हदार कारी (जम्हदार एवं नौकरी की ओर) का प्रतिनिधित्व करती हैं । "देवा" पर अधिक ध्यान देनेवाले नामांकितों में कुछ का ५० प्रतिशत "उपस्थिति" २५ प्रतिशत

पिछड़ी काचि' तथा २५ प्रसिद्ध मुसलमान काचि' के हैं जो कुल ५० वर्ग की वायु, कुल छैसाठ सयों एवं विषाधी, बच्चापक, ज्वापारी तथा बूचक काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । 'ज्वापार' पर अधिक ध्यान देनेवाले नागरिकों में कुछ प्रसिद्ध का ६६, ७ प्रसिद्ध पिछड़ी काचि' तथा २३, ३ प्रसिद्ध मुसलमान काचि' के हैं जो कुल बार वायु काँ (पिछेपकर २६-७५ वर्ग) का कुल छैसाठ सयों (प्राथमिक की होकर) तथा विषाधी, पीकर नखूर, बूचक एवं अन्य काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । उक्त पर ध्यान देनेवालों में विशेष उल्लेखनीय है कि बीसवीं की काका' पर जो प्रसिद्ध अनुसूचित काचि , 'पहुँ' पर अन्य काचि तथा 'छिटा' पर पिछड़ी काचि के छिटास नागरिकों का विशेष ध्यान है ।

सैन्यदारी' पर विशेष ध्यान देनेवाले नागरिकों में है ६० प्रसिद्ध काचि तथा ४० प्रसिद्ध कर्तव्य तथा कसा पाटी' है प्रभावित नागरिक हैं । 'खिर' पर विशेष ध्यान देनेवाले नागरिकों में है ७७, ६ प्रसिद्ध कर्तव्य एवं कसा पाटी' तथा ४६, ४ प्रसिद्ध काचि है प्रभावित नागरिक हैं । 'छिटा' पर विशेष ध्यान देनेवालों में ६२, ५ प्रसिद्ध कर्तव्य एवं कसा पाटी', २५ प्रसिद्ध काचि है प्रभावित तथा २५ प्रसिद्ध किसी भी कठ है नहीं प्रभावित नागरिक हैं ।

यदि हम कुल आवश्यक कर्तव्य का कुछ उपरों है प्रसिद्ध में प्रत्यक्ष किया जाय तो ३२, ५ प्रसिद्ध सैन्यदारी, २४, ७ प्रसिद्ध 'खिर', १५, ८ प्रसिद्ध 'छिटा' ६ प्रसिद्ध 'ज्वापार' २० प्रसिद्ध 'छिटास', ३ प्रसिद्ध 'छिटा' २ प्रसिद्ध बीसवीं की काका' २ प्रसिद्ध पहुँ तथा १ प्रसिद्ध निर्वान पीप के निवासी' की मकर भिखा है । इन विरहेजणों है स्पष्ट है कि मकराकाओं का २५ प्रसिद्ध ध्यान मकराक की सैन्यदारी , खिर, छिटा, छिटा एवं ज्वापार पर जाता है जो कि प्रत्याक्ष के अधिकतम बीका है उल्लेखित है । राक्षसीक कर्तव्य है उल्लेखित नाम १५ प्रसिद्ध ध्यान छिटास , बीसवीं की काका एवं पहुँ पर दिया जाता प्रतीय की रहा है । क्या राक्षसीक कठ कभी प्रभाव पीप में जानेवाले नागरिकों पर भी वही रूप में ध्यान देते हैं ? क्या मकराकाओं में इन गुणों का कमाव मकराकाओं की ध्यान देने के छिर बाध्य कर रहा है? राक्षसीक कर्तव्य द्वारा प्र

करने पर निम्नलिखित ध्यान का प्रविष्टि बहुत उज्ज्वल है जो कि राजनीतिक मानकता के लिए आवश्यक है ।

आप अपना मत निम्नलिखित रूप करते हैं १ के प्रत्येक अवधि में नामांकितों में ४४, ७ प्रविष्टि चुनाव के पूर्व ६, २ प्रविष्टि चुनाव के मध्य २२, ४ प्रविष्टि चुनाव के मध्य तथा २२, ७ प्रविष्टि लोक सभा के पूर्व करने मत निम्नलिखित का उच्च बताया । इसी स्पष्ट होता है कि ४४, ४ प्रविष्टि नामांकित जिनकी अपना मत देना है वही निम्नलिखित चुनाव प्रारंभ होने से ठीक लोक सभा हाली के उच्च तक करते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि ये नामांकित मतदाता राजनीतिक वर्गों की गतिविधियों, क्षेत्रों की क्षमताओं, वास्तविकताओं की पूर्तियों, कर्तव्यों में लक्ष्य, ज्ञान वाणि के उच्चता की तथा सामाजिक सुरक्षा के प्रति विशेष ध्यान रखते हैं जिनसे मत निम्नलिखित में विद्यमान होता है ।

चुनाव के पूर्व मत निम्नलिखित करनेवालों में १९, ८ प्रविष्टि उच्चतम नामांकित उच्चता है और मतदाताओं का मान २२, ६ प्रविष्टि ही है । अनुसूचित जाति के नामांकितों का ४० प्रविष्टि उच्च जाति के ४६, ५ प्रविष्टि शिक्षित जाति के ४० प्रविष्टि तथा मुसलमान जाति के ४० प्रविष्टि नामांकितों में चुनाव के पूर्व अपना मत निम्नलिखित का उच्च बताया । ये नामांकित सभी जाति वर्गों, क्षेत्रों स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोत्तरों का २२, ४ प्रविष्टि) एवं व्यवसाय वर्गों (७५ प्रविष्टि व्यवसायों तथा ४०, ८ प्रविष्टि मजदूरों) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

चुनाव के मध्य में मत निम्नलिखित करनेवालों में ९, ३ प्रविष्टि उच्चतम नामांकित हैं और मतदाता ७, ६ प्रविष्टि ही हैं । इस समूह में उच्च जाति (केवल हींदू) तथा उच्च जातियों के, सभी जाति वर्गों (२६-२७ वर्षों और २६ से ३५ वर्ष की हींदू) सभी क्षेत्रों स्तरों (साक्षर से ऊपर स्नातक से नीचे हींदू) तथा विभाजित, कुल एवं मजदूरों का प्रतिनिधित्व है ।

चुनाव के मध्य में मत निम्नलिखित करनेवालों में २, ६ प्रविष्टि उच्चतम हैं और १६, ८ प्रविष्टि ही मतदाता हैं । इस समूह में सभी जातियों

(विद्यमानकर देय, पिछड़ी एवं अनुपस्थित) के सभी वायु नहीं के सभी छिपाकर रखें (स्नायक एवं स्नायकीयर की होकर) के तथा सभी सम्बन्ध नहीं (सम्बन्ध होकर) के मामलों का प्रतिनिधित्व है ।

ठीक मतदान के पूर्व ' मत निगमि करीवाटे मामलों में १, ३ प्रतिशत व्यक्तता का २२, ३ प्रतिशत व्यक्त है । यह मूल में कुछ मुकामान वाति के मामलों का ४० प्रतिशत उच्च वाति के २५ प्रतिशत पिछड़ी वाति के २० प्रतिशत अनुपस्थित वाति के १० प्रतिशत ; का प्रतिनिधित्व है । यह मूल में सभी, वायु नहीं, छिपाकर रखें तथा सम्बन्ध नहीं का प्रतिनिधित्व है ।

राजनीतिक नहीं के व्यक्त की व्यक्तता प्रकट करती व्यक्त का के प्रति पूर्ण निष्ठा की व्यक्त होती है के मतदान का निगमि कर करते हैं इसकी वापसी की स्वाभाविक उत्पत्ति वापस हुई । वापसात मूल मामलों में है व्यक्त की कटिब का व्यक्त बहालवालों में ४२ प्रतिशत पुनः के पूर्व १६ प्रतिशत पुनः के मध्य १०, ३ प्रतिशत पुनः के व्यक्त तथा २१, ५ प्रतिशत ठीक मतदान के पूर्व ' मत निगमि काठ स्वीकार किया । भारतीय व्यक्त के व्यक्तों में ६० प्रतिशत पुनः के पूर्व १६, ५ प्रतिशत ' पुनः के मध्य तथा १६, ५ प्रतिशत पुनः के व्यक्त में मत निगमि काठ स्वीकार किया । यह मूल है स्पष्ट है कि राजनीतिक नहीं के व्यक्त की मत निगमि करने में उदासीन की स्थिति का अनुभव करती हैं । क्या यह राजनीतिक नहीं द्वारा किये जानेवाले राजनीतिक उपाधीकरण की व्यक्तताओं का परिचायक नहीं है ?

यह है वायु मतदाता हुए यह है वायु का विमान क्या और उदासीन पुनः में किये नहीं की मत दिया है ? के ठीक में मामलों में ३०, ८ प्रतिशत ' यह नहीं ३४, २ प्रतिशत ही नहीं, ६, ६ प्रतिशत तीन नहीं तथा १, ३ प्रतिशत बार नहीं के मतों में मतदान किया जाता और १०, १ प्रतिशत के ठीक प्रत्य ही नहीं व्यक्त । इसी स्पष्ट है कि ४२, १ प्रतिशत व्यक्त मामलों मतदान में यह परिचय किये की कि ' मतदाता मतदाता ' (कलौटिंग बोटर) समित का करती है । ' एक नहीं के मतों में मतदान करीवाटे मतदाताओं में अनुपस्थित वाति के ३०, ५ प्रतिशत उच्च वाति के ३६, ३ प्रतिशत पिछड़ी वाति के ४१, ८ प्रतिशत

क्या मुसलमान जाति के ३०, ५ मसदादा हैं जो सभी जायु कर्मी, छिपाक स्तरीं एवं व्यवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं ।^१ दो वर्गों के पदा में मतदान करने वाले मसदादाओं में पिछड़ी जाति के ५२ प्रतिशत, उच्च जाति के ४२, ६ प्रतिशत मुसलमान, ३०, ५ प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति १२, ५ मसदादा हैं जो कवल नानासिंही के सभी जायु कर्मी, छिपाक स्तरीं, व्यवसाय कर्मी (विभागी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । तीन वर्गों के पदा में मतदान करनेवाले मसदादाओं में मुसलमान जाति के २५ प्रतिशत उच्च जाति के १०, ८ प्रतिशत (सभी ब्राह्मण) तथा पिछड़ी जाति के ६, २ प्रतिशत मसदादा हैं जो सभी २० वर्ष से ३० वर्ष के मध्य के जायु कर्मी, सभी छिपाक स्तरीं, कृषक, व्यापक एवं शिक्षित कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं ।^{४६} चार वर्गों के पदा में मतदान करनेवाले नानासिंही में कुछ चार चार मतदान किया है और प्रत्येक चार चार परिवर्तन किया है ।

यदि जातिगत आधार पर मसदादाओं द्वारा किये गये वोट परिवर्तन का अध्ययन किया जाय तो इन मुसलमान, पिछड़ी उच्च एवं अनुसूचित जाति का होता है किन्तु वास्तविक यह है कि उच्च जाति में नासिंही का प्रतिशत वोट परिवर्तन में कम है वास्तविक है । जम्मू के ५६ प्रतिशत तथा कश्मीर के ३३ प्रतिशत कर्मी ने वोट परिवर्तन किया है । इससे स्पष्ट मिलता है कि कश्मीर के कर्मी ने कम वोट परिवर्तन किया है । क्या राक्षीतिक वर्गों के संगठन के लिए उनके कर्मी द्वारा वोट परिवर्तन नीति प्रत्यक्ष है ? क्या मतदान में मसदादाओं द्वारा वोट परिवर्तन करना उनके प्रतिनिधियों के लिए अनुकरणीय है ? क्या वोट परिवर्तन राक्षीतिक विकास का एक पदा है ?

वाक्यी दृष्टि में कि जाति के किये प्रतिशत मसदादा मतदान में मान लेते हैं ? के प्रत्येक जाति में मतदान का प्रतिशत प्रत्येक जाति के नानासिंही ने जो बताया उसका सीधे प्रतिशत निकाला गया किन्तु अध्ययन कारिणी में करने से निष्कर्षित स्पष्ट स्पष्ट होते हैं -

सारणी - १०

बात के मामलों की दृष्टि में	बात के मतदान में प्रयुक्त					राज्य	वैय
	सुसज्जित	मुसज्जित	बात	विषय का क्षेत्र	प्राप्त		
सुसज्जित	२३, ८	७७	२२, ३	२२	६९, ७	६०	५२
मुसज्जित	२२	७७, ६	२२	२२	५२	६६	७७
विषय	२२, ७	२२, ४	७७, ६	६९, ६	६०	६०	६६
प्राप्त	२२, २	२२	२२, ७	७९, ७	५२	५६	५७
राज्य	२२	७७	७ ७७	७९	६२	५६, ६	७७, ६
वैय	६६, ६	६६, ४	७७	७९	६०	५६	५२

- १- सुसज्जित बात के मामलों की दृष्टि में उसी बात के मतदाता ही उन से अधिक मतदान में भाग लेते हैं जिसकी दृष्टि अन्य बातों के मामलों में की गया है ।
- २- प्राप्त, राज्य एवं वैय बात के मामलों की दृष्टि में बायें बात के मतदाताओं का मतदान में अवधिक प्रयुक्त है जिसकी दृष्टि मुसज्जित मामलों में की गया है और सुसज्जित बात के मामलों में की गयी मतदाता उन्हीं की स्थापना किया है ।
- ३- मुसज्जित मामलों में भी स्वीकार किया है कि उसी बात के मतदाताओं का मतदान में भाग प्रयुक्त करने में सीधे स्थापना है जिसकी दृष्टि प्राप्त राज्य एवं वैय मामलों में की की है ।

४- पिछड़ी काति के नागरिकों ने विन्द्य या केन्द्र मत्वासाधनों का बहुत स्थान स्वीकार किया है किन्तु कुछ प्राप्ति एवं वापिस नागरिकों ने भी की है ।

५- जीवत प्रतिष्ठकों के बीच है स्पष्ट है कि मत्वासाधन के नाम प्रत्यक्ष में इन याकन, अनुपिष्ट काति, मुक्तमान, विन्द्य या केन्द्र, वापिस, प्राप्ति एवं केवल मत्वासाधनों का है ।

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि पिछड़ी काति, अनुपिष्ट काति एवं मुक्तमान मत्वासाधन में अधिक नाम प्रत्यक्ष करते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि वे राक्षसीति के कार्यों के अधिक विस्तार हैं और उनके प्रति उचित भी होते हैं ।

जो मत्वासाधन मत देने नहीं काते हैं उनका प्रमुख कारण क्या है ? के प्रत्यक्ष उत्तरों में नागरिकों ने ३३, ४ प्रतिष्ठकों राक्षसीति में रुचि नहीं, १०, २ प्रतिष्ठकों जीव नारायण की कार्यो १३, ६ प्रतिष्ठकों निवृत्ति पर विश्वास नहीं, ११, ६ प्रतिष्ठकों बाने में काम का मुक्तमान २, ६ प्रतिष्ठकों उध विन नीकन की व्यवस्था नहीं, २, ६ प्रतिष्ठकों बरकार से नारायण ३, ६ प्रतिष्ठकों जीव काम नहीं, १, ३ प्रतिष्ठकों वास्तविक व्यवस्था का ५, २ प्रतिष्ठकों निवृत्ति कारणों से मत्वासाधन में नाम प्रत्यक्ष न करता बताया का १, ३ प्रतिष्ठकों अनुसार है । निवृत्ति कारण में १, ३ प्रतिष्ठकों बाने में काम का मुक्तमान एवं उध विन नीकन^{४२} की व्यवस्था नहीं । १, ३ प्रतिष्ठकों उध विन नीकन की व्यवस्था नहीं एवं जीव नारायण की कार्यो^{४३} १, ३ प्रतिष्ठकों राक्षसीति में रुचि नहीं, बाने में काम का मुक्तमान तथा जीव नारायण की कार्यो का १, ३ प्रतिष्ठकों राक्षसीति में रुचि नहीं, बाने में काम का मुक्तमान तथा उध विन नीकन की व्यवस्था नहीं सम्मिलित है ।^{४४}

राक्षसीति में रुचि नहीं, जीव की मत्वासाधन में न सम्मिलित होने का प्रमुख कारण बतायावाले नागरिकों में ६३, ४ प्रतिष्ठकों उच्च काति २०, २ प्रतिष्ठकों पिछड़ी काति ६, ७ प्रतिष्ठकों अनुपिष्ट काति का ६, ७ प्रतिष्ठकों

‘मुकुटमान’ वाति के हैं जो सभी वायु काँ, छेदाक स्तरों (विस्तार की होड़कर) एवं व्यसहाय काँ (नाँकरी होड़कर) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

छीन नाराय की काँकी की मजबान न करने का कारण यथानिवाडे नानरिहों में ३३, ८ प्रविष्ट उच्च वाति ३८, ६ प्रविष्ट पिछड़ी वाति तथा ७, ७ प्रविष्ट मुकुटमान वाति के हैं जो सभी वायुकाँ, छेदाक स्तरों (विस्तार होड़कर) एवं व्यसहाय काँ (व्यापन होड़कर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । अनुपुष्टि वाति के नानरिह छीनों की नारायकी पर ध्यान नहीं की प्रतीत हो रहे हैं जो कि उनकी राखीतिक प्रकृता का प्रमुख कारण है ।

‘निवाफि पर बिस्वास नहीं’ की प्रमुख कारण यथानिवाडे नानरिहों में ३६, ६ प्रविष्ट उच्च वाति (वैश्य होड़कर) ३६, ६ प्रविष्ट मुकुटमानवाति ३६, ८ प्रविष्ट पिछड़ी वाति तथा ६, ६ प्रविष्ट अनुपुष्टि वाति के हैं जो क्रम से पाँच वायु काँ, छीन छेदाक स्तरों (विस्तार की होड़कर) तथा छीन व्यसहाय काँ (व्यापारी एवं मकूर होड़कर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । इससे स्पष्ट है कि व्यापारी एवं मकूर छीन निवाफि पर बिस्वास करता है ।

जाने में जय का मुकुटमान, छीन की प्रमुख कारण यथानिवाडे नानरिहों में २२, २ प्रविष्ट उच्च वाति (छीन वैश्य) ४४, ५ प्रविष्ट पिछड़ी वाति २२, २ प्रविष्ट मुकुटमान वाति तथा २२, २ प्रविष्ट अनुपुष्टि वाति के हैं जो सबसे से पचास वर्ग वायु, छीन छेदाक स्तरों (स्नातक से नीचे होड़कर) तथा छीन व्यसहाय काँ (बिबावी एवं व्यापक होड़कर) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

जब किन नीकन की व्यसहाय नहीं की प्रमुख कारण यथानिवाडे अनुपुष्टि वाति के बाँध से बाँधीत वर्ग के हाफार एवं प्राथमिक छिना स्तर से ऊपर की छेदाक योचता के मुकाबल एवं मकूर नानरिह हैं । वादर्थ है कि नीकन का व्यापक मजबान की प्रभावित करता है ।

हरकार से नाराय व्यसि हरकार से नारायकी प्रकट करने का एक हाफक मजबान में पाय न छेना की यथानिवाडे वैश्य एवं अनुपुष्टि वाति के प्राथमिक

जब बाजार खिन्ना है ऊपर की छेदिक बोन्यता के व्यापारी एवं मजदूर हैं ।
 उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि मजदूरों में मान न होने के कारण, = प्रचलित राखीतिथि
 तथा २१, ६ प्रचलित वार्षिक कारण हैं । विचारियों में राखीतिथि वार्षिक
 की कमी, ईश्वरों का कम तथा विचारों के मजदूर की न ऊपर उठा बादि का
 वास्तव राखीतिथि क्यों पर है । मजदूरों की अन्याय करीब बोन्यता होने
 है राखीतिथि आधिकारण की यह विधि ।

(३०) मान्यारी -

‘कम मान्यारी की सीढ़ी में ऊपर की छेदिक बादि वार्षिक का विचार
 मान्यारी तथा है ? के प्रचलित उपरोक्त में मान्यारी में ११, = प्रचलित विचारों की
 ६२, ६ प्रचलित वार्षिक का २, ६ प्रचलित का २, २ प्रचलित बादि २, २
 प्रचलित बादि है वार्षिक का १, २ प्रचलित वार्षिक’ मान्यारी तथा कहाया । कम
 उपरोक्त है स्पष्ट है कि २२, २ प्रचलित मान्यारी का मान्यारी की राखी में ऊपर की
 वार्षिक का मान्यारी मान्यारी वार्षिक में रखी है वार्षिक ११, ७ प्रचलित मान्यारी की बादि
 या वार्षिक वार्षिक मान्यारी रखी है । ऐसा प्रचलित ही तथा है कि वार्षिक मान्यारी के
 छेदिक मान्यारी मान्यारी की विचारों के रहे हैं ।’ विचारों की मान्यारी मान्यारी
 मान्यारी उच्च बादि में १६, ७ प्रचलित मान्यारी बादि में १० प्रचलित मान्यारी बादि
 में २० प्रचलित तथा मान्यारी में १० प्रचलित है की की वार्षिक (२६ है ३५ वर्ष
 की छेदिक) मान्यारी । मान्यारी की की छेदिक) एवं मान्यारी (मान्यारी
 की छेदिक) का मान्यारी करते हैं ।’ वार्षिक का मान्यारी मान्यारी मान्यारी मान्यारी
 बादि में ६६, ४ प्रचलित मान्यारी बादि में ६६ प्रचलित मान्यारी बादि में ६० प्रचलित
 ६० प्रचलित तथा मान्यारी में ६० प्रचलित है की की वार्षिक , मान्यारी
 एवं मान्यारी का मान्यारी करते हैं । स्पष्ट है कि की मान्यारी के
 मान्यारी की कम मान्यारी के सीढ़ी में ऊपर की छेदिक वार्षिक का वार्षिक का मान्यारी
 का मान्यारी तथा है ।’ कम मान्यारी मान्यारी मान्यारी में २० प्रचलित मान्यारी
 बादि में ६ प्रचलित है की २१ है ३५ वर्ष एवं ४६-५५ वर्ष के वार्षिक , मान्यारी
 है ऊपर के मान्यारी एवं मान्यारी का मान्यारी का मान्यारी मान्यारी करते हैं

वाचा एवं उसके अधिक व्यापकतावाले नागरिक उच्च जाति (वैश्य वीरुणर) में ५, ५ प्रतिशत , पिछड़ी जाति में २० प्रतिशत अनुसूचित जाति में १० प्रतिशत तथा मुसलमानों में १० प्रतिशत हैं जो १६ से २५ वर्ग एवं ३६ से ४५ वर्ग के जायु कर्मी, स्नातक से नीचे के सभी शैक्षणिक स्तरों एवं सभी व्यवसाय कर्मी (व्यापक वीरुणर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । " पूर्ण " व्यापकतावाले नागरिक ५० वर्गीय, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त नागरिक कुलक हैं ।

कौनसा समय में एवं कौनसा समानदार कौन से ? के प्रश्न उत्तरों में नागरिकों में ३५, ७ प्रतिशत पुलिब २२, ४ प्रतिशत " कौनसे " १६, ७ प्रतिशत राजनीतिक नेता १०, ५ प्रतिशत कार्यलय का बाध ३, ६ प्रतिशत पेशीकण " १, ३ प्रतिशत लैबीनियर १, ३ प्रतिशत राजनीतिक नेता और कौनसे का १, ३ प्रतिशत सभी छात्रों को एवं कौनसा समानदार बताया है ३, ६ प्रतिशत नागरिकों में उत्तर ही नहीं दिया । इसके स्पष्ट है कि नागरिकों की दृष्टि में पुलिब एवं कौनसा समानदार है इसके बाध कौनसे राजनीतिक नेता एवं कार्यलय के बाध का प्रश्न करता है । " पुलिब " को एवं कौनसा समानदार बतायावाले नागरिक उच्च जाति में ३६, २ प्रतिशत , पिछड़ी जाति में ३५ प्रतिशत , अनुसूचित जाति में , ४० प्रतिशत तथा मुसलमानों में ३० प्रतिशत हैं जो सभी जायु कर्मी, शैक्षणिक स्तरों, एवं व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । " कौनसे " को एवं कौनसा समानदार बताया वाले नागरिक उच्च जाति में २२, ४ प्रतिशत (कौनसे नागरिकों का माय ७५ प्रतिशत हैं) पिछड़ी जाति में ३० प्रतिशत मुसलमानों में २० प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति में १० प्रतिशत हैं जो सभी जायु कर्मी एवं शैक्षणिक स्तरों तथा विषाधी और कुलक कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक ही व्यापक, मकूर, मीकर एवं व्यापारी में " कौनसे " को एवं कौनसा समानदार नहीं बताया , क्या कौनसे का कौनसे इनके बहुत का होता बहुत कारण है । " राजनीतिक नेता " को एवं कौनसा समानदार बताया वाले नागरिक २२, ४ प्रतिशत उच्च जाति में ३० प्रतिशत अनुसूचित जाति में , २० प्रतिशत मुसलमानों में तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जाति में हैं जो सभी जायु कर्मी (विवेक कर २१-२५ वर्ग) एवं शैक्षणिक स्तरों और विषाधी, कुलक, व्यापारी

जैसे मजदूर वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। क्या वह समस्त राष्ट्रीयतावादी वर्गों के मातृ में
कर्म का टीका नहीं है? क्या वह मुठे वास्तविकताओं एवं प्रतीकों का परिणाम है?

“आदर्श के बाध” को हम है कम हीनकार करनेवाले नागरिक
८, ४ प्रतिशत उच्च वर्ग में, १५ प्रतिशत शिक्षित वर्ग में १० प्रतिशत अनुसूचित वर्ग
में तथा १० प्रतिशत मुसलमानों में हैं जो २५ वर्ष के ऊपर के बाध वर्गों की शैक्षणिक
स्तरों (निरक्षर की शीकुल) एवं व्यवसाय वर्गों (व्यापक शीकुल) का प्रतिनिधित्व
करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि व्यापकों का आदर्श है कि कोई व्यापक कम
में है। “मशीन” को हम है कम हीनकार करनेवाले नागरिक स्नातक एवं स्नातकीय
शैक्षणिक योग्यता के, व्यापक एवं विद्यार्थी हैं जो १, ६ प्रतिशत उच्च वर्ग (उच्च
शिक्षण) में तथा १ प्रतिशत शिक्षित वर्ग में हैं। कम एक हीनकार किान का
नीच है शिक्षण एवं शिक्षित वर्ग के प्रतिनिधित्व की विधायक पुनः की है क्या इसीलिए
कम हीनकार वर्गों की नीचों है कि कोई का अनुभव है? “वैश्विक” को हम है
कम हीनकार मुसलमान वर्ग के प्रतिनिधित्व में बताया है।

किसे के लिए करना हम है अच्छा होना? के प्रत्यक्ष उत्तरों में
नागरिकों में ५०, ६ प्रतिशत के १४, ५ प्रतिशत के १४, ५ प्रतिशत के वर्गों
१०, ५ प्रतिशत के प्रतिशत के २, ६ प्रतिशत वर्गों के लिए करना हम है अच्छा
बताया। इसी स्पष्ट है कि के लिए प्राणोत्सर्ग करने की कामना के लिए है जो
कि के लिए नीच का प्रमाण है। के लिए करना हम है अच्छा होना ऐसा एक भी
नागरिक ने नहीं बताया। क्या वह सही भिन्नता है कि नागरिकों का दृष्टिकोण
१०, १ प्रतिशत की पूर्ण नीचतावादी है?

“के” के लिए करने को हम है अच्छा करनेवाले नागरिक
६३, ४ प्रतिशत उच्च वर्ग में (किन्तु नागरिकों में ८० प्रतिशत) ५० प्रतिशत शिक्षित
वर्ग में, १० प्रतिशत मुसलमानों में तथा ४० प्रतिशत अनुसूचित वर्गों में हैं जो की
बाध वर्गों (२५ है २५ वर्ष के कम है अधिक) की शैक्षणिक स्तरों (निरक्षर की
शीकुल) एवं व्यवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। के लिए करने को हम

वे वज्रवा समकमेवाठे नागरिक ५० प्रतिशत मुसलमानों में १० प्रतिशत पिछड़ी जाति में,
 १० प्रतिशत अनुसूचित जाति में तथा ८० प्रतिशत उच्च जाति में (वेला हीकुकर)
 वे जो २६ वर्ष के ऊपर के वायु वर्ग, उनी क्षैतिक स्तरों (स्नातक के नीचे हीकुकर)
 तथा कुलक एवं मजदूर वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं । " वर्गों " के लिए मतदा
 त्व वे वज्रवा समकमेवाठे नागरिक २५ प्रतिशत पिछड़ी जाति में, १४ प्रतिशत उच्च
 जाति में (वेला में का है अधिक) तथा १० प्रतिशत अनुसूचित जाति में वे जो
 उनी वायु वर्ग, विस्तार के कार्यकुल स्तर के क्षैतिक वर्गों (विस्तारों में ६२, ५
 प्रतिशत) कुलक मजदूर एवं व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं । " प्रतिष्ठा " के
 लिए मतदा त्व वे वज्रवा समकमेवाठे नागरिक ३० प्रतिशत अनुसूचित जाति में
 १५ प्रतिशत पिछड़ी जाति में तथा ५, ६ प्रतिशत उच्च जाति में (उनी वेला) वे
 जो उनी वायु वर्ग (१६ के २० वर्ष हीकुकर) उनी क्षैतिक स्तरों (स्नातक के नीचे
 एवं ऊपर हीकुकर) एवं कुलक, मजदूर एवं व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते
 हैं । " जाति " के लिए मतदाते नागरिक १० प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा २, ८ प्रतिशत
 उच्च जाति (ब्राह्मण) में वे जो २१ के २५ वर्ष के वायु वर्ग, स्नातक के नीचे एवं
 स्नातकोपर क्षैतिक स्तरों, एवं विपार्थी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

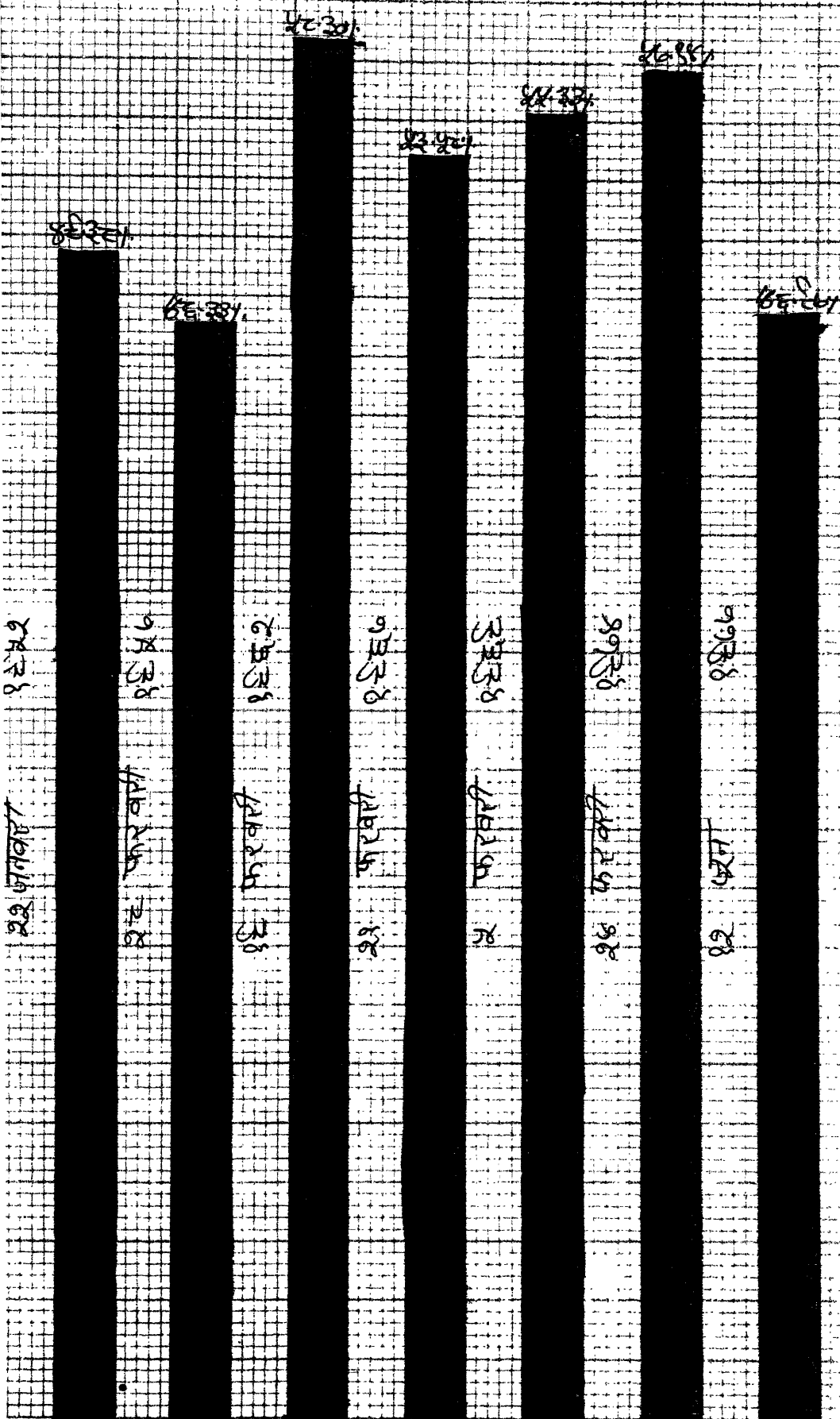
उलिया विधान का निर्वाचनों के मतदान में भाग ग्रहण
 करनेवाले एवं उनके प्रति उदासीन मतदाताओं की संख्या: ६ (१) तथा ६ (२)
 के रेखा चिह्नों में स्पष्ट किया गया है । का एक संयुक्त हुए निर्वाचनों में का है
 अधिक मतदान १६६२ ई० में ५८, ३० प्रतिशत हुआ तथा का है अधिक उदासीन
 मतदाता १६५० ई० में ५३, ६० प्रतिशत रहे हैं ।

(वर्ग पत्र २५ से० मी० x २० से० मी०)

३१४ प

विधान सभा चुनावों में मतदान प्रतिशत

पैमाना - १ इंच = ०.५१



रखा चित्र ६(१)

सन्दर्भ-संकेत:-

- १- ए० डब्ल्यू० ग्रीन 'बीज्याङ्काकी' पुस्तक १९०, मूल जयवीर प्रकाशना
जयवाहन की जाला, पुस्तक २१।
- २- बाम्बन, बीज्याङ्काकी, पुस्तक १९०, पूर्वाङ्क व मूल ।
- ३- ग्री० रामचन्द्र सिंह, जयवाहन परिषद, १९६०, पुस्तक ५०० ।
- ४- इसी तरह ए० एडिन्ग्स, एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक एन पिब्लिश (वाशिंगटन,
टेनसस डिप्लोमेटिक वाफ टैम्बल ग्रुप, पुस्तक १२५, मूल द्वारा लिखित एडिन्ग्स
के डिप्लोमेटिक पिब्लिश एन पीपुलर डिप्लोमेटिक पिब्लिश ", १९६६, पुस्तक २० ।
- ५- टी० पार्किन्स, बी बीस डिप्लोमेटिक, पूर्वाङ्क व मूल, पुस्तक ९४ ।
- ६- ए० ए० डिप्लोमेटिक, पीपुलर डिप्लोमेटिक, १९३४, पुस्तक २४ ।
- ७- बी० एडिन्ग्स, बीज्याङ्काकी वाफ पार्किन्स एन पीपुलर डिप्लोमेटिक बीज्याङ्काकी
डिप्लोमेटिक, एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक एन बीस डिप्लोमेटिक, पुस्तक ६६ ।
- ८- डिप्लोमेटिक, के डिप्लोमेटिक, पिब्लिश एन पीपुलर डिप्लोमेटिक पिब्लिश, १९६६, पुस्तक ७ ।
- ९- एडिन्ग्स ए० वाशिंगटन, एन वाशिंगटन, पीपुलर डिप्लोमेटिक एडिन्ग्स- बी डिप्लोमेटिक एन
एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक, एन एडिन्ग्स, १९०२, पुस्तक ४६ ।
- १०- बी० एडिन्ग्स, एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक, १९०५, पुस्तक ६५ ।
- ११- केन्डर बेराउट, पीपुलर डिप्लोमेटिक एन पीपुलर डिप्लोमेटिक डिप्लोमेटिक
पीपुलर डिप्लोमेटिक (१९६०) २० पुस्तक ३६२- मूल पब्लिश बीबीपिब्लिश एन
पीपुलर डिप्लोमेटिक, पुस्तक ४६६ ।
- १२- एन वाशिंगटन, पब्लिश बीबीपिब्लिश एन पीपुलर डिप्लोमेटिक, पुस्तक ४१६
पर मूल (बीबीपिब्लिश, " एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक बी डिप्लोमेटिक डिप्लोमेटिक,
एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक डिप्लोमेटिक, पार्किन्स एन बीस डिप्लोमेटिक, १९६६, पुस्तक १०
लिखा गया)।
- १३- पूर्वाङ्क पुस्तक ६६६ ।
- १४- बी बाम्बन एडिन्ग्स डिप्लोमेटिक ।

- १५- श्री मुन्नीकाठ खजारी प्रसाद, बरौच प्रान्त प्रसाद से साक्षात्कार
- १६- श्री श्रीका प्रसाद, मुन्नीका ।
- १७- श्री नाथिन मुनि बन्धारी, कर्ना ।
- १८- मु० लदे बाऊ, बीछा ।
- १९- श्री कृष्णचन्द्र पाण्डेय, प्रसाद, प्रान्त प्रसाद बरौचा ।
- २०- मु० लदे बाऊ, बीछा ।
- २१- श्री यशु पाण्डे, कर्ना, १२-१०-७५ ।
- २२- श्री लक्ष्मण सिंह - पिपे कीट, २१-१०-७७ ।
- २३- श्री रामप्रसाद केसरी, कर्नापुर, १२-१०-७५ ।
- २४- श्रीमती लक्ष्मण देवी, मु० मुराबाद ।
- २५- श्री लक्ष्मण बाबा, टेका, २३-१०-७७ ।
- २६- मु० बाबा, बीछा, १२-१०-७५ ।
- २७- श्री लक्ष्मणारी सिंह, बीछापुर, २२-१०-७५ ।
- २८- श्री लक्ष्मण बाबा सिंह, बरौचा, १७-१०-७५ ।
- २९- श्री लक्ष्मण बाबा १८-१०-७७ ।
- ३०- श्री लक्ष्मण बाबा सिंह बरौचा ।
- ३१- श्री लक्ष्मण बाबा, कर्ना ।
- ३२- श्री लक्ष्मण, बीछा ।
- ३३- श्री रामचन्द्र नाथी - कर्ना ।
- ३४- श्री लक्ष्मण मुनि, बिछा, बन्धारी के० रा० के० लक्ष्मण कर्ना बाबा, बीछा, कर्नाबाद ।
- ३५- लक्ष्मण, बीछा ।

१६- श्री मुहम्मद मुहम्मद, कैलाश

७- वांछित भूतना वधिविषय

१७- श्री मुहम्मदजीवनपति विवारी, विवारी

१८- श्री रामकाठ, वांछित

१९- श्री मु० मकरीवी वधिवारी, मीमांसीपुर

२०- श्री लकीपुला, वधिवारी, विवारी

२१- श्री रामराव विव, मीमांसीपुर

२२- श्री लीमनाथ (वधिवारी वधिवारी) वीरवारी

२३- श्री लकीपुला वधिवारी, वीरवारी

२४- श्री लकीपुला (वधिवारी वधिवारी) वीरवारी

२५- श्री लीमनाथ वधिवारी, वीरवारी

२६- मु० लीमनाथ, वीरवारी

राजनीतिक ज्ञान (Political Cognition)

प्रस्तुत अध्याय में सीधिया विज्ञान का नीचे के भागियों की राजनीतिक संस्थाओं, प्राधिकारियों एवं अधिकारों के नीचे के भाग की व्यवस्थापन का विवरण दिया गया है ।

राजनीतिक जानकारी के लिए ज्ञान क्या कहते हैं ? के प्रत्येक उपरी में है भागियों में ३६, ५ प्रतिक्रियां कुछ नहीं तथा ६०, ५ प्रतिक्रियां आचार का, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का नाम दिया गया । कुछ नहीं कहनेवाले भागियों में २० प्रतिक्रियां अनुपस्थित भागों में ३५ प्रतिक्रियां भिन्न भागों में, ३० प्रतिक्रियां मुक्तमानों में तथा २०, २ प्रतिक्रियां उच्च भागों में हैं जो सभी वास्तुकारों (विनिर्माण २६ वर्ष के ऊपर के) सभी औद्योगिक स्तरों (विनिर्माण निरंतर एवं आचार) तथा विभागीय, कुचक (विनिर्माण) मकदूर एवं व्यापारी भागों का प्रतिनिधित्व करते हैं । आचार का, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों कहनेवाले सभी भागियों, वास्तुकारों, औद्योगिक स्तरों (निरंतरों की सीढ़ी) एवं व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक जानकारी के लिए अध्ययन करनेवालों में है ३६, ६ प्रतिक्रियां एवं ६०, १ प्रतिक्रियां नीचे ५, २ प्रतिक्रियां तीन तथा ६, ३ प्रतिक्रियां आचार का आचार भागों का अध्ययन करते हैं । एक आचार का कहनेवाले भागियों सभी भागियों एवं वास्तुकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं । नीचे आचार का कहनेवालों में एक की मुक्तमान नहीं मिला । तीन आचार भागों का अध्ययन करनेवालों में सभी उच्च भागों (वस्तु सीढ़ी) के १३, १ प्रतिक्रियां भागियों हैं, जो प्राथमिक स्नातक के नीचे तथा स्नातक एवं स्नातकोपर औद्योगिक स्तरों के विभागीय कुचक एवं व्यवसाय भागों का प्रतिनिधित्व करते हैं । ज्ञान भागों के अनुसार " वैयक्तिक व्यवस्था " : कक्षाएं टाउन्स, " राष्ट्रीय सीधिया पत्रिका " २०वीं. सभी का पैमाने, " विज्ञान " " साम्प्रदायिक " विज्ञान " " राजनीति सीढ़ी " तथा " राष्ट्रपति " आचार का एवं पत्रिकाओं के नाम दिए गये । पत्रिकाओं का अध्ययन करनेवाले भागियों २२, ३ प्रतिक्रियां उच्च (विनिर्माण प्रारम्भ) १० प्रतिक्रियां अनुपस्थित, १० प्रतिक्रियां मुक्तमान

तथा ५ प्रतिशत शिक्षी कारियों में से भी विपरीत, व्यापक, कुचक एवं व्यापारी कारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि राखीयिक कारकारी के लिए अब वे व्यक्ति उच्च कारों के नागरिक प्रवास करते हैं। राखीयिक कारों की व्यवस्था प्रदान करनेवालों में से २४, ५ प्रतिशत उच्च कारों पर, परिवारों एवं मुक्तों का व्यवधान करते हैं किन्तु स्पष्ट है कि व्यवस्था प्रदान करने से राखीयिक अनिच्छित वापस होती है।

जब वापस फैसलार में रोकियों या हॉबिटर से १ के उपर में नागरिकों में ५२, ६ प्रतिशत नहीं तथा ४०, ४ प्रतिशत का जमा। रोकियों जमा हॉबिटर रखे जाते नागरिक ४५, ४ प्रतिशत, ५० प्रतिशत मुक्तमान, ४० प्रतिशत शिक्षी तथा २० प्रतिशत अनुसूचित कारियों में से भी उनी वापस कारों, विपरीत स्तरों एवं व्यवधान कारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। २४, ५ प्रतिशत नागरिक शिक्षी पाय रोकियों या हॉबिटर की से किन्तु कारों पर वापस नहीं पड़ते हैं। ये नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित १६, ५ प्रतिशत उच्च, १० प्रतिशत शिक्षी तथा १० प्रतिशत मुक्तमान, कारियों में से भी उनी वापस कारों, विपरीत स्तरों (स्वातन्त्र से नीचे एवं ऊपर नहीं) एवं कुचकों मजदूरों तथा व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। २२, ५ प्रतिशत नागरिक रोकियों या हॉबिटर रखे हुए की कारों पर एवं परिवारों पड़ते हैं। ये नागरिक ४१, ७ प्रतिशत उच्च, ४० प्रतिशत मुक्तमान तथा ३० प्रतिशत शिक्षी कारियों में से भी उनी वापस कारों, विपरीत स्तरों (निरक्षरों की छोड़कर विशेषकर चार स्तर के ऊपर) एवं विपरीतों, कुचकों, व्यापारों, नीचों तथा व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। २५ प्रतिशत नागरिकों के पास न ही रोकियों या हॉबिटर से १ के कारों पर वापस की पड़ते हैं। ये नागरिक ६० प्रतिशत अनुसूचित, २५ प्रतिशत शिक्षी, २० प्रतिशत मुक्तमान तथा ११, १ प्रतिशत उच्च कारियों में से किन्हीं से ६२, ५ प्रतिशत की वापस ४०-६० वर्ष के मध्य हैं। इन नागरिकों में ४२ प्रतिशत निरक्षर एवं कारों ३० प्रतिशत प्राथमिक एवं चार स्तर तथा ५ प्रतिशत स्वातन्त्र, विपरीत स्तरों के कुचक, मजदूर, व्यापारी तथा विपरीत हैं। राखीयिक कारों के कार्यों में से ४२ प्रतिशत के पास रोकियों या हॉबिटर से। अब विवरण से स्पष्ट है कि रोकियों या हॉबिटर की मुक्तानी सेहत कारों का

[illegible]

जहाँ परिवार के किसी व्यक्ति का कार्य पत्र पढ़ने से या समाचार सुनने से १ के प्रभाव उत्पन्न हो सके है वह व्यक्ति प्रभावित होता है । परिवार के सदस्यों का २० प्रतिशत उम्र १६ प्रतिशत शिक्षा १५ प्रतिशत मुसलमान तथा ६ प्रतिशत अनुसूचित जातियों में समाचार पत्र पढ़ते हैं या समाचार सुनते हैं । परिवार में नवजात ६२ प्रतिशत उम्र ५० प्रतिशत शिक्षा ४२ प्रतिशत मुसलमान तथा २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में, समाचार सुनते हैं या समाचार पत्र पढ़ते हैं । समाचार पत्र पढ़नेवाले या सुननेवाले की पुरुष उम्र या पढ़ाई की वर्गिक स्त्री शिक्षा के निताम्न क्या है तथा पिछले समय की व्यवस्थाओं से जातियों में राजनीतिक उत्प्रेरणा अनुसूचित स्तर पर है । जातियों का पुत्र का पुरुष नामांकी में क्या सुनते हैं पर समझते नहीं हैं । समाचार की पुनर्रपी व समझनेवाले नामांकी निर्धार या आधार की शिक्षा सीमिता रखी है । इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक जागरण उत्पन्न होने के लिए शिक्षा सीमिता आवश्यक है । अनुसूचित जाति के नामांकी में समाचार पत्र पढ़ने एवं सुननेवालों की संख्या कम है कम है ।

किस समय समाचार पत्र पढ़ने या सुनने की प्रवृत्ति बच्चा उत्पन्न होती है ? के उत्तर में बायबिलों में ७२, ४ प्रविष्टि मुद्रा १५, २ प्रविष्टि पुनाय १०, ५ प्रविष्टि ठेक ६, ५ प्रविष्टि राकीयिक परिवर्तन, ६, ५ प्रविष्टि "कैल" ६, ५ प्रविष्टि समाचार के समय, ५, २ प्रविष्टि बाइ २, ६ प्रविष्टि मुद्रा २, ६ प्रविष्टि विनाय ६, ३ प्रविष्टि फीट, ४ ६, ३ प्रविष्टि पूरा १, ३ प्रविष्टि बायबिल १, ३ प्रविष्टि जाम्बोलन १, ३ प्रविष्टि "बाबांर माय" तथा १, ३ प्रविष्टि बाकी समय के समय में समाचार सुनने या पढ़ने की प्रवृत्ति बच्चा व्यक्त की है।

उपरोक्त है स्पष्ट है कि जिस समय सामान्य स्थिति उत्पन्न होती है उस समय समाचार के प्रति उत्तुङ्गा वायुय हो जाती है । मुद्द, मुद्राव एवं वास्तविक घटनायें राजनीतिक जाकीकरण में काफी प्रभाव है क्योंकि नागरिकों का ध्यान ऐसी परिस्थितियों में विशेष लागू हो जाता है और राष्ट्रीयता का भाव प्रबल होता है । जाकाकरणों के प्रसारित समाचारों के समय पर मुद्रा की प्रकट प्रवृत्त करनेवाले नागरिक बहुत कम हैं । तबकाव के सत्रों में प्रकट प्रवृत्त का उत्पन्न होता वह तबकाव की प्रकट प्रवृत्त करता है कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति में नागरिक व्यस्त हैं जो देश के विषय में जानकारी करने का समय नहीं है । क्या कहीमान काव में बीका निवास कल्लि होता या रहा है ?

‘ मुद्राव और राजनीतिक मुद्रा के लिए आप किस पर अधिक विश्वास करते हैं ? के प्रवृत्त उपरोक्त में नागरिकों ने ३८, ३ प्रतिशत ‘रेडियो’ २०, ६ प्रतिशत समाचार पत्र’ १४, ६ प्रतिशत राजनीतिक समा’ ७, ६ प्रतिशत ‘पत्रिका’ समा ९, ३ प्रतिशत का पर अधिक विश्वास प्रकट किया किन्तु ६, ६ प्रतिशत जिन्ही पर नहीं विश्वास करते हैं । और केव ३, ६ प्रतिशत खुतर रहे । ‘रेडियो’ पर अधिक विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक ३६, २ प्रतिशत उच्च ६० प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत मुद्राजान एवं ३० प्रतिशत खुतरिका वातियों में हैं किन्हीं के ६३, ६ प्रतिशत ने कहा कि ‘जापातकाव में विश्वास नहीं’ । इसी स्पष्ट है कि नागरिकों ने जापातकाव में ‘रेडियो’ पर विश्वास हो किया था । ‘रेडियो’ पर विश्वास करनेवाले नागरिक कभी जायुकों, छिपाक सत्रों एवं व्यवसाय कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । समाचार पत्रों पर अधिक विश्वास करनेवाले नागरिक ४० प्रतिशत खुतरिका, ३६, २ प्रतिशत उच्च, १५ प्रतिशत पिछड़ी समा ९० प्रतिशत मुद्राजान वातियों में हैं जो कभी जायु कर्तों, छिपाक सत्रों एवं व्यवसाय कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक समा पर अधिक विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक २५ प्रतिशत पिछड़ी, २० प्रतिशत मुद्राजान समा ११ प्रतिशत उच्च वातियों में हैं । इसी स्पष्ट है कि खुतरिका वाति के नागरिक राजनीतिक समा पर अधिक विश्वास पिछड़ नहीं करते हैं किन्तु एक कारण यह भी है कि ४० प्रतिशत नागरिकों ने कभी जायुका मुद्रा ही नहीं है । राजनीतिक समा पर अधिक विश्वास करनेवाले नागरिक कभी जायु कर्तों, छिपाक सत्रों (निरदार

जहाँ बाजार होकर) व्यवसाय नहीं (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करती हैं । यकिन पर यकिन विश्वास करनेवाले नागरिक १४, = प्रचलित उच्च तथा १० प्रचलित अनुचित नागरिकों में हैं किन्हीं स्थापित प्रचलित राजनीतिक वर्गों के समकक्ष हैं जो कोई स्थापित या कभी स्थापित की क्षमता सम्पत्ता रखते हैं और विपरीत कुम्भक जहाँ व्यापारी हैं । किसी पर भी यकिन विश्वास न करनेवाले नागरिक ४० प्रचलित मुकदमा तथा २, = प्रचलित उच्च नागरिकों में हैं । कभी स्पष्ट है कि बाजार प्रचलित मुकदमा नास्तीय है, व्यापार फल, जहाँ जहाँ यकिनवादी पर विश्वास नहीं करते हैं । जहाँ यह राजनीतिक विश्वास है जहाँ जहाँ राजनीतिक वर्गों के लिए नहीं करनी होती है ? जहाँ पर विश्वास करनेवाले पिछड़ी नागरिक के बाजार कुम्भक हैं । अनुपार करनेवाले नागरिक २० प्रचलित अनुचित तथा १ प्रचलित पिछड़ी नागरिकों में हैं जो मजदूरी करते हैं । उपरीय विश्लेषण है स्पष्ट होता है कि राजनीतिक मुक्ता प्रदान करनेवाले किसी भी बाजार पर नागरिकों का पूर्णरूपेण विश्वास नहीं है और राजनीतिक जहाँ का सीधरा स्थान है ।

भारत के तीन तीन प्रमुख राजनीतिक वर्ग हैं ? के ऊपर में नागरिकों ने इस प्रचलित काग्रिच, ७६, ३ प्रचलित, जनसंख्या १५, २ प्रचलित, नास्तीय होकर ५३, ६ प्रचलित, होकर ३२, = प्रचलित, अनुचित २९, ९ प्रचलित जनता पार्टी, १०, ५ प्रचलित होकर काग्रिच, ५, २ प्रचलित हिन्दू महासभा ३, ६ प्रचलित रामराज्य परिषद् ३, ६ प्रचलित मुकदमा तीन, ९, ३ प्रचलित मुकदमा मुकदमा मजदूर तथा ९, ३ प्रचलित प्रचलित मुन्नीय कुम्भक बापि राजनीतिक वर्गों के नाम लिए । कभी स्पष्ट है कि राजनीतिक वर्गों में काग्रिच की जानकारी सभी नागरिकों की है, जनसंख्या के वैधानिक विश्लेषण के समय में ६०, ४ प्रचलित नागरिकों ने इसका नाम लिया और नास्तीय होकर के वैधानिक विश्लेषण के समय में ७६, ३ प्रचलित नागरिकों ने इसका नाम लिया । जनसंख्या की न जाननेवाले नागरिक ९, ३ प्रचलित क्षेत्र तथा ९, ३ प्रचलित पिछड़ी नागरिकों हैं । भारतीय होकर का नाम न करनेवाले नागरिक ५० प्रचलित अनुचित २५ प्रचलित उच्च, १५ प्रचलित पिछड़ी तथा १० प्रचलित मुकदमा नागरिकों में हैं किसी स्पष्ट होता है

कि व्युत्पत्ति तथा उच्च वाचि में भारतीय लोकता की पूर्ण प्रसार एवं प्रभाव व्युत्पन्न है । अत्रिच के नाम की इस प्रविष्टि नामांशों की वाच्यता के प्रमुख कारण उक्त अक्षर, अक्षर, प्रसार, प्रभाव एवं पूर्ण है । मुख्यतः हीच एवं मुख्यतः वाच्यता का नाम वक्तव्यवाचि की वाच्यता मुख्यतः हीच एवं वाच्यता उक्त की चिन्तन नामांश के इन दोनों राजनीतिक वर्गों का नाम नहीं दिया ।

चौथवा विधान का दशम है कि यह पक्ष का प्रत्याक्षि पिछले विधान का प्रभाव में किसी पुनः १ के उपर में ७३, ७ प्रविष्टि नामांशों ने हृदय का ७७, ४ प्रविष्टि ने अक्षर पक्ष का नाम वक्तव्यवाचि के ७, ६ प्रविष्टि नामांश व्युत्पन्न रहे । किसी प्रत्याक्षि (विचारक) के पक्ष का हृदय नाम वक्तव्यवाचि नामांश ६० प्रविष्टि मुख्यतः २०, ४ प्रविष्टि उच्च, ७० प्रविष्टि पिछड़ी तथा ४० प्रविष्टि व्युत्पत्ति वाच्यता में है जो की वायु वर्ग, अक्षर स्तरों एवं व्यवसाय वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । विचारक के अक्षर पक्ष का नाम वक्तव्यवाचि नामांश २० प्रविष्टि व्युत्पत्ति २० प्रविष्टि पिछड़ी तथा १६, ६ प्रविष्टि उच्च वाच्यता में (विचारक वाच्यता) हैं जो की वायु वर्ग (६४ प्रविष्टि वाच्यता वर्ग के अक्षर) अक्षर स्तरों (६३ प्रविष्टि विचारक एवं वाच्यता) एवं व्यवसाय वर्ग (विचारक वाच्यता) का प्रतिनिधित्व करते हैं । व्युत्पन्न वक्तव्यवाचि नामांश ३० प्रविष्टि व्युत्पत्ति २० प्रविष्टि पिछड़ी तथा १० प्रविष्टि मुख्यतः वाच्यता में है जो १६ है ४६ वर्ग के वायु वर्ग, ६६, ६ प्रविष्टि विचारक एवं वाच्यता के ७७ अक्षर अक्षर स्तरों तथा विचारक वाच्यता, वाच्यता एवं अन्य व्यवसाय वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों के २०, ७ प्रविष्टि व्यवसायों ने उक्त दशम के विचारक के पक्ष का नाम हृदय वक्तव्यवाचि राजनीतिक वक्तव्यवाचि का प्रतिनिधित्व है ।

विधान का है पिछले पुनः में द्वितीय स्थान कि यह पक्ष के प्रत्याक्षि का रत्न १ का उपर ७६ प्रविष्टि नामांशों ने हृदय का ७, ६ प्रविष्टि ने अक्षर विचारक वाच्यता १०, ६ प्रविष्टि नामांश व्युत्पन्न रहे । हृदय उपर, वक्तव्यवाचि नामांश २०, ४ प्रविष्टि उच्च, ७० प्रविष्टि मुख्यतः, ७० प्रविष्टि पिछड़ी तथा ६० प्रविष्टि व्युत्पत्ति वाच्यता में है जो की वायु वर्ग, अक्षर स्तरों एवं

अवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल उपर देनाडे नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित १० प्रतिशत पिछड़ी तथा ५, ६ प्रतिशत उच्च जातियों में है जो केवल है चौक बर्ग (हकीम है चौक बर्ग होकर) के जायु कर्मी, बिरदार, बादार प्राथमिक एवं साईं मूल क्षेत्रक स्तरीं तथा मुनि, मकुरी एवं नीकरी के अवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल देनाडे नागरिक २० प्रतिशत पिछड़ी २० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत उच्च जातियों में है जो की जायु कर्मी क्षेत्रक स्तरीं (स्नातक एवं स्नातकोपर होकर) तथा विपारी, मन्त्रक, मकुर एवं व्यापारी कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक कर्मी के २५, ६ प्रतिशत अवसायों में विभाजित में द्वितीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रत्याक्षि के कठ का मूल नाम बताया।

विभाजित कर्मी के पिछड़े पुनर्ग में द्वितीय स्थान कि कठ के प्रत्याक्षि का रण ? का उपर ६०, ६ प्रतिशत नागरिकों में कुल तथा ५, २ प्रतिशत में कुल दिया कीर ३४, २ प्रतिशत नागरिक कुल रहे। कुल उपर देनाडे नागरिक ३० प्रतिशत मुख्यमान, ६६, ५ प्रतिशत उच्च (पिछेकर प्राकण) ६० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो की जायु कर्मी, क्षेत्रक स्तरीं एवं अवसाय-कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल उपर देनाडे नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित तथा २० प्रतिशत पिछड़ी जाति में है जो बाईं है पकीर एवं पिकाळ है पक्कन बर्ग के जायु कर्मी, बिरदार, बादार। प्राथमिक एवं स्नातक क्षेत्रक स्तरीं तथा विपारी, मकुर, मन्त्रक एवं उच्च व्यावसायिक कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल देनाडे नागरिक ६० प्रतिशत अनुसूचित, ३०, ५ प्रतिशत उच्च, ३० प्रतिशत पिछड़ी तथा ३० प्रतिशत मुख्यमान जातियों में है जो की जायु कर्मी (पिछेकर हकीम बर्ग है कपर) क्षेत्रक स्तरीं (स्नातक एवं इसके कपर की होकर) तथा अवसाय कर्मी (व्यापक एवं नीकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक कर्मी के ३० प्रतिशत अवसायों में विभाजित में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रत्याक्षि के कठ का नाम मूल बताया।

अपरीकष कीर्मी प्रसी के उधरी के विस्तीर्ण है स्पष्ट है कि कुल उपर देनाडे नागरिकों में प्रथम स्थान उच्च जाति, द्वितीय मुख्यमान, द्वितीय

नाम की बाधियाँ, जायु बर्ग, छिदाक स्तरों एवं व्यवसाय वर्गों के नागरिकों ने बताया। कार्य के नेताओं का नाम ३० प्रचिन्त व्युत्पन्न ३० प्रचिन्त पिछड़ी, ३० प्रचिन्त पुस्तकानाँ एवं ११, १ प्रचिन्त उच्च (प्राकृत नहीं) बाधियों के नागरिकों ने नहीं बताया। भारतीय लोकसभा के नेताओं का नाम ६० प्रचिन्त व्युत्पन्न, २० प्रचिन्त पुस्तकानाँ, २० प्रचिन्त पिछड़ी तथा १६, ६ प्रचिन्त उच्च, बाधियों के नागरिकों ने नहीं बताया। यह विश्लेषण है स्पष्ट है कि राक्षसीय वर्गों के नेताओं के नामों का ज्ञान हम है अधिक उच्च बाधियों एवं हम है कम व्युत्पन्न बाधियों के नागरिकों का है। राक्षसीय वर्गों के २६, २ प्रचिन्त व्युत्पन्न ने अपनी वर्गों के शीर्षक महान नेताओं के नाम बताये।

प्रत्येक राक्षसीय वर्ग की ओर का प्रमुख कार्य करते हैं ? के उत्तर में नागरिकों ने ३८, १ प्रचिन्त पुस्तकानाँ ३२, ८ प्रचिन्त उच्च-प्रवर्ण, २१, १ प्रचिन्त कम उच्चता उपायान १६, ८ प्रचिन्त महत्वाकांक्षा-आक्रमण, ११, ८ प्रचिन्त जातीयता १, ३ प्रचिन्त नीति निर्माण १, ३ प्रचिन्त स्थायी सिद्धि १, ३ प्रचिन्त नीतिवादी १, ३ प्रचिन्त नेता निर्देश, १, ३ प्रचिन्त शिक्षात्मक प्रचार तथा १, ३ प्रचिन्त कम-बेला-मुक्ति के कार्यों को बताया। इससे स्पष्ट है कि राक्षसीय वर्ग के द्वारा उपायित नीतिवादी प्रमुख कार्य पुस्तकानाँ, उपाय प्रवर्ण (राक्षसीय निर्माण प्रभाव), कम उच्चता, उपायान तथा नीति निर्माण (निरुद्ध नीति नीति एवं उच्चता) तथा शिक्षात्मक प्रचार एवं कम बेला मुक्ति (राक्षसीय उपायिकरण) है किन्तु व्युत्पन्न की बाधियाँ जायु बर्ग, छिदाक स्तरों एवं व्यवसायों के नागरिक करते हैं।

राक्षसीय वर्गों के और का वास्तव्य करनी बाधियों ? के उत्तर में नागरिकों ने १४, ६ प्रचिन्त कक्षा की उपाय ३३, २ प्रचिन्त नागरिकों की पूर्ति ११, ६ प्रचिन्त पैठ की प्राप्ति ६, ३ प्रचिन्त उपाय पुस्तक ६, ६ प्रचिन्त अपने बाधियों (वर्गों) की पूर्ति, ३, ६ प्रचिन्त नरीनी विचारण ३, ६ प्रचिन्त पुस्तक महत्वाकांक्षा की कार्यवाही, २, ६ प्रचिन्त प्रवृत्ताचार निवारण, तथा १, ३ प्रचिन्त संशुद्धि स्तरों की वास्तव्य व्यवसाय किन्तु तथा ३२, ८ प्रचिन्त नागरिकों ने अपनी

बाह्यार्थ का विवरण नहीं किया। इन कर्तव्यों के स्पष्ट है कि राजनीतिक कर्तव्यों के कर्ता की ओर से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक चीजों में जो जो का रही हैं जो कि अपनी एकतापूर्ण एवं अन्तर्निहितता का अन्तर्गत मूल्यार्थ का प्रतिफल है। अपने कर्तव्यों की पूर्ति एवं पुनरावृत्ति के परभाव के जो कर्तव्यों की ओर से राजनीतिक कर्तव्यों में अन्तर्गत चीजों का उद्देश्य है।

“प्रत्यक्षार विचारण” की बाह्य की पूर्ति के लिए राजनीतिक कर्तव्यों की व्यापक स्तर पर अभिमान कर्ता का विचार और इसके लिए सभी राजनीतिक कर्तव्यों की वास्तविक प्रदान करना चाहिए। बाह्य के प्रति अत्यन्त रसिकता के नागरिक ६० प्रतिशत अनुमानित ३५ प्रतिशत पिछड़ी, २० प्रतिशत उच्च तथा २० प्रतिशत मुख्यमान, वास्तविक में है जो की बाह्य कर्तव्यों (विशेषकर २५ वर्ष के नीचे) विचार स्तरों का व्यवसाय कर्तव्यों का (व्यवसाय छोड़कर) प्रतिनिधित्व करते हैं। बाह्य यह है कि ६, ३ प्रतिशत नागरिकों ने कहा “कोई बाह्य नहीं”। इसके स्पष्ट है कि राजनीतिक कर्तव्यों की नागरिकों की ओर से जो पूर्ण करवायी की अपनी समता में विचार करना चाहिए।

राजनीतिक यह कर्तव्यों में जो कि कि कर्तव्यों में व्यव करते हैं १ के उतर में नागरिकों ने ६२, २ प्रतिशत प्रकार बाह्य एवं बाह्यी, ५२, ६ प्रतिशत कार्यकर्ता ५२, ६ प्रतिशत “उत्तरीय” तथा ६, ५ प्रतिशत बाह्य एवं बाह्य कर्तव्यों में व्यव के कर्तव्यों की बताया। प्रकार बाह्य एवं बाह्यी पर विचार के व्यव का अनुमान ६२, २ प्रतिशत नागरिकों ने किया जो की वास्तविक, बाह्यकर्तव्यों विचार स्तरों एवं व्यवसाय-कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कार्यकर्ता पर विचार विचार के व्यव का अनुमान ५२, ६ प्रतिशत नागरिक करते हैं। जो ६६, ६ प्रतिशत उच्च, ६० प्रतिशत अनुमानित, ४० प्रतिशत मुख्यमान तथा ४० प्रतिशत पिछड़ी वास्तविक में है और की बाह्य कर्तव्यों, विचार स्तरों एवं व्यवसाय-कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। “उत्तरीय” के रूप में विचार विचार के व्यव की जानकारी ६६, २ प्रतिशत उच्च, ५० प्रतिशत पिछड़ी, ५० प्रतिशत अनुमानित तथा २० प्रतिशत मुख्यमान, वास्तविक के नागरिकों की है। की केन्द्रीय पाठ्यपीठ के कुलपति केन्द्रीय उच्च विभाग १९६४,

में कार्यकर्ताओं पर अधिक का खर्च किया गया, अधिकतर शिक्षण या शैक्षणिक कार्यों के पीछे लोगों को खर्च किया गया ; श्री रामस्वराम पाण्डेय, स.०८३०बी। के अनुसार १९३७ में इस प्रकार रुपये खर्च हुए जिनमें मुख्य रूप से नवजात शिशु प्रवास से विभिन्न रूपों में का संबंध है^१। तबसे ही कि उपरोक्त चीजों प्रत्यासी काग्रेस के रहे हैं । यथावत् छात्रोंवालों एवं छात्रों को खर्च का बिंदु माने की जानकारी की मांगों की हैं ।^२ कच्छ, कच्छ, काशीखंड एवं जगज्ज के ज्यों में उत्कीर्ण दिने जाने का मांगों में विस्तार पिए की कि एतावत काग्रेस के प्रत्यासियों द्वारा किया जाना ही पुष्ट हुआ ।^३ रुपये केरु ज्यों पित में प्रत्यासी छात्र करना एवं पैठाना^४ की उत्कीर्ण की पैठाना में सम्पादित है । ६० रूप रुपये का एक कट्टा की नरका प्रवास पित (कच्छ प्रत्यासी) में कियावत् जग निवापिन १९६७ ई० में माकल उम्मेदर विभाज्य सरस्वती जगज्ज की मांग किया ; २० रु० स्वीय राक्षसतन पाण्डेय (काग्रेस प्रत्यासी) में कियावत् जग निवापिन १९७४ ई० में, केवल छात्र जग, छात्रावत् की कुर्सी के लिए पान किया ।^५ यह भी खर्च का रूप बताया गया । उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि राक्षसीज्ज का ध्यायित निवापिन में जग-विधि के लिए पान की पानी की तरह बहाते हैं । यदि यही पान पुर्णार्थ के सम्मान्तर जग में खर्च किया जाय तो मांगों का प्रवित्तन अधिक एवं स्थायी हो जगज्ज है और राक्षसीज्ज छात्रावत्तन में केवल-विधि की जग्यी है ।

काग्रेस पुनः कि कारणों से जीत जाती है^६ के प्राप्ति उपरों की ताज्जि प्रस्तुत है :-

विषय के कारण		सामग्री की दृष्टि से प्रविष्टि			
क्र.सं.	विवरण	उत्पन्न काति	प्रविष्टि काति	अनुप्राप्त काति	मुद्रमान
१	सामग्री एवं मुद्रमानों का अन्तर्गत	४१, ६	५०	५०	४०
२	उत्पन्न	३६, ६	५०	५०	५०
३	उत्पन्न	३६, ६	३५	२०	२०
४	अन्तर्गत विदेशी वस्तु	५०, ००	२५	-	२०
५	अन्तर्गत वस्तु-वस्तु	२५, ००	२५	२०	६०
६	प्रविष्टि	२५, ००	३०	-	-
७	अन्तर्गत	२५, ००	२५	२०	२०
८	निर्देशित वस्तुवस्तु	५, ४	२५	२०	२०
९	अन्तर्गत वस्तु वस्तु	२५, ६	५	-	-
१०	वस्तु	५, ६	२०	-	-
११	विदेशी वस्तु वस्तु वस्तु वस्तु	५, ६	-	-	-
१२	वस्तु	२, ५	-	-	-

अपरीक्षित साहित्य के निम्नलिखित सूत्र स्पष्ट होते हैं :-

- (१) उच्च भाषा के नागरिकों की दृष्टि में पुत्रार्थ में कट्टर की विषय के प्रथम पांच कारणों का प्रथम और विरोधी पक्ष, शत्रुता और मुक्तताओं का उत्पन्न, तथा, उत्पन्न और अधिक बन गया है ।
- (२) निम्न भाषा के नागरिकों की दृष्टि में पुत्रार्थ में कट्टर की विषय के प्रथम पांच कारणों का प्रथम शत्रुता और मुक्तताओं का उत्पन्न, तथा, उत्पन्न, प्रतीक और (उच्च भाषा नवतम के) और विरोधी पक्ष, अधिक बन गया, उत्पन्न और निम्न-साक्षात्कार है ।
- (३) अनुप्रास भाषा के नागरिकों की दृष्टि में पुत्रार्थ में कट्टर की विषय के कारणों में प्रथम शत्रुता और मुक्तताओं का उत्पन्न, प्रतीक, तथा, प्रतीक निम्न साक्षात्कार और पूर्ण उत्पन्न, अधिक बन गया और उत्पन्न की स्थापना प्राप्त है ।
- (४) मुक्तताय नागरिकों की दृष्टि में पुत्रार्थ में कट्टर की विषय के कारणों में प्रथम अधिक बन गया, प्रतीक- शत्रुता और मुक्तताओं का उत्पन्न और तथा ; प्रतीक - उत्पन्न और और विरोधी पक्ष और पूर्ण - उत्पन्न तथा निम्न साक्षात्कार, की स्थापना प्राप्त है ।

कट्टरी तथा के द्वारा निम्न नये उत्पन्न, उत्पन्न, कल और प्रतीक ने तथा विरोधी पक्षों की पक्ष उत्पन्नताओं ने उत्पन्न उत्पन्न प्रतीक के लिए प्रतीक विरोधी पक्षों की भाषा किया किन्हीं परिणाम स्वतन्त्र ' कल भाषा' का अनुप्रास प्रतीक और कट्टर की तथा केन्द्र और उत्पन्न राश्यों में उत्पन्न की गई, उत्पन्न प्रतीक की भाषा है कि और विरोधी पक्षों के कारण की कट्टर पुत्रार्थ में विषय प्राप्त करती रही । शत्रुता और मुक्तताओं ने उत्पन्न पुत्रार्थ भाषा के कट्टर की उत्पन्न उत्पन्न प्रतीक का किया किन्हीं परिणामस्वरूप कट्टर की प्रतीक प्रतीक प्रतीक की प्रतीक की भाषा है कि कल-भाषियों के उत्पन्न है कट्टर की विषय प्रतीक रही । कल भाषा वास्तविकताओं ने पक्ष प्रतीक

कर दिया कि उच्च वाति के नागरिकों का कट्टर हो किन्तु के कारणों का
मुल्भावक हुए रहा ।

‘ पुनर्वा’ के कारण काल में क्या बढ़ा है ? के प्रश्न
उपरी में नागरिकों ने ८४, २ प्रतिशत ‘ उच्च’ का ११, = प्रतिशत ‘ उच्च’
की वृद्धि बताया । यदि स्पष्ट है कि पुनर्वा है ‘ उच्च’ में वृद्धि हुई है किन्तु
कुल उस प्रतिशत अनुसूचित ८५ प्रतिशत पिछड़ी, ८१, ४ प्रतिशत उच्च (वाणिज्य
६० प्रतिशत) तथा ८० प्रतिशत मुख्यमान वातियों के नागरिक करते हैं जो उनी
वायु का, शैवाल सारी तथा व्यवसाय का का प्रतिनिधित्व करते हैं । पुनर्वा
है ‘ उच्च’ में वृद्धि का कुल अनुसूचित वाति के नागरिक पिछड़ नहीं करते जो
यह प्रमाणित करता है कि पुनर्वा के पुनर्वातियों का प्रभाव का है वाणिज्य उनी
वाति पर रहा है । ‘ उच्च’ में वृद्धि का कुल करनेवाले उच्च, पिछड़ी एवं
मुख्यमान वातियों के नागरिक हैं जो उनी वायु का (३६ है ४२ वर्ष की होकर)
शैवाल सारी एवं व्यवसाय का (नव्वरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व
करते हैं ।

किन्तु किन्तु का पुनर्वा में वापके मतदान है जीव
जीव कुल अनुसूचित हुए है । उपरी है स्पष्ट हुआ कि ६३ प्रतिशत मतदाताओं की पिछी
की भी अनुसूचित का कुल नहीं हुआ जो उनी वातियों, व्यवसाय मतदाताओं के
वायुका, शैवाल सारी एवं व्यवसाय का का प्रतिनिधित्व करते हैं । ३६ प्रतिशत
मतदाताओं ने दूसरी की अनुसूचित का कुल किया । कट्टर के उच्चगियों है
अनुसूचित का कुल १६, २ प्रतिशत भारतीय होकर के ३, २ प्रतिशत तथा काल के
१, ६ प्रतिशत मतदाताओं की हुआ । कट्टर के उच्चगियों की अनुसूचित का
कुल करनेवाले मतदाता ३४, ३ प्रतिशत उच्च वाति में तथा ११, = प्रतिशत पिछड़ी
वाति में है । यदि यह स्पष्ट होता है कि किन्तु किन्तु का पुनर्वा १९७४ ई० में
उच्च वातियों के मतदाताओं ने कट्टर प्रस्ताव स्वीयि भी राक्षाराम चण्डेय की
उनी अनुसूचित का किया जो कि उनी पराज का प्रमुख कारण बना और उच्च वाति

मन क्यों मैं बोले (वास्तविक मन क्यों की निराशा या अनुभव मन क्यों का मन भेंटका मैं रहा माना) क्या १० प्रसिद्ध मतमनका मैं अनुभव के कारणों की विविधता का कारण बताया । इन कारणों के वास्तविक पर ध्यान दिया करने की स्पष्ट सीमा है कि १२, १ प्रसिद्ध वास्तविक क्यों क्या ३०, १ प्रसिद्ध विचार का वास्तविक द्वारा निरूपण विचारों की लक्षणाओं का प्रतीक है ।

' निवास का ही यही निवास निवास प्रणाली में ही है
 परिवर्तन पावती है ? के उत्तर में ३०, ३ प्रविष्ट नागरिकों में परिवर्तन का प्रभाव
 किया, ३२, २ प्रविष्ट नागरिकों में परिवर्तन नहीं पावती क्या ३३, ५ प्रविष्ट
 नागरिक अनुसर रहे । इसी स्पष्ट है कि परिवर्तन की वृद्धि होनेवाले नागरिकों का
 प्रविष्टता का है अधिक है । निवास प्रणाली में परिवर्तन के वृद्धि नागरिक ३० प्रविष्ट
 अनुसर ५० प्रविष्ट वृद्धि, ३० प्रविष्ट निवास का ३० प्रविष्ट मुद्राभाष, कारित्या
 में है ही ही वायुकाँ, निवास स्तरों का व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
 परिवर्तन के लिए अनिवार्य नागरिक ५० प्रविष्ट मुद्राभाष, ३५ प्रविष्ट निवास का
 ३३, ३ प्रविष्ट वृद्धि कारित्या में है ही ही वायु काँ (निवास २१ है ३५ वर्ष
 के मध्य) निवास स्तरों (निवास एवं वायु होकर) एवं व्यवसाय काँ
 (व्यवसाय एवं निवास होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ज्ञातव्य है कि
 ३०, १ प्रविष्ट नागरिक निवास की निष्पत्ति पर विश्वास करते हुए भी प्रणाली
 में परिवर्तन के वृद्धि है और २१, १ प्रविष्ट नागरिक निवास प्रणाली पर विश्वास
 करते हुए भी प्रणाली में परिवर्तन के लिए अनिवार्य है । २१, ५ प्रविष्ट नागरिक
 निवास की निष्पत्ति पर विश्वास करते हुए परिवर्तन के लिए वृद्धि है ।
 निवास प्रणाली के लिए का है अधिक अनुसर कारित के नागरिकों का वृद्धि होना
 का का परिवर्तन है कि है ही का है अधिक परिवर्तनों का अनुसर करते हैं ।
 परिवर्तन के लिए वृद्धि नागरिकों में ही प्रभाव दिए हैं उर्ध्व है ३५ वर्ष मध्यका
 वायु, निवास प्रकार एवं का प्रकार वृद्धि, वृद्धि का का वृद्धि, निवास प्रणाली,
 प्रतिनिधित्व एवं मुद्रा मध्यका, निवास मध्यका वरीयता मध्य, ही हाकीतिक वृद्धि,
 मध्य का पर मध्यका के वरीयता, वरीयता मध्य मध्यका वरी निवास प्रतिनिधि
 की वायु प्रभाव की व्यवसाय कादि मध्यका है । मुद्रा मध्यका, एक प्रकार

यह तथा अन्तर्गत मन्त्रालयों पर विशेष धन दिया गया है । वस्तु सांख्यिकिक वर्गों के स्वाभाविक वृद्धि की बाध है कि वे मन्त्रालयों की प्रवृद्धि, बाधक एवं मुक्त करें ; निम्नलिखित विवरणों के अनुसार यह है कि क्या उनके प्रतिनिधियों की बाध मुक्त की जा अधिकार मन्त्रालयों की प्रदान की । सांख्यिकिक वर्गों के ३०, ० प्रतिशत वस्तु वस्तु निम्नलिखित प्रणाली में परिवर्तन के लिए उपयुक्त है ।

यदि विधान का प्रभाव में वरीयता मत देने का अधिकार बाधकी मिल बाध तो क्या "रेखा" के प्रभाव उत्तरों के स्पष्ट हुआ कि ३९, १ प्रतिशत नागरिक वरीयता मत के मत में क्या २०, ६ प्रतिशत नागरिक विधान में है । वरीयता मत के मत में ३० प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत मुसलमान, ६६, ४ प्रतिशत अन्य तथा ६० प्रतिशत अनुसूचित जातियों के नागरिक हैं जो की बाध वर्गों (विशेषकर २६ है ३५ वर्ग की बाध) के लिए स्तरों (विशेषकर स्नातक एवं स्नातकीय) एवं व्यवसाय वर्गों (विशेषकर व्यापार, मजदूरी, नीकरी एवं व्यापार) का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी स्पष्ट है कि यदि मन्त्रालयों की वरीयता मत देने का अधिकार मिल बाध और उन्हें प्रतिनिधित्व कर दिया बाध तो बहुत बन्धन की बाधना क्योंकि मन्त्रालयों पर वस्तु का ही बाधना, वस्तु की का ही बाधना सांख्यिकिक वस्तु वस्तु में वृद्धि की है तथा सांख्यिकिक भाग प्रणाली में वृद्धि की बाधनी की कि सांख्यिकिक सांख्यिकिक में स्तरों (के वृद्धि) उत्पन्न करना ।

इस समय ^{भारत} संविधान में जीव जीव बान्धीन का है ? के उत्तर में ३९, ४ प्रतिशत नागरिकों के किसी न किसी बान्धीन का नाम बताया और ६६, ६ प्रतिशत नागरिकों की बाधनी नहीं है । किसी न किसी बान्धीन की बाधनी स्तरों नागरिक ६० प्रतिशत मुसलमान ५० प्रतिशत पिछड़ी, ४९, ६ प्रतिशत अन्य (का है का बाधनी) तथा २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो की बाध वर्गों, के लिए स्तरों एवं व्यवसाय-वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी स्पष्ट है कि मुसलमान नागरिकों की सांख्यिकिक बान्धीनों की बाधनी का है बाधनी है । सांख्यिकिक वर्गों में ६६, २ प्रतिशत वस्तुओं की वस्तु वस्तु में वस्तु वस्तु किसी न किसी बान्धीन की बाधनी है जो कि मुसलमान बाध के नागरिकों के ६, २ प्रतिशत बाध है ।

जिन व्यक्तियों की कर्तबुताय में कभी सीम का वित्तीय पुस्तक बन्धा होना के उपर में रु. १ प्रविष्ट नामावली में वह उक्त व्यक्तियों का नाम बताया, रु. २ प्रविष्ट नामावली में कहा कि पुस्तक के समय विनिधि नहीं तथा रु. १ प्रविष्ट नामावली सुपर रहे । ताकिता द्वारा विवरण स्पष्ट किया गया है ।

क्र. सं.	व्यक्ति का नाम	पता में विनिधि					
		कर्तब	कटिब	नामावली	पुस्तक का नाम	पुस्तक के समय	सुपर
१	उत्तम व्यक्ति	रु. १५	रु. २२	रु. १५	रु. १५	रु. १५	रु. १५
२	विश्वजी व्यक्ति	रु. १५	रु. १५	रु. १५	रु. १५	रु. १५	रु. १५
३	सुपुत्र व्यक्ति	रु. १५	रु. १५	रु. १५	-	रु. १५	रु. १५
४	मुकेश्वर	रु. १५	रु. १५	-	-	रु. १५	रु. १५

उपरोक्त ताकिता है निम्नलिखित सूच्य स्पष्ट होते हैं :

- (१) कर्तब के व्यक्तियों का नाम उक्त व्यक्ति के नामावली में बताया किर्त की कर्तबकर्त विवारी, की नामा प्रवाच निम, की रावरीता छिद "निर्त" तथा की कर्तब कर्त विवारी के नाम छिद नही ।
- (२) कटिब के व्यक्तियों का नाम कर्तब है का नामावली में बताया किर्त की कर्तबकर्त विवारी, की कर्तबकर्त विवारी "कर्त" (कर्तबकर्त कर्तबकर्त) की कर्तबकर्त प्रवाच कर्तब (कर्तबकर्त कर्तबकर्त कर्तबकर्त कर्तबकर्त कर्तबकर्त) की कर्तब प्रवाच कर्तबकर्त, की कर्तबकर्त निम कर्त की कर्तब प्रवाच कर्तबकर्त के नाम छिद नही ।

- [illegible]

' सीमा विधान का सीमा क्षेत्र क्षेत्र प्रमुख समस्याएँ
 हैं के अन्तर् में नागरिकों ने २६, = प्रविष्ट विवाह शास्त्रों का अन्वय २०, २ प्रविष्ट
 वेदारी २८, ६ प्रविष्ट वर्णों की सीमा एवं दुर्लभ २६ प्रविष्ट पैर कट छेद,
 ११, = प्रविष्ट अस्मिताओं का अन्वय एवं उनकी बुद्धिमानों में अन्वय, ७, ६ प्रविष्ट
 यातायात के पापों का अन्वय ७, ६ प्रविष्ट विपुल का अन्वय ६, ६ प्रविष्ट
 ' मुख्य बुद्धि ६, ६ प्रविष्ट रासायनिक कौशल का अन्वय, ६, ६ प्रविष्ट शिक्षण
 संस्थाओं का अन्वय (विशेषकर नारी शिक्षा) ३, ६ प्रविष्ट वाक्प्राप ३, ६ प्रविष्ट
 प्रण्टाकार, २, ६ प्रविष्ट दुरता अन्वय का अन्वय २, ६ प्रविष्ट बहुसंख्यकों
 द्वारा अन्वय २, ६ प्रविष्ट हरिण वाक्प्राप का अन्वय न सीमा का
 २, ६ प्रविष्ट बुद्धिमानों का अन्वय एवं अन्वय प्रविष्ट में, शिक्षा अन्वय रही,
 अन्वय सीमा, अन्वय अन्वय न सीमा का अन्वय, अन्वय सीमा का अन्वय,
 ' हरिणों की वाक्प्राप का अन्वय अन्वय न सीमा १०, ' अन्वय अन्वय अन्वय
 का अन्वय न सीमा, ' अन्वय अन्वय, ' अन्वय अन्वय, ' अन्वय अन्वय,
 ' अन्वय का अन्वय, ' अन्वय का अन्वय न सीमा का अन्वय अन्वय अन्वय का

छैसाक स्तरों एवं विभाषी वीर व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर रत्नेवाले नामांकित ८, ४ प्रचिन्न उच्च (कमी वैश्य) १५ प्रचिन्न पिछड़ी तथा २० प्रचिन्न अनुसूचित जातियों में है जो की वायु काँ (१५ से २० वर्षों की उमिर) छैसाक स्तरों (स्नातक से नीचे एवं ऊपर की उमिर) एवं व्यवसाय काँ (विभाषी का व्यवसाय की उमिर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक का वसुधर रत्नेवाले नामांकितों में १४, १ प्रचिन्न वीर वसुधर रत्नेवाले में १२, ५ प्रचिन्न राजनीतिक दल (काँग्रेस) के सदस्य हैं। इससे स्पष्ट है कि राजनीतिक दलों के २५, ६ प्रचिन्न सदस्यों के ऊपर कुल है जो कि सामान्य है अधिक है जो यह क्षेत्र पैदा है कि राजनीतिक दलों की व्यवसाय राजनीतिक जातीयकरण का वर्णन करती है।

जातीय विभाषण कण्ड के कण्ड प्रमुख (जाति प्रमुख) का नाम है १ का उमिर ५६, २ प्रचिन्न नामांकितों में कुल का ३, ६ प्रचिन्न नामांकितों में वसुधर विद्या वीर पैर ३५, ६ प्रचिन्न नामांकित वसुधर रत्नेवाले नामांकित ७२, ४ प्रचिन्न उच्च (कमी से कम वैश्य) ६० प्रचिन्न पिछड़ी, ४० प्रचिन्न अनुसूचित तथा ४० प्रचिन्न मुखजान, जातियों में है जो की वायु काँ (कमी से कम १५-२० वर्षों तथा कम से अधिक ४५-५० वर्ष) छैसाक स्तरों एवं व्यवसाय काँ (कम से अधिक कृषि एवं कम से कम मजदूरी) का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर रत्नेवाले नामांकित २० प्रचिन्न मुखजान तथा १० प्रचिन्न अनुसूचित जातियों में है जो तीन वायु काँ (२१ से ४५ वर्ष) वापार शर्त स्कूल का स्नातक छैसाक स्तरों एवं विभाषी, कुल एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर रत्नेवाले नामांकित ५० प्रचिन्न अनुसूचित ४० प्रचिन्न मुखजान ४० प्रचिन्न पिछड़ी तथा २०, ६ प्रचिन्न उच्च जातियों में है जो की वायु काँ (कम से अधिक १५-२० वर्ष) छैसाक स्तरों, एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। वसुधर एवं वसुधर रत्नेवाले नामांकितों में १२, ६ प्रचिन्न राजनीतिक दल (कमी काँग्रेस) के सदस्य है जो उच्च जाति (ब्राह्मण की उमिर) एवं मुखजानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय विभाषण से स्पष्ट है कि उच्च जाति के नामांकितों की जाति प्रमुख के नाम की जानकारी कम से अधिक है वीर अनुसूचित

वाणि के नागरिक एवं वे अधिक ऊपर रहे क्या वह विभाग की शिराओं की शक्ति का परिणाम है ? कुम्हारों ने एवं वे अधिक ऊपर उठ कर दिए भी यह ठीक होता है कि कुछ विभाग ने अपना व्याप शुद्धि का मैन्डेट तथा कर्तव्य समझा ही नहीं वे भी व्याप बाँटित है । राजनीतिक कर्तों के २०, १ प्रविष्ट कर्मचारियों ने ऊपर उठ कर दिए भी राजनीतिक जवाबदारी का परिणाम प्रतीत होता है ।

विभाग कुछ क्षमति का क्या कार्य है ? का उपर पूर्ण का वाणिज्य एवं वे ३६, ६ प्रविष्ट नागरिकों में कुम्हार किया । ३, ६ प्रविष्ट नागरिकों के उपर " वृद्ध " रहे क्या ४६, २ प्रविष्ट नागरिक ऊपर रहे । " वृद्ध " उपर वैनेवाले नागरिक ४४, ३ प्रविष्ट उच्च ३५ प्रविष्ट पिछड़ी, ३० प्रविष्ट मुखजान तथा २० प्रविष्ट अनुशुद्धि बाँटितों में है बी बी बी वायु कर्तों (१६-२० वर्ष होकर तथा विनिमय २६-३० वर्ष) शैक्षणिक स्तरों (एवं वे का निरन्तर एवं स्नातक है नीचे) एवं व्यवसाय कर्तों (एवं वे अधिक व्यापक एवं शुद्धि कीर एवं वे का विभाजन) का प्रतिनिधित्व करते हैं । " वृद्ध " उपर वैनेवाले नागरिक ५, ६ प्रविष्ट उच्च तथा ५ प्रविष्ट पिछड़ी बाँटितों में है बी बी बी वायु कर्तों (१६-२० ; २१-२५ तथा २६-४५ वर्ष) निरन्तर, स्नातक है नीचे एवं स्नातक शैक्षणिक स्तरों तथा विभागी, कुम्हार एवं व्यापारी कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर वैनेवाले नागरिक ५० प्रविष्ट (एवं वे अधिक वैश्य) ६० प्रविष्ट पिछड़ी, ३० प्रविष्ट मुखजान तथा २० प्रविष्ट अनुशुद्धि बाँटितों में है बी बी बी वायु कर्तों (एवं वे अधिक १६-२० वर्ष) शैक्षणिक स्तरों एवं व्यवसाय कर्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक कर्तों के ६६, २ प्रविष्ट कर्मचारियों ने पूर्ण या वाणिज्य रूप से ऊपर उठ कर दिए भी कि राजनीतिक कर्तों द्वारा किसे कि राजनीतिक जवाबदारी का प्रमाण प्रस्तुत करता है ।

जवाबदारी के क्या प्रमुख कार्य है ? का उपर २१, ६ प्रविष्ट नागरिकों ने पूर्ण या वाणिज्य एवं वे ऊपर तथा १, २ प्रविष्ट ने वृद्ध किया और २०, १ प्रविष्ट नागरिक ऊपर रहे । ऊपर उठ वैनेवाले नागरिक ६१, ६ प्रविष्ट उच्च, २० प्रविष्ट मुखजान, ३५ प्रविष्ट पिछड़ी तथा ६० प्रविष्ट अनुशुद्धि बाँटितों में है बी बी बी वायु कर्तों (१६-३० वर्ष के उच्च प्रविष्ट) शैक्षणिक स्तरों एवं व्यवसाय

काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत उपर देनेवाले नागरिक अनुपस्थित बाधों के १५-२० वर्षों के वायु काँ, स्वायत्त है नीचे के क्षेत्रों स्तर तथा विषाधी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत देनेवाले नागरिक ८, ४ प्रतिशत उष्ण, २० प्रतिशत मुख्यतः, २५ प्रतिशत पिछड़ी बाधों ३० प्रतिशत अनुपस्थित बाधों में है जो छोटी वायु काँ (१५-३० वर्षों होकर) क्षेत्रों स्तरों एवं व्यवसाय काँ (व्यापक एवं व्यापार होकर विशेषकर विद्याभ्यास एवं नवदूरी) का प्रतिनिधित्व करते हैं। रासायनिक कलों के ६२, ३ प्रतिशत कल्पों ने कुछ उपर फिर जो कि उष्ण बाधों के नागरिकों है जो अधिक है। अनुपस्थित बाधों के नागरिकों की लक्ष्योत्पत्ति के प्रमुख कार्यों का अन्तर्गत का प्रमुख कारण उनकी सुनिश्चितता प्रतीत होती है क्योंकि इस बाधों के बहुत देनेवाले ६६, ६ प्रतिशत सुनिश्चित हैं। विज्ञान कल्प की लक्ष्योत्पत्ति के क्षेत्रों में अधिक नागरिकों की जानकारी का प्रतिशत का प्रमाणित करता है कि संस्थाओं के स्थायित्व एवं वायु के साथ उनके प्रति ज्ञान का धातुमय क्षेत्र है विज्ञान प्रमुख कारण प्राप्ति काँ के क्षेत्रों में नागरिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है।

धानाभ्यास का क्या कार्य है ? का उपर इस प्रतिशत नागरिकों ने पूर्ण ज्ञान जोड़ने का है कुछ किया। इसी स्पष्ट है कि धानाभ्यास के कार्यों है सभी बाधों, वायुकाँ, क्षेत्रों स्तरों, व्यवसाय-काँ एवं दोषों के नागरिक प्रतिशत हैं। प्रमाण की इस प्रति नागरिकों में जानकारी होने के मुख्य कारण, कल्पों में सुनिश्चित, नागरिकों है प्रत्यक्ष क्षेत्रों, प्रमाण का अधिक प्रमाण एवं विषाधी के क्षेत्रों का सुनिश्चित की अनिवार्यता का अनुभव है।

किसी का कल्प है कड़ा अधिकारी क्षेत्रों होने का है ? का उपर नागरिकों ने ८४, ३ प्रतिशत सुनिश्चित तथा ३, ६ प्रतिशत अनुपस्थित दिया और ११, ८ प्रतिशत नागरिक बहुत उपर रहे सुनिश्चित उपर देनेवाले नागरिक ६० प्रतिशत पिछड़ी ६० प्रतिशत मुख्यतः, ८४, ४ प्रतिशत उष्ण तथा ३० प्रतिशत अनुपस्थित बाधों में है जो छोटी वायु काँ, क्षेत्रों स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत उपर देनेवाले नागरिक ८, ३ प्रतिशत उष्ण बाधों (प्राप्त होकर) में है

विन्धानि विज्ञापिका, वाणिज्य बलगा^{१९} एवं विवेका^{२०} बलगा है । ये नामित विधीय, पुतीय एवं अन्तर्गत बाहु कर्त्त, प्राथमिक कार्य स्तुत एवं स्नातक विधाक स्तरों कीर व्यापारी तथा कुम्भक कर्त्त का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

अन्तर रत्नवाले नामित ३० प्रतिशत अनुसूचित १० प्रतिशत मुखजान, १० प्रतिशत पिछड़ी तथा ३० प्रतिशत अन्य वाणिज्यों में से की की बाहु कर्त्त (१५-३० वर्ष कीकुर) विस्तार (एवं है अधिक) बाजार एवं प्राथमिक विधाक स्तरों कीर कुम्भक बलगा एवं व्यापारी (ज्ञान में स्थित बाजार में नहीं) कर्त्त का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसिक कर्त्त के १२, ३ प्रतिशत कर्त्तों में से कुछ उधर दिया । बाह्य कर्त्त से कि ३४, २ प्रतिशत कुछ उधर विवाले नामितों (विधीयक पिछड़ी वाणिज्य) में कीकी नामों की ० एवं ० कर्त्तों कोन्दर दिया । बली स्पष्ट है कि राक्षसिक कर्त्तों के कर्त्तों की विधी के एवं है की बाणिज्य के कर्त्त-नाम की बाणिज्य एवं है अधिक है ।

विज्ञापिका बाहु का क्या कार्य है ? का उधर नामितों में ४३, ५ प्रतिशत पूर्ण या आंशिक रूप में कुछ का ३, ६ प्रतिशत 'बहु' बलगा कीर है ५२, ६ प्रतिशत नामित अन्तर है । बली स्पष्ट है कि विज्ञापिका के विज्ञापिकाओं में बाहु है अधिक नामित कर्त्तों में है । कुछ उधर विवाले नामित ४१, १ प्रतिशत अनुसूचित, १० प्रतिशत मुखजान, ३० प्रतिशत पिछड़ी तथा अन्य प्रतिशत अनुसूचित वाणिज्यों में है । बाह्य बाहुओं है कि अनुसूचित वाणिज्य के स्नातक विधाक स्तर के नामितों की की विज्ञापिका के कर्त्तों की बाणिज्य नहीं है । विज्ञापिका के कर्त्तों की बाणिज्य की बाहु कर्त्त (एवं है अधिक १५-३० वर्ष तथा एवं है एवं १५-२० वर्ष) विधाक स्तरों (विस्तार कीकुर) एवं अन्तर्गत कर्त्तों (नीकरी कीकुर) के नामितों की है । कुछ उधर विवाले नामित १० प्रतिशत मुखजान १० प्रतिशत अनुसूचित का २, ० प्रतिशत अन्य, वाणिज्यों में से की १५-२५ वर्ष के बाहु कर्त्त, कार्य स्तुत स्तुत एवं स्नातक है नीचे के विधाक स्तरों तथा विवाली एवं बलगा कर्त्त का प्रतिनिधित्व करते हैं । अन्तर रत्नवाले नामित १० प्रतिशत अनुसूचित, ३० प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत मुखजान तथा ३५, १ प्रतिशत

उच्च वातियों में है जो छरी वायु काँ (एवं है अधिक २१-२५ काँ) छिपाक स्तरों एवं व्यवसाय-काँ (व्यवसाय हीकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राखीतिक काँ के ५१, २ प्रतिशत करणों ने पिछा चरित्रों के काँ को हट्ट बताया किछी राखीतिक काँ द्वारा किछी कानिवाँ राखीतिक कापीकरण का स्पष्टीकरण होता है ।

किछी के न्यायालयों का एवं है बहुत अधिकारी जैन होता है ? का उत्तर ७, = प्रतिशत नागरिकों ने हट्ट क्या ६०, १ प्रतिशत ने बहुत किया और ५०, १ प्रतिशत नागरिक खुपर रहे । कछी स्पष्ट है कि किछिद्वय केत सन्द किछिद्वय एवं (सन्द एवं दीवानी न्यायधीन) का ज्ञान बहुत का नागरिकों को है । क्या कछाकता का प्रमुख कारण न्यायालय के एवं स्तर का बहुत का नागरिकों को खुपर है । हट्ट नाम कानिवाँ नागरिक १५, ५ प्रतिशत उच्च वाति में है (वन्ध वातियों के एवं भी नागरिक ने हट्ट नाम नहीं बताया) को कि प्रम, खुपर, पंच एवं नन्दु वायुकाँ, वातावर, प्राणिक, वाई स्तु, स्नाक है नीचे एवं स्नाक छिपाक स्तरों और कियापी, व्यवसाय, कृषक एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत नाम कानिवाँ नागरिक ७० प्रतिशत पिछड़ी, ५० प्रतिशत खुपुषित ५८, ४ प्रतिशत उच्च क्या ५० प्रतिशत मुखजान वातियों में है जो छरी वायु काँ छिपाक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । खुपर रखेवाँ नागरिक ५० प्रतिशत मुखजान, ४० प्रतिशत खुपुषित, ३० प्रतिशत पिछड़ी क्या २५ प्रतिशत उच्च वातियों में है जो छरी वायुकाँ, छिपाक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । राखीतिक काँ के १२, २ प्रतिशत ने किछी न्यायालय के एवं है बहुत अधिकारी का हट्ट नाम बताया को कि नागरिकों के दूने है भी अधिक है, किन्तु कछी-अकल है । क्या राखीतिक काँ का ज्ञान न्यायालयों की और बहुत का जाता है वा स्थानीय कानून के कदर एवं न्यायालयों का नान्य महत्व है । खुपर रखेवाँ अधिकार नागरिकों ने किछी-अकल का नाम बताया ।

* मुक्ति विभाग का किछी में एवं है बहुत अधिकारी जैन होता है ? का उत्तर ७, ७ प्रतिशत ने हट्ट क्या १, २ प्रतिशत ने बहुत किया और १०, १ प्रतिशत नागरिक खुपर रहे । हट्ट उत्तर रखेवाँ नागरिक ८० प्रतिशत मुखजान

७७, = प्रविष्ट उच्च, ७७ प्रविष्ट अनुसूचित तथा ६१ प्रविष्ट पिछड़ी जातियों में से बी छठी वायु काँ (७७ से अधिक १६-७७ वर्ष) शैक्षिक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत ऊपर देखाते नागरिक २० प्रविष्ट पिछड़ी ११, १ प्रविष्ट उच्च तथा १० प्रविष्ट मुख्यमान, जातियों में से बी छठी वायु काँ (१६-७७ वर्ष होकर) शैक्षिक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर होकर) एवं व्यवसाय काँ (व्यापक, मजदूरी एवं व्यापार होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
 अनुसर रखीवाले नागरिक ३० प्रविष्ट अनुसूचित २५ प्रविष्ट पिछड़ी ११, १ प्रविष्ट उच्च तथा १० प्रविष्ट मुख्यमान, जातियों में से बी छठी वायु काँ (१६-७७ वर्ष होकर) शैक्षिक स्तरों व्यवसाय काँ (व्यापक एवं मजदूरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसीय वर्गों के ६२, ३ प्रविष्ट सदस्यों ने कुछ ऊपर किया बी कि नागरिकों से अधिक है । यह स्पष्ट करता है कि नागरिक की वषदा राक्षसीय वर्ग के सदस्य की भूमिका नियमितताओं में राक्षसीय मानकका अधिक होती है । क्या प्रविष्ट विमान के पिछा स्तर के अधिकारियों का भीतर पटनाओं के बी जाने के परदास पटना स्तरों पर पहुँचा उनकी जानकारी का प्रमुख प्रीत है ?

उठावावाय विधि में विचारकों की कुछ संख्या मिलती है , का
 उतर ६, ३ प्रविष्ट नागरिकों ने कुछ तथा २५, = प्रविष्ट ने बहुत किया बीर
 ६१, ६ प्रविष्ट नागरिक अनुसर रहे । विचारकों की उठावावाय विधि में कुछ
 संख्या १४ कुछ बताविके नागरिक ११, १ प्रविष्ट उच्च (वैश्य होकर) १० प्रविष्ट
 पिछड़ी तथा १० प्रविष्ट मुख्यमान जातियों में से बी छठी वायु काँ (१६-२० वर्ष
 होकर) छात्र, प्राथमिक तथा स्नातक एवं स्नातकोपर (विशेषकर) शैक्षिक
 स्तरों बीर विधायी, व्यापक, कुम्हार, मजदूर एवं व्यापारी काँ का प्रतिनिधित्व
 करते हैं । बहुत ऊपर देखाते नागरिक किन्हीं से अधिकार ने जाठ की संख्या बतायी
 (विधि में लक्ष्मीजी की कुछ संख्या = है । ऐह ३५, ६ प्रविष्ट उच्च २० प्रविष्ट पिछड़ी
 २० प्रविष्ट अनुसूचित तथा २० प्रविष्ट मुख्यमान जातियों में से बी छठी वायु काँ
 (विशेषकर २१-२५ वर्ष) शैक्षिक स्तरों (निरक्षर होकर) एवं व्यवसाय काँ

(अध्यापन होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर देनेवाले नामालि ८० प्रतिशत अनुपस्थित, ७० प्रतिशत मुख्यमान ७० प्रतिशत शिक्षा तथा ६० प्रतिशत उच्च कारिणी में है जो की जायु कारि, शिक्षा स्तरों (निरंतर यह प्रतिशत) एवं व्यवसाय कारि का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के १२, ४ प्रतिशत सदस्यों में कुछ उल्टा प्रकार विचार प्रमुख कारण राजनीतिक दानिध है किन्तु यह प्रतिशत यथानि नामालि एवं उच्च कारि के प्रतिशत है अधिक किन्तु निम्नानक है। क्या राजनीतिक वर्गों के सदस्य अपनी सीमा की जानकारी की प्रमुख समय मान देती हैं? विचार यह परिलाम है।

“संख्या विधान का सीमा का कमान विचार्य जिन हैं” का उतर ८८, २ प्रतिशत नामालि में कुछ किया गया ११, ८ प्रतिशत नामालि ऊपर है। अपने सीमा के विचार्य का नाम बतानेवाले नामालि २४, ४ प्रतिशत उच्च, ६० प्रतिशत अनुपस्थित ८० प्रतिशत शिक्षा तथा ८० प्रतिशत मुख्यमान कारिणी में है जो की जायु कारि, शिक्षा स्तरों एवं व्यवसाय-कारि का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर देनेवाले नामालि २० प्रतिशत मुख्यमान, २० प्रतिशत शिक्षा १० प्रतिशत अनुपस्थित तथा ५, ६ प्रतिशत उच्च कारिणी में है जो की जायु कारि, शिक्षा स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर की होकर) एवं व्यवसाय कारि (अध्यापन एवं व्यापार होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के ६२, ३ प्रतिशत सदस्यों में कुछ उतर किया और उच्च ऊपर है। राजनीतिक वर्गों के सदस्यों का कुछ प्रतिशत यथानि नामालि के कुछ प्रतिशत है अधिक है किन्तु उच्च कारि के नामालि के प्रतिशत है २, १ प्रतिशत कम है जो यह उचित देता है कि राजनीतिक यह अपनी राजनीतिक परिवर्तनों की जानकारी अपनी अपनी सदस्यों यह अनुपस्थित नहीं करते हैं। क्या विधान का धाराओं के परभाव अपनी यह के अपनी सदस्यों की उचित फरती निवर्तन विचार - पराध्य के कारणों की छोटा राजनीतिक यह विधान का सीमा स्तर पर नहीं करते ?

“वामके सीमा का कमान उल्टा सदस्य जिन हैं” का उतर ६२ प्रतिशत नामालि में कुछ गया ७, ८ प्रतिशत में बहुत किया उच्च ३०, २ प्रतिशत नामालि ऊपर है। कुछ उतर देनेवाले नामालि में कुछ ने उल्टा सदस्य का

कन्य स्थाप, बाति एवं उपाधि ही बलादि किन्ति उनका अधिकार किन्तु ही बाति है (बाति के राजा, ठापुर ही विरक्तताय प्रताप विरक्त नृत्तपूर्व बाणिज्य राज्य नीति, मातृ बरकार की कि बाति, ७७ में कन्या बाटी के नीति कन्या बलुणा है पराधि की नीति)। कुछ उतर देनादि नामादि ७७ प्रविष्ट मुक्तमान, ७५ प्रविष्टकन्य, ७७ प्रविष्ट पिङ्गी तथा ७७ प्रविष्ट वसुध्वि बातियों में है की की बाति काँ छिदाक स्तरों (कन है कन विरक्त) एवं कन्याय-काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुछ उतर देनादि नामादि ७७ प्रविष्ट पिङ्गी , १० प्रविष्ट वसुध्वि तथा ५, ६ प्रविष्ट उच्च बातियों में है की २१ है ३५ वर्ष के बाति काँ, विरक्त, प्रापधिव बातिभूत एवं स्नातक है नीति के छिदाक स्तरों की विवाधी, कुनक, नीकर एवं कन्याय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । वसुध्वि रत्नेनादि नामादि ७७ प्रविष्ट वसुध्वि ७५ प्रविष्ट पिङ्गी, २० प्रविष्ट मुक्तमान तथा १२, ४ प्रविष्ट उच्च बातियों में है की की बाति काँ, छिदाक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकीय हीकर) एवं कन्याय काँ (कन्याय एवं नीकर हीकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसीति कर्त्त के ७५, ६ प्रविष्ट ने कुछ उतर दिये की कि की बातियों के नामादि के प्रविष्ट है बाति है ।

उपरोक्त विवरण है स्पष्ट है कि दीधीय विवाध के नाम की कन्याय की कन्याय की कन्याय बाति नामादि एवं राक्षसीति कर्त्त के कन्याय की है । इसका प्रमुख कारण दीधीय विवाध का कन्या प्रत्यक्ष कन्याय का कन्या कन्याय प्रत्यक्ष है । क्या इसके कन्या स्पष्ट होता है कि बातियों में कुछ प्रत्यक्ष कन्याय के कन्याय में बाति है ।

बाति कि प्रविष्ट के विवाधी है ? का उतर ७५, ५ प्रविष्ट नामादि ने कुछ (उतर प्रविष्ट) दिया का १, २ प्रविष्ट ने वसुध्वि (वसुध्वि) कि का कीर ६, २ प्रविष्ट नामादि वसुध्वि रहे । कन्या प्रविष्ट का कुछ नाम कन्याय नामादि कन्या प्रविष्ट मुक्तमान २७, २ प्रविष्ट उच्च ७७ प्रविष्ट पिङ्गी तथा ७७ प्रविष्ट वसुध्वि बातियों में है की की बाति काँ छिदाक स्तरों (कन है कन विरक्त) एवं कन्याय काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । प्रविष्ट के स्थान पर किन्ति का नाम कन्याय

वाका नागरिक ^{१९} अनुसूचित वासि का विस्तार ३५ वर्गमि त्रिदु है जो वासि के
 छानानों की साथ है बनाने का कार्य करता है । अनुसर रखेवाले नागरिक २० प्रविष्ट
 अनुसूचित, २० प्रविष्ट पिछड़ी तथा २, ८ प्रविष्ट उच्च (नागिक) वासियों में है
 जो की वासु काँ (२१-२५ वर्ग होकर) विस्तार तथा वापार क्षेत्रों
 तथा नुनक एवं नकुर काँ का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षीतिक वर्गों के १६, २
 प्रविष्ट कर्ष्यों ने अपने प्रीष्ठ का नाम कुछ बताया और ठेक अनुसर रहे । राक्षीतिक
 वर्गों के कर्ष्यों की मुद्रा का प्रविष्ट कर्षि नागरिकों के अधिक है किन्तु मुद्रानाम
 एवं उच्च वासियों के नागरिकों के कम है । राक्षीतिक वर्गों के कर्ष्यों की अपने
 प्रीष्ठ के नाम की जानकारी न होना यह सीधे देता है कि राक्षीतिक वह नागरिक
 राक्षीतिक का ज्ञान अपने की कर्ष्यों तक नहीं पहुँचाते हैं । क्या किसी नागरिकों
 राक्षीतिक वह अधिक एवं यह सीधी कर्ष्यों प्राप्त करने के लिए ही अपना कर्ष्य
 बताते हैं या वापस नागरिकता की जिज्ञा की प्रमाण करते हैं ?

वापस प्रीष्ठ का कर्ष्य नाम मुख्य नहीं है ? का उपर ६५, ८
 प्रविष्ट नागरिकों ने पूर्ण जमा वास्तविक रूप है कुछ किया तथा १४, ५ प्रविष्ट ने
 कुछ किया और १६, ० प्रविष्ट नागरिक अनुसर रहे । कुछ उपर देखाते नागरिक
 ८२, ४ प्रविष्ट उच्च, ६० प्रविष्ट पिछड़ी, ५० प्रविष्ट मुद्रानाम तथा ३० प्रविष्ट
 अनुसूचित वासियों में है जो की वासु काँ (विधेयकर २१-२५ वर्ग) क्षेत्रों
 स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर उच्च प्रविष्ट) तथा व्यवसाय काँ (व्यवसाय
 उच्च प्रविष्ट) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुछ उपर देखाते नागरिक (किन्हीं है
 अधिकारों ने सीपती हिरामाधी बताया व्यापि प्रदान नहीं एवं मुख्यमंत्री का वंश
 कर्ष्य में वक्तव्य रहे) ३० प्रविष्ट अनुसूचित २० प्रविष्ट मुद्रानाम, १५ प्रविष्ट पिछड़ी
 तथा ८, ३ प्रविष्ट उच्च वासियों में है जो की वासु काँ, क्षेत्रों स्तरों (स्नातक
 एवं स्नातकोपर होकर) एवं व्यवसाय-काँ (व्यवसाय एवं नौकरी होकर) का
 प्रतिनिधित्व करते हैं । अनुसर रखेवाले नागरिक ४० प्रविष्ट अनुसूचित, ३० प्रविष्ट
 मुद्रानाम, २५ प्रविष्ट पिछड़ी तथा ८, ३ प्रविष्ट उच्च वासियों में है जो की वासु
 काँ (विधेयकर २६-३५ वर्ग) क्षेत्रों स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोपर होकर
 तथा विधेयकर विस्तार) तथा कर्ष्यों, नुनक एवं नकुर काँ का प्रतिनिधित्व
 करते हैं । राक्षीतिक वर्गों के ६६, २ प्रविष्ट कर्ष्यों ने अपने प्रीष्ठ के मुख्यमंत्री का

नाम बताया की सामान्य नामांकों से यद्यपि कुछ अधिक प्रसिद्ध है तथापि उच्च वाति के नामांकों से १४, २ प्रसिद्ध कम है । क्या पतितान मुखर्जी के नाम की जानकारी में की जा प्रमुख कारण वल्लभ जाहागिरि से किसी की केन्द्रीय नन्दन खुशुणा, की नारायण बच विहारी एवं की रामचन्द्र बाबू ने कानार प्रलय किया ? क्या चरित्रों का प्रकाश प्राचीनों के संस्कार को बहुत कम दूर कर पाया है ? राक्षसीय कर्तों का प्रमुख दायित्व है कि वे राक्षसीय क्षान के स्वार्थ में उत्पीड़न प्रति की ।

वापके प्रसिद्ध की राक्षसीय कर्तों है ? का उत्तर नामांकों से ७८, ६ प्रसिद्ध कुछ (उच्चक) का १४, ६ प्रसिद्ध कुछ किया और ५, २ नामांकी खुपर रहे । कुछ उत्तर देनेवाले नामांकी का प्रसिद्ध मुखजान, ६५ ७ प्रसिद्ध उच्च (प्राकण का प्रसिद्ध) ६० प्रसिद्ध पिछड़ी तथा ५० प्रसिद्ध खुशुणा वातियों में है की की वायु कर्त, क्षेपक स्वार्थ एवं व्यवसाय कर्त का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुछ उत्तर देनेवाले नामांकों से का प्रसिद्ध 'पिछड़ी' बताया किसी स्पष्ट होता है कि १४, ६ प्रसिद्ध नामांकी प्रसिद्ध एवं वेद की राक्षसीय में उत्तर कमने में कम है । कुछ उत्तर देनेवाले नामांकी ३० प्रसिद्ध खुशुणा ३० प्रसिद्ध पिछड़ी तथा ८, ३ प्रसिद्ध उच्च (प्राकण होकर) वातियों में है की की वायु कर्त, क्षेपक स्वार्थ (स्वाक एवं स्वाकपीपर होकर) एवं व्यवसाय कर्त (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । खुपर देनेवाले नामांकी २० प्रसिद्ध खुशुणा तथा १० प्रसिद्ध पिछड़ी वातियों में है की २१-४५ वर्ष के वायु कर्त, निरक्षर तथा क्षेपक स्वार्थ और कुचक तथा मकूर कर्त का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसीय कर्तों के ६२, ३ प्रसिद्ध कर्तों से कुछ का ७, ७ प्रसिद्ध ने कुछ उत्तर दिए की राक्षसीय क्षापीकरण के प्रभाव को प्रसिद्ध करता है ।

उत्तर प्रसिद्ध कियान कच्छ के दोनों कर्तों के नाम बताया है ? के उत्तर में नामांकों से ३१, ६ प्रसिद्ध कियान का तथा १०, १ प्रसिद्ध कियान परिचय का नाम बताया ; ३, ६ प्रसिद्ध नामांकों से दोनों कर्तों के कुछ नाम बताया का ६१, २ प्रसिद्ध नामांकी खुपर रहे । कियान का कुछ नाम देनेवाले नामांकी ५० प्रसिद्ध उच्च, २० प्रसिद्ध पिछड़ी तथा २० प्रसिद्ध खुशुणा

वातियों में है जो की ली वायु का, छिपाक स्तरों (विस्तार होकर, छिन्नकर स्तरों के नीचे एवं ऊपर) का विनाश, व्यापक, पुनरुत्थन एवं व्यापक का प्रतिनिधित्व करते हैं । विमान परिणाम का मूल नाम ब्रह्मवादी नागरिक ३३, ३ प्रविष्ट उच्च का १० प्रविष्ट निम्न वातियों में है जो की ली वायु का छिपाक स्तरों (विस्तार होकर, छिन्नकर स्तरों के नीचे एवं ऊपर) एवं व्यापक का (ब्रह्मवादी एवं कीर्ति होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । इसी स्पष्ट है कि निम्न, वृद्धि तथा पुनरुत्थन वातियों के नागरिकों की विमान परिणाम की मान्यता बहुत कम है किन्तु प्रसुत कारण इसका व्यक्तता विनाश है । नीचे वर्णों के वृद्ध नाम ब्रह्मवादी नागरिक १० प्रविष्ट वृद्धि, १ प्रविष्ट निम्न का २, २ प्रविष्ट उच्च वातियों में है जो प्रस, वृद्धि एवं वृद्ध वायु का, विस्तार, छिन्न स्तर एवं स्तरों के नीचे छिपाक स्तरों का विनाश एवं पुनरुत्थन का प्रतिनिधित्व करते हैं । वृद्ध रत्नवादी नागरिक का प्रविष्ट पुनरुत्थन, ३० प्रविष्ट वृद्धि, ३० प्रविष्ट निम्न वातियों का ३०, २ प्रविष्ट उच्च वातियों में है जो की ली वायु का (छिन्नकर २६-२८ वर्षों की १६-३० वर्ष) छिपाक स्तरों (छिन्नकर विस्तार, ऊपर, प्राथमिक एवं छिन्न स्तर) का व्यापक का (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राक्षसीय स्तरों के ३३, १ प्रविष्ट वर्णों ने विमान का ३०, २ प्रविष्ट ने विमान परिणाम का नाम बताया कि उच्च वातियों के नागरिकों की अपेक्षा कम है किन्तु ज्ञानान्तर स्तर के अधिक है । यद्यपि राक्षसीय स्तरों की व्यक्तता प्रस का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है किन्तु वर्गीकरणक प्रतीत होता है ।

ऊपर प्रविष्ट का उच्च व्यापक वर्ण पर स्थित है ? का उच्च नागरिकों ने ३३, १ प्रविष्ट मूल (ब्रह्मवादी) का ३, १ प्रविष्ट वृद्धि का २, १ प्रविष्ट नागरिक वृद्ध रहे । मूल उच्च देनेवाले नागरिक का प्रविष्ट पुनरुत्थन, ३०, २ प्रविष्ट उच्च, १० प्रविष्ट निम्न का ३० प्रविष्ट वृद्धि वातियों में है जो की ली वायु का, छिपाक स्तरों का व्यापक का का प्रतिनिधित्व करते हैं । वृद्ध उच्च देनेवाले नागरिकों ने प्रायः बिली पताया किसी स्पष्ट होता है कि वे नागरिक वर्णों तथा उच्च व्यापक के मध्य विवाद करने की समता नहीं

रहते हैं। बहुत ऊपर देनेवाले नागरिक २० प्रतिशत अनुपस्थित तथा १० प्रतिशत शिक्षणी कार्यों में है जो १५-२५ वर्ष के वायु वर्ग, शारीरिक एवं स्नातक के बीच शैक्षिक स्तरों तथा विवाही एवं मजदूर वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उल्लेखनीय है कि ऊपर देनेवाले सभी महिला नागरिक हैं और सभी अपने अपने अपने विकास में गठित विकास कुछ क्षमता की अवस्था में हैं। महिला वर्ग की उच्च न्यायालय एवं शिक्षा न्यायालय की सभी ज्ञान की दृष्टि का प्रमुख कारण अभियोगों में महिला वर्ग की मूलतः व्यक्तित्व की प्रतीति होती है। राजनीतिक वर्गों के ६२, २ प्रतिशत अवस्था में हुए तथा ७, ७ प्रतिशत में बहुत स्थानों पर उच्च न्यायालय का स्थित होना बताया। उच्च न्यायालय के स्तर का ज्ञान ६३, १ प्रतिशत नागरिकों में होने के प्रमुख कारणों में शिक्षा विधान का बीच का उदाहरण के रूप में होता, उच्च न्यायालय का उदाहरण में स्थित होना तथा दीर्घकाल के इसी स्थापना है।

ऊपर प्रेषित के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का नाम बताएँ का उद्देश्य २, ६ प्रतिशत नागरिकों में पूर्ण तथ्या वास्तविक रूप में हुए तथा ५, २ प्रतिशत में बहुत स्थित और ६२, २ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे। प्रेषित के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश का कुछ नाम बान्नीवाले सभी नागरिक^{१५} है ५, ६ प्रतिशत उच्च वास्तव में है जो २१-२५ वर्ष तथा २६-३५ वर्ष के वायु वर्ग, स्नातक शैक्षिक स्तरों तथा व्यवसाय एवं व्यापारी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत ऊपर देनेवाले नागरिक ८, ४ प्रतिशत उच्च तथा १ प्रतिशत शिक्षणी कार्यों में है जो २१-२५ वर्ष, २६-३५ वर्ष तथा ३६-४० वर्ष के वायु वर्ग, शारीरिक, शारीरिक तथा स्नातक के बीच के शैक्षिक स्तरों तथा विवाही एवं कुशल वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर देनेवाले नागरिक का प्रतिशत मुख्यतः, का प्रतिशत अनुपस्थित, ६५ प्रतिशत शिक्षणी तथा ८६ प्रतिशत उच्च कार्यों में है जो सभी वायु वर्ग, शैक्षिक स्तरों एवं व्यवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के ३, ८ प्रतिशत अवस्था में हुए ऊपर दिए की कि राजनीतिक कार्याकरण के बीच में राजनीतिक वर्गों के अब तक के अवस्थाओं में का है का है। सभी प्रेषित के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के

नाम की १७, ४ प्रकृत नामांशों की जानकारी न होना अत्यन्त चिन्ता का द्योतक है। प्रसिद्ध के मतानुसार मुख्य मंत्री का नाम बताने में ३४, २ प्रकृत नामांश बताने से किन्तु प्रसिद्ध के उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश के नाम पर नामांशों की संख्या ३७, ४ प्रकृत पूर्ण वर्ष, ऐसा वर्ष ? उल्टा बिचार करने से स्पष्ट होता है कि प्रसिद्ध के ऐसी सीढ़ी, आचार वर्षों एवं पक्षियों की महत्त्वपूर्ण का ईश्वर नामांशों के मुख्य मंत्री के नाम का प्रकार एवं प्रकार प्रकृत किया जाता है किन्तु मुख्य न्यायाधीश का नाम जोक मंत्री में एक बार नामांशों की पुनर्प्राप्ति तथा मुद्रित पितापी संज्ञा है ; प्रसिद्ध का मुख्य मंत्री स्वयं प्रसिद्ध का प्रमाण करते, प्रत्यक्ष का ईश्वर करते तथा अन्तिम नामांशों के शिरो का ध्यान करते प्रमाण का स्थायी का ही जाता है किन्तु मुख्य न्यायाधीश बिना तब, हीनित ईश्वर करते तथा अन्तिमों (उच्च न्यायालय स्तर) के उच्च नामांशों की परिधि में तब ही प्रमाणों की जाता है। वाक्यांशों के वही ऐसा कार्यवाही की रचना * (१९७४) का अन्तिम करने से स्पष्ट होता है कि आचार की २, २ प्रकृत समय निर्धारित है^{१६} काकि वास्तव नाम की ८, ७ प्रकृत कितनी होती है ५, ६ प्रकृत तथा वास्तव्य होती है २, २ प्रकृत समय निर्धारित किया गया है। जरूरत है कि आचार रचना के स्थायी स्वयं की कहीं भी वर्ष नहीं की गई है। आचार में न्यायपालिका का स्थायी स्वयं होना बाहिर किसे नामांशों का न्याय ईश्वर का न किशोर की ही।

* उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर बाप प्रिन्स विश्वास करते हैं ? के उत्तर में नामांशों में ३७, ७ प्रकृत पूर्ण १३, २ प्रकृत कुछ का ७, ६ प्रकृत का * ३, ६ प्रकृत वाचा का १, ३ प्रकृत निम्नलिखित मंत्री विश्वास प्राप्त किया। सभी स्पष्ट है कि २६, ३ प्रकृत नामांशों की उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की न्याय मानना पर वपूर्ण विश्वास है जो कि न्यायपालिका के लिए सभी प्रतीत की रहा है। उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर पूर्ण विश्वास प्राप्त करिवाले नामांश १० प्रकृत मुख्यमान ७५ प्रकृत उच्च, ७५ प्रकृत पिछड़ी तथा ५० प्रकृत अनुसूचित जातियों में है जो की वायु वर्षों (का है वधिक १६-२० वर्ष कीर का है का ३५-५५ वर्ष) ईश्वर स्तरों (का है वधिक स्नातक है वधिक

जैसे ऊपर क्या अब है कम विस्तार जैसा साधारण (मन्दूरी
 अब है कम) का प्रतिनिधित्व करते हैं । अतः विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक
 ५० प्रतिशत अनुपस्थित , २५ प्रतिशत पिछड़ी, २५ प्रतिशत उच्च तथा १० प्रतिशत
 मुख्यमान जातियों में है जो की ली वायु कर्मी (अब है अधिक ४५-५५ वर्ष) शैक्षणिक
 स्तरों (अब है अधिक विस्तार) तथा व्यवसाय कर्मी (अब है अधिक मन्दूरी जैसा
 पूर्ण) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक कर्मी के ७० प्रतिशत अवस्था में
 उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर पूर्ण विश्वास प्रकट किया । उच्च न्यायालय
 के न्यायाधीशों पर वायव्यकाय के पूर्ण साक्षात्कृत ४५, ४ प्रतिशत वायव्यकाय में
 साक्षात्कृत २५ प्रतिशत तथा वायव्यकाय के पूर्ण साक्षात्कृत १९, ८ प्रतिशत
 नागरिकों ने पूर्ण विश्वास प्रकट किया है । इसी स्पष्ट है कि कर्मी जातियों के
 सम्मुख है न्यायापालिका पर विश्वास बढ़ा है फिर भी न्यायापालिका के नीति
 के समुद्र नहीं है । समस्त जैसा निम्न न्यायापालिका के विकास में राजनीतिक
 कर्मी की भूमिका का वक्तव्य नवीकरण का विषय प्रतीत होता है ।

मुख्य नीति की पर है जैसा उदाहरण है ? ता ऊपर
 नागरिकों में २०, ६ प्रतिशत पूर्ण तथा जैसा कि अब है उदाहरण ५९, २ प्रतिशत
 समुद्र किया और २९, ९ प्रतिशत नागरिक अनुपस्थित रहे । पूर्ण तथा जैसा कि
 है मुख्य नीति की परापूर्व करने की लीक का विकास देनेवाले नागरिक २६, २ प्रतिशत
 ३० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत अनुपस्थित जातियों में है जो की ली वायु कर्मी
 शैक्षणिक स्तरों (विस्तार होकर) तथा व्यवसाय-कर्मी (मन्दूरी होकर) का
 प्रतिनिधित्व करते हैं । समुद्र ऊपर देनेवाले नागरिक १९, ८ प्रतिशत कर्मी, १०, ९
 प्रतिशत प्रभावशील, ५, २ प्रतिशत राष्ट्रपति तथा ६, २ प्रतिशत अन्य में मुख्यनीति की
 परापूर्व करने की लीक का विकास करने हैं । समुद्र ऊपर देनेवाले नागरिक
 ६० प्रतिशत मुख्यमान, ५० प्रतिशत पिछड़ी, ४२, ४ प्रतिशत उच्च तथा ३० प्रतिशत
 अनुपस्थित जातियों में है जो की ली वायु कर्मी, शैक्षणिक स्तरों तथा व्यवसाय कर्मी
 (वक्तव्य होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर देनेवाले नागरिक ४० प्रतिशत
 अनुपस्थित, २० प्रतिशत पिछड़ी, १९, ४ प्रतिशत उच्च तथा १० प्रतिशत मुख्यमान,

वाकियों में है जो की ली वायु काँ (विद्यमान २१-२५ वर्ष) शैशव स्तरों (विद्यमान निरन्तर छात्र तथा प्राथमिक) तथा व्यवसाय काँ (व्यापक, व्यापक एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों के २५, ६ प्रतिशत वर्गों ने पूर्ण व्यापक वाक्य रूप है कुछ कुछ नहीं की पकड़ करनीवाली शक्तियों को बताया कि जो कि इन राजनीतिक वर्गों के द्वारा राजनीतिक समाजीकरण के बीच में किसी बानेवाले प्रवर्तकों का परिणाम प्रतीत होता है ।

उपर प्रीट का कर्मान राज्यपाल कौन है ? का उपर नागरिकों ने १६, ० प्रतिशत कुछ तथा २२, ४ प्रतिशत कुछ बिना कीर २०, ६ प्रतिशत नागरिकों को २६ । पूर्ण व्यापक काँ वाक्य रूप है कर्मान राज्यपाल का कुछ नाम बताने वाले नागरिक २५ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत मुसलमान, १५ प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत अनुसूचित वाकियों में है जो की ली वायु काँ (१५-२० वर्ष होकर) शैशव स्तरों (निरन्तर होकर) तथा व्यवसाय काँ (मजदूरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । कर्मान राज्यपाल के स्थान पर लीत के राज्यपालों का व्यापक प्रीट राजनेताओं के बीच जीमती होकरानाथी, डा० कर्मानों का नाम बतानेवाले कर्मान कुछ उपर देनेवाले नागरिक ३० प्रतिशत मुसलमान, २५ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत अनुसूचित वाकियों में है जो की ली वायु काँ (१५-२५ वर्ष होकर तथा विद्यमान १५-२० वर्ष एवं २५-३५ वर्ष) शैशव स्तरों (विद्यमान स्नातक है बीच एवं ऊपर) तथा व्यवसाय काँ (व्यापक एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । उपर देनेवाले नागरिक २० प्रतिशत अनुसूचित १५ प्रतिशत पिछड़ी, ५० प्रतिशत मुसलमान तथा ५० प्रतिशत उच्च वाकियों में है जो की ली वायु काँ, शैशव स्तरों एवं व्यवसाय काँ (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों के ३०, ८ प्रतिशत वर्गों ने कर्मान राज्यपाल का कुछ नाम बताया जो कि राजनीतिक समाजीकरण के प्रभाव की प्रतीति करता है क्योंकि किसी की वाति है के नागरिकों में लती बानकारी नहीं है किन्तु यह प्रतिशत वर्गीकृत है ।

नाल का कर्मान राज्यपाल कौन है ? का उपर नागरिकों ने ५२, ६ प्रतिशत पूर्ण या वाक्य रूप है कुछ तथा १०, ५ प्रतिशत

बहुद दिया और ३६, ६ प्रविष्ट नामलिखे कुपूर रहे । पूर्ण या वार्षिक रुप है वर्तमान राष्ट्रपति का हुद नाम बतायेवाले नामलिखे ७० प्रविष्ट मुखजान, ६६, ४ प्रविष्ट उज्ज, ३५ प्रविष्ट पिछड़ी तथा २० प्रविष्ट अनुसूचित जातियों में है जो की जायु काँ, क्षैतिक स्तरों (किरीनकर हाई स्कूल एवं उच्च ऊपर है) तथा व्यवसाय-काँ (व्यवसाय एवं प्रविष्ट तथा व्यवसाय २४, ६ प्रविष्ट) का प्रतिनिधित्व करती हैं । बहुद उतर देनेवाले नामलिखों में किरीनकर तत्कालीन प्रधानमंत्री और वीर कालीन राष्ट्रपति के नाम बताये जो लीव देता है कि प्रधान मंत्री एवं राष्ट्रपति के मध्य किये जाने की दामता तथा महीन परिवर्तनों के प्रति उपपुत्र का वसाय नामलिखों में है । वर्तमान राष्ट्रपति का बहुद नाम बतायेवाले नामलिखे २५ प्रविष्ट पिछड़ी, २० प्रविष्ट अनुसूचित तथा २, = प्रविष्ट उज्ज जातियों में है जो की जायु काँ (१६-२० वर्ष होकर) क्षैतिक स्तरों (स्नातक है नीचे एवं ऊपर होकर) एवं व्यवसाय काँ (व्यवसाय, व्यवसाय एवं मजदूरी होकर) का प्रतिनिधित्व करती हैं । कुपूर देनेवाले नामलिखे ६० प्रविष्ट अनुसूचित ४० प्रविष्ट पिछड़ी, २० प्रविष्ट मुखजान तथा २०, = प्रविष्ट उज्ज, जातियों में है जो की जायु काँ (किरीनकर ४६-७० वर्ष) क्षैतिक स्तरों (किरीनकर निरदार एवं हादर) तथा व्यवसाय काँ (व्यवसाय होकर) का प्रतिनिधित्व करती हैं । राजनीतिक वर्गों के ६९, ५ प्रविष्ट जलप्यों ने वर्तमान राष्ट्रपति का पूर्ण वसाय वार्षिक रुप है हुद नाम बताया जो उज्ज एवं मुखजान जातियों के नामलिखों में है । वार्षिक तो यह है कि प्रविष्ट के वर्तमान मुख्यमंत्री के वीरता वर्तमान राष्ट्रपति के नाम की जानकारी ३३, २ प्रविष्ट नामलिखों जो है । इस कमी के प्रमुख जल राष्ट्रपति का व्यवसाय निवाप्त, वीरतात्मक शासन प्रणाली, राज्य की राजनीति में नग्य भूमिका, जल प्रत्यक्ष वसईपर तथा न्यूनतम पावण एवं प्रचार प्रवीत होती है ।

भारत की राजधानी काँ है १ के उतर में ६४, = प्रविष्ट नामलिखों में दिल्ली हुद बताया और ५, २ प्रविष्ट नामलिखे कुपूर रहे । भारत की राजधानी दिल्ली है इसका ज्ञान देनेवाले नामलिखे ७० प्रविष्ट, उज्ज एवं प्रविष्ट मुखजान ६० प्रविष्ट अनुसूचित तथा २५ प्रविष्ट पिछड़ी जातियों में है जो

कमी वायु कार्ग, शैलिक स्टारों तथा व्यवसाय कार्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऊपर रूनेवाले नागरिक १५ प्रतिशत पिछड़ी तथा १० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में हैं जो कमी वायु कार्ग (१५-२० वर्ष एवं ५५-७० वर्ष होकर) निरक्षर एवं कुम्हार चारों स्तूप के शैलिक स्टारों तथा कुम्हार, मजदूरी, गीकरी एवं नात्य रत्ना के कार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के उच्च प्रतिशत सदस्यों ने भारतीयों की राजधानी का बिली स्थित होना बताया।

‘ भारत का वर्तमान प्रधान मंत्री कौन हैं ? ’ का ऊपर ६४, ८ प्रतिशत नागरिकों ने सुझाया १, ३ प्रतिशत ने सुझाया और ३, ६ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे। भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री का सुझाया वर्तमान नागरिक उच्च प्रतिशत सुझाया ६५ प्रतिशत पिछड़ी, ६४, ४ प्रतिशत उच्च तथा ६० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में हैं जो कमी वायु कार्ग, शैलिक स्टारों तथा व्यवसाय कार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर रूनेवाले तथा २, ६ प्रतिशत ऊपर रूनेवाले नागरिकों की नाम की जानकारी रही क्योंकि इसके पूर्वकी प्रश्नों के उत्तरों में प्रधान मंत्री का ही नाम बताया किन्तु का प्रधान मंत्री का नाम पूछा गया था फलतः इस नाम की बात देने के कारण ऊपर नाम बताया गया मानि रह गयी। इसी स्पष्ट होता है कि ये नागरिक व्यक्ति के एक ही नाम में ही सगपना करने में लगते हैं जो कि राजनीतिक समाजीकरण के अभाव का परिचायक है।

भारत का वर्तमान न्यायाध्यक्ष कौन हैं ? का ऊपर नागरिकों ने ७६, ३ प्रतिशत सुझाया (पिछड़ी) तथा १०, ५ प्रतिशत सुझाया तथा शेष १३, २ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे। सुझाया रूनेवाले नागरिक ६० प्रतिशत पिछड़ी ७०, ८ प्रतिशत उच्च, ६० प्रतिशत अनुसूचित तथा ६० प्रतिशत सुझाया जातियों में हैं जो कमी वायु कार्ग (विशेषकर २५-३५ वर्ष) शैलिक स्टारों (विशेषकर चारों स्तूप, स्नायक के बीच तथा ऊपर) और व्यवसाय कार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऊपर (प्रायः अज्ञात) रूनेवाले नागरिक २० प्रतिशत सुझाया, २० प्रतिशत अनुसूचित, ८, ३ प्रतिशत उच्च तथा ५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों में हैं जो कमी वायु कार्ग (२१-२५ वर्ष तथा ५५-७० वर्ष होकर) शैलिक स्टारों

(बाजार तथा स्नाक एवं स्नाकधीपर होकर) तथा व्यवसाय कारी (व्यवसाय तथा नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर देनेवाले नागरिक २० प्रतिशत मुकदमान , २० प्रतिशत अनुसूचित , १३, ६ प्रतिशत उच्च तथा ५०-प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो सभी वायु कारी (१६-४५ वर्ष होकर) छैदाक स्तरों (स्नाक एवं स्नाकधीपर होकर) तथा व्यवसाय कारी (व्यवसाय एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राखनीतिक वर्गों के ८८, ५ प्रतिशत अवस्था में कर्माध्य न्यायालय के हुद स्थान बताया की राखनीतिक कर्माधीकरण के प्रभाव का उचित देता है ।

कर्माध्य न्यायालय के प्रभाव न्यायधीन का नाम बताया है * के उतर में नागरिकों में १०, ५ प्रतिशत हुद तथा १, ३ प्रतिशत अनुद नाम बताया और देना ८८, २ प्रतिशत नागरिक ऊपर रहे । कर्माध्य न्यायालय के प्रभाव न्यायधीन का पूर्ण क्या वांछित रूप है हुद नाम बताया बाटे नागरिक १३, ६ प्रतिशत उच्च १० प्रतिशत अनुसूचित , १० प्रतिशत मुकदमान तथा ५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो सभी वायु कारी (१६-२० वर्ष होकर , बिलेनकर २६ है ४५ वर्ष) बाजार एवं स्नाक तथा स्नाक एवं स्नाकधीपर छैदाक स्तरों और व्यवसाय कारी (मजदूरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर देनेवाले १० प्रतिशत मुकदमान नागरिक हैं जो २६-४५ वर्ष के वायु कारी, एवं स्नाक छैदाक स्तर तथा व्यापारी कारी का प्रतिनिधित्व करते हैं । ऊपर देनेवाले नागरिक २५ प्रतिशत पिछड़ी २० प्रतिशत अनुसूचित, ८६, १ प्रतिशत उच्च तथा ८० प्रतिशत मुकदमान, जातियों में है जो सभी वायु कारी, छैदाक स्तरों तथा व्यवसाय कारी का प्रतिनिधित्व करते हैं । राखनीतिक वर्गों के ११, ५ प्रतिशत अवस्था में कर्माध्य न्यायालय के प्रभाव न्यायधीन का नाम पूर्ण क्या वांछित रूप है हुद बताया । यद्यपि हुद उतर देने में राखनीतिक वर्गों के अवस्था का प्रतिशत अधिक है किन्तु अतीनाकत है । कर्माध्य न्यायालय के प्रभाव न्यायधीन के नाम की इसी कम जानकारी का प्रभाव कारण उन एकल जायनों में न्यायवाजिका की उचित स्थान न मिलना ही है ।

* भारत के राष्ट्रपति का क्या है बड़ा अधिकार क्या है ?
का उतर नागरिकों में १०, २ प्रतिशत हुद (जपाकनीन बीजपा) तथा १५, ५ प्रतिशत अनुद (अन्य अधिकारों) दिया और ४०, ३ प्रतिशत नागरिक

कुपूर रहे । भारत के राष्ट्रपति के कम से कम अधिकार के कम में वायसराय की योजना की बतानेवाले नागरिक २२, २ प्रतिशत उच्च २० प्रतिशत मुकदमा १० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो की सभी वायु कर्मी (पिछेकर १६-२० वर्ष) छेपिक स्तरी (पिछेकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर , निस्तार होकर) तथा व्यवसाय कर्मी (मजदूरी एवं नीकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राष्ट्रपति के छेपिक जातीय अधिकार के बतानेवा अन्य अधिकारी जैसे छेपिक की करना, राज्यवाली की नियुक्ति, नामावान, वध्यावेक , न्यायवाली की नियुक्ति वापि बतानेवाले नागरिक ४२, ७ प्रतिशत उच्च, ४० प्रतिशत मुकदमा, २० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो की सभी वायु कर्मी (कम से कम ४६-५५ वर्ष और कम से कम ५६-७० वर्ष) छेपिक स्तरी (पिछेकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर) तथा व्यवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुपूर रनेवाले नागरिक ७० प्रतिशत अनुसूचित ६० प्रतिशत पिछड़ी , ४० प्रतिशत मुकदमा तथा २६, १ प्रतिशत उच्च जातियों में है जो की सभी वायु कर्मी (पिछेकर ४६-५५ वर्ष) छेपिक स्तरी (पिछेकर निस्तार एवं वापार) तथा व्यवसाय कर्मी का प्रतिनिधित्व करते हैं । रायनीतिक बली के १५, ४ प्रतिशत उच्चों ने प्रत्येक का छुट उतर दिया जो कि छुट उतर देनेवाले व्यक्त नागरिकों का ४४, ५ प्रतिशत है फिर भी कर्मीजनक प्रतीत होता है ।

भारत के राष्ट्रपति की कम से कम छेपिका का करता है के उतर में १८, ४ प्रतिशत नागरिकों ने महाभियोग (छुट) तथा ४८, ७ प्रतिशत ने छुट बतानेवा और २२, ६ प्रतिशत नागरिक कुपूर रहे । छुट उतर देनेवाले नागरिक २०, ८ प्रतिशत उच्च, २० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो की सभी वायु कर्मी (पिछेकर १६-२५ वर्ष) छेपिक स्तरी, (पिछेकर स्नातक से नीचे एवं ऊपर और निस्तार होकर) तथा व्यवसाय कर्मी (मजदूरी एवं नीकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । छुट उतर देनेवाले नागरिकों ने पिछेकर पुनाव एवं अधिकार के उपायों का करारा दिया किछि यह स्पष्ट होता है कि नागरिक जातीय अधिकारियों की पदच्युत करने के लिए पुनाव की एक कम छेपिक मानते हैं । कार्यकाळ के मध्य में पदच्युत करने के लिए प्रान

प्रधान के छिरे प्रयुक्त रीतिवाले वधिरबाह प्रस्ताव की प्रक्रिया की राखरुपति के छिरे भी कायानिबन्ध करने की एक समान बाह्या प्रतीत होती है । वृद्ध उपर रीतिवाले नागरिक २० प्रतिशत मुखजान , ५५ प्रतिशत पिछड़ी , ५० प्रतिशत अनुसूचित तथा ३५, १ प्रतिशत उच्च जातियों में है जो की की जायु काँ (विधेयकर २५ वर्ष के ऊपर के) छेदिक स्तरों एवं व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करी है । वृद्ध रीतिवाले नागरिक ३५, १ प्रतिशत उच्च, २५ प्रतिशत पिछड़ी, ३० प्रतिशत अनुसूचित तथा २० प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो की की जायु काँ (विधेयकर २५-२५ वर्ष) छेदिक स्तरों । विधेयकर निरदार एवं छाकर) तथा व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करती है । राजनीतिक वर्गों के २२, १ प्रतिशत सदस्यों ने वृद्ध उपर दिने की राजनीतिक समाधीकरण का उचित रीति है ।

‘ नारदीय छेद के दोनों छेदों के नाम बताये के उपर में ४२, २ प्रतिशत नागरिकों ने छेद छेद’ तथा १२, ७ प्रतिशत ने ‘ राज्यछेद ’ की बताया , २, ६ प्रतिशत नागरिकों ने वृद्ध उपर दिया कीर ५३, ६ प्रतिशत नागरिक वृद्ध रीति । ‘ छेद छेद’ बताये वाले नागरिक ५५, ६ प्रतिशत उच्च , ३५ प्रतिशत पिछड़ी , ३० प्रतिशत अनुसूचित तथा २० प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो की की जायु काँ (विधेयकर २५-३५ वर्ष) छेदिक स्तरों (निरदार एवं छाकर वृद्ध के) तथा व्यवसाय काँ (मजदूरी होकर) का प्रतिनिधित्व करती है । ‘ राज्य छेद’ बताये वाले नागरिक ३०, ६ प्रतिशत उच्च १५ प्रतिशत पिछड़ी १० प्रतिशत अनुसूचित तथा मुख्य प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो की की जायु काँ , छेदिक स्तरों (निरदार होकर) तथा व्यवसाय काँ (मजदूरी एवं नौकरी होकर) का प्रतिनिधित्व करती है । वृद्ध उपर रीतिवाले नागरिक १० प्रतिशत अनुसूचित तथा १० प्रतिशत मुखजान जातियों में है जो २५-२५ वर्ष तथा २५-३५ वर्ष के जायु काँ , छेद स्तर छेदिक स्तर तथा मजदूरी तथा व्यापार के व्यवसाय काँ का प्रतिनिधित्व करती है । वृद्ध रीतिवाले नागरिक ७० प्रतिशत मुखजान ५५ प्रतिशत पिछड़ी, ६० प्रतिशत अनुसूचित तथा ४५, ४ प्रतिशत , उच्च जातियों में है जो की की जायु काँ, छेदिक स्तरों (विधेयकर निरदार तथा छाकर)

तथा व्यवसाय वर्गों (व्यापन होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक दलों के सदस्यों ने १७, ७ प्रतिशत ' लीक क्ला ' तथा ४२, ३ प्रतिशत ' राज्यकर्ता ' को बताया जो कि राजनीतिक कार्याकरण का लक्ष्य होता है क्योंकि ये प्रतिशत सभी बातियाँ के नागरिकों के अधिक हैं । लीक क्ला की संख्या राज्य क्ला के नाम की वस्तु जानकारी का प्रमुख कारण इसी सदस्यों का व्यक्तित्व निष्ठा है । ' लीक क्ला ' के नाम की संपूर्ण नागरिकों में ज्ञान की कमी का प्रमुख कारण नेताओं का कलहा है मध्य ' दिल्ली ' के लिए चुनाव लड़ना बताया है किसे न तो नागरिक ' लीक ' समक चाते हैं और न लीक के दोनों वर्गों का स्पष्ट नाम ही ।

' भारत का प्रधान मंत्री किसे क्लन का नेता होता है ? ' के उपर में ३७ प्रतिशत नागरिकों ने ' लीक क्ला ' (लुड) क्ला १४, ५ प्रतिशत ने बहुत बताया और ४८, ५ प्रतिशत नागरिक अनुपर रहे । लुड उपर देनेवाले नागरिक ३७, २ प्रतिशत उच्च, ३० प्रतिशत पिछड़ी , ३० प्रतिशत मुसलमान तथा २० प्रतिशत अनुसूचित बातियाँ में है जो सभी वायु वर्गों शैक्षणिक स्तरों तथा व्यवसाय वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत उपर देनेवाले नागरिकों ने प्रायः काटिह , ' मीनि परिषद् ' विमान क्ला , राज्य क्ला ' १६ ' बड़ी क्ला ' २० , दिल्ली क्ला ' २१ बाधि नाम बताया । बहुत उपर देनेवाले नागरिक ४० प्रतिशत मुसलमान, १५ प्रतिशत पिछड़ी नागरिक , १० प्रतिशत अनुसूचित क्ला ८, ३ प्रतिशत उच्च बातियाँ में है जो सभी वायु वर्गों (१६-२५ वर्ष कल) शैक्षणिक स्तरों (निरक्षर होकर) तथा व्यवसाय वर्गों (व्यापन एवं मजदूरी होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । अनुपर देनेवाले नागरिक ७० प्रतिशत अनुसूचित ५५ प्रतिशत पिछड़ी ४४, ५ प्रतिशत उच्च तथा ३० प्रतिशत मुसलमान, बातियाँ में है जो सभी वायु वर्गों, शैक्षणिक स्तरों (विशेषकर निरक्षर एवं साधार) तथा व्यवसाय वर्गों (व्यापन होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । धारणा यह है कि ७, ८ प्रतिशत नागरिक जो ' लीक क्ला ' जानते हैं बरन्तु प्रभावशाली यह क्लन का नेता होता है इससे अनुमित है । इन नागरिकों की अनुमितता का सामाज्य इससे मिलता है कि ३, ६ प्रतिशत अनुपर रहे और ३, ६ प्रतिशत बहुत उपर विधि । राजनीतिक दलों के ४२, ३ प्रतिशत सदस्यों

ने प्रश्न का कुछ उत्तर दिया जो कि नागरिकों की संख्या अधिक का उच्च बांति है का है ।

‘सर्वोच्च न्यायालय, संघ और राज्यपाल - ये तीनों किसी नियमित रकत हैं’ के उत्तर में ७, = प्रतिशत नागरिकों ने ‘सर्वोच्च’ (कुछ) का ४७, ४ प्रतिशत ने ‘कुछ’ निरीक्षक का नाम बताया और ४४, = प्रतिशत नागरिक अनुसर रहे । ‘सर्वोच्च’ की व्याख्यात्मक, व्यवस्थापक एवं कार्यपालिका का निरीक्षक समझने वाले नागरिक १६, ७ प्रतिशत उच्च बांति (वैयक्तिक होकर) में है अन्य किसी भी बांति के एक भी नागरिक ने ऐसा नहीं समझा । कुछ उत्तर देनेवाले नागरिक २६-७० वर्ष के मध्य के आयु वर्ग, छात्र, शॉर्ट स्कूल तथा स्नातक एवं स्नातकोपर छात्रक स्तरों और व्यापक एवं कृषि व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करते हैं । बहुत उत्तर देनेवाले नागरिकों ने विधेयक प्रदान नहीं कीमती होकर बांधी’ की तीनों का निरीक्षक निरूपित किया जो कि एक पद के प्रभावों का परिचायक है । बहुत उत्तर देनेवाले नागरिक ६० प्रतिशत मुख्यमान, ५० प्रतिशत उच्च, ४५ प्रतिशत पिछड़ी तथा ३० प्रतिशत अनुसूचित बांतियों में है जो सभी आयु वर्ग, छात्रक स्तरों तथा व्यवसाय वर्ग (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । अनुसर देनेवाले नागरिक ७० प्रतिशत अनुसूचित ५५ प्रतिशत पिछड़ी, ४० प्रतिशत मुख्यमान तथा ३३, ३ प्रतिशत उच्च बांतियों में है जो सभी आयु वर्ग (विधेयक ४६-७० वर्ष के मध्य) छात्रक स्तरों (विधेयक निरक्षर एवं छात्र) तथा व्यवसाय वर्ग (व्यापक होकर) का प्रतिनिधित्व करते हैं । राजनीतिक वर्गों में १६, २ प्रतिशत सदस्यों ने कुछ उत्तर दिया जो अब से अधिक है और राजनीतिक समावीकरण के परिणाम का परिचायक है । सर्वोच्च के महत्व को ६२, २ प्रतिशत नागरिक नहीं समझते यह उत्पन्न निराशाजनक तथ्य है ।

‘सर्वोच्च अधिकार किसे निहित है’ के प्रश्न उत्तरों में नागरिकों ने ४४, ३ प्रतिशत ‘कता’ ११, = प्रतिशत ‘सरकार’ का २, ६ प्रतिशत ‘सर्वोच्च’ में सर्वोच्च अधिकार का निवास बताया और १, ३ प्रतिशत नागरिक अनुसर रहे । ‘कता’ में सर्वोच्च अधिकार के निवास पर विश्वास प्रकट करनेवाले नागरिक ६१, ७ प्रतिशत

उच्च, १० प्रतिशत मुखजान २० प्रतिशत पिछड़ी तथा ६० प्रतिशत अनुसूचित जातियों में है जो सभी आयु वर्गों (२१-२५ वर्ष तक प्रतिशत) शैक्षिक स्तरों (हाईस्कूल तथा स्नातक एवं स्नातकोपर तक प्रतिशत) तथा व्यवसाय वर्गों (व्यापक एवं गौरी तक प्रतिशत) का प्रतिनिधित्व करते हैं।" सरकार ने सर्वोच्च शिक्षा का अनुभव करनेवाले नागरिक ३० प्रतिशत अनुसूचित १० प्रतिशत मुखजान, १० प्रतिशत पिछड़ी तथा २० प्रतिशत उच्च जातियों में है जो सभी आयु वर्गों (२१-२५ वर्ष शीकुर) शैक्षिक स्तरों (हाई स्कूल, स्नातक से नीचे स्नातक एवं स्नातकोपर शीकुर) तथा व्यवसाय वर्गों (व्यापक एवं व्यापक शीकुर) का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्पष्ट है कि पिछड़ेकर निरक्षर एवं साधारण शैक्षिक स्तरों के नागरिक सभी देश में लोकशासन छात्र प्रजापति के महान मूल्य से अलग नहीं हैं।" शीकुर में सर्वोच्च शिक्षा सम्बन्धी नागरिक १० प्रतिशत अनुसूचित तथा ५ प्रतिशत पिछड़ी जातियों में है जो स्नातक से नीचे के शैक्षिक योग्यता रखनेवाले व्यवस्थापक हैं। अनुसर रखनेवाले ५ प्रतिशत पिछड़ी जाति के नागरिक हैं जो ३६-४५ वर्ष के आयु वर्ग, निरक्षर शैक्षिक स्तर तथा श्रमिक के व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। राजनीतिक वर्गों के ६२, ३ प्रतिशत सर्वोच्च सर्वोच्च शिक्षा का निवास करता है स्वीकार करते हैं जो कि लोकशासन मूल्यों में जात्या का एक से भेद प्रमाण है और लोकतांत्रिक विधिविधिता का दावा है। अत्यन्त प्रसन्नता है कि लोकतांत्रिक विधान का दावा के ६४, ३ प्रतिशत नागरिक सभी में व्याप्त करता है सर्वोच्च शिक्षा (प्रत्युत) के निवास पर विश्वास करते हैं जो कि जनता का लक्ष्य है।

शिक्षा विधान का निवासियों में महान प्रभाव का ठीक ज्ञान व रहने के कारण बस्तीपूत वर्गों को सेवा विध ७ (१) में स्पष्ट किया गया है किसे ज्ञान होता है कि एड १६६० ई० के निवासियों में एक से अधिक ६, ४४ प्रतिशत नव बस्तीपूत हुए हैं।

सन्दर्भ-संकेत:- १६१

- १- श्री विष्णु बहादुर सिंह, जिराई, श्री बल्लुआठ, पूर कुर्ब (कुम्भी कुर्ब)
- २- श्री काम्नाथ कुम्भावा, वराहसीपा ।
- ३- १ मई, १९७७ के पूर्व, क्योंकि वह तिथि की विविधता वना पाटी की स्थापना हुई ।
- ४- श्री शैलमणि कुम्भ, शिववार, वल्लभ कल्याण जट्टिब ।
- ५- श्री वल्लभ नारायण सिंह (यादव) बरामपुर ; श्री मन्मथ यादव, कर्ना ;
श्री पुरुषोत्तमपति बिपाठी बिमलिया ; श्री लालमणि मिश्र, कुम्भा ;
श्री राम नारायण यादव - बाला , श्री हरमंद (अनुपमि नाति) सिद्धा ।
- ६- श्री महादेव प्रसाद मिश्र- कौला ; श्री कैरीराम यादव - मेरुती ; श्री पूरुषोत्तम पाण्डेय - अरौरा ; श्री वल्लभ प्रसाद यादव, बड़नी ;
- ७- श्री शिवपारी सिंह प्रबला , बीरामपुर
- ८- श्री चरमामन्मथ कुम्भावा , प्रवामाचक फेड डिता कम, वैवाबाद ।
- ९- श्री राम प्रसाद , केरवली, वल्लभ एवं श्री रामकिशोर, मुम्बिपुर ।
- १०- श्री हरमंद, बज्जला, बिमारी हरम कल्याण धी, सिद्धा ।
- ११- श्री राम बहादुर सिंह, मयापुर ।
- १२- श्री रामकिशोर गुप्ता, मुम्बिपुर ।
- १३- श्री राम प्रसाद, केरवली, वल्लभ ।
- १४- (क) श्रीमती कुम्भी देवी मौर्य - बिहाड़ी, वल्लभ कल्याण समिति धीला
(ख) श्रीमती मीली देवी बिपाठी, वैवाबाद, वल्लभ कल्याण समिति,
वैवाबाद ।
- १५- (क) श्री रामचन्द्र गुप्ता, धीला ।
(ख) श्री शैलमणि कुम्भ, शिववार, बज्जाम्म ६० रा० ०० ०० ०० कटर वल्लभ, धीला
- १६- भारत वार्षिक धीर्ब ग्रंथ , १९७६ , मुम्बा एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत
वल्गा, मुम्ब १९६ ।

- १७- श्री बाल्याय प्रसाद कुम्हार, बराकरीछा ।
- १८- श्री हर्षेष्ट सिंह, गिरौलीट ; श्री मु० बरौली बन्सारी, गीपाडीपुर
- १९- श्री राम कुम्हार, लखनपुर ।
- २०- श्री मु० लकी बन्सारी, बल लकी बलपुरम्बर ।
- २१- श्री मु० लखन बन्सारी, बीपुर (जामनग)
- २२- श्री लाल प्रताप सिंह, रणपुर ; श्री लालमणि मिश्र- कुम्हार ; श्री नानिक बन्स-
रवारानी-बराक ; कुमारी सुरेश्वरी बन्सारी- बीछा ; श्री बन्सुर रणव-
रवराणा बापि ।

उ प र

संसार के राजनीतिक इतिहास में 20वीं शताब्दी "छोटी शताब्दी" के रूप में स्मरण की जाती है। छोटीशताब्दी की उपनामिता एवं छोटीशताब्दी के प्रभाव से अन्य अन्य छोटीशताब्दी की परिधि में घिरे हुए हैं। छोटीशताब्दी की स्वतन्त्रता ने हम से अधिक वैश्व स्तर पर राजनीतिक घर्षों का है किन्तु कारण राजनीतिक छोटीशताब्दी के प्राणाधार के रूप में स्वीकार किये जाती है। भारतवर्ष ने अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के पश्चात् अपने को छोटीशताब्दी के मर्यादित सीमाओं में घिरे हुए परिणामों के साथ रहने से। स्वाधीनता के पूर्व एवं पश्चात् की राजनीतिक यह भारतीय राजनीति में अंतरित हुए तथा अपनी अपनी सुविधाओं से छोटीशताब्दी को हाथ, कंधा, कान, व्यावहारिक तथा पिरातु छिड़ किया उनके प्रति समान एवं नापी बीड़ी बंधे हुए हैं। राजनीतिक घर्षों के द्वारा नागरिकों का राजनीतिक व्यवहार किया प्रभावित होता है तथा स्वयं राजनीतिक यह अपने को छोटीशताब्दी, तपस्वरूप एवं दीर्घ बीड़ी बंधने के निमित्त को संभल तथा नैतिक करते हैं उसे प्रकाश करने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास सामान्य निष्कर्ष प्राप्त करने की दिशा में एक प्रयत्न है क्योंकि एक छोटीशताब्दी - विधान बना दी है अन्य राजनीतिक घर्षों को संभल तथा प्रभावित का अध्ययन किया गया है। निष्कर्ष राजनीतिक घर्षों के महाधिकारियों एवं नेताओं से साक्षात्कार और नागरिकों से साक्षात्कार पर अवलम्बित है।

छोटीशताब्दी विधान बना दी है जिसमें भारतीय कानून का प्रचार एवं प्रचार स्वाधीनता प्राप्ति के हेतु शास्त्रीय के माध्यम से हुआ जिसमें अनेक व्यक्तियों ने अपने हाथ, पाँख, रक्त, शक्तिमान, उत्कट वीर्य प्रेम आदि का अकल्पित उपाकरण किया है तथा प्रयत्न किया किन्तु इसकी वृद्धि पर्याप्त मर्यादा तक नहीं हुई किन्तु यह वन है कि दुष्टि बटकर बचा के उपनाम पर केन्द्रित ही नहीं रही बल्कि है उसे पराक्रम के दुर्दिन में बेलने लगे। भारतीय जनसंघ छोटीशताब्दी, सामान्य परिणाम, विधान मनुष्य प्रयासों, प्रयास समाकल्पायी यह,

समाजवादी पक्ष, संयुक्त समाजवादी पक्ष, रिपब्लिकन पार्टी, पुनर्निर्माण पक्ष, भारतीय प्रान्तीय, भारतीय लोक, संयुक्त कृषि, हिन्दू महासभा तथा कन्नडा पार्टी आदि की पक्ष विधान समाज के समाजवाद, प्रतिनिधित्व, शांति एवं सर्व प्रिय राजनीतिक प्रवृत्तियों के वैयक्तिक मामलों एवं व्यवस्था समाजवादी की प्रवृत्ति करनेवाले राजनीति के रूप में एक प्रभावशाली हुई। राजनीतिक एवं आर्थिक विद्वानों के प्रतिनिधित्व के क्षेत्र की एक राजनीतिक पार्टी का स्वरूप निम्न नहीं रहा है क्योंकि सीधी-सीधा, सीधी-सीधा एवं आर्थिक समाज के रूप में व्यवस्था बना दी है।

राजनीतिक पक्ष समाज विद्वानों के आधार पर संयुक्त मैत्रिय प्रदान करनेवाला नैतिकता मान्य समाज है जो एक समाज के माध्यम से शांतिपूर्ण की प्रति वांछता है। इसके अन्तर्गत कि संसद-विद्वान, संयुक्त, मैत्रिय, एक समाज एवं शांतिपूर्ण, राजनीतिक पक्ष के निर्माता हैं। राजनीतिक पक्ष अपने विद्वानों की किसी न किसी 'वाद' के विकास की प्रथा का प्रयोजन करते हैं। इसके अन्तर्गत भी एक राजनीतिक पक्ष ही समीप है। राजनीतिक पक्ष अपना संयुक्त अपने अन्तर्गत अन्तर्गत सीधे सीधियों के अनुसार करते हैं किन्तु प्रत्येक हकाईयों में जांचाईर सीधे ही स्थापित है जो कि अन्तर्गत के सैन्ट्रीकरण का परिचायक है। राजनीतिक पक्ष अपनी संसद-विद्वान हकाईयों के माध्यम से समाज का एक बड़े बड़े का अधिक विधान, मैत्रिय समाज का विकास, पक्षों में शांतिपूर्ण समाजिक सीधे विद्वान का सम्मेलन, राजनीतिक शांतिपूर्ण (Assimilation) तथा राजनीतिक समाजीकरण करते हैं। नागरिकों को प्रवृत्ति: समाज, व्यवस्था, पदाधिकारी, कार्यकर्ता, नेता एवं शांति की प्रवृत्तियों का स्वरूप निश्चित करने का प्रतिष्ठा राजनीतिक पक्ष के संयुक्त में निम्न है। विधान समाज में भारतीय राष्ट्रीय कृषि की एक कृषि कर्मियों, भारतीय जनता की एक कर्मियों तथा भारतीय लोक की सीधे कर्मियों का एक हुआ है। पक्ष के हकाईयों की हकाईयों का एक ही विधान समाज निम्न में प्राप्त पार्टी की हकाईयों का व्यवस्था व्यवस्था है। पदाधिकारियों का चुनाव या ^{चयन} चयन या मनोनयन अन्य हकाईयों के पदाधिकारियों या कार्यकर्ताओं या नेताओं के शांति की हकाईयों के अनुसार तथा उपस्थित 'हुटों' के अनुसार किया जाता है। पदाधिकारी

यह दृष्टि में अपने समय को समाने के सबसे अधिक सुवर्णाक्षर से विभेन समुक्त है ।
 प्रत्येक महाधिकारी की शक्ति एवं कार्य में स्पष्ट विभाजन नहीं है जिससे उत्तरदायित्व
 की सुस्पष्ट अवधारणा प्राप्त नहीं होती है । कोणाध्वरा का यह सीमावर्ती प्रतीत
 होता है क्योंकि किसी भी एक की हक में कोणाध्वरा के बाह्य एक का वैधानिक
 निर्धारण अब भी नहीं मिला । इन हकधारी में निर्वज्जशीलता, नतिशीलता,
 सुलभशीलता, पक्षीय निष्ठा, दुष्प्रवृत्ति, उन्मत्तशीलता एवं होमनिर्वाहता के बाह्य
 अर्थों का अभाव है । प्राचीन लोगों ने राजनीतिक पक्षों के सामुदायिक संरक्षणों की
 हकधारी का बर्णन नहीं किया है बल्कि नति नही है तो श्रिवाशीलता के निरीक्षण
 के लिए दुष्प्रवृत्ति की आवश्यकता पड़ती । अतः कतिपय कठिनाई, पक्षीय शक्ति
 तथा सीमावर्ती शक्ति विभेन रूप है जो पक्षों के बाह्य कार्य करती है । इन
 हकधारी का एक सुचारु प्रभाव एवं कार्यकारी दृष्टि न होने का प्रभाव कारण इनका
 उचित^{स्व} उपयोग होना है जो कि एक के संरक्षण में होमनिर्वाहता का
 रूप का शक्ति है ।

राजनीतिक पक्ष के सीमावर्ती शक्ति का अध्ययन करने से
 स्पष्ट हुआ कि राजनीतिक पक्ष संरक्षण शक्ति का विकास करते हैं । शक्ति परिस्थिति
 बाधित होता है और राजनीतिक प्रवृत्ति के " बर्णन " को विकसित करता है । सीमाना
 समय में राजनीतिक पक्ष के नेताओं के प्रति कक्षा में विभेन सुना पाव एवं अविश्वास
 उत्पन्न हुआ है जिसके प्रमुख कारण हैं - नेताओं के अज्ञानता चरित्र एवं व्यक्तित्व,
 राजनीति को व्यवहार करना, तथा , यह एवं कार्यकारी के लिए राजनीतिक करना
 तथा सुलभता बाधित । नेताओं की व्यक्तित्व प्रवृत्ति होमनिर्वाहता की अवस्था प्राधिकारवादी
 शक्ति किसी भी कि एक के अन्तर सुलभशीलता एवं विच्छेन का सुधार है । नेताओं
 द्वारा एक ही समय में दो विद्वान्त शक्ति^म युक्त रूप होता है जिससे एक में एकलपक्षीय
 दुष्प्रवृत्ति , उन्मत्तपक्षीय, स्वाभिमानी, अत्यधिक शक्ति , होमनिर्वाहता, दुष्प्रवृत्ति
 व्यक्तित्व एवं शक्ति की अतिशक्ति बाधित के संस्कार एक में प्रविष्ट नागरिकों का
 बाह्य अर्थों में नहीं हो पाता है । अपने एक को अतिशक्ति एवं प्रमुख संरक्षण करना
 (इस परिस्थिति में स्वयं को ही) राजनीतिक विद्वान्त नेता, राजनीतिक मूल्यों
 का विचार एवं प्रचार, राजनीतिक नीतिज्ञता का निर्धारण प्रतिपादन एवं अभिव्यक्ति

कल का प्रतीकीकरण, नीति निर्माण एवं विधानमन्त्र तथा राजनीतिक दलों का विकास राजनीतिक नेताओं के प्रमुख कार्य हैं। नेताओं ने स्वयं नेतृत्व के विकास के लिए पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव किया है।

राजनीतिक कल हासिल करने की प्रक्रिया के लिए कम संख्या में प्राप्त करने का निम्नलिखित अनुशासित तरीका में प्रभाव करते हैं जिसका कल उन्हें निशानों में अपने कल के प्रतिनिधियों की कम प्रतिनिधि निशानों होने पर मिलता है। निशानों में कल के प्रत्याक्षी का निशान विधान बना में अपनी नीति हस्ताक्षरों के संख्या के अनुसार या संख्यात्मक है न होकर उच्च हस्ताक्षरों के प्रशासिकारियों के द्वारा होता है जो कि आत्म निशान के विनियम हैं। कम प्रतिनिधि होने के लिए प्रत्याक्षियों के कल में छोटकरी बोलका को बहुत कम तथा वास्तविक संख्या, वास्तविक संख्या, ऊपर तक पहुँच, नीतियों की वास्तविक एवं नेता के प्रति बहुत अधिक-नाम वास्तविक का विशेष ध्यान देना जाता है। प्रत्याक्षी को किसी कलाने के लिए प्रत्यक्ष: वास्तविक, प्रतीक वास्तविक, वास्तविक नाम तथा विधानमन्त्र का सहारा दिया जाता है और निर्धारित व्यवस्था होती है अधिक कम संख्यात्मक या संख्यात्मक किसी कल द्वारा व्यवस्था करने का अनुमान है। संख्यात्मक प्राप्त करने के लिए सरकारी संस्थाओं को अधिकता भी दिया जाता है तथा सरकारी संस्थाओं को संख्यात्मक भी दिया जाता है। संख्यात्मक प्राप्त करने के लिए राजनीतिक दलों के द्वारा राजनीतिक का वास्तविकीकरण विधान संख्यात्मक एवं अनुमान दिया जाता है।

राजनीतिक समाधीकरण राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा व्यवस्था, अनुमान एवं राष्ट्र में राजनीतिक नेता को विकसित करने की प्रक्रिया है जिससे संस्थाओं या नापी राजनीतिक संस्था में उनकी प्रतिकार्य प्रतिकार्य एवं वास्तविक या वास्तविक को वास्तविक है। राजनीतिक समाधीकरण के तीन पक्ष- राजनीतिक वास्तविकीकरण, राजनीतिक नाम प्रमाण एवं राजनीतिक संस्था हैं। राजनीतिक नाम प्रमाण अपने लक्ष्य, लक्ष्य, लक्ष्य, लक्ष्य एवं लक्ष्य का राजनीतिक उद्देश्यों की प्रक्रिया में प्रमाण करना है अर्थात् राजनीतिक व्यवहार है। राजनीतिक कल नामों को राजनीतिक नाम प्रमाण के अनुसार, स्थान, परिवर्तन एवं कौशल प्रदान करते हैं। कल

कृत्रिम में हरिकन एवं मुसलमान , भारतीय कर्मचारी में उच्च वर्ग और भारतीय लोकसभा में निम्नवर्गों के नागरिक विशेष मान लेते हैं । नागरिकों की दृष्टि से विशेष राजनीतिक सक्रियता के उद्देश्य प्रकट: जातीय, प्रतिष्ठा के साथ जातीय पुनार, सामाजिक, प्रतिष्ठा एवं देश सेवा के अर्थ में देश सेवा के उद्देश्य से राजनीति में मान लेनेवाले व्यक्तियों को संज्ञा बहुत कम है । राजनीतिक मान प्रणाली का विनाश, विनाश, बाध, व्यवसाय, धर्म, शिक्षण, पारिवारिक जीवन राजनीतिक पक्ष की व्यवस्था एवं जातीय वसा विशेष रूप से प्रभावित करनेवाले कारक हैं । अत्यधिक वांछित के मादाता, का मादान में मान लेने में प्रयत्न और पिछड़ी जातियों के मादाताओं का द्वितीय स्थान है । मादाताओं की मादान के प्रति उदासीनता राजनीति में रणनीति के अभाव एवं शुद्धता में बुद्धि के अभाव के कारण होती है ।

राजनीतिक समाधीकरण का अर्थ है मादाताओं द्वितीय वसा राजनीतिक संज्ञान है । राजनीतिक संज्ञान का तात्पर्य राजनीतिक संस्थाओं, प्राथमिक-कारियों , व्यक्तियों एवं व्यवस्थाओं से संबंधित ज्ञान को नागरिक में अन्तर प्राप्ति है अर्थात् राजनीतिक संस्कृति है । विकास लक्ष्य स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक की प्रमुख राजनीतिक संस्थाओं, उनके प्राथमिकारियों तथा उनकी व्यक्तियों के विचार में ज्ञान की अन्तर प्राप्ति की व्यवस्था के लिए वातावरण तैयार करने के लिए ज्ञान पुनः कि विनाश करना है प्रत्यक्ष संज्ञा है किसी बाध अधिक हो गई है किसी विचार में विशेष प्रचार होती है तथा जो कम व्यवस्थाओं का स्तर स्तर पर समाधान होते हैं उनके विचार में सभी जातियों, व्यवस्थाओं, बाध वर्गों एवं शिक्षा स्तरों के नागरिकों की जानकारी है । राजनीतिक ज्ञान के लिए हम हैं अधिक विश्वास रीतियों पर किया जाता है (वातावरण में बहुत कम) । बाकी प्रविष्ट मुसलमान भारतीय ज्ञान प्राप्ति के माध्यमों पर विश्वास नहीं करते हैं । नागरिकों को हम हैं अधिक भारतीय राष्ट्रीय कृत्रिम एवं उनके नेताओं का ज्ञान है । नागरिकों को निर्यात प्रक्रिया की निष्पत्ति पर विश्व है । नागरिकों को अपने विचार तथा स्तर की प्रमुख व्यवस्थाओं के विचार वाक्यों का अभाव, बेकारी, बच्चों को कम एवं दुर्बला, पैस का संकट, व्यवस्थाओं का अभाव एवं उनकी बुद्धिमानों में अज्ञान के वातावरण के वाक्यों का अभाव, विज्ञान अर्थ का अभाव , मुख्य बुद्धि , नारी शिक्षण संस्थाओं

का अभाव, बाकिाव, प्रष्टाचार, झुठरा व्यवस्था का अभाव, खुर्दस्पर्की द्वारा उत्पीड़न तथा हरिकन आवासी का आधीछन व होना आदि का ज्ञान है। उन्व्यापि एवं मुक्तमान मान्दिरकी के राक्षनीतिक समाधीकरण का स्तर होना है किन्तु सभी बाकिावों के राक्षनीतिक कर्तों के व्यवस्था का राक्षनीतिक अज्ञान अधिक है जो यह किछ करता है कि राक्षनीतिक वह राक्षनीतिक समाधीकरण के अर्धीछन व्यवस्था एवं समाध अन्विरण है।

हु का व

(1) राक्षनीतिक वह का एक वन हासन में प्रवेश कर लोक प्रतिनिधित्व करता है और झुठरा वन संमेलन में कार्य करके वह प्रतिनिधित्व करता है। लोक प्रतिनिधि और वह प्रतिनिधि में अपने वरीत्य के लिए कनेक कर्तों में अलग होता है। लोक प्रतिनिधि वरा के कारण व्यवस्था करता है एवं वह प्रतिनिधि का अन्वयान करता है। लोक प्रतिनिधि की अनुवाकनशीलता वह के द्वारा कर्तुं प्रुंड की वरव मान को बातो है जो वह के विमेलन में वहाक है। राक्षनीतिक वह लोक प्रतिनिधियों के नामों की धीमणा करते है किन्तु स्वर्ध निवाधन नहीं कर कर्तों। झुठरी और कस्ता निवाधन करती है किन्तु अपने ही प्रतिनिधियों की प्रत्याभुत नहीं कर कर्तों हेही स्थिति में लोक प्रतिनिधि अपने वह तथा कर्ताताधी वनों के निर्वन्गण है आवासी निवाधन तक स्वव्यवस्था रहता है। अतः वह को अपने लोक प्रतिनिधि की प्रत्याभुत करने का अधिकार होना चाहिए और उसकी प्रक्रिया राज्य द्वारा मान्य हो।

(2) प्रत्येक राक्षनीतिक वह विभिन्न नीतियों के संवीधन प्रस्तावों को कर्ते प्रस्ताव के पारित करते हैं। ये प्रस्ताव बहुत आकणिक, पनीरक, प्रोत्साहन तथा बाकीनिक प्रतीय होकरे हैं। यदि वह वह विरोध की सरकार न की तो प्रस्ताव अन्व हो जाती है। सरकार करने पर भी अन्व एवं कर्तता का कनेक नहीं रहता। अतः सरकारो वह विरोध वरा है नैतिक सम्पत्ति

को वापस करें और उनकी प्राप्ति होने पर सम्मानित करें। विदेश परदा रक्षात्मक सम्पत्तियों के लिये यह के अस्तित्व है अधिक राष्ट्र के अस्तित्व को मजबूत है। संयुक्त राष्ट्र में विभिन्न सारों पर अन्तर्राष्ट्रीय विकास परामर्शदात्री संस्थाएँ हैं।

- (३) राज्य की समता का एक प्रमुख एवं निम्नोच्चतम बर्तन सरकारी सेवा में संलग्न है। निम्नोच्चतम में राज्य के माध्य का कम निम्नोच्चतम होता है तब सरकारी सेवा बर्तन को विज्ञान पर ताठे लटकी है। समतावादी व्यवस्था में इनको संस्था बूट रही है, १९६४ ^{अप्रै} १९७० ^{जून तक} १ करोड़ २५ लाख ८५ हजार थी। कम इन सरकारी कर्मचारियों को सामान का अधिकार प्राप्त है तब किन्हीं भी राजनीतिक दल की व्यवस्था प्रणाली का अधिकार भी निम्नोच्चतम बाह्य क्योंकि विभिन्न संस्थाओं के द्वारा राजनीतिक दल है सम्पन्न रहते हो हैं। राजकीय कर्मचारियों की व्यवस्था है राजनीतिक दलों की नीतियों में व्यावहारिकता अधिक होती है।

- (४) देश के प्रत्येक व्यक्ति नागरिक के लिए राजनीतिक दल की व्यवस्था अनिवार्य नहीं है परिणामस्वरूप राजनीतिक दल, चुनाव एवं ज्ञान उन्हें नहीं होता। चुनावों में मतदान करने का प्रतिशत सामान्य रूप से ५० से कम ही रहता है। राजनीतिक जीवाजीय व्यवस्था है। निम्नोच्चतम में सम्पत्ति बर्तन के लिए विद्या, देश सेवा तथा उच्चतम बर्तन की योग्यता अनिवार्य हो किन्हीं व्यवस्था के योग्य हुए हो लगे।

- (५) कोई भी राजनीतिक दल सरकार के समस्त आवश्यक की जातीयता के अतिरिक्त अपनी ओर से चुनाव ^{आम} व्यवस्था प्रस्तुत करने को वेष्टा नहीं करता। प्रत्येक दल का लोक प्रतिनिधि अपने दल द्वारा निर्मित आवश्यक बर्तन के पटल पर रहें हो सरकारी आवश्यक के लिए विद्या निर्देश प्राप्त हो और कुटिलों पर संलग्न हुए लगे। दल के नेताओं में शासन की प्रमुख समस्या है संवैधानिक शासन का विकास हो लगे व्यवस्था है प्रशासनिक कर्मचारियों की सेवाओं पर ही वापस करने के लिए बाध्य होती है।

(५) प्रत्येक राक्षसों के यह संस्कारों के अभाव में जाता है । विभिन्न
कार्यों के लिए संवदीय , निष्पक्ष , अनुशासन और कार्यक्षमता के अभाव में
परिणाम यह प्राप्त हो जाता है । इन अभावों, परिणामों एवं
अभावों में तथा संस्कारों के अभाव में ही हमें समझनी चाहिए कि हम
संघर्ष में जीतते हैं किन्तु हम उन्हें सरकार के विभिन्न विभागों
में भी वास्तव में लाता है हम अपनी कार्यक्षमता है हमारे
आत्मनिष्ठता अनुभव होती है । हमारी अनुशासन क्षमता को क्या है
हम जानते हैं । यदि राक्षसों के यह के अभाव विभिन्न विभागों के
संघर्ष में कार्यक्षमताओं का हानि करनेवाली विभिन्न क्षमता अनुशासनकारी
एवं संस्कारों के अभाव में ही नेताओं में सरकार संघर्ष में कार्यक्षमता
हमारे ही वास्तव ।

[illegible]

यह अनुभव कल्प तत्त्व है कि वैचारिक दृष्ट्यन्तरेण का प्रतिफल बहुत कम है । यह के एक ही विचार का माध्य एक समान नहीं होता । इसका प्रमुख कारण कार्यस्थितियों की वैचारिक दृष्टि का अभाव ही है ।
 व्यक्तिगत नैतिक अपने अनुमानों को बना में उपस्थित, राजनीतिक वास्तविक व्यवस्था-प्रवर्धन-व्यवस्था और इसी प्रकार की प्रक्रियाओं में व्यवस्था रखकर उन तक पहुँचाता है और उनको अपने विचारों से दृष्टान्त्य बोधन करता है । यह को स्वाधीनता का एक ही दृष्टान्त्य है- स्वयं बोधन प्रोत्साहन है । अब: प्रत्येक राजनीतिक पक्ष को अपने ही संवेदनशील व्यक्तियों का दृष्टान्त्य बोधन विविध दृष्टि का कार्य एवं वाक्यों से करना चाहिए तथा वैचारिक बोधन तथा व्यावहारिक बोधन में अन्तर नहीं पहुँचना । ऐसे दृष्टान्त्य बोधन व्यक्तियों पर कक्षा विश्वास कर नैतिक व्यवस्था राजनीतिकों का विश्वास को सुदृढीकरण के लिए रखा है यह एक न पायेगा ।
 अनुभव १७ प्रतिफल प्रविष्टि नागरिक यह समझते हैं कि राजनीतिक मुठके होते हैं ।

- (११) प्रत्येक राजनीतिक पक्ष का अपना अलग नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुख्य है जिसकी दृष्टिगत कर राजनीतिक व्यवहार व्यवस्था करता है और अन्यो का सुवर्णन करता है । जिसे विरोधी नेता को बना के प्रति, कोई एक नैतिक व्यक्त, कोई एक उदासीनता, कोई एक व्यक्तिगत विरोध, कोई एक ही दृष्टि, कोई एक तोड़फोड़ और कोई एक पार पीट का व्यवहार करना उचित समझता है किन्तु वास्तव में उचित क्या है इसका निर्धारण कौन करे ? अलग व्यावहारिक परिस्थिति के समाधान के लिए राजनीतिक पक्षों की एक आचार संहिता अनिवार्य है । एक आचार संहिता होने पर उसको पारान्वी एवं उपपारान्वी के उत्प्रेषण करने पर कक्ष का प्राप्तिमान हो । निर्वाचन आयोग के अधीनस्थ न्यायालयों द्वारा न्याय प्रदान किया जाय ।

सुझावों
 उपरोक्त उपायों पर निर्वाचन के मुक्त हो जाने पर राजनीतिक

यह राजनीतिक समायोजन के सम्बन्ध एवं समूह अभिकर्ता का सेवकत्व पद प्राप्त कर सकेंगे । राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक चेतना तथा राजनीतिक संस्कृति का स्थापित विकास होना और राष्ट्रीय चरित्र तैयार होना । जनता के पुनीत, विश्वकर्मात्मक प्रणयिता एवं मानवता प्रपुष्टि की बाबेनी तथा भारत राजनीतिक में प्रगति बन सकेंगे ।

सन्दर्भ - संकेत:-

- १- भारत १९७६, छठवाँ वर्ष, भारत सरकार, पृष्ठ १६१।
- २- एन० इमरजर, पोलिटिकल पार्टीज, १९६५, पृष्ठ २१-२२।
- ३- ~~भारत १९७५, छठवाँ वर्ष, भारत सरकार, पृष्ठ १६१-१६२।~~ राज्यसभा तथा
- ४- एन० एन० डिमिट, पोलिटिकल पैन, १९७५, पृष्ठ १७६।
- ५- ई० बाकीर, रिक्केकट्टु वान गवर्नमेंट १९५८, पृष्ठ २७५।
- ६- दैनिक समाचार पत्र वर्ग ५ वॉल १२२) १६ मार्च, १९७६, पृष्ठ ४।

* विधानपरिषदों के सदस्यों की संख्या डा० दुर्गीदास बसु की पुस्तक 'Introduction to the Constitution of India' के १९६८ संस्करण से ली गयी है। लोकसभा तथा विधानसभा के सदस्यों की उसमें नवीनतम संख्या नहीं मिली और न 'भारत-१९६६' अथवा 'भारत-१९६८' ही कहीं उपलब्ध हो सके। अतः वे संख्यायें श्री पुरवराज जैन की पुस्तक 'भारतीय संविधान और नागरिकता' के अंतिम संस्करण से ली गयी हैं।

परिचिन्त 'क'

(संछन की हकाईयाँ के पदाधिकारियों के बाबतकार में प्रमुख प्रश्नावली)

विकास सचिव : न्याय पंचायत : ग्राम : राजनीतिक दल का नाम :
 पद : नाम : बापि : आहु : वैधानिक योग्यता : मुख्य व्यवसाय :
 नौजा व्यवसाय : कुशल रोजगार : केलन स्तर : पिता की संतान संख्या :
 निजी सम्पत्तियों की संख्या : पितुरा विधवा वध्वनि : राजनीतिक आहु :
 पदावधि ।

- १- आप अपने दल का चुनाव किस और कण्डा कराहने ।
- २- दल के संछन की कौन कौन हकाईयाँ नीचे से ऊपर तक है ।
- ३- विकास सचिव स्तर के सभी पदाधिकारियों का विवरण दीजिए ।
- ४- सबर्गों की कौन कौन श्रेणियाँ हैं ।
- ५- आपके दल के सबर्गों की आपके विकास क्षेत्र में वर्तमान समय में किसी संख्या है ।
- ६- विकास सचिव स्तर पर क्या दल का स्थायी कार्यालय है ? यदि हाँ तो कितने कण्टे जुड़ा रहता है और स्थायी रूप से कौन उसका कार्य देखता है ।
- ७- दल के पास विकास क्षेत्र स्तर पर बाधा के कौन कौन और कितने वाहन हैं ?
- ८- दल के पदाधिकारियों का चुनाव विकास सचिव स्तर पर कैसे होता है ?
- ९- क्या किसी पद को प्राप्त करने के लिए संघर्ष हुआ ? यदि हाँ तो किस पद के लिये ?
- १०- पदाधिकारियों की बैठकें कब कब और कहाँ होती हैं ?

- ११- हुक्मायें केडक के हॉक में पदाधिकारियों के पास कैसे पहुँचती हैं ?
- १२- क्या सभी पदाधिकारी निश्चित समय पर केडक में पहुँच जाते हैं ? विलम्ब से कौन जाता है ?
- १३- केडकों का विवरण क्या जिओ पीपिका (रजिस्टर) में लिखा जाता है ? पीपिका कहाँ रखी है ?
- १४- पिछले वर्ष कुल कितनी केडकें हुईं ?
- १५- केडक की कानूनरक संख्या (कोरम) क्या है ?
- १६- केडकों में यदि बध्यता अनुमति न दे तो भी क्या सबकों की मोड़ने की स्वतंत्रता है ?
- १७- आपके कल में कौन कौन रहे नेता है, कितने आपसी हॉक बंधे नहीं है
- १८- कल के संकलन में कार्य करनेवाला सब हासन के पद को प्राप्त कर लेता है तो उसमें क्या क्या परिवर्तन हो जाते हैं ?
- १९- कल के जिओ सबकम को कल की सबकला से संबंध करने का क्या नियम है ?
- २०- अब तक कितने सबकों पर ऐसी कार्यवाही हुई है ?
- २१- कितने सबकों ने स्थान पत्र दिया है और क्यों ?
- २२- कल के कार्यवाहियों की किस प्रकार अधिक योग्य बताते हैं ?
- २३- आपके कल के कुल पत्र कौन कौन है ? उनको कितनी प्रतियाँ इस विकास कण्ड में आती हैं ?
- २४- कल का सबकम करने की क्या निश्चित अवधि होती है ?
- २५- क्या सबकला अभिमान में कोई प्रकार का रना करते हैं ?
- २६- क्या आपके कार्यलय में बाहर कौन सबकम करते हैं ?
- २७- पहले कल के सबकों, कार्यवाहियों और नेताओं को अपनी ओर किन विधियों से आकर्षित करते हैं ?

- २८- आप इस दल के संकल्प प्रथम बार किस दल में कौन और किसने लाया ?
- २९- क्या तब से अब तक के समय किसी और दल के संकल्प कौन ?
- ३०- आप राक्षसीति में 24 कटे में जिसका संकल्प जोड़ा है कौन है ?
- ३१- किसने आपकी प्रथम बार संकल्प लाया उसकी किस बात है आप अधिक प्रभावित हो गये ?
- ३२- आपने राक्षसीति दल की संकल्पना क्यों प्रस्ताव की ?
- ३३- दल के नेता अपने का कार्यवाहियों की क्या क्या व्यापकता बढ़ाकार्य करते हैं ?
- ३४- कार्यवाहिक दल के कौन कौन से कार्य आपके द्वारा हुए हैं ?
- ३५- आपका दल विधान सभा निर्वाचन के लिए प्रस्तावों का निष्पत्ति कैसे करता है ?
- ३६- संकल्प की दल है कौटी दल है क्या किसी चुनाव में पराजित किया गया ?
- ३७- यदि कोई ऐसा प्रस्तावों का वाता है कि दल दल की संकल्प नहीं रखती तब प्रभावकारी क्या करते हैं ?
- ३८- विधान सभा के किसी किसी दल में आपके दल का अनुमानित: जिसका मत क्या हुआ होगा ?
- ३९- दल किराजि कि कि बाधनों से और किसी प्राप्त हुई होगी ?
- ४०- ~~किसी दल के विधान सभा निर्वाचन में आपके दल का अनुमानित: जिसका मत क्या हुआ होगा ?~~
- ४१- यदि आपका विरोधी प्रस्तावों किसी की स्थिति में का बाध तो उसके बाध क्या करेंगे ?
- ४२- आपके दल को कि दल से अधिक मत हैं ?
- ४३- ऐसा अनुमान आप क्यों करते हैं ?
- ४४- आप प्रस्तावों को क्यों और जाने के लिए कि कि चीजों का उद्धार लेते हैं ?
- (क) विधान (ख) वाणिज्य (ग) आस्था (घ) प्रलोभ (ङ) का (च) वास्तव (द) दल (ध) आपकी प्रस्ताव का उद्धार (न) अन्य दलों की वास्तव (ज) नेताओं द्वारा उद्धार (ट) अन्य ।
- ४५- प्रस्ताव दल से अधिक कि उद्धार से प्रभावित होता है ।
- ४६- आपके दल के विधान : विधान प्रस्तावों ने कार्यवाहियों के कौन कौन से कार्य किये हैं ?
- ४७- क्या आप प्रत्येक राक्षसीति दल के कार्यवाहियों एवं नेताओं से संबंध रखते हैं ?
- ऐसा क्यों करते हैं ?

- ४६- कि वह से आपको क्या नहीं लगता है ? देखा क्यों ?
- ४७- आपके वह का कि कि क्यों में और कि नाम से संलग्न है ? कुंआर मन्दुर :
विवाही : अन्धकार : कलित : अन्धकारी : अन्ध
- ४८- क्या आप वह बात से संलग्न हैं कि राजनीतिक बलों के कारण अन्धकार करके
होनेवालों की संख्या बढ़ती जा रही है ?
- ४९- यदि राजनीतिक नेताओं के साथ न हो तो क्या अन्धकार कम होमें ?
- ५०- राजनीतिक वह के नेता सरकारी कर्मचारियों को क्या आकर्षित करके काम
करा लेते हैं ?
- ५१- आप कि उद्देश्य से का संघर्ष करने जाते हैं ?
- ५२- क्या वह हैं संलग्न का कार्य करने अपने नेतृत्व का विकास कर सकते हैं ?
- ५३- राष्ट्र में एकता कैसे लायी जा सकती है ?
- ५४- भारत का उत्थान कि विचारधारा से संभव है ?
- ५५- कलता को हथकाओं का ज्ञान कैसे करते हैं ?
- ५६- आपका वह कौन कौन से उत्थान मानता है ?
- ५७- अपने वह की नीतियों की जानकारी कि माध्यम से करते हैं (क) रेडियो
(ख) समाचार (ग)
- ५८- आपको एक ही पुत्र ही, उसे राजनीति में जाने के लिए क्या करेंगे ?
(क) उत्साहित (ख) उत्साहित (ग) पुत्र नहीं ।
- ५९- पिछले विधान बना चुनाव में आपके वह की वो लोग सहायता मिले हैं क्या
उसकी दृष्टि है ?
- ६०- चुनाव अभियान के समय आपके वह द्वारा कौन कौन से सार्वजनिक कार्य मिले गये ?
- ६१- आपके वह के मिलने सकल, वह के प्रस्तावों को विधान बना निर्वाचन में क्या नहीं मिले
- ६२- यदि निर्वाचन से अधिक उत्तरदायित्व का पद दिया जाये तो कौन सा पद आप
प्राप्त करेंगे ।
- ६३- आप अपने वह के बाहर के कि तीन व्यक्तियों की बात नहीं टाक सकते हैं ।
- ६४- क्या आपका विश्वास है कि कलता के सभी कार्य वैधानिक और लोकतांत्रिक ढंग
से हो सकते हैं ।
- ६५- आपके वह ने वो आपका प्रस्ताव किता है उससे क्या आप संतुष्ट हैं ?

- ६३- यदि आपकी यह राजनीतिक कार्य होना चाहें तो आपकी टीम ही जानि होगी ?
- ६४- आपकी दृष्टि है कि यह के कार्यकर्ताओं को संतोष एवं प्रोत्साहन प्राप्त नहीं होते हैं ?
- ६५- मतदान में किसी उपास को उपयोगी टीम मानते हैं ?
- ६६- आपके दौरे में राजनीतिक संरक्षण टीम टीम हैं वो चुनावों में मतदाताओं की प्रभावित करते हैं ?
- ६७- राजनीति में आपके टीम समिष्ट मिल टीम टीम हैं ?
- ६८- आपके यह के कार्यकर्ता और समीक्षक यह के प्रभावों न होने पर क्या कुछ भी करने की प्रवृत्ति हैं ?
- ६९- आपकी अपने यह की टीम ही बात अधिक प्रभाव है ?
- ७०- अपने यह की टीम ही बात प्रभावित प्रभाव नहीं है ?
- ७१- अन्य किसी यह की कोई बात क्या प्रभाव है ?
- ७२- कुछ टीम करते हैं कि राजनीति पन्ना मेल हैं बाप क्या अनुभव करते हैं ?
- ७३- यह की उपासकों मानने के लिए क्या नीतिक और अवैध कार्य करने हो पड़ते हैं ?
- ७४- विधान सभा की निर्वाचन प्रणाली में टीम टीम की कमियां हैं ?
- ७५- यदि मतदाताओं की परीक्षा के का अधिकार मिल बाप और निर्वाचन समुदाय है तो तो क्या निर्वाचन के समुदाय में दौरे समाप्त हो जायेंगे ?
- ७६- आपके यह के सभी प्रभावकारियों का क्या निर्वाचन या समन होता है और कि प्रभाव आधार पर होता है ?
- ७७- एक ही पद पर एक व्यक्ति का समुदाय वहाँ तक प्रभावशील रहना क्या संभव के लिए है ?
- ७८- किसे की उपासकों के प्रभावकारी कम जाते हैं (क) निर्वाचन (ख) कमी कमी (ग) वहाँ में एक बार (घ) केवल चुनाव के समय (ङ) किसी संकट के समय (च) कमी नहीं ।
- ७९- प्रवेश या वेतन उपास के प्रभावकारियों का मिलते ही वहाँ में किसी बार वाक्य हुआ ?
- ८०- यह का सक्रिय कार्यकर्ता कमी कमी उपास क्यों हो जाता है ? उपासका पीछे
- ८१- यह का नेता या कार्यकर्ता यह का परिवर्तन क्यों कर देता है ?

- ८०- आपके बस के निम्ने कार्यकारिणी ने पिछले दो बर्षों में बस परिवर्तन किया है ।
- ८१- आप अपना वायर्स कैसा किसे मानते हैं ?
- ८२- यदि आपका वायर्स कैसा बस है रवाना पत्र दे दे तो उसके बाब के लिए क्या आप की बस छोड़ देने ?
- ८३- आपके बस के ड्राइव बना रहन । प्रत्येक का क्या विधान बना सोम में बाकल होता है
- ८४- यदि संसदन के पदाधिकारियों का पद केतिक को बाब तो कैसा रहेगा
(क) बस का संसदन बसल होना (ख) पद के लिए बहुत से लोग हथक हो बावने (ग) पदाधिकारी अपनी व्यक्तिगत किताबों से मुक्त हो बावना (घ) संसदन और बाकल बारबर होने ।
क्या आप इसके बसल है ? यदि हाँ तो पद कैसे प्राप्त होना ?
- ८५- बस के कार्यकारिणी के व्यक्तिगत परित्र पर किना ध्यान देना चाहिए
(क) अधिक (ख) कम (ग) विस्तृत नहीं
- ८६- आपके बस के कार्यकारिणी अपने बस के विद्वान्तों और नीतियों को अपने व्यावहारिक बोधन में किसे अंत तक अपनावे हुए हैं ?
(क) बहुत कम (ख) कम (ग) बाधा (घ) अधिक (ङ) पूर्णतया (च) विस्तृत नहीं
- ८७- आपकी दृष्टि में कि राकनीतिक बस का अधिक बसल किताबें बस रहा है और क्यों
- ८८- आपका बस अपने वायर्सक कार्यों के संवादन के लिए पत्र कैसे हथकठा करता है
(क) हथकठा मुक्त (ख) व्यापारियों को दृष्टिधा प्रदान कर - जैसे कोटा, पराधित, लाउरेन्स (ग) बाध ।
- ८९- बस सब पत्र को कहां कहां व्यव करते हैं ? पुनाब में किन किन स्मों में व्यव करते हैं ?
- ९०- बस के व्यावहारिक मामलों को कार्यकारिणी या कैसा किन किन रूपों में प्रकट करते हैं ?
(क) बाध विवाद (ख) उच्च पदाधिकारियों से किन्ना (ग) कलता में प्रचार (घ) विरोधी बसों को बाकल (ङ) बारबीट (च) नाली कलिय (झ) अन्य ।

६६- यह केन्द्रीय-मति किन किन आधारों पर होती है ?

- (क) समय का मान (ख) वर्गीय प्रतिनिधित्व (ग) राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व
(घ) यह के प्रति निष्ठा (ङ) वैचारिक सीमा (च) साम्य सीमा
(झ) कार्य के अनुभव (ज) नेताओं के प्रति शक्ति (झ) अन्य ।

६७- प्रत्येक राजनीतिक यह के नेता आपस में मिलते रहें तो क्या रहेगा ?

समाचार पत्राधिकारी

दिनांक

राक्षसीतिष्ठ यत्न का नाम : नाम : वाति : यद : बाहु :
 राक्षसीतिष्ठ बाहु : शैलिक योग्या : कुल्य प्यवसाय : गौण प्यवसाय :
 पुराण । स्त्री : यम : माणायाँ का नाम संकुल। विष्णु परिवार :
 परिवार वक्त्र्य संस्था १ परिवार में स्थाय : राक्षसीति में प्रकुल वक्त्र्य :
 यदाँ का कुल्य :

- १- किन परिस्थितियों में आपको राजीनाम देना पड़ा ?
- २- संसदन में अनुशासन कानून रक्तने के लिए आप क्या क्या उपाय करते हैं ?
- ३- वक्त को अधिकसादी कानून के लिए क्या क्या करते हैं ?
- ४- सन् 1974 ई० के विधान सभा चुनाव में बीता बार किन स्थितियों में हुए ?
- ५- सभी मामलों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान कैसे कराया जाना चाहिए ।
- ६- नेता में किन किन विशेषताओं का होना आवश्यक है ।
- ७- वक्त परिवर्तन पर आपका क्या विचार है ?
- ८- सभी वक्तों के नेता आपका ये पित्तो कुछते रहे तो देश पर क्या प्रभाव पड़ेगा
- ९- भारत की सर्वाधिकार प्रणति, वर्तमान परिस्थितियों में कैसे हो सकती है ?
- १०- चुनावों में जन के प्रभाव को कैसे रोका जाय ।
- ११- यदि कानूनशास्त्री को बरीकता का देने का अधिकार मिल जाये तो विधान सभा निर्वाचन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
- १२- राजनीतिक वक्तों में कुछ सभी कानून ऐसा हो जाती है ?

- १३- बाप राखनीति करना कब्य कर दें तो आपकी क्या क्या शानियाँ होंगे ?
- १४- राखनीति करनेवालों के प्रति कस्ता बाकस्त केडा पाव रलली है ?
- १५- राखनीतियों के लिए बाह्यक्रम और प्रशिक्षण हो तो केडा रहेना ?
- १६- कठ के कम्बर किन्त किन्त बनों में शान्यक्रम केडे क्काले है ?
- १७- कार्यश्रमियों का व्यवस्थित शिक्षा किन्त किन्त रण्यों में करते है ?
- १८- कठ की नीतियों का निवारण किन्तने होन करते है ?
- १९- कामावालों को अपने प्रतिनिधियों को बापक जुताने का अधिकार किन्त बाव तो केडा रहेना ?
- २०- कार्यश्रमियों को विविध पदों पर नियुक्त करने में किन्त किन्त बातों पर ध्यान केडे है
- २१- कठ के प्रत्याखे का अन्तिम निर्णय निवारण होन में कठ के कम्बरों के द्वारा ही निवारण हो तो केडा रहेना ?

कतापार

विनांक

परिशिष्ट ' न '

(नान्दरों से साधारणकार में प्रमुख प्रत्यापत्ति)

विधान सभा दौलत : विकास लम्ब : न्याय रचनाकार : प्राय :

नाम : वाति : जातु : शिवा :

मुख्य व्यवसाय : गौण व्यवसाय : कुंठि का रोजगार ?

केतन स्तर ? परिवार सकल संस्था : परिवार में न्यायाता संस्था

व्यवसायिक न्यायाता संस्था : माणा : वर्ष : नगर से संबंधित

सकल संस्था : व्यवसायिक क्षेत्र :

- १- विकास लम्ब का सब से बड़ा अधिकारी कौन होता है ।
- २- आपके विकास लम्ब के प्रमुख (स्टाफ प्रमुख) का क्या नाम है
- ३- विकास लम्ब समिति का क्या कार्य है ?
- ४- सखीलवार का क्या प्रमुख कार्य है ?
- ५- धानाध्वरा (धानेदार) का क्या कार्य है ?
- ६- कितने का सब से बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- ७- कितना परिणाम का क्या काम है ?
- ८- कितने न्यायालयों का सब से बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- ९- पुलिस विमान का कितने में सब से बड़ा अधिकारी कौन होता है ?
- १०- स्टाफवाय कितने में विधानकों की कुल संस्था कितनी है ?
- ११- संस्था विधान सभा दौलत का वर्तमान विधानक कौन है ?
- १२- इस दौलत का वर्तमान संस्था सकल कौन है ?
- १३- आप किस प्रवेस के निवासी हैं ?
- १४- आपके प्रवेस का वर्तमान मुख्य न्याय कौन है ?
- १५- आपके प्रवेस की राजधानी कहां है ?
- १६- उपर प्रवेस विधान लम्ब के दोनो सदस्यों के नाम बताइये ?

- १७- उपर प्रवेश का उच्च स्वायत्त कहां पर स्थित है ?
- १८- उपर प्रवेश के उच्च स्वायत्त के वर्तमान प्रधान स्वायत्त का नाम बताइये ?
- १९- उच्च स्वायत्त के स्वायत्तों पर आप किना विश्वास करते हैं ?
- २०- उच्च मंत्री को क्या है और क्या होता करता है ?
- २१- उपर प्रवेश का वर्तमान राष्ट्रपति कौन है ?
- २२- भारत का वर्तमान राष्ट्रपति कौन है ?
- २३- भारत को राजधानी कहाँ है ?
- २४- भारत का वर्तमान प्रधान मंत्री कौन है ?
- २५- भारत का सर्वोच्च स्वायत्त कहां पर है ?
- २६- सर्वोच्च स्वायत्त के प्रधान स्वायत्त का नाम बताइये ?
- २७- भारत के राष्ट्रपति का क्या है क्या अधिकार क्या है ?
- २८- भारत के राष्ट्रपति को क्या है क्या होता या करता है ?
- २९- भारतीय संघ के दोनो कानों के नाम बताइये ।
- ३०- भारत के प्रधान मंत्री कि संघ का नेता होता है ?
- ३१- सर्वोच्च स्वायत्त, संघ और राष्ट्रपति के तीनों किसे नियंत्रित रखते हैं ?
- ३२- भारत के प्रमुख राजनीतिक दल कौन कौन हैं ?
- ३३- संविधान विधान बना दोनो हैं कि दल का प्रस्तावी पिछले विधान बना चुनाव में किसी हुआ ?
- ३४- पिछले विधान बना चुनाव में द्वितीय स्थान कि दल के प्रस्तावी का रहा ?
- ३५- तीसरे स्थान पर कि दल का प्रस्तावी रहा है ?
- ३६- प्रत्येक राजनीतिक दल के एक एक प्रधान जोकि नेता का नाम बताइये ।
- ३७- प्रत्येक राजनीतिक दल कौन का प्रमुख कार्य करते हैं ?
- ३८- इन राजनीतिक दलों के और क्या क्या आशयें करने चाहिए ?
- ३९- आप कि दल है प्रभावित है और क्यों ?
- ४०- आप कि दल को क्या है पुरा समझते हैं और क्यों ?
- ४१- विधान बना को वर्तमान नियमित प्रणाली में कौन का परिवर्तन चाहते हैं ?
- ४२- विधान बना का लोक बना के चुनाव आपकी जानकारी में क्या नियम होते हैं ?

- ४३- आपने अब तक विधान बना के कितने निर्वाचनों में अपना बहुमुख्य भाग दिया है
- ४४- मतदान में आप किसकी सलाह को सब से अधिक महत्व देते हैं
- (क) परिवार (ख) ग्राम प्रधान (ग) लॉट रिज (घ) रिस्तेदार
- (ङ) बासीर नेता (च) नाकरी प्रधान (ज) अन्य (झ) किसी की नहीं
- ४५- मतदान के पक्षे कितने की टीम का मार्गो कावे क्या उन्हें आस्थापन देना चाहिए ?
- ४६- का मार्गोवाले की किस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए ?
- (क) गरिब (ख) ईमानदारी (ग) व्यवहार (घ) आर्थिक दशा
- (ङ) बाति (च) सेवा में (ज) पक्ष (झ) विद्वान्त (ञ) विद्या
- (ट) प्रचार (ड) बीतने की आशा (ड) धर्म (ड) निर्वाचन क्षेत्र का निवासी ।
- ४७- वर्तमान समय में सब से कम ईमानदार कौन है ?
- (क) कुशाक (ख) पुरखुर (ग) बकीत (घ) ईश्वर (ङ) राजनीतिक नेता
- (च) कावलि का बाहु (ज) व्यावसायिक (झ) पुलिस (ञ) मंत्री
- ४८- आप किस राजनीतिक दल के सदस्य हैं ? और क्यों ?
- ४९- आपका कोई रिस्तेदार या भिन्न किस दल का सदस्य या नेता है ?
- ५०- आपने किसी प्रदर्शन, जुलूस, सत्याग्रह, धरान आदि राजनीतिक आन्दोलन में कभी भाग लिया है ?
- ५१- आपने कितने राजनीतिक दलों के नेताओं के माध्याम होने हैं ?
- ५२- किस नेता की बात आपको प्रिय लगे ।
- ५३- कौन सी बात बुर रही है ?
- ५४- राजनीति जानकारी के लिए आप क्या पढ़ते हैं ?
- ५५- क्या आपके परिवार में रेडियो या ट्रांसिस्टर है ?
- ५६- परिवार के कितने सदस्य समाचार पढ़ते हैं या समाचार पढ़ते हैं ?
- ५७- किस समय समाचार पत्र पढ़ने या समाचार सुनने को प्रत्यक्ष हल्का उत्पन्न होता है
- ५८- क्या वर्तमान सरकार है बीकन, का और प्रतिष्ठा की सुरक्षा सुनिश्च करते हैं ?
- ५९- सेवा सुनिश्च क्यों हुआ ?
- ६०- किन्तु समाज की कर्तव्यकथा की क्या समाप्त कर देना चाहिए ?

- ६१- बाजारों में बौ भी सामान मिलते हैं क्या उनका मूल्य स्थिर । क्यों। क्यों रचना चाहिए ?
- ६२- अपना विचार कर लेने के लिए तुम्हारा और तुम्हारे दोस्तों को क्या स्वतन्त्र कर देना चाहिए ?
- ६३- क्या व्यक्तिगत सम्पत्ति हम के पास होनी चाहिए ?
- ६४- समाज या राज्य का विकास हेतु यदि एक वर्ष पहले से संघर्ष करता रहे तो सबसे क्या होगा ?
- ६५- इस समय भारत में कौन कौन सम्पत्तियाँ चल रहे हैं ?
- ६६- चुनाव बीच जाने के बाद क्या किसी को अपना मत बदलना चाहिए ?
- ६७- बौ चुनाव हुआ व्यक्ति यदि मत बदलें तो क्या उसका मत समाप्त कर दिया जाय ?
- ६८- चुनावों के कारण कलहा में क्या बढ़ा है (क) संघर्ष (ख) संघर्ष
- ६९- सर्वोच्च शक्ति किसे मिली है (क) सरकार (ख) संविधान (ग) कलहा
- ७०- चुनाव और राजनीतिक दलना के लिए आप किस पर अधिक विश्वास करते हैं (क) समाचार पत्र (ख) रेडियो (ग) राजनीतिक दल (घ) पत्रिका
- ७१- कौन या राजनीतिक दल दल में जाने का क्या रहे तो आपकी स्थिति बहुत अच्छी रहेगी ।
- ७२- आप अपना मत निर्धारित कैसे करते हैं (क) चुनाव के पूर्व (ख) चुनाव के मध्य (ग) चुनाव के अन्त (घ) ठीक मत डालने के पहले
- ७३- क्या आपके पास चुनाव अभियान में कोई दल बन भी चाहते जाय ? यदि दिया तो किना ?
- ७४- क्या इस दल दलना या बीजक बीज में आपने मान लिया है ?
- ७५- सरकार के लिए कानून से आपका कौन सा काम हुआ है ?
- ७६- किस कानून से कौन सी कानून हुई है
- ७७- क्या से आप कानूनना दल है क्या से आप तक विधान बना और संसदीय चुनावों में किने कौनों को मत दिया है
- ७८- पिछले विधान बना चुनाव में किस किस दल के कार्यकर्ता आपके नहीं मिले ?
- ७९- किस दल का प्रस्ताव आपने सरकार पर जाया ?
- ८०- राजनीतिक दलों के अलावा क्या अन्य कोई व्यक्ति आपके चुनाव के संबंध में मिला

- ८१- कौन से अन्य संरक्षणों से आपका सम्बन्ध है ?
- ८२- क्या अन्य संरक्षण जो चुनावों में अपना विचार व्यक्त करने से बाधता है ?
- ८३- यदि राक्षसीय नेता और व्यक्ति महापुरुष दोनों एक ही समय आपके दरवाजे पर आये तो पहले किसी पिछे ?
- ८४- आप राक्षसीय नेताओं की बातों पर किसी विश्वास करते हैं ?
- (क) बहुत कम (ख) कम (ग) बाधा (घ) अधिक (ङ) विश्वस्त नहीं ।
- ८५- क्या वर्तमान युग में चुनाव, पाठ, कला और धर्म करना जरूरी है ?
- ८६- व्यक्ति को कमाने को छोड़ में उचित और अनुचित का विचार ध्यान रख रहा है -
- (क) बहुत कम (ख) कम (ग) बाधा (घ) बाधे से अधिक (ङ) पूरा पूरा (घ) विश्वस्त नहीं ।
- ८७- स्वतंत्रता के परभाव भारतीय नेतृत्व में क्या परिवर्तन हुआ है -
- (क) कृता (ख) कटा (ग) समान
- ८८- अपना मत, धर्म और व्यवसाय सब सरकार के हाथों में क्यों देना देना ?
- (क) बहुत अच्छा (ख) अच्छा (ग) कम अच्छा (घ) सराव (ङ) बहुत सराव
- ८९- किसी छिद्र परना सब से अच्छा होना ?
- (क) अच्छी (ख) बाध (ग) कम (ङ) कम (ङ) प्रतिष्ठा (घ) वेत
- ९०- पिछे विधान बना चुनाव में आपके मतदान से कौन कौन बहुत सम्बन्ध हुआ
- ९१- कुछ राक्षसीय मतों के विचार में टीकाये हैं क्या आप इसे सम्बन्ध है ?
- (क) सदा कठिनाई हरिकर्तों एवं प्रवक्तानों पर विशेष ध्यान देती है
- (ख) कर्तव्य में व्यापारी और उद्योग के लोग अधिक है ।
- (ग) संरक्षण कठिनाई में अब छूटे लोग बने हैं ।
- (घ) भारतीय लोक कठ में छोटी बातियों के लोगों का ही मोलबाला है ।
- (ङ) हिन्दू व्यवस्था और साम्राज्य परिणाम की अब कोई आवश्यकता नहीं है ।
- (घ) प्रवक्तानों व्यक्ति प्रवक्तानों को विशेष कर्तव्य विधाना बाधती है
- ९२- चुनाव के समय मतदाताओं की बातों पर अधिक ध्यान दिया जाता है और भाव में नेताओं की क्या यह सब है ?
- ९३- मतदाता अपने वास्तविक विचारों को व्यक्त नहीं करता कि मातृम कौन अपनी बात कमाने के लिए भेरे पाठ अन्तिम पाण्डु तक वा आधमा क्या यह सब सत्य है ?

- ६४- कौ मावाता मा देने नहों बाते है उसका प्रमुख कारण क्या है ?
 (क) राजनीति में सवि नहीं (ख) समय का अभाव (ग) जाने में काम का दुष्काम (घ) उस दिन के मौसम की व्यवस्था नहीं (ङ) विचारों पर विश्वास नहीं (च) कोई वास्तव नहीं करता (झ) कौन मावात को बातेने (न) अन्य ।
- ६५- कौ राजनीति में बहुत सक्रिय रहता है उसका क्या उद्देश्य है ?
 (क) मन कमाना (ख) स्वार्थ हासिल (ग) बातीय सम्मान (घ) सामाजिक प्रतिष्ठा (ङ) प्रतिष्ठा के साथ बाधिक दुवार (च) देश सेवा (झ) अन्य
- ६६- अपनी बाधिक स्थिति का सुधारण करते हुए अपने को कैसा समझते है ?
 (क) बहुत अच्छा (ख) हाथारण (ग) हाथारण है नीचे
- ६७- समाज में हम है कुसी जीवन व्यतीत करने के लिए आप कौन का कार्य सम्भव करेंगे ?
 (क) कुंठि (ख) कौने में मझूरी (ग) कारखाने में मझूरी (घ) अभावण (ङ) व्यापार (च) राजनीति (झ) हाफ्टरी (न) कायलिय में माझूरी (न) हाफ्टिय सेवा (न) कौनेमा में मझूरी (ङ) अन्य
- ६८- यदि विधान बना पुनाम में बरीकता का मा देने का अधिकार बापको मिल बाव को कैसा रहेमा ?
 (क) बहुत अच्छा (ख) अच्छा (ग) मराव (घ) बहुत मराव (ङ) कुछ नहीं
- ६९- बापकी दुष्टि में कि बाति है मावाता मावात में कौने प्रतिष्ठा नाम लेते है ?
 (क) गरिब (ख) दुष्काम (ग) बाक (विश्व या कैट (ङ) मावात (च) सवि (झ) कौनेमा (न) अन्य ।
- ७०- कि व्यक्त को अच्छे पुनाम में अपने दोष का विवाक मावात अच्छा होमा ?
- ७१- कौने पुनाम कि कारणों है बीच बाती है ?
- ७२- राजनीतिक कठ पुनामों में क कि कि कि कों में व्यव करते है ?
- ७३- कौने विधान बना दोष की कौन कौन प्रमुख समझाते है ?

B i b l i o g r a p h y

Books

1. Adair, John , Training for Leadership (London 1974).
2. Alatas, Syed Hussein. Intellectuals in developing Society (London 1977)
3. Almond Gabriel A. and Coleman James S. (Eds). The Politics of Developing Areas (Princeton 1960).
4. Almond Gabriel A. Powell G. Bingham. Comparative Politics (Amerind , second Indian reprint, 1978)
5. Almond Gabriel A. and Verba Sidney, The Civic Culture (Princeton, 1963).
6. Apter David, The Politics of Modernization (Chicago, 1965)
7. Banfield Edward C., Political Influence (New York, 1961)
8. Barnes Harry Elmer, Sociology and Political Theory - A Consideration of the Sociological Basis of Politics (New York 1928).
9. ^x Baster G., The JanSangh , A Biography of an Indian Political Party (Philadelphia, 1969).
10. Blondel J. Voters, Parties and Leaders (Penguin Book 1963)
11. Boring Edwin Carrigues, Longfield Herbert Sidney and Weld Harry Porter, Eds. Foundations of Psychology (Asia Publishing House, 1963).
12. Brass Paul R., Functional Politics In An Indian State. The Congress Party In Uttar Pradesh (Bombay 1966)
13. Brocher Michael, Political Leadership in India. An Analysis of Elite Attitudes (Vikash Publication 1969).
14. Brecht Arnold, Political Theory, The Foundations of Twentieth Century Political Thought (Bombay 1965).
15. Burger Angela Sutherland, Opposition in a Dominant Party system (Berkley and Los Angeles, 1969)
16. Burns Edward Mc Hall, Ideas in conflict - The Political Theories of the Contemporary World (New York 1960).

17. Campbell Angus, Gurin Gerald and Miller Warren. E.,
The Voters Decides (Evanston Peterson and Company 1964).
18. Gastles P.G., Pressure Group and Political Culture
(London 1967)
19. Ceter Francis W., Recent Political Thought (New York 1934)
20. Gann-Paul H., Conflict and Decision Making - An Introduction
to Political Science (New York 1971).
21. Dahl Robert A., Modern Political Analysis (New York 1972).
22. Dennis Haston, Children In Political System (New York 1969)
23. Deutsch Karl W., The Nerves of Government Models of
Political Communication and Control (New York, Glencoe 1963).
24. Duverger Maurice, Political Parties- translated by
Barbara and Robert North (London 1965).
25. Eckstein Harry, Pressure Group Politics (Stanford 1960).
26. Eldeveld Samuel J., Political Parties - A Behavioral
Analysis (Vora & Co., Bombay First Indian Reprint 1971).
27. Eul^u Heins, Eldeveld Samuel J., Janowitz Morris.,
Political Behavior (Amerind Publishing Co., New Delhi,
Indian edition 1972).
28. Field John Ogeed , Electoral Politics in the Indian
States. The Impact of Modernization (Delhi 1977 Vol.3)
29. Friedrich C.J., Man and his Government - An Empirical
Theory of Politics (New York 1963).
30. Ghosh Sankar, Socialism and Communism in India
(Allied Publishers 1971).
31. Goel, Madanlal, Political Participation in a developing
Nation-India (Bombay 1974).
32. Goldthorpe John H., Lockwood David , Bechhofer Frank,
Platt Jennifer- The Affluent Worker, Political Attitudes
and Behaviour (Cambridge 1968).
33. Greenings Evan Kelley H.W., Leiserson Michael Eds.
The Study of Coalition Behavior (New-York 1970)
- 33(A) Grusky OSCAR, Miller George A. eds. The Sociology
of Organization Basic Studies (New York 1970)

34. Hardgrave Robert L. jr., India Government and Politics in Developing Nations 2nd Ed. (New York 1978).
35. Hartmann Horst, Political Parties in India (Moonakshi Prakashan, Meerut, 1971).
36. Huntington Samuel P., Political Order in Changing Society (Bombay May 1978).
37. Hyman Herbert H. Political Socialization (Amerind Publishing Co., New Hark Delhi, 1972).
38. Johnson Harry M., Sociology A systemic Introduction (Allied Publishers, 4th Indian Reprint, 1973).
39. Jennings Sir Ivor ,Party Politics. Volume I,II (Cambridge 1960, 1961).
40. Jupp J., Political Parties (London 1968).
41. Kamal K.L. and Mayer Ralph C., Democratic Politics In India (New Delhi, 1977).
42. Katz Elihu and Lazarsfeld Paul, Personal Influence (Glencoe 1965)
43. Kay.V.O., Politics , Parties and Pressure Groups (New York 1968).
44. Kothari Rajani, Politics in India (Orient Longman,1970).
45. Kay V.O. Jr. Public Opinion and American Democracy (New York 1961).
46. Krech David and Crutchfield Richard S., Theory and Problems of Social Psychology (Tokyo 1946).
47. Lascki Harold J., A Grammar of Politics (London 1960).
48. Lazarsfeld Paul F., Berelson Bernard and Gaudet Hazel. The People's Choice (New York 1944).
49. Lasswell Harold, T he Decision Process (College Park 1966)
50. Laszki Gerhard, Power and Privilege (New York,1966)
51. Lindsay Gardner, eds., T he Hand Book of Social Psychology (Reading Mass : Addison Wesley Co. Inc., 1964).
52. Lipset S.M., Political Man (First Indian edition 1973).

54. Mackenzie R.T., British Political Parties, 1964.
55. Martindale Don, The Nature and Types of Sociological Theory (Boston 1970).
56. Harvie Swaine, Political Decision Makers (Glencoe 1961)
57. Moha Prayag. Election Campaign. Anatomy of Mass Influence (Delhi 1978).
58. Metcalfe H.C. and Wriwick L. eds. Dynamic Administration (New York 1949).
59. Michel Robert. Political Parties (Glencoe Illinois 1968)
60. Milbrath Lester W., Political Participation (Chicago 1965)
61. Misra B.B., The Indian Political Parties : An Historical Analysis of Political Behaviour upto 1947 (Delhi 1976).
62. Mukherji S.K., Election to the Bihar Parliamentary Constituency 1971 (The World Press 1978).
63. Narayan Jaya Prakash and others . Towards Fair and Free elections (New Delhi, 1975).
64. Neumann Sigmund (eds). Modern Political Parties (Chicago 1958).
65. Palmer Herman D., The Indian Political System (Boston 1961).
66. Palombara Joseph Ia and Weiner H. eds. Political Parties and Political Development (Princeton New Jersey 1969).
67. Pantham Thomas . Political Parties and Democratic Consensus A Study of Party Organizations in an Indian City(Delhi 1976).
68. Park Richard L and Tinker Irene, eds. Leadership and Political Institution in India (Princeton 1969).
69. Parsons Talcott, The Social System (Glencoe 1951).
70. Perry Ralph B., Realms of Values (Cambridge 1954)
71. Pye Lucian W., Politics ,Personality and Nation Building (New Haven 1962).
72. Pye Lucian W., Aspects of Political Developments (Indian edition 1972).
73. Pye Lucian W., eds. Communications and Political Development (First Indian Reprint 1972).
74. Pye Lucian W and Verba Sidney, eds. Political Culture and Political Development (Princeton New Jersey 1965).

75. Mckeech Milton., The Open and closed Mind (New York 1960).
76. Rensick Joseph S. eds. Contemporary Sociology
Peterewen- London.
77. Rubinstein Alvin I. eds. Communist Political Systems
(Prentice Hall, New Jersey 1966)
78. Rush Floyd L. Psychology and Life, 7th edition Runciman
W.G., Social Science and Political Theory (Cambridge 1968).
- 78(A) { Runciman
79. Sartori Giovanni, Parties and Party Systems. A frame Work
for Analysis Volume I (Cambridge 1976).
80. Seliger Martin. Ideology and Politics (London 1976).
81. Shah Giri Raj. India Rediscovered (New Delhi 1978).
82. Siraihar, V.M., Rural Elite in a developing Society .
A study in Political Sociology (New Delhi 1970).
83. Smelser Neil J. (ed.) Sociology (New Delhi 1970).
84. Snyder Richard C., Bruck H.W. and Burton Sapin - Decision
Making as an Approach to the Study of International
Politics (Princeton 1964)
85. Stern Robert W., The Process of Opposition In India two
case studies of How Policy shapes Politics (Chicago 1970).
86. Stäckland D.A. Wade L.L. and Johnston R.B. - A Primer
of Political Analysis (Chicago 1968).
87. Varma S.P., Modern Political Theory(New Delhi 1978)
88. Varma S.P. Iqbal Narain and Associates, Voting Behaviour
In A Changing Society (Delhi 1978).
89. Welch James, Faction and Front : Party Systems in
South India (New Delhi 1976).
90. Wesby Stephen L. eds. Political Science- The Discipline
and it's Dimensions. An Introduction (Calcutta 1972).
91. Weiner M., The Politics of Secrecy (Chicago 1962).
92. Political Parties and Political Development (Princeton 1966).
93. - Party Building in a New Nation - The Indian National
Congress (Chicago 1967).
94. - Party Politics in India (Princeton New Jersey 1967).
95. Wilcox Allen R .eds., Public Opinion and Political Attitudes
(New York 1974).

96. Young Pavline V., Scientific Social Surveys and Research (Prentice Hall ,London).
97. Zetterberg H. eds. Sociology in the United States of America (Paris UNESCO 1968).
98. Baidi A Mein eds . The Annual Register of Indian Political Parties Proceedings and Fundamental Texts 1973-74 (New Delhi 1974).

Articles.

1. Ahmed Bashiruddin. The Electorate, Seminar 212 April, 1977, page 19-24.
2. Catherine C. Currie, Political Sociology of Barrington Moore, Political Science Review 15 (2-4) 1976 page 1-25.
3. Chatterjee Partha, Stability and change in the Indian Political system ; Political Science Review 16 (1) 1977 page 1-22.
4. Das B.C., The Dynamics of factional Conflict. Indian Political Science Review January, 1977 page 60-66.
5. Frank P. Belloni and Dennis C. Belloni- The Study of Party factions as competitive Political Organization. The Western Political Quarterly 29 (4) 1976.
6. Friedrich Carl J. Political Pathology. The Political Quarterly 37(1) 1966 page 70-85.
7. Irvings Valadare , Effect of Neighbourhood on Voting Behavior, Political Science Quarterly 83, 1968 page 516-29.
8. Jennings M. Kent and Nien Richard G., Transmission of Political Values from parent to child. American Political Science Review Volume 64 (4) 1970 page 169-184.
9. Krishnan P., Toward a mathematical representation of growth of political parties in India. Indian Political Science Review 7(1) Jan. 1972. page 1-7.

10. Marvin E. Olsen- Three Routes to Political Party Participation
The Western Political Quarterly 29 (4) Dec., 1976 page 823-82.
11. Palma Giuseppe Di and Clusky Herbert M. Personality
and Conformity : The Learning of Political Attitudes,
American Political Science Review 64 (4) Dec., 1970
page 1054-1073.
12. Pomper Gerald N. Decline of Parties in American Elections.
Political Science Quarterly Vol.92 Spring 1977 page 21-41.
13. Mathore L.S. The Congress for Democracy in Indian Politics,
Genesis and Contribution , Indian Journal of Political
Studies 2 (1) Jan 1973 page 43-57.
14. Seth Pravin N., The Electoral Behaviour : Patterns of
continuity and change . The Indian Journal of Political
Science, volume 34 (2) April-June, 1973.
15. Srivastava S. Patterns of Political Leadership in emerging
areas : A case study of U.P., Political Science Review
9 (3-4) July-Dec., 1973 page 355-377.
16. Talwar Sadanand, Janata Party- An Attempt towards Polarisation
of Political Forces, Indian Political Science Review 11(2)
July 1977 page 157-168.
17. Thorpe Remila - The Academic Professional , Seminar 222
Feb 1978 page 18-23.
18. Vajpayi Dhirend K. -The Role of Mass Communication in
Modernization and Social change in Uttar Pradesh . The
Indian Journal of Political Science volume 34(2) April-
June 1973.
19. Winter Jerry J. Political Parties, Interest Representation
and Economic Development in Poland, American Political
Science Review volume 64(4) Dec. 1970 page 1239-1245.
20. William E. Riker and Peter C. Ordeshook, A Theory of Calculus
Voting . American Political Science Review 62, March 1968,
page 25-42.
21. William P. Browne .Benefits and Membership. A Reappraisal
of interest group activity. The Western Political Quarterly,
volume 29(2) June 1976.
22. William R. Schenfeld, The Focus of Political Socialization
Research World Politics Volume 23, 1971 page 544-578.